धर्म्मपुस्तक का अन्तभाग ।

अर्थात

मत्ती और मार्क और लूक और योहन रचित

प्रभु यीशु ख्रीष्ट का सुसमाचार ।

और

प्रेरितों की क्रियाओं का वृत्तान्त ।

और

धर्म्मोपदेश और भविष्यद्वाक्य की पत्रियां ।

जो

यूनानी भाषा से हिन्दी में किये गये हैं ।

THE

NEW TESTAMENT,

IN HINDI.

ALLAHABAD:
REPRINTED AT THE MISSION PRESS FROM THE BAPTIST
MISSION PRESS EDITION (WITH ALTERATIONS)
FOR THE NORTH INDIA BIBLE SOCIETY.

1900.

सूची पत्र ।

मत्ती रचित सुसमाचार।

१ पहिला पर्ब्ब।

१ यीशु खीष्ट की वंशावलि। १८ उस के जन्म की कथा।

१ इब्राहीम के सन्तान दाऊद के सन्तान यीशु खीष्ट की
२ वंशावलि। इब्राहीम का पुत्र इसहाक इसहाक का पुत्र
याकूब याकूब के पुत्र यिहूदा और उस के भाई हुए।
३ तामर से यिहूदा के पुत्र पेरस और जेरह हुए पेरस का पुत्र
४ हिस्रोन हिस्रोन का पुत्र अराम। अराम का पुत्र अम्मीनादब
अम्मीनादब का पुत्र नहशोन नहशोन का पुत्र सलमोन।
५ राहब से सलमोन का पुत्र बोअस हुआ रूत से बोअस का पुत्र
६ ओबेद हुआ ओबेद का पुत्र यिशी। यिशी का पुत्र दाऊद
राजा ऊरियाह की विधवा से दाऊद राजा का पुत्र सुलेमान
७ हुआ। सुलेमान का पुत्र रिहबुआम रिहबुआम का पुत्र
८ अबियाह अबियाह का पुत्र आसा। आसा का पुत्र यिहो-
शाफट यिहोशाफट का पुत्र यिहोरम यिहोरम का सन्तान
९ उज्जियाह। उज्जियाह का पुत्र योथम योथम का पुत्र आहस
१० आहस का पुत्र हिजकियाह। हिजकियाह का पुत्र मनस्सी
११ मनस्सी का पुत्र आमोन आमोन का पुत्र योशियाह। बाबुल
नगर को जाने के समय में योशियाह के सन्तान यिखनियाह
१२ और उस के भाई हुए। बाबुल को जाने के पीछे यिखनि-
याह का पुत्र शलतियेल शलतियेल का पुत्र जिरुबाबुल।
१३ जिरुबाबुल का पुत्र अबीहूद अबीहूद का पुत्र इलियाकीम
१४ इलियाकीम का पुत्र असोर। असोर का पुत्र सादोक सादोक
१५ का पुत्र आखीम आखीम का पुत्र इलीहूद। इलीहूद का पुत्र

इलियाजर इलियाजर का पुत्र मत्तान मत्तान का पुत्र याकूब।
याकूब का पुत्र यूसफ जो मरियम का स्वामी था जिस से १६
यीशु जो ख्रीष्ट कहावता है उत्पन्न हुआ। सो सब पीढ़ियां १७
इब्राहीम से दाऊद लों चौदह पीढ़ी और दाऊद से बाबुल
को जाने लों चौदह पीढ़ी और बाबुल को जाने के समय से
ख्रीष्ट लों चौदह पीढ़ी थीं।

यीशु ख्रीष्ट का जन्म इस रीति से हुआ. उस की माता १८
मरियम की यूसफ से मंगनी हुई थी पर उन के एकट्ठे होने के
पहिले वह देख पड़ी कि पवित्र आत्मा से गर्भवती है। तब १९
उस के स्वामी यूसफ ने जो धर्म्मी मनुष्य था और उस पर
प्रगट में कलंक लगाने नहीं चाहता था उसे चुपके से त्यागने
की इच्छा किई। जब वह इन बातों की चिन्ता करता था २०
देखो परमेश्वर के एक दूत ने स्वप्न में उसे दर्शन दे कहा हे
दाऊद के सन्तान यूसफ तू अपनी स्त्री मरियम को अपने यहां
लाने से मत डर क्योंकि उस को जो गर्भ रहा है सो पवित्र
आत्मा से है। वह पुत्र जनेगी और तू उस का नाम यीशु २१
रखना क्योंकि वह अपने लोगों को उन के पापों से बचावेगा।
यह सब इस लिये हुआ कि जो वचन परमेश्वर ने भविष्यद्वक्ता २२
के द्वारा से कहा था सो पूरा होवे. कि देखो कुंवारी गर्भवती २३
होगी और पुत्र जनेगी और वे उस का नाम इम्मानुएल रखेंगे
जिस का अर्थ यह है ईश्वर हमारे संग। तब यूसफ ने नींद २४
से उठके जैसा परमेश्वर के दूत ने उसे आज्ञा दिई थी वैसा
किया और अपनी स्त्री को अपने यहां लाया। परन्तु जब २५
लों वह अपना पहिलौठा पुत्र न जनी तब लों उस को न
जाना और उस ने उस का नाम यीशु रखा।

२ दूसरा पर्ब्ब।

१ ज्योतिषियों का यीशु को खोजना। १३ यूसफ का यीशु और मरियम को मिसर

में ले जाना। १६ हेरोद का बैतलहम के बालकों को घात करना। १९ यूसफ का परिवार सहित मिसर से लौटना और नासरत में बसना।

१ हेरोद राजा के दिनों में जब यिहूदिया देश के बैतलहम नगर में यीशु का जन्म हुआ तब देखो पूर्ब्ब से कितने ज्योतिषी २ यिरूशलीम नगर में आये. और बोले यिहूदियों का राजा जिस का जन्म हुआ है कहां है क्योंकि हम ने पूर्ब्ब में उस का ३ तारा देखा है और उस को प्रणाम करने आये हैं। यह सुनके हेरोद राजा और उस के साथ सारे यिरूशलीम के ४ निवासी घबरा गये। और उस ने लोगों के सब प्रधान याजकों और अध्यापकों को एकट्ठे कर उन से पूछा ख्रीष्ट कहां जन्मेगा। ५ उन्हों ने उस से कहा यिहूदिया के बैतलहम नगर में क्योंकि ६ भविष्यद्वक्ता के द्वारा यूं लिखा गया है. कि हे यिहूदा देश के बैतलहम तू किसी रीति से यिहूदा की राजधानियों में सब से छोटो नहीं है क्योंकि तुझ में से एक अधिपति निकलेगा ७ जो मेरे इस्रायेली लोग का चरवाहा होगा। तब हेरोद ने ज्योतिषियों को चुपके से बुलाके उन्हें यत्न से पूछा कि तारा ८ किस समय दिखाई दिया। और उस ने यह कहके उन्हें बैतलहम भेजा कि जाके उस बालक के विषय में यत्न से बूझो और जब उसे पावो तब मुझे सन्देश देओ कि मैं भी जाके ९ उस को प्रणाम करूं। वे राजा की सुनके चले गये और देखो जो तारा उन्हों ने पूर्ब्ब में देखा था सो उन के आगे आगे चला यहां लों कि जहां बालक था उस स्थान के ऊपर पहुंचके १० ठहर गया। वे उस तारे को देखके अत्यन्त आनन्दित हुए। ११ और घर में पहुंचके उन्हों ने बालक को उस की माता मरियम के संग देखा और दण्डवत कर उसे प्रणाम किया और अपनी सम्पत्ति खोलके उस को सोना और लोबान और १२ गन्धरस भेंट चढ़ाई। और स्वप्न में ईश्वर से यह आज्ञा पाके

कि हेरोद के पास मत फिर जाओ वे दूसरे मार्ग से अपने देश को चले गये।

उन के जाने के पीछे देखो परमेश्वर के एक दूत ने स्वप्न में १३ यूसफ को दर्शन दे कहा उठ बालक और उस की माता को लेके मिसर देश को भाग जा और जब लों मैं तुझे न कहूं तब लों वहीं रह क्योंकि हेरोद नाश करने के लिये बालक को ढूंढेगा। वह उठ रात ही को बालक और उस की माता १४ को लेके मिसर को चला गया. और हेरोद के मरने लों वहीं १५ रहा कि जो वचन परमेश्वर ने भविष्यद्वक्ता के द्वारा से कहा था कि मैं ने अपने पुत्र को मिसर में से बुलाया सो पूरा होवे।

जब हेरोद ने देखा कि ज्योतिषियों ने मुझ से ठट्ठा किया १६ है तब अति क्रोधित हुआ और लोगों को भेजके जिस समय को उस ने ज्योतिषियों से यत्न से पूछा था उस समय के अनुसार बैतलहम में और उस के सारे सिवानों में के सब बालकों को जो दो बरस के और दो बरस से छोटे थे मरवा डाला। तब जो वचन यिरमियाह भविष्यद्वक्ता ने कहा था १७ सो पूरा हुआ. कि रामा नगर में एक शब्द अर्थात १८ हाहाकार और रोना और बड़ा विलाप सुना गया राहेल अपने बालकों के लिये रोती थी और शान्त होने न चाहती थी क्योंकि वे नहीं हैं।

हेरोद के मरने के पीछे देखो परमेश्वर के एक दूत ने मिसर १९ में यूसफ को स्वप्न में दर्शन दे कहा. उठ बालक और उस २० की माता को लेके इस्रायेल देश को जा क्योंकि जो लोग बालक का प्राण लेने चाहते थे सो मर गये हैं। तब वह २१ उठ बालक और उस की माता को लेके इस्रायेल देश में आया। परन्तु जब उस ने सुना कि अर्खिलाव अपने पिता २२ हेरोद के स्थान में यिहूदिया का राजा हुआ है तब वहां

जाने से डरा और स्वप्न में ईश्वर से आज्ञा पाके गालील के
२३ सिवानों में गया . और नासरत नाम एक नगर में आके
वास किया कि जो वचन भविष्यद्वक्ताओं से कहा गया था
कि वह नासरी कहावेगा सो पूरा होवे ।

३ तीसरा पर्व्व ।

१ योहन बपतिसमा देनेहारे का वृत्तान्त । ७ उस का उपदेश और भविष्यद्वाक्य ।
१३ यीशु का बपतिसमा लेना ।

१ उन दिनों में योहन बपतिसमा देनेहारा आके यिहूदिया
२ के जंगल में उपदेश करने लगा . और कहने लगा कि
पश्चात्ताप करो क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट आया है ।
३ यह वही है जिस के विषय में यिशैयाह भविष्यद्वक्ता ने कहा
किसी का शब्द हुआ जो जंगल में पुकारता है कि परमेश्वर
४ का पन्थ बनाओ उस के राजमार्ग सीधे करो । इस योहन का
वस्त्र ऊंट के रोम का था और उस की कटि में चमड़े का पटुका
बंधा था और उस का भोजन टिड्डियां और वन मधु था ।
५ तब यिरूशलीम के और सारे यिहूदिया के और यर्दन नदी के
६ आसपास सारे देश के रहनेहारे उस पास निकल आये . और
अपने अपने पापों को मानके यर्दन में उस से बपतिसमा लिया ।
७ जब उस ने बहुतेरे फरीशियों और सदूकियों को उस से
बपतिसमा लेने को आते देखा तब उन से कहा हे सांपों के
वंश किस ने तुम्हें आनेवाले क्रोध से भागने को चिताया है ।
८ पश्चात्ताप के योग्य फल लाओ । और अपने अपने मन में
९ यह चिन्ता मत करो कि हमारा पिता इब्राहीम है क्योंकि
मैं तुम से कहता हूं कि ईश्वर इन पत्थरों से इब्राहीम के
१० लिये सन्तान उत्पन्न कर सकता है । और अब भी कुल्हाड़ी
पेड़ों की जड़ पर लगी है इस लिये जो जो पेड़ अच्छा फल
नहीं फलता है सो काटा जाता और आग में डाला जाता

है। मैं ते तुम्हें पश्चात्ताप के लिये जल से बपतिसमा देता ११
हूं परन्तु जो मेरे पीछे आता है से मुझ से अधिक शक्तिमान
है मैं उस की जूतियां उठाने के योग्य नहीं वह तुम्हें पवित्र
आत्मा से और आग से बपतिसमा देगा। उस का सूप उस के १२
हाथ में है और वह अपना सारा खलिहान शुद्ध करेगा और
अपने गेहूं को खत्ते में एकट्ठा करेगा परन्तु भूसी को उस
आग से जो नहीं बुझती है जलावेगा।

तब यीशु योहन से बपतिसमा लेने को उस पास गालील १३
से यर्दन के तीर पर आया। परन्तु योहन यह कहके उसे १४
वर्जने लगा कि मुझे आप के हाथ से बपतिसमा लेना अवश्य
है और क्या आप मेरे पास आते हैं। यीशु ने उस को उत्तर १५
दिया कि अब ऐसा होने दे क्योंकि इसी रीति से सब धर्म्म
को पूरा करना हमें चाहिये . तब उस ने होने दिया। यीशु १६
बपतिसमा लेके तुरन्त जल से ऊपर आया और देखो उस के
लिये स्वर्ग खुल गया और उस ने ईश्वर के आत्मा को कपोत
की नाईं उतरते और अपने ऊपर आते देखा। और देखो १७
यह आकाशबाणी हुई कि यह मेरा प्रिय पुत्र है जिस से मैं
अति प्रसन्न हूं।

४ चौथा पर्ब्ब ।

१ यीशु की परीक्षा। १२ उस का कफर्नाहुम में रहना। १७ उपदेश करना और कई एक शिष्यों को बुलाना। २३ बहुत रोगियों को चंगा करना।

तब आत्मा यीशु को जंगल में ले गया कि शैतान से उस १
की परीक्षा किई जाय। वह चालीस दिन और चालीस २
रात उपवास करके पीछे भूखा हुआ। तब परीक्षा करनेहारे ३
ने उस पास आ कहा जो तू ईश्वर का पुत्र है तो कह दे
कि ये पत्थर रोटियां बन जावें। उस ने उत्तर दिया कि ४
लिखा है मनुष्य केवल रोटी से नहीं परन्तु हर एक बात से

५ जो ईश्वर के मुख से निकलती है जीयेगा। तब शैतान ने उस को पवित्र नगर में ले जाके मन्दिर के कलश पर खड़ा
६ किया . और उस से कहा जो तू ईश्वर का पुत्र है तो अपने को नीचे गिरा क्योंकि लिखा है कि वह तेरे बिषय में अपने दूतों को आज्ञा देगा और वे तुझे हाथों हाथ उठा लेंगे न
७ हो कि तेरे पांव में पत्थर पर चोट लगे। यीशु ने उस से कहा फिर भी लिखा है कि तू परमेश्वर अपने ईश्वर की
८ परीक्षा मत कर। फिर शैतान ने उसे एक अति ऊंचे पर्ब्बत पर ले जाके उस को जगत के सब राज्य और उन का विभव
९ दिखाये . और उस से कहा जो तू दंडवत कर मुझे प्रणाम
१० करे तो मैं यह सब तुझे देऊंगा। तब यीशु ने उस से कहा हे शैतान दूर हो क्योंकि लिखा है कि तू परमेश्वर अपने
११ ईश्वर को प्रणाम कर और केवल उसी की सेवा कर। तब शैतान ने उस को छोड़ा और देखो स्वर्ग दूतों ने आ उस की सेवा किई।

१२ जब यीशु ने सुना कि योहन बन्दीगृह में डाला गया तब
१३ गालील को चला गया। और नासरत नगर को छोड़के उस ने कफर्नाहूम नगर में जो समुद्र के तीर पर जिबुलून और नप्ताली
१४ के वंशों के सिवानों में है आके वास किया . कि जो बचन
१५ यिशैयाह भविष्यद्वक्ता से कहा गया था सो पूरा होवे . कि जिबुलून का देश और नप्ताली का देश समुद्र की ओर यर्दन के
१६ उस पार अन्यदेशियों का गालील . जो लोग अंधकार में बैठे थे उन्हों ने बड़ी ज्योति देखी और जो मृत्यु के देश और छाया में बैठे थे उन पर ज्योति उदय हुई।

१७ उस समय से यीशु उपदेश करने और यह कहने लगा कि पश्चात्ताप करो क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट आया है।
१८ यीशु ने गालील के समुद्र के तीर पर फिरते हुए दो भाइयों को

अर्थात शिमोन को जो पितर कहावता है और उस के भाई अन्द्रिय को समुद्र में जाल डालते देखा क्योंकि वे मछुवे थे। उस ने उन से कहा मेरे पीछे आओ मैं तुम को मनुष्यों के १९ मछुवे बनाऊंगा। वे तुरन्त जालों को छोड़के उस के पीछे २० हो लिये। वहां से आगे बढ़के उस ने और दो भाइयों को २१ अर्थात जबदी के पुत्र याकूब और उस के भाई योहन को अपने पिता जबदी के संग नाव पर अपने जाल सुधारते देखा और उन्हें बुलाया। और वे तुरन्त नाव को और अपने पिता को २२ छोड़के उस के पीछे हो लिये।

तब यीशु सारे गालील देश में उन की सभाओं में उपदेश २३ करता हुआ और राज्य का सुसमाचार प्रचार करता हुआ और लोगों में हर एक रोग और हर एक व्याधि को चंगा करता हुआ फिरा किया। उस की कीर्त्ति सब सुरिया देश २४ में भी फैल गई और लोग सब रोगियों को जो नाना प्रकार के रोगों औ पीड़ाओं से दुःखी थे और भूतग्रस्तों और मिर्गीहों और अर्द्धांगियों को उस पास लाये और उस ने उन्हें चंगा किया। और गालील और दिकापलि और यिरूशलीम २५ और यिहूदिया से और यर्दन के उस पार से बड़ी बड़ी भीड़ उस के पीछे हो लिई।

५ पांचवां पर्व्व ।

१ पर्व्वत पर यीशु के उपदेश का आरंभ। ३ धन्य कौन हैं इस का निर्णय। १३ लोण और ज्योति के दृष्टान्त से शिष्यों का बखान। १७ यीशु के प्रगट होने का कारण। २१ क्रोध करने का निषेध। २७ कुदृष्टि करने का निषेध। ३१ पत्नी को त्यागने का निषेध। ३३ किरिया खाने का निषेध। ३८ लड़ाई करने का निषेध। ४३ शत्रुओं को प्रेम करने का उपदेश।

यीशु भीड़ को देखके पर्व्वत पर चढ़ गया और जब वह १ बैठा तब उस के शिष्य उस पास आये। और वह अपना २ मुंह खोलके उन्हें उपदेश देने लगा।

३　धन्य वे जो मन में दीन हैं क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं
४ का है। धन्य वे जो शोक करते हैं क्योंकि वे शांति पावेंगे।
५ धन्य वे जो नम्र हैं क्योंकि वे पृथिवी के अधिकारी होंगे।
६ धन्य वे जो धर्म्म के भूखे और प्यासे हैं क्योंकि वे तृप्त
७ किये जायेंगे। धन्य वे जो दयावन्त हैं क्योंकि उन पर
८ दया किई जायगी। धन्य वे जिन के मन शुद्ध हैं क्योंकि
९ वे ईश्वर को देखेंगे। धन्य वे जो मेल करवैये हैं क्योंकि
१० वे ईश्वर के सन्तान कहावेंगे। धन्य वे जो धर्म्म के कारण
११ सताये जाते हैं क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है। धन्य
तुम हो जब मनुष्य मेरे लिये तुम्हारी निन्दा करें और
तुम्हें सतावें और झूठ बोलते हुए तुम्हारे विरुद्ध सब
१२ प्रकार की बुरी बात कहें। आनन्दित और आह्लादित
होओ क्योंकि तुम स्वर्ग में बहुत फल पाओगे. उन्हों ने
उन भविष्यद्वक्ताओं को जो तुम से आगे थे इसी रीति से
सताया।

१३　तुम पृथिवी के लोण हो परन्तु यदि लोण का स्वाद
बिगड़ जाय तो वह किस से लोणा किया जायगा. वह
तब से किसी काम का नहीं केवल बाहर फेंके जाने और
१४ मनुष्यों के पांवों से रौंदे जाने के योग्य है। तुम जगत के
प्रकाश हो. जो नगर पहाड़ पर बसा है सो छिप नहीं
१५ सकता। और लोग दीपक को बारके बर्त्तन के नीचे नहीं
परन्तु दीवट पर रखते हैं और वह सभों को जो घर में हैं
१६ ज्योति देता है। वैसे ही तुम्हारा प्रकाश मनुष्यों के आगे
चमके इस लिये कि वे तुम्हारे भले कामों को देखके तुम्हारे
स्वर्गवासी पिता का गुणानुवाद करें।

१७　मत समझो कि मैं व्यवस्था अथवा भविष्यद्वक्ताओं का
पुस्तक लोप करने को आया हूं मैं लोप करने को नहीं

परन्तु पूरा करने को आया हूं। क्योंकि मैं तुम से सच १८
कहता हूं कि जब लों आकाश औ पृथिवी टल न जायें तब
लों व्यवस्था से एक मात्रा अथवा एक बिन्दु बिना पूरा हुए
नहीं टलेगा। इस लिये जो कोई इन अति छोटी आज्ञाओं १९
में से एक को लोप करे और लोगों को वैसे ही सिखावे
वह स्वर्ग के राज्य में सब से छोटा कहावेगा परन्तु जो कोई
उन्हें पालन करे और सिखावे वह स्वर्ग के राज्य में बड़ा
कहावेगा। मैं तुम से कहता हूं यदि तुम्हारा धर्म्म अध्या- २०
पकों और फरीशियों के धर्म्म से अधिक न होवे तो तुम
स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करने न पाओगे।

तुम ने सुना है कि आगे के लोगों से कहा गया था कि २१
नरहिंसा मत कर और जो कोई नरहिंसा करे सो बिचार
स्थान में दंड के योग्य होगा। परन्तु मैं तुम से कहता हूं २२
कि जो कोई अपने भाई से अकारण क्रोध करे सो बिचार
स्थान में दंड के योग्य होगा और जो कोई अपने भाई से
कहे कि रे तुच्छ सो न्याइयों की सभा में दंड के योग्य होगा
और जो कोई कहे कि रे मूर्ख सो नरक की आग के दंड के
योग्य होगा। सो यदि तू अपना चढ़ावा वेदी पर लावे २३
और वहां स्मरण करे कि तेरे भाई के मन में तेरी ओर कुछ
है तो अपना चढ़ावा वहां वेदी के साम्ने छोड़के चला जा. २४
पहिले अपने भाई से मिलाप कर तब आके अपना चढ़ावा
चढ़ा। जब लों तू अपने मुद्दई के संग मार्ग में है उस से बेग २५
मिलाप कर ऐसा न हो कि मुद्दई तुझे न्यायी को सौंपे
और न्यायी तुझे प्यादे को सौंपे और तू बन्दीगृह में डाला
जाय। मैं तुझ से सच कहता हूं कि जब लों तू कौड़ी कौड़ी २६
भर न देवे तब लों वहां से छूटने न पावेगा।

तुम ने सुना है कि आगे के लोगों से कहा गया था कि २७

२८ परस्त्रीगमन मत कर। परन्तु मैं तुम से कहता हूं कि जो कोई किसी स्त्री पर कुइच्छा से दृष्टि करे वह अपने
२९ मन में उस से व्यभिचार कर चुका है। जो तेरी दहिनी आंख तुझे ठोकर खिलावे तो उसे निकालके फेंक दे क्योंकि तेरे लिये भला है कि तेरे अंगों में से एक अंग नाश
३० होवे और तेरा सकल शरीर नरक में न डाला जाय। और जो तेरा दहिना हाथ तुझे ठोकर खिलावे तो उसे काटके फेंक दे क्योंकि तेरे लिये भला है कि तेरे अंगों में से एक अंग नाश होवे और तेरा सकल शरीर नरक में न डाला जाय।

३१　यह भी कहा गया कि जो कोई अपनी स्त्री को त्यागे
३२ सो उस को त्यागपत्र देवे। परन्तु मैं तुम से कहता हूं कि जो कोई व्यभिचार को छोड़ और किसी हेतु से अपनी स्त्री को त्यागे सो उस से व्यभिचार करवाता है और जो कोई उस त्यागी हुई से विवाह करे सो परस्त्रीगमन करता है।

३३　फिर तुम ने सुना है कि आगे के लोगों से कहा गया था कि झूठी किरिया मत खा परन्तु परमेश्वर के लिये अपनी
३४ किरियाओं को पूरी कर। परन्तु मैं तुम से कहता हूं कोई किरिया मत खाओ न स्वर्ग की क्योंकि वह ईश्वर का
३५ सिंहासन है. न धरती की क्योंकि वह उस के चरणों की पीढ़ी है न यिरूशलीम की क्योंकि वह महा राजा का नगर
३६ है। अपने सिर की भी किरिया मत खा क्योंकि तू एक
३७ बाल को उजला अथवा काला नहीं कर सकता है। परन्तु तुम्हारी बातचीत हां हां नहीं नहीं होवे. जो कुछ इन से अधिक है सो उस दुष्ट से होता है।

३८　तुम ने सुना है कि कहा गया था कि आंख के बदले
३९ आंख और दांत के बदले दांत। पर मैं तुम से कहता हूं

बुरे का साम्ना मत करो परन्तु जो कोई तेरे दहिने गाल पर
थपेड़ा मारे उस की ओर दूसरा भी फेर दे। जो तुझ पर ४०
नालिश करके तेरा अंगा लेने चाहे उस को दोहर भी लेने
दे। जो कोई तुझे आध कोश बेगारी ले जाय उस के संग ४१
कोश भर चला जा। जो तुझ से मांगे उस को दे और जो ४२
तुझ से ऋण लेने चाहे उस से मुंह मत मोड़।

तुम ने सुना है कि कहा गया था कि अपने पड़ोसी को ४३
प्यार कर और अपने बैरी से बैर कर। परन्तु मैं तुम से ४४
कहता हूं कि अपने बैरियों को प्यार करो, जो तुम्हें स्राप
देवें उन को आशीस देओ जो तुम से बैर करें उन से भलाई
करो और जो तुम्हारा अपमान करें और तुम्हें सतावें
उन के लिये प्रार्थना करो, जिस्तें तुम अपने स्वर्गबासी ४५
पिता के सन्तान होओ क्योंकि वह बुरे औ भले लोगों पर
अपना सूर्य्य उदय करता है और धर्म्मियों और अधर्म्मियों
पर मेंह बरसाता है। जो तुम उन से प्रेम करो जो तुम से ४६
प्रेम करते हैं तो क्या फल पाओगे, क्या कर उगाहनेहारे
भी ऐसा नहीं करते हैं। और जो तुम केवल अपने ४७
भाइयों को नमस्कार करो तो कौन सा बड़ा काम करते हो,
क्या कर उगाहनेहारे भी ऐसा नहीं करते हैं। सो जैसा ४८
तुम्हारा स्वर्गवासी पिता सिद्ध है तैसे तुम भी सिद्ध होओ।

६ छठवां पर्ब्ब ।

१ धर्म्म कर्म्म के विषय में यीशु का उपदेश। २ दान करने की विधि। ५ प्रार्थना करने की विधि। १४ क्षमा करने का उपदेश। १६ उपवास करने की विधि। १९ संसार में मन लगाने का निषेध।

सचेत रहो कि तुम मनुष्यों को दिखाने के लिये उन के १
आगे अपने धर्म्म के कार्य्य न करो नहीं तो अपने स्वर्ग-
बासी पिता से कुछ फल न पाओगे।

२ इस लिये जब तू दान करे तब अपने आगे तुरही मत बजवा जैसा कपटी लोग सभा के घरों और मार्गों में करते हैं कि मनुष्य उन की बड़ाई करें . मैं तुम से सच ३ कहता हूं वे अपना फल पा चुके हैं । परन्तु जब तू दान करे तब तेरा दहिना हाथ जो कुछ करे सो तेरा बायां ४ हाथ न जाने . कि तेरा दान गुप्त में होय और तेरा पिता जो गुप्त में देखता है आप ही तुझे प्रगट में फल देगा ।

५ जब तू प्रार्थना करे तब कपटियों के समान मत हो क्योंकि मनुष्यों को दिखाने के लिये सभा के घरों में और सड़कों के कोनों में खड़े होके प्रार्थना करना उन को प्रिय लगता है . मैं तुम से सच कहता हूं वे अपना फल पा ६ चुके हैं । परन्तु जब तू प्रार्थना करे तब अपनी कोठरी में जा और द्वार मून्दके अपने पिता से जो गुप्त में है प्रार्थना कर और तेरा पिता जो गुप्त में देखता है तुझे प्रगट में ७ फल देगा । प्रार्थना करने में देवपूजकों की नाईं बहुत व्यर्थ बातें मत बोला करो क्योंकि वे समझते हैं कि हमारे बहुत ८ बोलने से हमारी सुनी जायगी । सो तुम उन के समान मत होओ क्योंकि तुम्हारे मांगने के पहिले तुम्हारा पिता ९ जानता है तुम्हें क्या क्या आवश्यक है । तुम इस रीति से प्रार्थना करो . हे हमारे स्वर्गवासी पिता तेरा नाम पवित्र १० किया जाय . तेरा राज्य आवे तेरी इच्छा जैसे स्वर्ग में ११ वैसे पृथिवी पर पूरी होय . हमारी दिन भर की रोटी १२ आज हमें दे . और जैसे हम अपने ऋणियों को क्षमा करते १३ हैं तैसे हमारे ऋणों को क्षमा कर . और हमें परीक्षा में मत डाल परन्तु दुष्ट से बचा [क्योंकि राज्य और पराक्रम और महिमा सदा तेरे हैं . आमीन] ।

१४ जो तुम मनुष्यों के अपराध क्षमा करो तो तुम्हारा

स्वर्गीय पिता तुम्हें भी क्षमा करेगा। परन्तु जो तुम १५
मनुष्यों के अपराध क्षमा न करो तो तुम्हारा पिता भी
तुम्हारे अपराध क्षमा न करेगा।

जब तुम उपवास करो तब कपटियों के समान उदास १६
रूप मत होओ क्योंकि वे अपने मुंह मलीन करते हैं कि
मनुष्यों को उपवासी दिखाई देवें. मैं तुम से सच कहता
हूं वे अपना फल पा चुके हैं। परन्तु जब तू उपवास १७
करे तब अपने सिर पर तेल मल और अपना मुंह धो.
कि तू मनुष्यों को नहीं परन्तु अपने पिता को जो गुप्त में १८
है उपवासी दिखाई देवे और तेरा पिता जो गुप्त में देखता
है तुझे प्रगट में फल देगा।

अपने लिये पृथिवी पर धन का संचय मत करो जहां १९
कीड़ा और काई बिगाड़ते हैं और जहां चोर सेंध देते
और चुराते हैं। परन्तु अपने लिये स्वर्ग में धन का संचय २०
करो जहां न कीड़ा न काई बिगाड़ता है और जहां चोर
न सेंध देते न चुराते हैं। क्योंकि जहां तुम्हारा धन है २१
तहां तुम्हारा मन भी लगा रहेगा। शरीर का दीपक आंख २२
है इस लिये यदि तेरी आंख निर्मल हो तो तेरा सकल
शरीर उजियाला होगा। परन्तु यदि तेरी आंख बुरी हो २३
तो तेरा सकल शरीर अंधियारा होगा. जो ज्योति तुझ
में है सो यदि अंधकार है तो वह अंधकार कैसा बड़ा
है। कोई मनुष्य दो स्वामियों की सेवा नहीं कर सकता २४
है क्योंकि वह एक से वैर करेगा और दूसरे को प्यार करेगा
अथवा एक से लगा रहेगा और दूसरे को तुच्छ जानेगा.
तुम ईश्वर और धन दोनों की सेवा नहीं कर सकते हो।
इस लिये मैं तुम से कहता हूं अपने प्राण के लिये चिन्ता २५
मत करो कि हम क्या खायेंगे और क्या पीयेंगे और न

अपने शरीर के लिये कि क्या पहिरेंगे . क्या भोजन से प्राण
२६ और बस्त्र से शरीर बड़ा नहीं है। आकाश के पंछियों को
देखो . वे न बोते हैं न लवते हैं न खत्तों में बटोरते हैं
तौभी तुम्हारा स्वर्गीय पिता उन को पालता है . क्या
२७ तुम उन से बड़े नहीं हो। तुम में से कौन मनुष्य चिन्ता
करने से अपनी आयु की दौड़ को एक हाथ भी बढ़ा सकता
२८ है। और तुम वस्त्र के लिये क्यों चिन्ता करते हो . खेत
के सोसन फूलों को देख लो वे कैसे बढ़ते हैं . वे न परिश्रम
२९ करते हैं न कातते हैं। परन्तु मैं तुम से कहता हूं कि
सुलेमान भी अपने सारे बिभव में उन में से एक के तुल्य
३० बिभूषित न था। यदि ईश्वर खेत की घास को जो आज
है और कल चूल्हे में झोंकी जायगी ऐसी बिभूषित करता
है तो हे अल्प विश्वासियो क्या वह बहुत अधिक करके
३१ तुम्हें नहीं पहिरावेगा। सो तुम यह चिन्ता मत करो
कि हम क्या खायेंगे अथवा क्या पीयेंगे अथवा क्या
३२ पहिरेंगे। देवपूजक लोग इन सब बस्तुओं की खोज करते
हैं और तुम्हारा स्वर्गीय पिता जानता है कि तुम्हें
३३ इन सब वस्तुओं का प्रयोजन है। पहिले ईश्वर के राज्य
और उस के धर्म्म की खोज करो तब यह सब बस्तु भी
३४ तुम्हें दिई जायेंगीं। सो कल के लिये चिन्ता मत करो
क्योंकि कल अपनी वस्तुओं के लिये आप ही चिन्ता करेगा .
हर एक दिन के लिये उसी दिन का दुःख बहुत है।

७ सातवां पर्ब्ब ।

१ दूसरों पर दोष लगाने का निषेध। ७ प्रार्थना करने का उपदेश। १३ सकेत फाटक से पैठने का उपदेश। १५ झूठे उपदेशकों का निर्णय। २१ ईश्वर की आज्ञा पालन करने की आवश्यकता। २४ घर की नेव डालने का दृष्टान्त। २८ पर्ब्बत पर के उपदेश की समाप्ति।

१ दूसरों का बिचार मत करो कि तुम्हारा बिचार न

किया जाय। क्योंकि जिस बिचार से तुम बिचार करते २ हो उसी से तुम्हारा विचार किया जायगा और जिस नाप से तुम नापते हो उसी से तुम्हारे लिये नापा जायगा। जो ३ तिनका तेरे भाई के नेत्र में है उसे तू क्यों देखता है और तेरे ही नेत्र में का लट्ठा तुझे नहीं सूझता। अथवा तू अपने ४ भाई से क्योंकर कहेगा रहिये मैं तेरे नेत्र से यह तिनका निकालूं और देख तेरे ही नेत्र में लट्ठा है। हे कपटी पहिले ५ अपने नेत्र से लट्ठा निकाल दे तब तू अपने भाई के नेत्र से तिनका निकालने को अच्छी रीति से देखेगा। पवित्र बस्तु ६ कुत्तों को मत देओ और अपने मोतियों को सूअरों के आगे मत फेंको ऐसा न हो कि वे उन्हें अपने पांवों से रौंदें और फिरके तुम को फाड़ डालें।

मांगो तो तुम्हें दिया जायगा ढूंढ़ो तो तुम पाओगे ७ खटखटाओ तो तुम्हारे लिये खोला जायगा। क्योंकि जो ८ कोई मांगता है उसे मिलता है और जो ढूंढ़ता है सो पाता है और जो खटखटाता है उस के लिये खोला जायगा। तुम में से कौन मनुष्य है कि यदि उस का पुत्र ९ उस से रोटी मांगे तो उस को पत्थर देगा। और जो वह १० मछली मांगे तो क्या वह उस को सांप देगा। सो यदि ११ तुम बुरे होके अपने लड़कों को अच्छे दान देने जानते हो तो कितना अधिक करके तुम्हारा स्वर्गवासी पिता उन्हों को जो उस से मांगते हैं उत्तम वस्तु देगा। जो कुछ १२ तुम चाहते हो कि मनुष्य तुम से करें तुम भी उन से वैसा ही करो क्योंकि यही व्यवस्था औ भविष्यद्वक्ताओं के पुस्तक का सार है।

सकेत फाटक से प्रवेश करो क्योंकि चौड़ा है वह १३ फाटक और चाकर है वह मार्ग जो बिनाश को पहुंचाता

१४ है और बहुत हैं जो उस से पैठते हैं। वह फाटक कैसा सकेत और वह मार्ग कैसा सकरा है जो जीवन को पहुंचाता है और थोड़े हैं जो उसे पाते हैं।

१५ झूठे भविष्यद्वक्ताओं से चौकस रहो जो भेड़ों के भेष में तुम्हारे पास आते हैं परन्तु अन्तर में लुटेरू हुंड़ार हैं।
१६ तुम उन के फलों से उन्हें पहचानोगे. क्या मनुष्य कांटों
१७ के पेड़ से दाख अथवा ऊंटकटारे से गूलर तोड़ते हैं। इसी रीति से हर एक अच्छा पेड़ अच्छा फल फलता है और
१८ निकम्मा पेड़ बुरा फल फलता है। अच्छा पेड़ बुरा फल नहीं फल सकता है और न निकम्मा पेड़ अच्छा फल फल
१९ सकता है। जो जो पेड़ अच्छा फल नहीं फलता है सो
२० काटा जाता और आग में डाला जाता है। सो तुम उन के फलों से उन्हें पहचानोगे।

२१ हर एक जो मुझ से हे प्रभु हे प्रभु कहता है स्वर्ग के राज्य में प्रवेश नहीं करेगा परन्तु वही जो मेरे स्वर्गबासी
२२ पिता की इच्छा पर चलता है। उस दिन में बहुतेरे मुझ से कहेंगे हे प्रभु हे प्रभु क्या हम ने आप के नाम से भविष्यद्वाक्य नहीं कहा और आप के नाम से भूत नहीं निकाले और
२३ आप के नाम से बहुत आश्चर्य्य कर्म्म नहीं किये। तब मैं उन से खोलके कहूंगा मैं ने तुम को कभी नहीं जाना हे कुकर्म्म करनेहारो मुझ से दूर होओ।

२४ इस लिये जो कोई मेरी यह बातें सुनके उन्हें पालन करे मैं उस की उपमा एक बुद्धिमान मनुष्य से देऊंगा जिस
२५ ने अपना घर पत्थर पर बनाया। और मेंह बरसा औ बाढ़ आई औ आंधी चली और उस घर पर लगी पर वह नहीं गिरा क्योंकि उस की नेव पत्थर पर डाली गई थी।
२६ परन्तु जो कोई मेरी यह बातें सुनके उन्हें पालन न करे

उस की उपमा एक निर्बुद्धि मनुष्य से दिई जायगी जिस ने अपना घर बालू पर बनाया। २७ और मेंह बरसा औ बाढ़ आई औ आंधी चली और उस घर पर लगी और वह गिरा और उस का बड़ा पतन हुआ।

२८ जब यीशु यह बातें कह चुका तब लोग उस के उपदेश से अचंभित हुए। २९ क्योंकि उस ने अध्यापकों की रीति से नहीं परन्तु अधिकारी की रीति से उन्हें उपदेश दिया।

८ आठवां पर्ब्ब।

१ यीशु का एक कोढ़ी को चंगा करना। ५ एक शतपति के दास को चंगा करना। १४ पितर की सास को चंगा करना। १६ बहुत रोगियों को चंगा करना। १८ शिष्य होने के विषय में यीशु की कथा। २३ उस का आंधी को थांभना। २८ दो मनुष्यों में से भूत निकालना।

१ जब यीशु उस पर्ब्बत से उतरा तब बड़ी भीड़ उस के पीछे हो लिई। २ और देखो एक कोढ़ी ने आ उस को प्रणाम कर कहा हे प्रभु जो आप चाहें तो मुझे शुद्ध कर सकते हैं। ३ यीशु ने हाथ बढ़ा उसे छूके कहा मैं तो चाहता हूं शुद्ध हो जा. और उस का कोढ़ तुरन्त शुद्ध हो गया। ४ तब यीशु ने उस से कहा देख किसी से मत कह परन्तु जा अपने तईं याजक को दिखा और जो चढ़ावा मूसा ने ठहराया उसे लोगों पर साक्षी होने के लिये चढ़ा।

५ जब यीशु ने कफर्नाहुम में प्रवेश किया तब एक शत-पति ने उस पास आ उस से बिन्ती किई. ६ कि हे प्रभु मेरा सेवक घर में अर्द्धांग रोग से अति पीड़ित पड़ा है। ७ यीशु ने उस से कहा मैं आके उसे चंगा करूंगा। ८ शतपति ने उत्तर दिया कि हे प्रभु मैं इस योग्य नहीं कि आप मेरे घर में आवें पर वचन मात्र भी कहिये तो मेरा सेवक चंगा हो जायगा। ९ क्योंकि मैं पराधीन मनुष्य हूं और योद्धा मेरे

बश में हैं और मैं एक को कहता हूं जा तो वह जाता है और दूसरे को आ तो वह आता है और अपने दास को
१० यह कर तो वह करता है । यह सुनके यीशु ने अचंभा किया और जो लोग उस के पीछे से आते थे उन से कहा मैं तुम से सच कहता हूं कि मैं ने इस्रायेली लोगों में भी
११ ऐसा बड़ा विश्वास नहीं पाया है। और मैं तुम से कहता हूं कि बहुतेरे लोग पूर्व्व और पश्चिम से आके इब्राहीम और इसहाक और याकूब के साथ स्वर्ग के राज्य में बैठेंगे।
१२ परन्तु राज्य के सन्तान बाहर के अंधकार में डाले जायेंगे
१३ जहां रोना और दांत पीसना होगा। तब यीशु ने शतपति से कहा जाइये जैसा तू ने विश्वास किया है वैसा ही तुझे होवे और उस का सेवक उसी घड़ी चंगा हो गया।
१४ यीशु ने पितर के घर में आके उस की सास को पड़ी हुई
१५ और ज्वर से पीड़ित देखा। उस ने उस का हाथ छूआ और ज्वर ने उस को छोड़ा और वह उठके उन की सेवा करने लगी।
१६ सांझ को लोग बहुत से भूतग्रस्तों को उस पास लाये और उस ने बचन ही से भूतों को निकाला और सब रोगियों को
१७ चंगा किया. कि जो बचन यिशैयाह भविष्यद्वक्ता से कहा गया था कि उस ने हमारी दुर्बलताओं को ग्रहण किया और रोगों को उठा लिया सो पूरा होवे।
१८ यीशु ने अपने आसपास बड़ी भीड़ देखके उस पार
१९ जाने की आज्ञा किई। और एक अध्यापक ने आ उस से कहा हे गुरु जहां जहां आप जायें तहां मैं आप के पीछे
२० चलूंगा। यीशु ने उस से कहा लोमड़ियों को मांदें और आकाश के पंछियों को बसेरे हैं परन्तु मनुष्य के पुत्र को सिर
२१ रखने का स्थान नहीं है। उस के शिष्यों में से दूसरे ने उस से

कहा हे प्रभु मुझे पहिले जाके अपने पिता को गाड़ने दीजिये। यीशु ने उस से कहा तू मेरे पीछे हो ले और २२ मृतकों को अपने मृतकों को गाड़ने दे।

जब वह नाव पर चढ़ा तब उस के शिष्य उस के पीछे २३ हो लिये। और देखो समुद्र में ऐसे बड़े हिलकोरे उठे कि २४ नाव लहरों से ढंप जाती थी परन्तु वह सोता था। तब २५ उस के शिष्यों ने उस पास आके उसे जगाके कहा हे प्रभु हमें बचाइये हम नष्ट होते हैं। उस ने उन से कहा हे अल्प २६ विश्वासियो क्यों डरते हो. तब उस ने उठके बयार और समुद्र को डांटा और बड़ा नीवा हो गया। और वे लोग २७ अचंभा करके बोले यह कैसा मनुष्य है कि बयार और समुद्र भी उस की आज्ञा मानते हैं।

जब यीशु उस पार गिर्गाशियों के देश में पहुंचा तब २८ दो भूतग्रस्त मनुष्य कबरस्थान में से निकलते हुए उस से आ मिले जो यहां लों अति प्रचंड थे कि उस मार्ग से कोई नहीं जा सकता था। और देखो उन्हों ने चिल्लाके कहा २९ हे यीशु ईश्वर के पुत्र आप को हम से क्या काम. क्या आप समय के आगे हमें पीड़ा देने को यहां आये हैं। बहुत ३० से सूअरों का एक झुंड उन से कुछ दूर चरता था। सो भूतों ३१ ने उस से बिन्ती कर कहा जो आप हमें निकालते हैं तो सूअरों के झुंड में पैठने दीजिये। उस ने उन से कहा जाओ ३२ और वे निकलके सूअरों के झुंड में पैठे और देखो सूअरों का सारा झुंड कड़ाड़े पर से समुद्र में दौड़ गया और पानी में डूब मरा। पर चरवाहे भागे और नगर में जाके सब ३३ बातें और भूतग्रस्तों की कथा भी सुनाईं। और देखो सारे ३४ नगर के लोग यीशु से भेंट करने को निकले और उस को देखके बिन्ती किई कि हमारे सिवानों से निकल जाइये।

९ नवां पर्व्व ।

१ यीशु का एक अर्द्धांगी को चंगा करना और उस का पाप क्षमा करना । ९ मत्ती को बुलाना और पापियों के संग भोजन करना । १४ उपवास करने का ब्योरा बताना । १८ एक कन्या को जिलाना और एक स्त्री को चंगा करना । २७ दो अंधों के नेत्र खोलना । ३२ भूतग्रस्त गूंगे को चंगा करना । ३५ दीनहीनों पर यीशु की दया ।

१ यीशु नाव पर चढ़के उस पार जाके अपने नगर में पहुंचा।
२ देखो लोग एक अर्द्धांगी को खाट पर पड़े हुए उस पास लाये और यीशु ने उन्हों का बिश्वास देखके उस अर्द्धांगी से कहा हे पुत्र ढाढ़स कर तेरे पाप क्षमा किये गये हैं ।
३ तब देखो कितने अध्यापकों ने अपने अपने मन में कहा
४ यह तो ईश्वर की निन्दा करता है । यीशु ने उन के मन की बातें जानके कहा तुम लोग अपने अपने मन में क्यों बुरी
५ चिन्ता करते हो । कौन बात सहज है यह कहना कि तेरे पाप क्षमा किये गये हैं अथवा यह कहना कि उठ
६ और चल । परन्तु जिस्तें तुम जानो कि मनुष्य के पुत्र को पृथिवी पर पाप क्षमा करने का अधिकार है (तब उस ने उस अर्द्धांगी से कहा) उठ अपनी खाट उठाके अपने घर
७ को जा । वह उठके अपने घर को चला गया । लोगों ने
८ यह देखके अचंभा किया और ईश्वर की स्तुति किई जिस ने मनुष्यों को ऐसा अधिकार दिया ।
९ वहां से आगे बढ़के यीशु ने एक मनुष्य को कर उगाहने के स्थान में बैठे देखा जिस का नाम मत्ती था और उस से कहा मेरे पीछे आ . तब वह उठके उस के पीछे हो लिया।
१० जब यीशु घर में भोजन पर बैठा तब देखो बहुत कर उगाहनेहारे और पापी लोग आ उस के और उस के शिष्यों
११ के संग बैठ गये । यह देखके फरीशियों ने उस के शिष्यों से कहा तुम्हारा गुरु कर उगाहनेहारों और पापियों के संग

क्यों खाता है। यीशु ने यह सुनके उन से कहा निरोगियों १२ को वैद्य का प्रयोजन नहीं है परन्तु रोगियों को। तुम १३ जाके इस का अर्थ सीखो कि मैं दया को चाहता हूं बलि-दान को नहीं. क्योंकि मैं धर्म्मियों को नहीं परन्तु पापियों को पश्चात्ताप के लिये बुलाने आया हूं।

तब योहन के शिष्यों ने उस पास आ कहा हम लोग १४ और फरीशी लोग क्यों बार बार उपवास करते हैं परन्तु आप के शिष्य उपवास नहीं करते। यीशु ने उन से कहा १५ जब लों दूल्हा सखाओं के संग रहे तब लों क्या वे शोक कर सकते हैं. परन्तु वे दिन आवेंगे जिन में दूल्हा उन से अलग किया जायगा तब वे उपवास करेंगे। कोई मनुष्य १६ कोरे कपड़े का टुकड़ा पुराने वस्त्र में नहीं लगाता है क्यों-कि वह टुकड़ा वस्त्र से कुछ और भी फाड़ लेता है और उस का फटा बढ़ जाता है। और लोग नया दाख रस १७ पुराने कुप्पों में नहीं भरते नहीं तो कुप्पे फट जाते हैं और दाख रस बह जाता है और कुप्पे नष्ट होते हैं. परन्तु नया दाख रस नये कुप्पों में भरते हैं और दोनों की रक्षा होती है।

यीशु उन से यह बातें कहता ही था कि देखो एक १८ अध्यक्ष ने आके उस को प्रणाम कर कहा मेरी बेटी अभी मर गई है परन्तु आप आके अपना हाथ उस पर रखिये तो वह जीयेगी। तब यीशु उठके अपने शिष्यों समेत १९ उस के पीछे हो लिया।

और देखो एक स्त्री ने जिस का बारह बरस से लोहू २० बहता था पीछे से आ उस के वस्त्र के आंचल को छूआ। क्योंकि उस ने अपने मन में कहा यदि मैं केवल उस के २१ वस्त्र को छूओं तो चंगी हो जाऊंगी। यीशु ने पीछे फिरके २२

उसे देखके कहा हे पुत्री ढाढ़स कर तेरे बिश्वास ने तुझे चंगा किया है . सो वह स्त्री उसी घड़ी से चंगी हुई ।
२३ यीशु ने उस अध्यक्ष के घर पर पहुंचके बजनियों को और
२४ बहुत लोगों को धूम मचाते देखा . और उन से कहा अलग जाओ कन्या मरी नहीं पर सोती है . और वे उस का
२५ उपहास करने लगे । परन्तु जब लोग बाहर किये गये तब उस ने भीतर जा कन्या का हाथ पकड़ा और वह उठी ।
२६ यह कीर्त्ति उस सारे देश में फैल गई ।
२७ जब यीशु वहां से आगे बढ़ा तब दो अंधे पुकारते और यह कहते हुए उस के पीछे हो लिये कि हे दाऊद के
२८ सन्तान हम पर दया कीजिये । जब वह घर में पहुंचा तब वे अंधे उस पास आये और यीशु ने उन से कहा क्या तुम बिश्वास करते हो कि मैं यह काम कर सकता हूं . वे
२९ उस से बोले हां प्रभु । तब उस ने उन की आंखें छूके कहा
३० तुम्हारे बिश्वास के समान तुम को होवे । इस पर उन की आंखें खुल गईं और यीशु ने उन्हें चिताके कहा देखो कोई
३१ इस को न जाने । तौभी उन्हों ने बाहर जाके उस सारे देश में उस की कीर्त्ति फैलाई ।
३२ जब वे बाहर जाते थे देखो लोग एक भूतग्रस्त गूंगे
३३ मनुष्य को यीशु पास लाये । जब भूत निकाला गया तब गूंगा बोलने लगा और लोगों ने अचंभा कर कहा इस्रायेल
३४ में ऐसा कभी न देखा गया । परन्तु फरीशियों ने कहा वह भूतों के प्रधान की सहायता से भूतों को निकालता है ।
३५ तब यीशु सब नगरों और गांवों में उन की सभाओं में उपदेश करता हुआ और राज्य का सुसमाचार प्रचार करता हुआ और लोगों में हर एक रोग और हर एक व्याधि को
३६ चंगा करता हुआ फिरा किया । जब उस ने बहुत लोगों

को देखा तब उस को उन पर दया आई क्योंकि वे बिन रखवाले की भेड़ों की नाईं व्याकुल और छिन्नभिन्न किये हुए थे । तब उस ने अपने शिष्यों से कहा कटनी बहुत है परन्तु ३७ बनिहार थोड़े हैं। इस लिये कटनी के स्वामी से बिन्ती ३८ करो कि वह अपनी कटनी में बनिहारों को भेजे ।

१० दसवां पर्व्व ।

१ यीशु का बारह प्रेरितों को ठहराके भेजना । १६ उन्हें अनेक बातों के विषय में चिताना और सिखाना ।

यीशु ने अपने बारह शिष्यों को अपने पास बुलाके उन्हें १ अशुद्ध भूतों पर अधिकार दिया कि उन्हें निकालें और हर एक रोग और हर एक व्याधि को चंगा करें। बारह २ प्रेरितों के नाम ये हैं पहिला शिमोन जो पितर कहावता है और उस का भाई अन्द्रिय . जबदी का पुत्र याकूब और उस का भाई योहन . फिलिप और बर्थलमई . थोमा और ३ मत्ती कर उगाहनेहारा . अलफई का पुत्र याकूब और लिब्बई जो थद्दई कहावता है . शिमोन कानानी और ४ यिहूदा इस्करियोती जिस ने उसे पकड़वाया। इन बारहों ५ को यीशु ने यह आज्ञा देके भेजा कि अन्यदेशियों की ओर मत जाओ और शोमिरोनियों के किसी नगर में मत पैठो। परन्तु इस्रायेल के घराने की खोई हुई भेड़ों के पास जाओ। ६ और जाते हुए प्रचार कर कहो कि स्वर्ग का राज्य निकट ७ आया है । रोगियों को चंगा करो कोढ़ियों को शुद्ध करो ८ मृतकों को जिलाओ भूतों को निकालो . तुम ने सेंतमेंत पाया है सेंतमेंत देओ। अपने पटुकों में न सोना न रूपा ९ न ताम्बा रखो। मार्ग के लिये न झोली न दो अंगे न जूते १० न लाठी लेओ क्योंकि बनिहार अपने भोजन के योग्य है। जिस किसी नगर अथवा गांव में तुम प्रवेश करो बूझो ११

उस में कौन योग्य है और जब लों वहां से न निकलो तब
१२ लों उस के यहां रहो। घर में प्रवेश करते हुए उस को
१३ आशीस देओ। जो वह घर योग्य होय तो तुम्हारा
कल्याण उस पर पहुंचे परन्तु जो वह योग्य न होय तो
१४ तुम्हारा कल्याण तुम्हारे पास फिर आवे। और जो कोई
तुम्हें ग्रहण न करे और तुम्हारी बातें न सुने उस के घर
से अथवा उस नगर से निकलते हुए अपने पांवों की धूल
१५ झाड़ डालो। मैं तुम से सच कहता हूं कि बिचार के दिन
में उस नगर की दशा से सदोम और अमोरा के देश की दशा
सहने योग्य होगी।

१६ देखो मैं तुम्हें भेड़ों के समान हुंड़ारों के बीच में भेजता
हूं सो सांपों की नाईं बुद्धिमान और कपोतों की नाईं सूधे
१७ होओ। परन्तु मनुष्यों से चौकस रहो क्योंकि वे तुम्हें
पंचायतों में सौंपेंगे और अपनी सभाओं में तुम्हें कोड़े मारेंगे।
१८ तुम मेरे लिये अध्यक्षों और राजाओं के आगे उन पर और
अन्यदेशियों पर साक्षी होने के लिये पहुंचाये जाओगे।
१९ परन्तु जब वे तुम्हें सौंपें तब किस रीति से अथवा क्या
कहोगे इस की चिन्ता मत करो क्योंकि जो कुछ तुम को
२० कहना होगा सो उसी घड़ी तुम्हें दिया जायगा। बोलने-
हारे तो तुम नहीं हो परन्तु तुम्हारे पिता का आत्मा तुम
२१ में बोलता है। भाई भाई को और पिता पुत्र को बध किये
जाने को सौंपेंगे और लड़के माता पिता के बिरुद्ध उठके
२२ उन्हें घात करवावेंगे। मेरे नाम के कारण सब लोग तुम
से वैर करेंगे पर जो अन्त लों स्थिर रहे सोई त्राण पावेगा।
२३ जब वे तुम्हें एक नगर में सतावें तब दूसरे में भाग जाओ.
मैं तुम से सत्य कहता हूं तुम इस्रायेल के सब नगरों में
नहीं फिर चुकोगे कि उतने में मनुष्य का पुत्र आवेगा।

शिष्य गुरु से बड़ा नहीं है और न दास अपने स्वामी से । २४
यही बहुत है कि शिष्य अपने गुरु के तुल्य और दास २५
अपने स्वामी के तुल्य होवे . जो उन्हों ने घर के स्वामी का
नाम बालजिबूल रखा है तो वे कितना अधिक करके उस के
घरवालों का वैसा नाम रखेंगे । सो तुम उन से मत डरो २६
क्योंकि कुछ छिपा नहीं है जो प्रगट न किया जायगा
और न कुछ गुप्त है जो जाना न जायगा । जो मैं तुम से २७
अंधियारे में कहता हूं उसे उजियाले में कहो और जो तुम
कानों में सुनते हो उसे कोठों पर से प्रचार करो । उन से २८
मत डरो जो शरीर को मार डालते हैं पर आत्मा को मार
डालने नहीं सकते हैं परन्तु उसी से डरो जो आत्मा और
शरीर दोनों को नरक में नाश कर सकता है । क्या एक २९
पैसे में दो गौरैया नहीं बिकतीं तौभी तुम्हारे पिता बिना
उन में से एक भी भूमि पर नहीं गिरेगी । तुम्हारे सिर के ३०
बाल भी सब गिने हुए हैं । इस लिये मत डरो तुम बहुत ३१
गौरैयाओं से अधिक मोल के हो । जो कोई मनुष्यों के आगे ३२
मुझे मान लेगा उसे मैं भी अपने स्वर्गबासी पिता के आगे
मान लेऊंगा । परन्तु जो कोई मनुष्यों के आगे मुझ से मुकरे ३३
उस से मैं भी अपने स्वर्गबासी पिता के आगे मुकरूंगा ।
मत समझो कि मैं पृथिवी पर मिलाप करवाने को आया हूं ३४
मैं मिलाप करवाने को नहीं परन्तु खड्ग चलवाने को आया
हूं । मैं मनुष्य को उस के पिता से और बेटी को उस की मां से ३५
और पतोहू को उस की सास से अलग करने आया हूं ।
मनुष्य के घर ही के लोग उस के वैरी होंगे । जो माता अथवा ३६ ३७
पिता को मुझ से अधिक प्रेम करता है सो मेरे योग्य नहीं
और जो पुत्र अथवा पुत्री को मुझ से अधिक प्रेम करता है
सो मेरे योग्य नहीं । और जो अपना क्रूश लेके मेरे पीछे ३८

३९ नहीं आता है सो मेरे योग्य नहीं। जो अपना प्राण पावे सो उसे खोवेगा और जो मेरे लिये अपना प्राण खोवे सो
४० उसे पावेगा। जो तुम्हें ग्रहण करता है सो मुझे ग्रहण करता है और जो मुझे ग्रहण करता है सो मेरे भेजनेहारे
४१ को ग्रहण करता है। जो भविष्यद्वक्ता के नाम से भविष्यद्वक्ता को ग्रहण करे सो भविष्यद्वक्ता का फल पावेगा और जो धर्म्मी के नाम से धर्म्मी को ग्रहण करे सो धर्म्मी का फल
४२ पावेगा। जो कोई इन छोटों में से एक को शिष्य के नाम से केवल एक कटोरा ठंढा पानी पिलावे मैं तुम से सच कहता हूं वह किसी रीति से अपना फल न खोवेगा।

११ एग्यारहवां पर्व्व ।

१ यीशु का योहन के शिष्यों को उत्तर देना। ७ योहन के विषय में उस की साक्षी। १६ उस समय के लोगों की उपमा। २० कई एक नगरों के अविश्वास पर उलहना। २५ यीशु का अपने पिता का धन्य मानना। २८ दुःखी लोगों का नेवता करना।

१ जब यीशु अपने बारह शिष्यों को आज्ञा दे चुका तब उन के नगरों में शिक्षा और उपदेश करने को वहां से चला।
२ योहन ने बन्दीगृह में ख्रीष्ट के कार्य्यों का समाचार सुनके अपने शिष्यों में से दो जनों को उस से यह कहने को भेजा.
३ कि जो आनेवाला था सो क्या आप ही हैं अथवा हम
४ दूसरे की बाट जोहें। यीशु ने उन्हें उत्तर दिया कि जो कुछ तुम सुनते और देखते हो सो जाके योहन से कहो.
५ कि अंधे देखते हैं और लंगड़े चलते हैं कोढ़ी शुद्ध किये जाते हैं और बहिरे सुनते हैं मृतक जिलाये जाते हैं और
६ कंगालों को सुसमाचार सुनाया जाता है. और जो कोई मेरे विषय में ठोकर न खावे सो धन्य है।
७ जब वे चले जाते थे तब यीशु योहन के विषय में लोगों से कहने लगा तुम जंगल में क्या देखने को निकले क्या

पवन से हिलते हुए नरकट को। फिर तुम क्या देखने को ८
निकले क्या सूक्ष्म वस्त्र पहिने हुए मनुष्य को. देखो जो सूक्ष्म
वस्त्र पहिनते हैं सो राजाओं के घरों में हैं। फिर तुम क्या ९
देखने को निकले क्या भविष्यद्वक्ता को. हां मैं तुम से कहता
हूं एक मनुष्य को जो भविष्यद्वक्ता से भी अधिक है। क्यों- १०
कि यह वही है जिस के विषय में लिखा है कि देख मैं
अपने दूत को तेरे आगे भेजता हूं जो तेरे आगे तेरा
पन्थ बनावेगा। मैं तुम से सच कहता हूं कि जो स्त्रियों ११
से जन्मे हैं उन में से योहन बपतिसमा देनेहारे से बड़ा कोई
प्रगट नहीं हुआ है परन्तु जो स्वर्ग के राज्य में अति छोटा
है सो उस से बड़ा है। योहन बपतिसमा देनेहारे के दिनों १२
से अब लों स्वर्ग के राज्य के लिये बरियाई किई जाती है
और बरियार लोग उसे ले लेते हैं। क्योंकि योहन लों १३
सारे भविष्यद्वक्ताओं ने और व्यवस्था ने भविष्यद्वाणी कही।
और जो तुम इस बात को ग्रहण करोगे तो जानो कि १४
एलियाह जो आनेवाला था सो यही है। जिस को सुनने के १५
कान हों सो सुने।

मैं इस समय के लोगों की उपमा किस से देऊंगा. वे १६
बालकों के समान हैं जो बाजारों में बैठके अपने संगियों को
पुकारते. और कहते हैं हम ने तुम्हारे लिये बांसली बजाई १७
और तुम न नाचे हम ने तुम्हारे लिये विलाप किया और
तुम ने छाती न पीटी। क्योंकि योहन न खाता न पीता १८
आया और वे कहते हैं उसे भूत लगा है। मनुष्य का १९
पुत्र खाता और पीता आया है और वे कहते हैं देखो
पेटू और मद्यप मनुष्य कर उगाहनेहारों और पापियों का
मित्र. परन्तु ज्ञान अपने सन्तानों से निर्दोष ठहराया
गया है।

२० तब वह उन नगरों को जिन्हों में उस के अधिक आश्चर्य्य कर्म्म किये गये उलहना देने लगा क्योंकि उन्हों ने पश्चा-
२१ त्ताप नहीं किया। हाय तू कोराजीन . हाय तू बैतसैदा . जो आश्चर्य्य कर्म्म तुम्हों में किये गये हैं सो यदि सोर और सीदोन में किये जाते तो बहुत दिन बीते होते कि वे
२२ टाट पहिनके और राख में बैठके पश्चात्ताप करते। परन्तु मैं तुम से कहता हूं कि बिचार के दिन में तुम्हारी दशा से
२३ सोर और सीदोन की दशा सहने योग्य होगी। और हे कफर्नाहुम जो स्वर्ग लों ऊंचा किया गया है तू नरक लों नीचा किया जायगा . जो आश्चर्य्य कर्म्म तुझ में किये गये हैं सो यदि सदोम में किये जाते तो वह आज लों
२४ बना रहता। परन्तु मैं तुम से कहता हूं कि बिचार के दिन में तेरी दशा से सदोम के देश की दशा सहने योग्य होगी।

२५ इस पर उस समय में यीशु ने कहा हे पिता स्वर्ग और पृथिवी के प्रभु मैं तेरा धन्य मानता हूं कि तू ने इन बातों को ज्ञानवानों और बुद्धिमानों से गुप्त रखा है और उन्हें
२६ बालकों पर प्रगट किया है। हां हे पिता क्योंकि तेरी
२७ दृष्टि में यही अच्छा लगा। मेरे पिता ने मुझे सब कुछ सोंपा है और पुत्र को कोई नहीं जानता है केवल पिता और पिता को कोई नहीं जानता है केवल पुत्र और वही जिस पर पुत्र उसे प्रगट किया चाहे।

२८ हे सब लोगो जो परिश्रम करते और बोझ से दबे हो
२९ मेरे पास आओ मैं तुम्हें बिश्राम देऊंगा। मेरा जूआ अपने ऊपर लेओ और मुझ से सीखो क्योंकि मैं नम्र और मन में दीन हूं और तुम अपने मनों में बिश्राम पाओगे।
३० क्योंकि मेरा जूआ सहज और मेरा बोझ हलका है।

१२ बारहवां पर्ब्ब।

१ यीशु का बिश्रामवार के विषय में निर्णय करना। १४ उस की नम्रता से भविष्यद्वाक्य का पूरा होना। २२ लोगों के अपवाद का खंडन। ३३ मन के स्वभाव का दृष्टान्त। ३८ यिहूदियों के दोष का प्रमाण। ४३ उन की बुरी दशा। ४६ यीशु के कुटुम्ब का बर्णन।

उस समय में यीशु बिश्राम के दिन खेतों में होके गया १ और उस के शिष्य भूखे हो बालें तोड़ने और खाने लगे। फरीशियों ने यह देखके उस से कहा देखिये जो काम २ बिश्राम के दिन में करना उचित नहीं है सो आप के शिष्य करते हैं। उस ने उन से कहा क्या तुम ने नहीं पढ़ा है कि ३ दाऊद ने जब वह और उस के संगी लोग भूखे हुए तब क्या किया. उस ने क्योंकर ईश्वर के घर में जाके भेंट की ४ रोटियां खाईं जिन्हें खाना न उस को न उस के संगियों को परन्तु केवल याजकों को उचित था। अथवा क्या तुम ने ५ व्यवस्था में नहीं पढ़ा है कि मन्दिर में याजक लोग बिश्राम के दिनों में बिश्रामवार की बिधि को लंघन करते हैं और निर्दोष हैं। परन्तु मैं तुम से कहता हूं कि यहां एक है जो ६ मन्दिर से भी बड़ा है। जो तुम इस का अर्थ जानते कि मैं ७ दया को चाहता हूं बलिदान को नहीं तो तुम निर्दोषों को दोषी न ठहराते। मनुष्य का पुत्र बिश्रामवार का भी ८ प्रभु है।

वहां से जाके वह उन की सभा के घर में आया। और ९ १० देखो एक मनुष्य था जिस का हाथ सूख गया था और उन्हों ने उस पर दोष लगाने के लिये उस से पूछा क्या बिश्राम के दिनों में चंगा करना उचित है। उस ने उन से कहा ११ तुम में से कौन मनुष्य होगा कि उस का एक भेड़ हो और जो वह बिश्राम के दिन गढ़े में गिरे तो उसे पकड़के न निकालेगा। फिर मनुष्य भेड़ से कितना बड़ा है. इस लिये १२

१३ बिश्राम के दिनों में भलाई करना उचित है। तब उस ने उस मनुष्य से कहा अपना हाथ बढ़ा . उस ने उस को बढ़ाया और वह फिर दूसरे हाथ की नाईं भला चंगा हो गया ।

१४ तब फरीशियों ने बाहर जाके यीशु के बिरुद्ध आपस में

१५ बिचार किया इस लिये कि उसे नाश करें। यह जानके यीशु वहां से चला गया और बड़ी भीड़ उस के पीछे हो

१६ लिई और उस ने उन सभों को चंगा किया . और उन्हें

१७ दृढ़ आज्ञा दिई कि मुझे प्रगट मत करो . कि जो बचन यिशैयाह भविष्यद्वक्ता से कहा गया था सो पूरा होवे .

१८ कि देखो मेरा सेवक जिसे मैं ने चुना है और मेरा प्रिय जिस से मेरा मन अति प्रसन्न है . मैं अपना आत्मा उस पर रखूंगा और वह अन्यदेशियों को सत्य व्यवस्था बतावेगा ।

१९ वह न झगड़ेगा न धूम मचावेगा न सड़कों में कोई उस

२० का शब्द सुनेगा । वह जब लों सत्य व्यवस्था को प्रबल न करे तब लों कुचले हुए नरकट को न तोड़ेगा और धूआं

२१ देनेहारी बत्ती को न बुझावेगा। और अन्यदेशी लोग उस के नाम पर आशा रखेंगे ।

२२ तब लोग एक भूतग्रस्त अंधे और गूंगे मनुष्य को उस पास लाये और उस ने उसे चंगा किया यहां लों कि वह

२३ जो अंधा औ गूंगा था देखने औ बोलने लगा। इस पर सब लोग बिस्मित होके बोले यह क्या दाऊद का सन्तान

२४ है। परन्तु फरीशियों ने यह सुनके कहा यह तो बाल-जिबूल नाम भूतों के प्रधान की सहायता बिना भूतों को

२५ नहीं निकालता है । यीशु ने उन के मन की बातें जानके उन से कहा जिस जिस राज्य में फूट पड़ी है वह राज्य उजड़ जाता है और कोई नगर अथवा घराना जिस में

फूट पड़ी है नहीं ठहरेगा । और यदि शैतान शैतान को २६
निकालता है तो उस में फूट पड़ी है फिर उस का राज्य
क्योंकर ठहरेगा । और जो मैं बालजिबूल की सहायता से २७
भूतों को निकालता हूं तो तुम्हारे सन्तान किस की सहायता
से निकालते हैं. इस लिये वे तुम्हारे न्याय करनेहारे होंगे ।
परन्तु जो मैं ईश्वर के आत्मा की सहायता से भूतों को २८
निकालता हूं तो निस्सन्देह ईश्वर का राज्य तुम्हारे पास
पहुंच चुका है । यदि बलवन्त को कोई पहिले न बांधे २९
तो क्योंकर उस बलवन्त के घर में पैठके उस की सामग्री
लूट सके. परन्तु उसे बांधके उस के घर को लूटेगा । जो ३०
मेरे संग नहीं है सो मेरे विरुद्ध है और जो मेरे संग नहीं
बटोरता सो बिथराता है । इस लिये मैं तुम से कहता हूं ३१
कि सब प्रकार का पाप और निन्दा मनुष्यों के लिये क्षमा
किया जायगा परन्तु पवित्र आत्मा की निन्दा मनुष्यों के
लिये नहीं क्षमा किई जायगी । जो कोई मनुष्य के पुत्र के ३२
विरोध में बात कहे वह उस के लिये क्षमा किई जायगी
परन्तु जो कोई पवित्र आत्मा के विरोध में कुछ कहे वह
उस के लिये न इस लोक में न परलोक में क्षमा किया
जायगा ।

यदि पेड़ को अच्छा कहो तो उस के फल को भी अच्छा ३३
कहो अथवा पेड़ को निकम्मा कहो तो उस के फल को भी
निकम्मा कहो क्योंकि फल ही से पेड़ पहचाना जाता है ।
हे सांपों के वंश तुम बुरे होके अच्छी बातें क्योंकर कह ३४
सकते हो क्योंकि जो मन में भरा है उसी को मुंह बोलता
है । भला मनुष्य मन के भले भंडार से भली बातें निकालता ३५
है और बुरा मनुष्य बुरे भंडार से बुरी बातें निकालता है ।
मैं तुम से कहता हूं कि मनुष्य जो जो अनर्थ बातें कहें ३६

३७ बिचार के दिन में हर एक बात का लेखा देंगे। क्योंकि तू अपनी बातों से निर्दोष अथवा अपनी बातों से दोषी ठहराया जायगा।

३८ इस पर कितने अध्यापकों और फरीशियों ने कहा हे
३९ गुरु हम आप से एक चिन्ह देखने चाहते हैं। उस ने उन्हें उत्तर दिया कि इस समय के दुष्ट और व्यभिचारी लोग चिन्ह ढूंढ़ते हैं परन्तु कोई चिन्ह उन को नहीं दिया
४० जायगा केवल यूनस भविष्यद्वक्ता का चिन्ह। जिस रीति से यूनस तीन दिन और तीन रात मछली के पेट में था उसी रीति से मनुष्य का पुत्र तीन दिन और तीन रात
४१ पृथिवी के भीतर रहेगा। निनिवीय लोग बिचार के दिन में इस समय के लोगों के संग खड़े हो उन्हें दोषी ठहरावेंगे क्योंकि उन्हों ने यूनस का उपदेश सुनके पश्चात्ताप किया और देखो यहां एक है जो यूनस से भी बड़ा है।
४२ दक्षिण की राणी बिचार के दिन में इस समय के लोगों के संग उठके उन्हें दोषी ठहरावेगी क्योंकि वह सुलेमान का ज्ञान सुनने को पृथिवी के अन्त से आई और देखो यहां एक है जो सुलेमान से भी बड़ा है।

४३ जब अशुद्ध भूत मनुष्य से निकल जाता है तब सूखे
४४ स्थानों में विश्राम ढूंढ़ता फिरता पर नहीं पाता है। तब वह कहता है कि मैं अपने घर में जहां से निकला फिर जाऊंगा और आके उसे सूना झाड़ा बुहारा सुथरा पाता
४५ है। तब वह जाके अपने से अधिक दुष्ट सात और भूतों को अपने संग ले आता है और वे भीतर पैठके वहां बास करते हैं और उस मनुष्य की पिछली दशा पहिली से बुरी होती है. इस समय के दुष्ट लोगों की दशा ऐसी होगी।

योशु लोगों से बात करता ही था कि देखो उस की ४६ माता और उस के भाई बाहर खड़े हुए उस से बोलने चाहते थे। तब किसी ने उस से कहा देखिये आप की माता ४७ और आप के भाई बाहर खड़े हुए आप से बोलने चाहते हैं। उस ने कहनेहारे को उत्तर दिया कि मेरी माता ४८ कौन है और मेरे भाई कौन हैं। और अपने शिष्यों की ४९ ओर अपना हाथ बढ़ाके उस ने कहा देखो मेरी माता और मेरे भाई। क्योंकि जो कोई मेरे स्वर्गबासी पिता की इच्छा ५० पर चले वही मेरा भाई और बहिन और माता है।

१३ तेरहवां पर्ब्ब।

१ बीज बोनेहारे का दृष्टान्त। १० दृष्टान्तों से उपदेश करने का कारण। १८ बोनेहारे के दृष्टान्त का अर्थ। २४ जंगली दाने का दृष्टान्त। ३१ राई के दाने और खमीर के दृष्टान्त। ३४ योशु के विषय में एक भविष्यद्वाक्य का पूरा होना। ३६ जंगली दाने के दृष्टान्त का अर्थ। ४४ गुप्त धन और मोती के दृष्टान्त। ४७ महाजाल का दृष्टान्त। ५१ ज्ञानवान शिष्यों की उपमा। ५३ योशु का अपने देश के लोगों में अपमान होना।

उस दिन योशु घर से निकलके समुद्र के तीर पर बैठा। १ और ऐसी बड़ी भीड़ उस पास एकट्ठी हुई कि वह नाव २ पर चढ़के बैठा और सब लोग तीर पर खड़े रहे। तब ३ उस ने उन से दृष्टान्तों में बहुत सी बातें कहीं कि देखो एक बोनेहारा बीज बोने को निकला। बोने में कितने बीज ४ मार्ग की ओर गिरे और पंछियों ने आके उन्हें चुग लिया। कितने पत्थरैली भूमि पर गिरे जहां उन को बहुत मिट्टी ५ न मिली और बहुत मिट्टी न मिलने से वे बेग उगे। परन्तु सूर्य्य उदय होने पर वे झुलस गये और जड़ न ६ पकड़ने से सूख गये। कितने कांटों के बीच में गिरे और ७ कांटों ने बढ़के उन को दबा डाला। परन्तु कितने अच्छी ८ भूमि पर गिरे और फल फले कोई सौ गुणे कोई

९ साठ गुणे कोई तीस गुणे। जिस को सुनने के कान हों सो सुने।

१० तब शिष्यों ने उस पास आ उस से कहा आप उन से
११ दृष्टान्तों में क्यों बोलते हैं। उस ने उन को उत्तर दिया कि तुम को स्वर्ग के राज्य के भेद जानने का अधिकार दिया गया
१२ है परन्तु उन को नहीं दिया गया है। क्योंकि जो कोई रखता है उस को और दिया जायगा और उस को बहुत होगा परन्तु जो कोई नहीं रखता है उस से जो कुछ उस
१३ के पास है सो भी ले लिया जायगा। इस लिये मैं उन से दृष्टान्तों में बोलता हूं क्योंकि वे देखते हुए नहीं देखते हैं
१४ और सुनते हुए नहीं सुनते और न बूझते हैं। और यिशैयाह की यह भविष्यद्वाणी उन में पूरी होती है कि तुम सुनते हुए सुनोगे परन्तु नहीं बूझोगे और देखते
१५ हुए देखोगे पर तुम्हें न सूझेगा। क्योंकि इन लोगों का मन मोटा हो गया है और वे कानों से ऊंचा सुनते हैं और अपने नेत्र मूंद लिये हैं ऐसा न हो कि वे कभी नेत्रों से देखें और कानों से सुनें और मन से समझें और फिर
१६ जावें और मैं उन्हें चंगा करूं। परन्तु धन्य तुम्हारे नेत्र कि वे देखते हैं और तुम्हारे कान कि वे सुनते हैं।
१७ क्योंकि मैं तुम से सच कहता हूं कि जो तुम देखते हो उस को बहुतेरे भविष्यद्वक्ताओं और धर्म्मियों ने देखने चाहा पर न देखा और जो तुम सुनते हो उस को सुनने चाहा पर न सुना।

१८
१९ सो तुम बोनेहारे के दृष्टान्त का अर्थ सुनो। जो कोई राज्य का वचन सुनके नहीं बूझता है उस के मन में जो कुछ बोया गया था सो वह दुष्ट आके छीन लेता है. यह
२० वही है जिस में बीज मार्ग की ओर बोया गया। जिस में

बीज पत्थरैली भूमि पर बोया गया सो वही है जो बचन को सुनके तुरन्त आनन्द से ग्रहण करता है। परन्तु उस २१ में जड़ न बंधने से वह थोड़ी बेर ठहरता है और बचन के कारण क्लेश अथवा उपद्रव होने पर तुरन्त ठोकर खाता है। जिस में बीज कांटों के बीच में बोया गया सो वही २२ है जो बचन सुनता है पर इस संसार की चिन्ता और धन की माया बचन को दबाती है और वह निष्फल होता है। पर जिस में बीज अच्छी भूमि पर बोया गया सो वही है २३ जो बचन सुनके बूझता है और वह तो फल देता है और कोई सौ गुणे कोई साठ गुणे कोई तीस गुणे फलता है।

उस ने उन्हें दूसरा दृष्टान्त दिया कि स्वर्ग के राज्य की २४ उपमा एक मनुष्य से दिई जाती है जिस ने अपने खेत में अच्छा बीज बोया। परन्तु जब लोग सोये थे तब उस २५ का बैरी आके गेहूं के बीच में जंगली बीज बोके चला गया। जब अंकुर निकले और बालें लगीं तब जंगली दाने भी २६ दिखाई दिये। इस पर गृहस्थ के दासों ने आ उस से कहा २७ हे स्वामी क्या आप ने अपने खेत में अच्छा बीज न बोया. फिर जंगली दाने उस में कहां से आये। उस ने उन से कहा २८ किसी बैरी ने यह किया है. दासों ने उस से कहा आप की इच्छा होय तो हम जाके उन को बटोर लेवें। उस ने कहा २९ सो नहीं न हो कि जंगली दाने बटोरने में उन के संग गेहूं भी उखाड़ लेओ। कटनी लों दोनों को एक संग बढ़ने ३० देओ और कटनी के समय में मैं काटनेहारों से कहूंगा पहिले जंगली दाने बटोरके जलाने के लिये उन के गट्ठे बांधो परन्तु गेहूं को मेरे खत्ते में एकट्ठा करो।

उस ने उन्हें एक और दृष्टान्त दिया कि स्वर्ग का राज्य ३१ राई के एक दाने की नाईं है जिसे किसी मनुष्य ने लेके अपने

३२ खेत में बोया। वह तो सब बीजों से छोटा है परन्तु जब वढ़ जाता तब साग पात से बड़ा होता है और ऐसा पेड़ हो जाता है कि आकाश के पंछी आके उस की डालियों पर
३३ बसेरा करते हैं। उस ने एक और दृष्टान्त उन से कहा कि स्वर्ग का राज्य खमीर की नाईं है जिस को किसी स्त्री ने लेके तीन पसेरी आटे में छिपा रखा यहां लों कि सब खमीर हो गया।

३४ यह सब बातें यीशु ने दृष्टान्तों में लोगों से कहीं और
३५ बिना दृष्टान्त से उन को कुछ न कहा. कि जो बचन भविष्यद्वक्ता से कहा गया था कि मैं दृष्टान्तों में अपना मुंह खोलूंगा जो बातें जगत की उत्पत्ति से गुप्त रहीं उन्हें वर्णन करूंगा सो पूरा होवे।

३६ तब यीशु लोगों को विदा कर घर में आया और उस के शिष्यों ने उस पास आ कहा खेत के जंगली दाने के दृष्टान्त
३७ का अर्थ हमें समझाइये। उस ने उन को उत्तर दिया कि
३८ जो अच्छा बीज बोता है सो मनुष्य का पुत्र है। खेत तो संसार है अच्छा बीज राज्य के सन्तान हैं और जंगली
३९ बीज दुष्ट के सन्तान हैं। जिस बैरी ने उन को बोया सो शैतान है कटनी जगत का अन्त है और काटनेहारे स्वर्ग-
४० दूत हैं। सो जैसे जंगली दाने बटोरे जाते और आग से
४१ जलाये जाते हैं वैसा ही इस जगत के अन्त में होगा। मनुष्य का पुत्र अपने दूतों को भेजेगा और वे उस के राज्य में से सब ठोकर के कारणों को और कुकर्म्म करनेहारों को बटोर लेंगे.
४२ और उन्हें आग के कुंड में डालेंगे जहां रोना औ दांत
४३ पीसना होगा। तब धर्म्मी लोग अपने पिता के राज्य में सूर्य्य की नाईं चमकेंगे. जिस को सुनने के कान हों सो सुने।

४४ फिर स्वर्ग का राज्य खेत में छिपाये हुए धन के समान

है जिसे किसी मनुष्य ने पाके गुप्त रखा और वह उस के आनन्द के कारण जाके अपना सब कुछ बेचके उस खेत को मोल लेता है। फिर स्वर्ग का राज्य एक ब्योपारी के समान ४५ है जो अच्छे मोतियों को ढूंढ़ता था। उस ने जब एक बड़े ४६ मोल का मोती पाया तब जाके अपना सब कुछ बेचके उसे मोल लिया।

फिर स्वर्ग का राज्य महाजाल के समान है जो समुद्र में ४७ डाला गया और हर प्रकार की मछलियों को घेर लिया। जब वह भर गया तब लोग उस को तीर पर खींच लाये ४८ और बैठके अच्छी अच्छी को पात्रों में बटोरा और निकम्मी निकम्मी को फेंक दिया। जगत के अन्त में वैसा ही होगा, ४९ स्वर्ग दूत आके दुष्टों को धर्म्मियों के बीच में से अलग करेंगे, और उन्हें आग के कुंड में डालेंगे जहां रोना औ दांत ५० पीसना होगा।

यीशु ने उन से कहा क्या तुम ने यह सब बातें समझीं, ५१ वे उस से बोले हां प्रभु। उस ने उन से कहा इस लिये हर ५२ एक अध्यापक जिस ने स्वर्ग के राज्य की शिक्षा पाई है गृहस्थ के समान है जो अपने भंडार से नई और पुरानी वस्तु निकालता है।

जब यीशु ये सब दृष्टान्त कह चुका तब वहां से चला ५३ गया। और उस ने अपने देश में आ उन की सभा के घर ५४ में उन्हें ऐसा उपदेश दिया कि वे अचंभित हो बोले इस को यह ज्ञान और ये आश्चर्य्य कर्म्म कहां से हुए। यह ५५ क्या बढ़ई का पुत्र नहीं है, क्या उस की माता का नाम मरियम और उस के भाइयों के नाम याकूब और योशी और शिमोन और यिहूदा नहीं हैं। और क्या उस की ५६ सब बहिनें हमारे यहां नहीं हैं, फिर उस को यह सब

५७ कहां से हुआ। सो उन्हों ने उस के विषय में ठोकर खाई परन्तु यीशु ने उन से कहा भविष्यद्वक्ता अपना देश और अपना घर छोड़के और कहीं निरादर नहीं होता है।
५८ और उस ने वहां उन के अविश्वास के कारण बहुत आश्चर्य्य कर्म्म नहीं किये।

१४ चैादहवां पर्व्व ।

१ योहन बपतिसमा देनेहारे की मृत्यु। १३ यीशु का बहुत रोगियों को चंगा करना। १५ पांच सहस्र मनुष्यों को थोड़े भोजन से तृप्त करना। २२ समुद्र पर चलना। ३४ गिनेसरत के रोगियों को चंगा करना।

१ उस समय में चैाथाई के राजा हेरोद ने यीशु की कीर्त्ति
२ सुनी. और अपने सेवकों से कहा यह तो योहन बपतिसमा देनेहारा है वह मृतकों में से जी उठा है इस लिये आश्चर्य्य
३ कर्म्म उस से प्रगट होते हैं। क्योंकि हेरोद ने अपने भाई फिलिप की स्त्री हेरोदिया के कारण योहन को पकड़के उसे
४ बांधा था और बन्दीगृह में डाला था। क्योंकि योहन ने उस से कहा था कि इस स्त्री को रखना तुझ को उचित
५ नहीं है। और वह उसे मार डालने चाहता था पर लोगों से डरा क्योंकि वे उसे भविष्यद्वक्ता जानते थे।
६ परन्तु हेरोद के जन्म दिन की सभा में हेरोदिया की पुत्री ने
७ सभा में नाच कर हेरोद को प्रसन्न किया। इस लिये उस ने किरिया खाके अंगीकार किया कि जो कुछ तू मांगे मैं तुझे
८ देऊंगा। वह अपनी माता की उस्काई हुई बोली योहन बपतिसमा देनेहारे का सिर यहां थाल में मुझे दीजिये।
९ तब राजा उदास हुआ परन्तु उस किरिया के और अपने
१० संग बैठनेहारों के कारण उस ने देने की आज्ञा किई। और
११ उस ने भेजकर बन्दीगृह में योहन का सिर कटवाया। और उस का सिर थाल में कन्या को पहुंचा दिया गया और

वह उस को अपनी मां के पास ले गई। तब उस के शिष्यों १२ ने आके उस की लोथ को उठाके गाड़ा और आके यीशु से इस का समाचार कहा ।

जब यीशु ने यह सुना तब नाव पर चढ़के वहां से किसी १३ जंगली स्थान में एकान्त में गया और लोग यह सुनके नगरों में से पैदल उस के पीछे हो लिये। यीशु ने निकलके १४ बहुत लोगों को देखा और उन पर दया कर उन के रोगियों को चंगा किया ।

जब सांझ हुई तब उस के शिष्यों ने उस पास आ कहा १५ यह तो जंगली स्थान है और बेला अब बीत गई है लोगों को विदा कीजिये कि वे बस्तियों में जाके अपने लिये भोजन मोल लेवें । यीशु ने उन से कहा उन्हें जाने का १६ प्रयोजन नहीं तुम उन्हें खाने को देओ । उन्हों ने उस से १७ कहा यहां हमारे पास केवल पांच रोटी और दो मछली हैं । उस ने कहा उन को यहां मेरे पास लाओ । तब उस १८ १९ ने लोगों को घास पर बैठने की आज्ञा दिई और उन पांच रोटियों और दो मछलियों को ले स्वर्ग की ओर देखके धन्यवाद किया और रोटियां तोड़के शिष्यों को दिईं और शिष्यों ने लोगों को दिईं । सो सब खाके तृप्त हुए और जो २० टुकड़े बच रहे उन्हों ने उन की बारह टोकरी भरी उठाईं। जिन्हों ने खाया सो स्त्रियों और बालकों को छोड़ पांच २१ सहस्र पुरुषों के अटकल थे ।

तब यीशु ने तुरन्त अपने शिष्यों को दृढ़ आज्ञा दिई २२ कि जब लों मैं लोगों को विदा करूं तुम नाव पर चढ़के मेरे आगे उस पार जाओ । वह लोगों को विदा कर प्रार्थना २३ करने को एकान्त में पर्व्वत पर चढ़ गया और सांझ को वहां अकेला था। उस समय नाव समुद्र के बीच में लहरों से २४

२५ उछल रही थी क्योंकि बयार सन्मुख की थी। रात के चैाथे पहर में यीशु समुद्र पर चलते हुए उन के पास गया।
२६ शिष्य लोग उस को समुद्र पर चलते देखके घबरा गये और
२७ बोले यह प्रेत है और डर के मारे चिल्लाये। यीशु तुरन्त उन से बात करने लगा और कहा ढाढ़स बांधो मैं हूं डरो
२८ मत। तब पितर ने उस को उत्तर दिया कि हे प्रभु यदि आप ही हैं तो मुझे अपने पास जल पर आने की आज्ञा
२९ दीजिये। उस ने कहा आ. तब पितर नाव पर से उतरके
३० यीशु पास जाने को जल पर चलने लगा। परन्तु बयार को प्रचंड देखके वह डर गया और जब डूबने लगा तब
३१ चिल्लाके बोला हे प्रभु मुझे बचाइये। यीशु ने तुरन्त हाथ बढ़ाके उस को थांभ लिया और उस से कहा हे अल्प-
३२ विश्वासी क्यों सन्देह किया। जब वे नाव पर चढ़े तब
३३ बयार थम गई। इस पर जो लोग नाव पर थे सो आके यीशु को प्रणाम करके बोले सचमुच आप ईश्वर के पुत्र हैं।
३४ ३५ वे पार उतरके गिनेसरत देश में पहुंचे। और वहां के लोगों ने यीशु को चीन्हके आसपास के सारे देश में कहला
३६ भेजा और सब रोगियों को उस पास लाये. और उस से बिन्ती किई कि वे केवल उस के बस्त्र के आंचल को छूवें और जितनों ने छूआ सब चंगे किये गये।

१५ पन्द्रहवां पर्ब्ब ।

१ यीशु का फरीशियों को उन के व्यवहारों के विषय में दपटना। १० अपवित्रता के हेतु का वर्णन करना। २१ एक अन्यदेशी स्त्री की बेटी को चंगा करना। २९ बहुत रोगियों को चंगा करना। ३२ चार सहस्र मनुष्यों को थोड़े भोजन से तृप्त करना।

१ तब यिरूशलीम के कितने अध्यापकों और फरीशियों
२ ने यीशु पास आ कहा. आप के शिष्य लोग क्यों प्राचीनों के व्यवहार लंघन करते हैं क्योंकि जब वे रोटी खाते

तव अपने हाथ नहीं धोते हैं। उस ने उन को उत्तर दिया ३
कि तुम भी क्यों अपने व्यवहारों के कारण ईश्वर की आज्ञा
को लंघन करते हो। क्योंकि ईश्वर ने आज्ञा किई कि ४
अपने माता पिता का आदर कर और जो कोई माता
अथवा पिता की निन्दा करे सो मार डाला जाय। परन्तु ५
तुम कहते हो यदि कोई अपने माता अथवा पिता से कहे
कि जो कुछ तुझ को मुझ से लाभ होता सो संकल्प किया
गया है तो उस को अपनी माता अथवा अपने पिता का
आदर करने का और कुछ प्रयोजन नहीं। सो तुम ने अपने ६
व्यवहारों के कारण ईश्वर की आज्ञा को उठा दिया है।
हे कपटियो यिशैयाह ने तुम्हारे विषय में यह भविष्यद्वाणी ७
अच्छी कही . कि ये लोग अपने मुंह से मेरे निकट आते ८
हैं और होंठों से मेरा आदर करते हैं परन्तु उन का मन
मुझ से दूर रहता है। पर वे वृथा मेरी उपासना करते ९
हैं क्योंकि मनुष्यों की आज्ञाओं को धर्म्मोपदेश ठहराके
सिखाते हैं।

और उस ने लोगों को अपने पास बुलाके उन से कहा १०
सुनो और बूझो। जो मुंह में समाता है सो मनुष्य को ११
अपवित्र नहीं करता है परन्तु जो मुंह से निकलता है सोई
मनुष्य को अपवित्र करता है। तव उस के शिष्यों ने आ उस १२
से कहा क्या आप जानते हैं कि फरीशियों ने यह वचन
सुनके ठोकर खाई। उस ने उत्तर दिया कि हर एक गाछ १३
जो मेरे स्वर्गीय पिता ने नहीं लगाया है उखाड़ा जायगा।
उन को रहने दो . वे अंधों के अंधे अगुवे हैं और अंधा १४
यदि अंधे को मार्ग वतावे तो दोनों गढ़े में गिर पड़ेंगे।
तव पितर ने उस को उत्तर दिया कि इस दृष्टान्त का अर्थ १५
हमें समझाइये। यीशु ने कहा तुम भी क्या अव लों निर्वुद्धि १६

१७ हो । क्या तुम अब लों नहीं बूझते हो कि जो कुछ मुंह में समाता सो पेट में जाता है और संडास में फेंका जाता है ।
१८ परन्तु जो कुछ मुंह से निकलता है सो मन से बाहर आता
१९ है और वही मनुष्य को अपवित्र करता है। क्योंकि मन से नाना भांति की कुचिन्ता नरहिंसा परस्त्रीगमन व्यभिचार चोरी झूठी साक्षी और ईश्वर की निन्दा निकलती हैं ।
२० येही हैं जो मनुष्य को अपवित्र करती हैं परन्तु बिन धोये हाथों से भोजन करना मनुष्य को अपवित्र नहीं करता है ।
२१ यीशु वहां से निकलके सोर और सीदोन के सिवानों में
२२ गया । और देखो उन सिवानों में की एक कनानी स्त्री ने निकलकर पुकारके उस से कहा हे प्रभु दाऊद के सन्तान मुझ
२३ पर दया कीजिये मेरी बेटी भूत से अति पीड़ित है । परन्तु उस ने उस को कुछ उत्तर न दिया और उस के शिष्यों ने आ उस से बिन्ती कर कहा इस को बिदा कीजिये क्योंकि
२४ वह हमारे पीछे पीछे पुकारती है । उस ने उत्तर दिया कि इस्रायेल के घराने की खोई हुई भेड़ों को छोड़ मैं किसी
२५ के पास नहीं भेजा गया हूं । तब स्त्री ने आ उस को
२६ प्रणाम कर कहा हे प्रभु मेरा उपकार कीजिये । उस ने उत्तर दिया कि लड़कों की रोटी लेके कुत्तों के आगे फेंकना
२७ अच्छा नहीं है । स्त्री ने कहा सच हे प्रभु तौभी कुत्ते जो चूरचार उन के स्वामियों की मेज से गिरते हैं सो खाते हैं ।
२८ तब यीशु ने उस को उत्तर दिया कि हे नारी तेरा बिश्वास बड़ा है जैसा तू चाहती है वैसा ही तुझे होय . और उस की बेटी उसी घड़ी से चंगी हुई ।
२९ यीशु वहां से जाके गालील के समुद्र के निकट आया
३० और पर्व्वत पर चढ़के वहां बैठा । और बड़ी बड़ी भीड़ अपने संग लंगड़ों अंधों गूंगों टुंडों और बहुत से औरों को

लेके यीशु पास आईं और उन्हें उस के चरणों पर डाला और उस ने उन्हें चंगा किया . यहां लों कि जब लोगों ने ३१ देखा कि गूंगे बोलते हैं टुंडे चंगे होते हैं लंगड़े चलते हैं और अंधे देखते हैं तब अचंभा करके इस्रायेल के ईश्वर की स्तुति किई ।

तब यीशु ने अपने शिष्यों को अपने पास बुलाके कहा ३२ मुझे इन लोगों पर दया आती है क्योंकि वे तीन दिन से मेरे संग रहे हैं और उन के पास कुछ खाने को नहीं है और मैं उन को भोजन बिना बिदा करने नहीं चाहता हूं न हो कि मार्ग में उन का बल घट जाय। उस के शिष्यों ने उस से कहा हमें ३३ इस जंगल में कहां से इतनी रोटी मिलेगी कि हम इतनी बड़ी भीड़ को तृप्त करें। यीशु ने उन से कहा तुम्हारे पास ३४ कितनी रोटियां हैं . उन्हों ने कहा सात और थोड़ी सी छोटी मछलियां। तब उस ने लोगों को भूमि पर बैठने की ३५ आज्ञा दिई। और उस ने उन सात रोटियों को और ३६ मछलियों को लेके धन्य मानके तोड़ा और अपने शिष्यों को दिया और शिष्यों ने लोगों को दिया । सो सब खाके तृप्त ३७ हुए और जो टुकड़े बच रहे उन्हों ने उन के सात टोकरे भरे उठाये। जिन्हों ने खाया सो स्त्रियों और बालकों को छोड़ ३८ चार सहस्र पुरुष थे । तब यीशु लोगों को बिदा कर नाव ३९ पर चढ़के मगदला नगर के सिवानों में आया ।

१६ सोलहवां पर्ब्ब ।

१ यीशु का चिन्ह मांगनेहारों को डांटना । ५ अपने शिष्यों को फरीशियों की शिक्षा के विषय में चिताना । १३ यीशु के विषय में लोगों का और शिष्यों का विचार और उस का पितर को प्रश्न देना । २१ अपनी मृत्यु का भविष्यद्वाक्य कहना और पितर को डांटना । २४ शिष्य होने की विधि ।

तब फरीशियों और सदूकियों ने यीशु पास आ उस की १

परीक्षा करने को उस से चाहा कि हमें आकाश का एक चिन्ह
२ दिखाइये। उस ने उन को उत्तर दिया सांझ को तुम कहते
हो कि फरछा होगा क्योंकि आकाश लाल है और भोर को
कहते हो कि आज आंधी आवेगी क्योंकि आकाश लाल
३ और धूमला है। हे कपटियो तुम आकाश का रूप बूझ सकते
४ हो क्या तुम समयों के चिन्ह नहीं बूझ सकते हो। इस समय
के दुष्ट और व्यभिचारी लोग चिन्ह ढूंढ़ते हैं परन्तु कोई
चिन्ह उन को नहीं दिया जायगा केवल यूनस भविष्यद्वक्ता
का चिन्ह . तब वह उन्हें छोड़के चला गया।

५ उस के शिष्य लोग उस पार पहुंचके रोटी लेना भूल
६ गये। और यीशु ने उन से कहा देखो फरीशियों और
७ सदूकियों के खमीर से चौकस रहो। वे आपस में बिचार
८ करने लगे यह इस लिये है कि हम ने रोटी न लिई। यह
जानके यीशु ने उन से कहा हे अल्पबिश्वासियो तुम रोटी
९ न लेने के कारण क्यों आपस में बिचार करते हो। क्या तुम
अब लों नहीं बूझते हो और उन पांच सहस्र की पांच रोटी
नहीं स्मरण करते हो और कितनी टोकरियां तुम ने उठाईं।
१० और न उन चार सहस्र की सात रोटी और कितने टोकरे
११ तुम ने उठाये। तुम क्यों नहीं बूझते हो कि मैं ने तुम को
फरीशियों और सदूकियों के खमीर से चौकस रहने को जो
१२ कहा सो रोटी के बिषय में नहीं कहा। तब उन्हों ने बूझा कि
उस ने रोटी के खमीर से नहीं परन्तु फरीशियों और सदूकियों
की शिक्षा से चौकस रहने को कहा।

१३ यीशु ने कैसरिया फिलिपी के सिवानों में आके अपने
शिष्यों से पूछा कि लोग क्या कहते हैं मैं मनुष्य का पुत्र कौन
१४ हूं। उन्हों ने कहा कितने तो आप को योहन बपतिसमा
देनेहारा कहते हैं कितने एलियाह कहते हैं और कितने

यिरमियाह अथवा भविष्यद्वक्ताओं में से एक कहते हैं। उस १५ ने उन से कहा तुम क्या कहते हो मैं कौन हूं। शिमोन पितर १६ ने उत्तर दिया कि आप जीवते ईश्वर के पुत्र ख्रीष्ट हैं। यीशु ने उस को उत्तर दिया कि हे यूनस के पुत्र शिमोन तू १७ धन्य है क्योंकि मांस औ लोहू ने नहीं परन्तु मेरे स्वर्गबासी पिता ने यह बात तुझ पर प्रगट किई। और मैं भी तुझ से १८ कहता हूं कि तू पितर है और मैं इसी पत्थर पर अपनी मंडली बनाऊंगा और परलोक के फाटक उस पर प्रबल न होंगे। मैं तुझे स्वर्ग के राज्य की कुंजियां देऊंगा और जो कुछ १९ तू पृथिवी पर बांधेगा सो स्वर्ग में बंधा हुआ होगा और जो कुछ तू पृथिवी पर खोलेगा सो स्वर्ग में खुला हुआ होगा। तब उस ने अपने शिष्यों को चिताया कि किसी से मत कहो २० कि मैं यीशु जो हूं सो ख्रीष्ट हूं।

उस समय से यीशु अपने शिष्यों को बताने लगा कि २१ मुझे अवश्य है कि यिरूशलीम में जाऊं और प्राचीनों और प्रधान याजकों और अध्यापकों से बहुत दुःख उठाऊं और मार डाला जाऊं और तीसरे दिन जी उठूं। तब २२ पितर उसे लेके उस को डांटके कहने लगा कि हे प्रभु आप पर दया रहे यह तो आप को कभी न होगा। उस ने मुंह २३ फेरके पितर से कहा हे शैतान मेरे साम्हने से दूर हो तू मेरे लिये ठोकर है क्योंकि तुझे ईश्वर की बातों का नहीं परन्तु मनुष्यों की बातों का सोच रहता है।

तब यीशु ने अपने शिष्यों से कहा यदि कोई मेरे पीछे २४ आने चाहे तो अपनी इच्छा को मारे और अपना क्रूश उठाके मेरे पीछे आवे। क्योंकि जो कोई अपना प्राण बचाने २५ चाहे सो उसे खोवेगा परन्तु जो कोई मेरे लिये अपना प्राण खोवे सो उसे पावेगा। यदि मनुष्य सारे जगत को प्राप्त करे २६

और अपना प्राण गंवावे तो उस को क्या लाभ होगा .
२७ अथवा मनुष्य अपने प्राण की सन्ती क्या देगा । मनुष्य का पुत्र अपने दूतों के संग अपने पिता के ऐश्वर्य्य में आवेगा और तब वह हर एक मनुष्य को उस के कार्य्य के अनुसार
२८ फल देगा । मैं तुम से सच कहता हूं कि जो यहां खड़े हैं उन में से कोई कोई हैं कि जब लों मनुष्य के पुत्र को उस के राज्य में आते न देखें तब लों मृत्यु का स्वाद न चीखेंगे ।

१७ सत्रहवां पर्व्व ।

१ यीशु का शिष्यों के आगे तेजस्वी दिखाई देना । १० एलियाह के आने का अर्थ उन्हें बताना । १४ एक भूतग्रस्त लड़के को चंगा करना और विश्वास के गुण का बखान करना । २२ अपनी मृत्यु का भविष्यद्वाक्य कहना । २४ मन्दिर का कर देने के लिये आश्चर्य्य कर्म्म करना ।

१ छः दिन के पीछे यीशु पितर और याकूब और उस के भाई योहन को लेके उन्हें किसी ऊंचे पर्व्वत पर एकान्त में ले गया।
२ और उन के आगे उस का रूप बदल गया और उस का मुंह सूर्य्य के तुल्य चमका और उस का वस्त्र ज्योति की नाईं उजला
३ हुआ। और देखो मूसा और एलियाह उस के संग बात करते
४ हुए उन को दिखाई दिये। इस पर पितर ने यीशु से कहा हे प्रभु हमारा यहां रहना अच्छा है . यदि आप की इच्छा होय तो हम तीन डेरे यहां बनावें एक आप के लिये एक मूसा
५ के लिये और एक एलियाह के लिये। वह बोलता ही था कि देखो एक ज्योतिमय मेघ ने उन्हें छा लिया और देखो उस मेघ से यह शब्द हुआ कि यह मेरा प्रिय पुत्र है जिस
६ से मैं अति प्रसन्न हूं उस की सुनो। शिष्य लोग यह सुनके
७ औंधे मुंह गिरे और निपट डर गये । यीशु ने उन पास
८ आके उन्हें छूके कहा उठो डरो मत। तब उन्हों ने अपनी आंखें उठाके यीशु को छोड़के और किसी को न देखा ।

जब वे उस पर्ब्बत से उतरते थे तब यीशु ने उन को आज्ञा ९
दिई कि जब लों मनुष्य का पुत्र मृतकों में से नहीं जी उठे
तब लों इस दर्शन का समाचार किसी से मत कहो।

और उस के शिष्यों ने उस से पूछा फिर अध्यापक लोग १०
क्यों कहते हैं कि एलियाह को पहिले आना होगा। यीशु ११
ने उन को उत्तर दिया कि सच है एलियाह पहिले आके
सब कुछ सुधारेगा। परन्तु मैं तुम से कहता हूं कि एलियाह १२
आ चुका है और उन्हों ने उस को नहीं चीन्हा परन्तु उस
से जो कुछ चाहा सो किया. इस रीति से मनुष्य का पुत्र
भी उन से दुःख पावेगा। तब शिष्यों ने बूझा कि वह योहन १३
बपतिसमा देनेहारे के विषय में हम से कहता है।

जब वे लोगों के निकट पहुंचे तब किसी मनुष्य ने यीशु १४
पास आ घुटने टेकके उस से कहा. हे प्रभु मेरे पुत्र पर १५
दया कीजिये वह मिर्गी के रोग से अति पीड़ित है कि
बार बार आग में और बार बार पानी में गिर पड़ता है।
और मैं उस को आप के शिष्यों के पास लाया परन्तु वे उसे १६
चंगा नहीं कर सके। यीशु ने उत्तर दिया कि हे अबिश्वासी १७
और हठीले लोगो मैं कब लों तुम्हारे संग रहूंगा और कब
लों तुम्हारी सहूंगा. उस को यहां मेरे पास लाओ। तब १८
यीशु ने भूत को डांटा और वह उस में से निकला और लड़का
उसी घड़ी से चंगा हुआ। तब शिष्यों ने निराले में यीशु १९
पास आ कहा हम उस भूत को क्यों नहीं निकाल सके।
यीशु ने उन से कहा तुम्हारे अविश्वास के कारण क्योंकि मैं २०
तुम से सत्य कहता हूं यदि तुम को राई के एक दाने के तुल्य
विश्वास होय तो तुम इस पहाड़ से जो कहोगे कि यहां
से वहां चला जा वह जायगा और कोई काम तुम से
असाध्य नहीं होगा। तौभी जो इस प्रकार के हैं सो प्रार्थना २१

और उपवास विना और किसी उपाय से निकाले नहीं जाते हैं ।

२२ जब वे गालील में फिरते थे तब यीशु ने उन से कहा
२३ मनुष्य का पुत्र मनुष्यों के हाथ में पकड़वाया जायगा। वे उस को मार डालेंगे और वह तीसरे दिन जी उठेगा ; इस पर वे बहुत उदास हुए ।

२४ जब वे कफर्नाहुम में पहुंचे तब मन्दिर का कर लेनेहारे पितर के पास आके बोले क्या तुम्हारा गुरु मन्दिर का कर
२५ नहीं देता है . उस ने कहा हां देता है । जब पितर घर में आया तब यीशु ने उस के बोलने के पहिले उस से कहा हे शिमोन तू क्या समझता है . पृथिवी के राजा लोग कर अथवा खिराज किन से लेते हैं अपने सन्तानों से अथवा
२६ परायों से । पितर ने उस से कहा परायों से . यीशु ने उस से
२७ कहा तब तो सन्तान बचे हुए हैं । तौभी जिस्तें हम उन को ठोकर न खिलावें इस लिये तू समुद्र के तीर पर जाके बंसी डाल और जो मछली पहिले निकले उस को ले . तू उस का मुंह खोलने से एक रुपैया पावेगा उसी को लेके मेरे और अपने लिये उन्हें दे ।

१८ अठारहवां पर्ब्ब ।

१ नम्र होने का उपदेश । ७ ठोकर खाने का निषेध । ११ खोई हुई भेड़ का दृष्टान्त । १५ दोषी भाई से कैसा व्यवहार चाहिये इस का वर्णन और मंडली का अधिकार । २१ क्षमा करने का उपदेश और निर्दय दास का दृष्टान्त ।

१ उसी घड़ी शिष्यों ने यीशु पास आ कहा स्वर्ग के राज्य
२ में बड़ा कौन है । यीशु ने एक बालक को अपने पास बुलाके
३ उन के बीच में खड़ा किया . और कहा मैं तुम्हें सच कहता हूं जो तुम मन न फिरावो और बालकों के समान न हो
४ जावो तो स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करने न पाओगे । जो

कोई अपने को इस बालक के समान दीन करे सोई स्वर्ग के राज्य में बड़ा है। और जो कोई मेरे नाम से एक ऐसे बालक ५ को ग्रहण करे वह मुझे ग्रहण करता है। परन्तु जो कोई ६ इन छोटों में से जो मुझ पर बिश्वास करते हैं एक को ठोकर खिलावे उस के लिये भला होता कि चक्की का पाट उस के गले में लटकाया जाता और वह समुद्र के गहिराव में डुबाया जाता।

ठोकरों के कारण हाय संसार . ठोकरें अवश्य लगेंगीं ७ परन्तु हाय वह मनुष्य जिस के द्वारा से ठोकर लगती है। जो तेरा हाथ अथवा तेरा पांव तुझे ठोकर खिलावे तो ८ उसे काटके फेंक दे . लंगड़ा अथवा टुंडा होके जीवन में प्रवेश करना तेरे लिये इस से भला है कि दो हाथ अथवा दो पांव रहते हुए तू अनन्त आग में डाला जाय। और ९ जो तेरी आंख तुझे ठोकर खिलावे तो उसे निकालके फेंक दे . काना होके जीवन में प्रवेश करना तेरे लिये इस से भला है कि दो आंखें रहते हुए तू नरक की आग में डाला जाय। देखो कि तुम इन छोटों में से एक को तुच्छ न जानो १० क्योंकि मैं तुम से कहता हूं कि स्वर्ग में उन के दूत मेरे स्वर्गवासी पिता का मुंह नित्य देखते हैं।

मनुष्य का पुत्र खोये हुए को बचाने आया है। तुम क्या ११ १२ समझते हो . जो किसी मनुष्य की सौ भेड़ होवें और उन में से एक भटक जाय तो क्या वह निन्नानवे को पहाड़ों पर छोड़के उस भटकी हुई को नहीं जाके ढूंढ़ता है। और मैं तुम १३ से सत्य कहता हूं यदि ऐसा हो कि वह उस को पावे तो जो निन्नानवे नहीं भटक गई थीं उन से अधिक वह उस भेड़ के लिये आनन्द करता है। ऐसा ही तुम्हारे स्वर्गवासी १४ पिता की इच्छा नहीं है कि इन छोटों में से एक भी नाश होवे।

१५ यदि तेरा भाई तेरा अपराध करे तो जाके उस के संग एकान्त में उस को समझा दे. जो वह तेरी सुने तो तू ने
१६ अपने भाई को पाया है। परन्तु जो वह न सुने तो एक अथवा दो जन को अपने संग ले जा कि दो अथवा तीन
१७ साक्षियों के मुंह से हर एक बात ठहराई जाय। जो वह उन को न माने तो मंडली से कह दे परन्तु जो वह मंडली को भी न माने तो तेरे लेखे देवपूजक और कर उगाहने-
१८ हारा सा होय। मैं तुम से सच कहता हूं जो कुछ तुम पृथिवी पर बांधोगे सो स्वर्ग में बंधा हुआ होगा और जो कुछ तुम पृथिवी पर खोलोगे सो स्वर्ग में खुला हुआ होगा।
१९ फिर मैं तुम से कहता हूं यदि पृथिवी पर तुम में से दो मनुष्य जो कुछ मांगें उस बात के विषय में एक मन होवें तो वह उन के लिये मेरे स्वर्गवासी पिता की ओर से हो जायगी।
२० क्योंकि जहां दो अथवा तीन मेरे नाम पर एकट्ठे होवें तहां मैं उन के बीच में हूं।

२१ तब पितर ने उस पास आ कहा हे प्रभु मेरा भाई कै बेर मेरा अपराध करे और मैं उस को क्षमा करूं. क्या
२२ सात बेर लों। यीशु ने उस से कहा मैं तुझ से नहीं कहता
२३ हूं कि सात बेर लों परन्तु सत्तर गुणे सात बेर लों। इस लिये स्वर्ग के राज्य की उपमा एक राजा से दिई जाती है
२४ जिस ने अपने दासों से लेखा लेने चाहा। जब वह लेखा लेने लगा तब एक जन जो दस सहस्र तोड़े धारता था
२५ उस के पास पहुंचाया गया। जब कि भर देने को उस पास कुछ न था उस के स्वामी ने आज्ञा किई कि वह और उस की स्त्री और लड़के बाले और जो कुछ उस का था सब
२६ बेचा जाय और वह ऋण भर दिया जाय। इस पर उस दास ने दंडवत कर उसे प्रणाम किया और कहा हे प्रभु

मेरे विषय में धीरज धरिये मैं आप को सब भर देऊंगा ।
तब उस दास के स्वामी ने दया कर उसे छोड़ दिया और २७
उस का ऋण क्षमा किया । परन्तु उसी दास ने बाहर २८
निकलके अपने संगी दासों में से एक को पाया जो उस की
एक सौ सूकी धारता था और उस को पकड़के उस का गला
दाबके कहा जो कुछ तू धारता है मुझे दे । इस पर उस २९
के संगी दास ने उस के पांवों पड़के उस से बिन्ती कर कहा
मेरे विषय में धीरज धरिये मैं आप को सब भर देऊंगा ।
उस ने न माना परन्तु जाके उसे बन्दीगृह में डाला कि ३०
जब लों ऋण को भर न देवे तब लों वहीं रहे । उस के संगी ३१
दास लोग जो हुआ था सो देखके बहुत उदास हुए और
जाके सब कुछ जो हुआ था अपने स्वामी को बताया । तब ३२
उस दास के स्वामी ने उस को अपने पास बुलाके उस से कहा
हे दुष्ट दास तू ने जो मुझ से बिन्ती किई तो मैं ने तुझे वह सब
ऋण क्षमा किया । सो जैसा मैं ने तुझ पर दया किई वैसा ३३
क्या तुझे भी अपने संगी दास पर दया करना उचित न
था । और उस के स्वामी ने क्रोध कर उसे दंडकारकों के हाथ ३४
सौंप दिया कि जब लों वह उस का सब ऋण भर न देवे
तब लों उन के हाथ में रहे । यूं ही यदि तुम में से हर एक ३५
अपने अपने मन से अपने भाई के अपराध क्षमा न करे तो
मेरा स्वर्गवासी पिता भी तुम से वैसा करेगा ।

१९ उन्नीसवां पर्व्व ।

१ पत्नी को त्यागने का निषेध । १३ यीशु का बालकों को आशीस देना । १६ एक धनवान जवान से उस की बातचीत । २३ धनी लोगों की दशा का वर्णन । २७ शिष्यों के फल की प्रतिज्ञा ।

जब यीशु यह बातें कह चुका तब गालील से जाके १
यर्दन के उस पार यिहूदिया के सिवानों में आया । और बड़ी २

बड़ी भीड़ उस के पीछे हो लिईं और उस ने उन्हें वहां
३ चंगा किया। तब फरीशियों ने उस पास आ उस की परीक्षा
करने को उस से कहा क्या किसी कारण से अपनी स्त्री को
४ त्यागना मनुष्य को उचित है। उस ने उन को उत्तर दिया
क्या तुम ने नहीं पढ़ा है कि सृजनहार ने आरंभ से नर और
५ नारी करके मनुष्यों को उत्पन्न किया. और कहा इस हेतु
से मनुष्य अपने माता पिता को छोड़के अपनी स्त्री से मिला
६ रहेगा और वे दोनों एक तन होंगे। सो वे आगे दो नहीं
पर एक तन हैं इस लिये जो कुछ ईश्वर ने जोड़ा है उस
७ को मनुष्य अलग न करे। उन्हों ने उस से कहा फिर मूसा
ने क्यों त्यागपत्र देने और स्त्री को त्यागने की आज्ञा किई।
८ उस ने उन से कहा मूसा ने तुम्हारे मन की कठोरता के कारण
तुम को अपनी अपनी स्त्रियां त्यागने दिया परन्तु आरंभ
९ से ऐसा नहीं था। और मैं तुम से कहता हूं कि जो कोई
व्यभिचार को छोड़ और किसी हेतु से अपनी स्त्री को त्याग
के दूसरी से विवाह करे सो परस्त्रीगमन करता है और जो
उस त्यागी हुई से विवाह करे सो परस्त्रीगमन करता है।
१० उस के शिष्यों ने उस से कहा यदि पुरुष को स्त्री के संग इस
प्रकार का सम्बन्ध है तो विवाह करना अच्छा नहीं है।
११ उस ने उन से कहा सब लोग यह बचन ग्रहण नहीं कर
१२ सकते हैं केवल वे जिन को दिया गया है। क्योंकि कोई
कोई नपुंसक हैं जो माता के गर्भ से ऐसे ही जन्मे और कोई
कोई नपुंसक हैं जो मनुष्यों से नपुंसक किये गये हैं और
कोई कोई नपुंसक हैं जिन्हों ने स्वर्ग के राज्य के लिये अपने
को नपुंसक किये हैं. जो इस को ग्रहण कर सके सो
ग्रहण करे।
१३ तब लोग कितने बालकों को यीशु पास लाये कि वह

उन पर हाथ रखके प्रार्थना करे परन्तु शिष्यों ने उन्हें डांटा।
यीशु ने कहा बालकों को मेरे पास आने दो और उन्हें मत १४
वर्जो क्योंकि स्वर्ग का राज्य ऐसों का है। और वह उन पर १५
हाथ रखके वहां से चला गया।

और देखो एक मनुष्य ने उस पास आ उस से कहा हे १६
उत्तम गुरु अनन्त जीवन पाने को मैं कौन सा उत्तम काम
करूं। उस ने उस से कहा तू मुझे उत्तम क्यों कहता है. १७
कोई उत्तम नहीं है केवल एक अर्थात ईश्वर. परन्तु जो
तू जीवन में प्रवेश किया चाहता है तो आज्ञाओं को पालन
कर। उस ने उस से कहा कौन कौन आज्ञा. यीशु ने कहा १८
यह कि नरहिंसा मत कर परस्त्रीगमन मत कर चोरी
मत कर झूठी साक्षी मत दे. अपने माता पिता का आदर १९
कर और अपने पड़ोसी को अपने समान प्रेम कर। उस २०
जवान ने उस से कहा इन सभों को मैं ने अपने लड़कपन से
पालन किया है मुझे अब क्या घटी है। यीशु ने उस से २१
कहा जो तू सिद्ध हुआ चाहता है तो जा अपनी सम्पत्ति
बेचके कंगालों को दे और तू स्वर्ग में धन पावेगा और आ
मेरे पीछे हो ले। वह जवान यह बात सुनके उदास २२
चला गया क्योंकि उस को बहुत धन था।

तब यीशु ने अपने शिष्यों से कहा मैं तुम से सच कहता २३
हूं कि धनवान को स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करना कठिन
होगा। फिर भी मैं तुम से कहता हूं कि ईश्वर के राज्य में २४
धनवान के प्रवेश करने से ऊंट का सूई के नाके में से जाना
सहज है। यह सुनके उस के शिष्यों ने निपट अचंभित हो २५
कहा तब तो किस का त्राण हो सकता है। यीशु ने उन २६
पर दृष्टि कर उन से कहा मनुष्यों से यह अन्होना है परन्तु
ईश्वर से सब कुछ हो सकता है।

२७ तब पितर ने उस को उत्तर दिया कि देखिये हम लोग सब कुछ छोड़के आप के पीछे हो लिये हैं सो हमें क्या २८ मिलेगा। यीशु ने उन से कहा मैं तुम से सच कहता हूं कि नई सृष्टि में जब मनुष्य का पुत्र अपने ऐश्वर्य्य के सिंहासन पर बैठेगा तब तुम भी जो मेरे पीछे हो लिये हो बारह सिंहासनों पर बैठके इस्रायेलके बारह कुलों का न्याय २९ करोगे। और जिस किसी ने मेरे नाम के लिये घरों वा भाइयों वा बहिनों वा पिता वा माता वा स्त्री वा लड़कों वा भूमि को त्यागा है सो सौ गुणा पावेगा और अनन्त ३० जीवन का अधिकारी होगा। परन्तु बहुतेरे जो अगले हैं पिछले होंगे और जो पिछले हैं अगले होंगे।

२० बीसवां पर्ब्ब ।

१ गृहस्थ के बनिहारों का दृष्टान्त । १७ यीशु का अपनी मृत्यु का भविष्यद्वाक्य कहना । २० दो शिष्यों की बिन्ती का उत्तर देना । २४ दीन होने का उपदेश । २९ यीशु का दो अंधों के नेत्र खोलना ।

१ स्वर्ग का राज्य किसी गृहस्थ के समान है जो भोर को निकला कि अपने दाख की बारी में बनिहारों को लगावे। २ और उस ने बनिहारों के साथ दिन भर की एक एक सूकी ३ मजूरी ठहराके उन्हें अपने दाख की बारी में भेजा। जब पहर एक दिन चढ़ा तब उस ने बाहर जाके औरों को ४ चौक में बेकार खड़े देखा . और उन से कहा तुम भी दाख की बारी में जाओ और जो कुछ उचित होय मैं तुम्हें ५ देऊंगा . सो वे भी गये। फिर उस ने दूसरे और तीसरे ६ पहर के निकट बाहर जाके वैसाही किया। घड़ी एक दिन रहते उस ने बाहर जाके औरों को बेकार खड़े पाया और ७ उन से कहा तुम क्यों यहां दिन भर बेकार खड़े हो . उन्हों ने उस से कहा किसी ने हम को काम में नहीं लगाया है.

उस ने उन्हें कहा तुम भी दाख की बारी में जाओ और जो
कुछ उचित होय सो पाओगे । जब सांझ हुई तब दाख ८
की बारी के स्वामी ने अपने भंडारी से कहा बनिहारों को
बुलाके पिछलों से आरंभ कर अगलों तक उन्हें मजूरी दे ।
सो जो लोग घड़ी एक दिन रहते काम पर आये थे उन्हों ९
ने आके एक एक सूकी पाई । तब अगले आये और समझा १०
कि हम अधिक पावेंगे परन्तु उन्हों ने भी एक एक सूकी
पाई । इस को लेके वे उस गृहस्थ पर कुड़कुड़ाके बोले . इन ११ १२
पिछलों ने एक ही घड़ी काम किया और आप ने उन को हमारे
तुल्य किया है जिन्हों ने दिन भर का भार और घाम सहा ।
उस ने उन में से एक को उत्तर दिया कि हे मित्र मैं तुझ से कुछ १३
अनीति नहीं करता हूं . क्या तू ने मुझ से एक सूकी लेने को
न ठहराया । अपना ले और चला जा . मेरी इच्छा है कि १४
जितना तुझ को उतना इस पिछले को भी देऊं । क्या मुझे १५
उचित नहीं कि अपने धन से जो चाहूं सो करूं . क्या तू मेरे
भले होने के कारण बुरी दृष्टि से देखता है । इस रीति से जो १६
पिछले हैं सो अगले होंगे और जो अगले हैं सो पिछले
होंगे क्योंकि बुलाये हुए बहुत हैं परन्तु चुने हुए थोड़े हैं ।

यीशु ने यिरूशलीम को जाते हुए मार्ग में बारह शिष्यों को १७
एकांत में ले जाके उन से कहा . देखो हम यिरूशलीम को १८
जाते हैं और मनुष्य का पुत्र प्रधान याजकों और अध्यापकों
के हाथ पकड़वाया जायगा और वे उस को बध के योग्य
ठहरावेंगे . और उस को अन्यदेशियों के हाथ सौंपेंगे कि वे १९
उस से ठट्ठा करें और कोड़े मारें और क्रूश पर घात करें .
परन्तु वह तीसरे दिन जी उठेगा ।

तब जबदी के पुत्रों की माता ने अपने पुत्रों के संग यीशु २०
पास आ प्रणाम कर उस से कुछ मांगा । उस ने उस से कहा २१

तू क्या चाहती है . वह उस से बोली आप यह कहिये कि आप के राज्य में मेरे इन दो पुत्रों में से एक आप की दहिनी
२२ ओर और दूसरा बाईं ओर बैठे । यीशु ने उत्तर दिया तुम नहीं बूझते कि क्या मांगते हो . जिस कटोरे से मैं पीने पर हूं क्या तुम उस से पी सकते हो और जो बप- तिसमा मैं लेता हूं क्या तुम उसे ले सकते हो . उन्हों ने
२३ उस से कहा हम सकते हैं। उस ने उन से कहा तुम मेरे कटोरे से तो पीओगे और जो बपतिसमा मैं लेता हूं उसे लेओगे परन्तु जिन्हों के लिये मेरे पिता से तैयार किया गया है उन्हें छोड़ और किसी को अपनी दहिनी और अपनी बाईं ओर बैठने देना मेरा अधिकार नहीं है ।
२४ यह सुनके दसों शिष्य उन दोनों भाइयों पर रिसिआये ।
२५ यीशु ने उन को अपने पास बुलाके कहा तुम जानते हो कि अन्यदेशियों के अध्यक्ष लोग उन्हों पर प्रभुता करते हैं
२६ और जो बड़े हैं सो उन्हों पर अधिकार रखते हैं । परन्तु तुम्हों में ऐसा नहीं होगा पर जो कोई तुम्हों में बड़ा हुआ
२७ चाहे सो तुम्हारा सेवक होवे । और जो कोई तुम्हों में
२८ प्रधान हुआ चाहे सो तुम्हारा दास होवे । इसी रीति से मनुष्य का पुत्र सेवा करवाने को नहीं परन्तु सेवा करने को और बहुतों के उद्धार के दाम में अपना प्राण देने को आया है ।
२९ जब वे यिरीहो नगर से निकलते थे तब बहुत लोग
३० यीशु के पीछे हो लिये । और देखो दो अंधे जो मार्ग की ओर बैठे थे यह सुनके कि यीशु जाता है पुकारके बोले
३१ हे प्रभु दाऊद के सन्तान हम पर दया कीजिये । लोगों ने उन्हें डांटा कि वे चुप रहें परन्तु उन्हों ने अधिक पुकारा
३२ हे प्रभु दाऊद के सन्तान हम पर दया कीजिये । तब यीशु खड़ा रहा और उन को बुलाके कहा तुम क्या चाहते हो

कि मैं तुम्हारे लिये करूं । उन्हों ने उस से कहा हे प्रभु ३३
हमारी आंखें खुल जायें । यीशु ने दया कर उन की आंखें ३४
छूईं और वे तुरन्त आंखों से देखने लगे और उस के पीछे
हो लिये ।

२१ इकईसवां पर्व्व ।

१ यीशु का यिरूशलीम में आना । १२ व्योपारियों को मन्दिर से निकालना और आश्चर्य्य कर्म्म यहां करना । १८ गूलर के वृक्ष को स्राप देना और बिश्वास के गुण का बखान करना । २३ प्रधान याजकों को निरुत्तर करना । २८ दो पुत्रों का दृष्टान्त । ३३ दुष्ट मालियों का दृष्टान्त ।

जब वे यिरूशलीम के निकट आये और जैतून पर्व्वत के १
समीप बैतफगी गांव पास पहुंचे तब यीशु ने दो शिष्यों
को यह कहके भेजा . कि जो गांव तुम्हारे सन्मुख है उस २
में जाओ और तुम तुरन्त एक गदही को बंधी हुई और
उस के साथ बच्चे को पाओगे उन्हें खोलके मेरे पास लाओ ।
जो तुम से कोई कुछ कहे तो कहो कि प्रभु को इन का ३
प्रयोजन है तब वह तुरन्त उन को भेजेगा । यह सब इस ४
लिये हुआ कि जो वचन भविष्यद्वक्ता से कहा गया था सो
पूरा होवे . कि सियोन की पुत्री से कहो देख तेरा राजा ५
नम्र और गदहे पर हां लादू के बच्चे पर बैठा हुआ तेरे पास
आता है । सो शिष्यों ने जाके जैसा यीशु ने उन्हें आज्ञा ६
दिई वैसा किया । और वे उस गदही को और बच्चे को ७
लाये और उन पर अपने कपड़े रखके यीशु को उन पर
बैठाया । और बहुतेरे लोगों ने अपने अपने कपड़े मार्ग में ८
बिछाये और औरों ने वृक्षों से डालियां काटके मार्ग में
बिछाईं । और जो लोग आगे पीछे चलते थे उन्हों ने ९
पुकारके कहा दाऊद के सन्तान की जय . धन्य वह जो
परमेश्वर के नाम से आता है . सब से ऊंचे स्थान में जय-
जयकार होवे । जब उस ने यिरूशलीम में प्रवेश किया तब १०

११ सारे नगर के निवासी घबराके बोले यह कौन है। लोगों ने कहा यह गालील के नासरत नगर का भविष्यद्वक्ता यीशु है।

१२ यीशु ने ईश्वर के मन्दिर में जाके जो लोग मन्दिर में बेचते औ मोल लेते थे उन सभों को निकाल दिया और सर्राफों के पीढ़ों को और कपोतों के बेचनेहारों की चौकियों
१३ को उलट दिया . और उन से कहा लिखा है कि मेरा घर प्रार्थना का घर कहावेगा . परन्तु तुम ने उसे डाकूओं
१४ का खोह बनाया है। तब अन्धे और लंगड़े उस पास
१५ मन्दिर में आये और उस ने उन्हें चंगा किया। जब प्रधान याजकों और अध्यापकों ने इन आश्चर्य्य कर्म्मों को जो उस ने किये और लड़कों को जो मन्दिर में दाऊद के सन्तान की जय पुकारते थे देखा तब उन्हों ने रिसियाके उस से कहा
१६ क्या तू सुनता कि ये क्या कहते हैं। यीशु ने उन से कहा हां . क्या तुम ने कभी यह वचन नहीं पढ़ा कि बालकों और दूध पीनेहारे लड़कों के मुंह से तू ने स्तुति करवाई है।
१७ तब वह उन्हें छोड़के नगर के बाहर बैथनिया को गया और वहां टिका।

१८ भोर को जब वह नगर को फिर जाता था तब उस को
१९ भूख लगी। और मार्ग में एक गूलर का वृक्ष देखके वह उस पास आया परन्तु उस में और कुछ न पाया केवल पत्ते और उस को कहा तुझ में फिर कभी फल न लगे .
२० इस पर गूलर का वृक्ष तुरन्त सूख गया। यह देखके शिष्यों ने अचंभा कर कहा गूलर का वृक्ष क्या ही शीघ्र सूख गया।
२१ यीशु ने उन को उत्तर दिया कि मैं तुम से सच कहता हूं जो तुम बिश्वास करो और सन्देह न रखो तो जो इस गूलर के वृक्ष से किया गया है केवल इतना न करोगे परन्तु

यदि इस पहाड़ से कहो कि उठ समुद्र में गिर पड़ तो वैसा ही होगा । और जो कुछ तुम विश्वास करके प्रार्थना २२ में मांगोगे सो पाओगे ।

जब वह मन्दिर में गया और उपदेश करता था तब २३ लोगों के प्रधान याजकों और प्राचीनों ने उस पास आ कहा तुझे ये काम करने का कैसा अधिकार है और यह अधिकार किस ने तुझ को दिया । यीशु ने उन को उत्तर दिया २४ कि मैं भी तुम से एक बात पूछूंगा जो तुम मुझे उस का उत्तर देओ तो मैं भी तुम्हें बताऊंगा कि मुझे ये काम करने का कैसा अधिकार है । योहन का बपतिसमा देना २५ कहां से हुआ स्वर्ग की अथवा मनुष्यों की ओर से . तब वे आपस में विचार करने लगे कि जो हम कहें स्वर्ग की ओर से तो वह हम से कहेगा फिर तुम ने उस का बिश्वास क्यों नहीं किया । और जो हम कहें मनुष्यों की ओर से तो हमें २६ लोगों का डर है क्योंकि सब लोग योहन को भविष्यद्वक्ता जानते हैं । सो उन्हों ने यीशु को उत्तर दिया कि हम नहीं २७ जानते . तब उस ने उन से कहा तो मैं भी तुम को नहीं बताता हूं कि मुझे ये काम करने का कैसा अधिकार है ।

तुम क्या समझते हो . किसी मनुष्य के दो पुत्र थे और २८ उस ने पहिले के पास आ कहा हे पुत्र आज मेरी दाख की बारी में जाके काम कर । उस ने उत्तर दिया मैं नहीं २९ जाऊंगा परन्तु पीछे पछताके गया । फिर उस ने दूसरे के ३० पास आके वैसा ही कहा . उस ने उत्तर दिया हे प्रभु मैं जाता हूं परन्तु गया नहीं । इन दोनों में से किस ने पिता की ३१ इच्छा पूरी किई . वे उस से बोले पहिले ने . यीशु ने उन से कहा मैं तुम से सच कहता हूं कि कर उगाहनेहारे और बेश्या तुम से आगे ईश्वर के राज्य में प्रवेश करते हैं । क्योंकि योहन ३२

धर्म्म के मार्ग से तुम्हारे पास आया और तुम ने उस का विश्वास न किया परन्तु कर उगाहनेहारों और वेश्याओं ने उस का विश्वास किया और तुम लोग यह देखके पीछे से भी नहीं पछताये कि उस का बिश्वास करते ।

३३ एक और दृष्टान्त सुनो . एक गृहस्थ था जिस ने दाख की बारी लगाई और उस को चहुं ओर बेड़ दिया और उस में रस का कुंड खोदा और गढ़ बनाया और मालियों को उस
३४ का ठीका दे परदेश को चला गया । जब फल का समय निकट आया तब उस ने अपने दासों को उस का फल लेने को
३५ मालियों के पास भेजा । परन्तु मालियों ने उस के दासों को लेके एक को मारा दूसरे को घात किया और तीसरे को
३६ पत्थरवाह किया । फिर उस ने पहिले दासों से अधिक दूसरे दासों को भेजा और उन्हों ने उन से भी वैसा ही किया।
३७ सब के पीछे उस ने यह कहके अपने पुत्र को उन के पास
३८ भेजा कि वे मेरे पुत्र का आदर करेंगे । परन्तु मालियों ने उस के पुत्र को देखके आपस में कहा यह तो अधिकारी है आओ हम उसे मार डालें और उस का अधिकार ले लेवें ।
३९ और उन्हों ने उसे लेके दाख की बारी से बाहर निकालके
४० मार डाला । इस लिये जब दाख की बारी का स्वामी आवेगा
४१ तब उन मालियों से क्या करेगा । उन्हों ने उस से कहा वह उन बुरे लोगों को बुरी रीति से नाश करेगा और दाख की बारी का ठीका दूसरे मालियों को देगा जो फलों को उन के
४२ समयों में उसे दिया करेंगे । यीशु ने उन से कहा क्या तुम ने कभी धर्म्मपुस्तक में यह बचन नहीं पढ़ा कि जिस पत्थर को थवइयों ने निकम्मा जाना वही कोने का सिरा हुआ है . यह परमेश्वर का कार्य्य है और हमारी दृष्टि में अद्भुत है ।
४३ इस लिये मैं तुम से कहता हूं कि ईश्वर का राज्य तुम से ले

लिया जायगा और और लोगों को दिया जायगा जो उस
के फल दिया करेंगे। जो इस पत्थर पर गिरेगा सो चूर ४४
हो जायगा और जिस किसी पर वह गिरेगा उस को पीस
डालेगा। प्रधान याजकों और फरीशियों ने उस के दृष्टान्तों ४५
को सुनके जाना कि वह हमारे विषय में बोलता है। और ४६
उन्हों ने उसे पकड़ने चाहा परन्तु लोगों से डरे क्योंकि वे
उस को भविष्यद्वक्ता जानते थे।

२२ बाईसवां पर्ब्ब।

१ विवाह के भोज का दृष्टान्त। १५ यीशु का कर देने के विषय में फरीशियों को निरुत्तर करना। २३ जी उठने के विषय में सदूकियों को निरुत्तर करना। ३४ श्रेष्ठ आज्ञा के विषय में व्यवस्थापक को उत्तर देना। ४१ अपनी पदवी के विषय में फरीशियों को निरुत्तर करना।

इस पर यीशु ने फिर उन से दृष्टान्तों में कहा . स्वर्ग के १ २
राज्य की उपमा एक राजा से दिई जाती है जो अपने पुत्र
का विवाह करता था। और उस ने अपने दासों को भेजा ३
कि नेवतहरियों को विवाह के भोज में बुलावें परन्तु उन्हों
ने आने न चाहा। फिर उस ने दूसरे दासों को यह कहके ४
भेजा कि नेवतहरियों से कहो देखो मैं ने अपना भोज तैयार
किया है और मेरे बैल और मोटे पशु मारे गये हैं और
सब कुछ तैयार है विवाह के भोज में आओ। परन्तु नेव- ५
तहरियों ने इस का कुछ सोच न किया पर कोई अपने
खेत को और कोई अपने व्योपार को चले गये। औरों ने ६
उस के दासों को पकड़के दुर्दशा करके मार डाला। यह ७
सुनके राजा ने क्रोध किया और अपनी सेना भेजके उन
हत्यारों को नाश किया और उन के नगर को फूंक दिया।
तब उस ने अपने दासों से कहा विवाह का भोज तो तैयार ८
है परन्तु नेवतहरी योग्य नहीं ठहरे। इस लिये चौराहों ९
में जाके जितने लोग तुम्हें मिलें सभों को विवाह के भोज

१० में बुलाओ । सो उन दासों ने मार्गों में जाके क्या बुरे क्या भले जितने उन्हें मिले सभों को एकट्ठे किया और बिवाह
११ का स्थान जेवनहरियों से भर गया । जब राजा जेवनहरियों को देखने को भीतर आया तब उस ने वहां एक मनुष्य
१२ को देखा जो बिवाहीय वस्त्र नहीं पहिने हुए था । उस ने उस से कहा हे मित्र तू यहां बिना बिवाहीय वस्त्र
१३ पहिने क्योंकर भीतर आया . वह निरुत्तर हुआ । तब राजा ने सेवकों से कहा इस के हाथ पांव बांधो और उस को ले जाके बाहर के अंधकार में डाल देओ जहां रोना औ
१४ दांत पीसना होगा । क्योंकि बुलाये हुए बहुत हैं परन्तु चुने हुए थोड़े हैं ।

१५ तब फरीशियों ने जाके आपस में बिचार किया इस
१६ लिये कि यीशु को बात में फंसावें । सो उन्हों ने अपने शिष्यों को हेरोदियों के संग उस पास यह कहने को भेजा कि हे गुरु हम जानते हैं कि आप सत्य हैं और ईश्वर का मार्ग सत्यता से बताते हैं और किसी का खटका नहीं रखते हैं क्योंकि आप मनुष्यों का मुंह देखके बात नहीं करते हैं ।
१७ सो हम से कहिये आप क्या समझते हैं . कैसर को कर
१८ देना उचित है अथवा नहीं । यीशु ने उन की दुष्टता जानके
१९ कहा हे कपटियो मेरी परीक्षा क्यों करते हो । कर का मुद्रा मुझे दिखाओ . तब वे उस पास एक सूकी लाये ।
२० उस ने उन से कहा यह मूर्त्ति और छाप किस की है ।
२१ वे उस से बोले कैसर की . तब उस ने उन से कहा तो जो कैसर का है सो कैसर को देओ और जो ईश्वर का
२२ है सो ईश्वर को देओ । यह सुनके वे अचंभित हुए और उस को छोड़के चले गये ।

२३ उसी दिन सदूकी लोग जो कहते हैं कि मृतकों का जी

उठना नहीं होगा उस पास आये और उस से पूछा . कि २४
हे गुरु मूसा ने कहा यदि कोई मनुष्य निःसन्तान मर
जाय तो उस का भाई उस की स्त्री से विवाह करे और अपने
भाई के लिये वंश खड़ा करे। सो हमारे यहां सात भाई २५
थे . पहिले भाई ने विवाह किया और निःसन्तान मर
जाने से अपनी स्त्री को अपने भाई के लिये छोड़ा। दूसरे २६
और तीसरे भाई ने भी सातवें भाई तक वैसा ही किया।
सब के पीछे स्त्री भी मर गई। सो मृतकों के जी उठने पर २७ २८
वह इन सातों में से किस की स्त्री होगी क्योंकि सभों ने उस
से विवाह किया। यीशु ने उन को उत्तर दिया कि तुम २९
धर्म्मपुस्तक और ईश्वर की शक्ति न बूझके भूल में पड़े हो।
क्योंकि मृतकों के जी उठने पर वे न विवाह करते न ३०
विवाह दिये जाते हैं परन्तु स्वर्ग में ईश्वर के दूतों के समान
हैं। मृतकों के जी उठने के विषय में क्या तुम ने यह ३१
वचन जो ईश्वर ने तुम से कहा नहीं पढ़ा है . कि मैं ३२
इब्राहीम का ईश्वर और इसहाक का ईश्वर और याकूब
का ईश्वर हूं . ईश्वर मृतकों का नहीं परन्तु जीवतों का
ईश्वर है। यह सुनकर लोग उस के उपदेश से अचंभित ३३
हुए।

जब फरीशियों ने सुना कि यीशु ने सदूकियों को निरुत्तर ३४
किया तब वे एकट्ठे हुए। और उन में से एक ने जो व्य- ३५
वस्थापक था उस की परीक्षा करने को उस से पूछा . हे गुरु ३६
व्यवस्था में बड़ी आज्ञा कौन है। यीशु ने उस से कहा तू ३७
परमेश्वर अपने ईश्वर को अपने सारे मन से और अपने
सारे प्राण से और अपनी सारी बुद्धि से प्रेम कर। यही ३८
पहिली औ बड़ी आज्ञा है। और दूसरी उस के समान ३९
है अर्थात तू अपने पड़ोसी को अपने समान प्रेम कर। इन ४०

दो आज्ञाओं से सारी व्यवस्था औ भविष्यद्वक्ताओं का पुस्तक सम्बन्ध रखते हैं ।

४१ ४२ फरीशियों के एकट्ठे होते हुए यीशु ने उन से पूछा . खीष्ट के विषय में तुम क्या समझते हो वह किस का पुत्र है .
४३ वे उस से बोले दाऊद का । उस ने उन से कहा तो दाऊद
४४ क्योंकर आत्मा की शिक्षा से उस को प्रभु कहता है . कि परमेश्वर ने मेरे प्रभु से कहा जब लों मैं तेरे शत्रुओं को तेरे चरणों की पीढ़ी न बनाऊं तब लों तू मेरी दहिनी ओर
४५ बैठ । यदि दाऊद उसे प्रभु कहता है तो वह उस का
४६ पुत्र क्योंकर है । इस के उत्तर में कोई उस से एक बात नहीं बोल सका और उस दिन से किसी को फिर उस से कुछ पूछने का साहस न हुआ ।

२३ तेईसवां पर्ब्ब ।

१ अध्यापकों की शिक्षा और बोलचाल के विषय में यीशु का उपदेश । १३ उस का अध्यापकों और फरीशियों को उलहना देना । ३४ यिरूशलीम के नाश होने की भविष्यद्वाणी ।

१ तब यीशु ने लोगों से और अपने शिष्यों से कहा .
२ अध्यापक और फरीशी लोग मूसा के आसन पर बैठे हैं ।
३ इस लिये जो कुछ वे तुम्हें मानने को कहें सो मानो और पालन करो परन्तु उन के कर्म्मों के अनुसार मत करो क्यों-
४ कि वे कहते हैं और करते नहीं । वे भारी बोझे बांधते हैं जिन को उठाना कठिन है और उन्हें मनुष्यों के कांधों पर धर देते हैं परन्तु उन्हें अपनी उंगली से भी सरकाने
५ नहीं चाहते हैं । वे मनुष्यों को दिखाने के लिये अपने सब
६ कर्म्म करते हैं । वे अपने यन्त्रों को चौड़े करते हैं और
७ अपने बस्त्रों के आंचल बढ़ाते हैं । जेवनारों में ऊंचे स्थान और सभा के घरों में ऊंचे आसन और बाजारों में नमस्कार

और मनुष्यों से गुरु गुरु कहलाना उन को प्रिय लगते हैं। परन्तु तुम गुरु मत कहलाओ क्योंकि तुम्हारा एक गुरु ८ है अर्थात ख्रीष्ट और तुम सब भाई हो। और पृथिवी पर ९ किसी को अपना पिता मत कहो क्योंकि तुम्हारा एक पिता है अर्थात वही जो स्वर्ग में है। और गुरु भी मत १० कहलाओ क्योंकि तुम्हारा एक गुरु है अर्थात ख्रीष्ट। जो ११ तुम्हों में बड़ा हो सो तुम्हारा सेवक होगा। जो कोई १२ अपने को ऊंचा करे सो नीचा किया जायगा और जो कोई अपने को नीचा करे सो ऊंचा किया जायगा।

हाय तुम कपटी अध्यापको और फरीशियो तुम १३ मनुष्यों पर स्वर्ग के राज्य का द्वार मून्दते हो. न आप ही उस में प्रवेश करते हो और न प्रवेश करनेहारों को प्रवेश करने देते हो। हाय तुम कपटी अध्यापको और फरी- १४ शियो तुम विधवाओं के घर खा जाते हो और बहाना के लिये बड़ी बेर लों प्रार्थना करते हो इस लिये तुम अधिक दंड पाओगे। हाय तुम कपटी अध्यापको और फरीशियो १५ तुम एक जन को अपने मत में लाने को सारे जल औ थल में फिरा करते हो और जब वह मत में आया है तब उस को अपने से दूना नरक के योग्य बनाते हो। हाय तुम १६ अन्धे अगुवो जो कहते हो यदि कोई मन्दिर की किरिया खाय तो कुछ नहीं है परन्तु यदि कोई मन्दिर के सोने की किरिया खाय तो ऋणी है। हे मूर्खो और अन्धो कौन १७ बड़ा है वह सोना अथवा वह मन्दिर जो सोने को पवित्र करता है। फिर कहते हो यदि कोई बेदी की किरिया १८ खाय तो कुछ नहीं है परन्तु जो चढ़ावा बेदी पर है यदि कोई उस की किरिया खाय तो ऋणी है। हे मूर्खो और १९ अन्धो कौन बड़ा है वह चढ़ावा अथवा वह बेदी जो

२० चढ़ावे को पवित्र करती है। इस लिये जो बेदी की किरिया खाता है सो उस की किरिया और जो कुछ उस पर है उस
२१ की भी किरिया खाता है। और जो मन्दिर की किरिया खाता है सो उस की किरिया और जो उस में बास करता
२२ है उस की भी किरिया खाता है। और जो स्वर्ग की किरिया खाता है सो ईश्वर के सिंहासन की किरिया और
२३ जो उस पर बैठा है उस की भी किरिया खाता है। हाय तुम कपटी अध्यापको और फरीशियो तुम पोदीने और सोए और जीरे का दसवां अंश देते हो परन्तु तुम ने व्यवस्था की भारी बातों को अर्थात न्याय और दया और विश्वास को छोड़ दिया है . इन्हें करना और उन्हें न
२४ छोड़ना उचित था। हे अन्धे अगुवो जो मच्छर को छान
२५ डालते हो और ऊंट को निगलते हो। हाय तुम कपटी अध्यापको और फरीशियो तुम कटोरे और थाल को बाहर बाहर शुद्ध करते हो परन्तु वे भीतर अन्धेर और अन्याय
२६ से भरे हैं। हे अन्धे फरीशी पहिले कटोरे और थाल के
२७ भीतर शुद्ध कर कि वे बाहर भी शुद्ध होवें। हाय तुम कपटी अध्यापको और फरीशियो तुम चूना फेरी हुई कबरों के समान हो जो बाहर से सुन्दर दिखाई देती हैं परन्तु भीतर मृतकों की हड्डियों से और सब प्रकार की
२८ मलिनता से भरी हैं। इसी रीति से तुम भी बाहर से मनुष्यों को धर्म्मी दिखाई देते हो परन्तु भीतर कपट और अधर्म्म
२९ से भरे हो। हाय तुम कपटी अध्यापको और फरीशियो तुम भविष्यद्वक्ताओं की कबरें बनाते हो और धर्म्मियों की
३० कबरें संवारते हो . और कहते हो यदि हम अपने पितरों के दिनों में होते तो भविष्यद्वक्ताओं का लोहू बहाने में उन
३१ के संगी न होते। इस से तुम अपने पर साक्षी देते हो कि

तुम भविष्यद्वक्ताओं के घातकों के सन्तान हो। सो तुम ३२
अपने पितरों का नपुआ भरो। हे सांपो हे सर्प्पों के वंश ३३
तुम नरक के दंड से क्योंकर बचोगे।

इस लिये देखो मैं तुम्हारे पास भविष्यद्वक्ताओं और ३४
बुद्धिमानों और अध्यापकों को भेजता हूं और तुम उन में से
कितनों को मार डालोगे और क्रूश पर चढ़ाओगे और
कितनों को अपनी सभाओं में कोड़े मारोगे और नगर नगर
सताओगे . कि धर्म्मी हाबिल के लोहू से लेके बरखियाह ३५
के पुत्र जिखरियाह के लोहू तक जिसे तुम ने मन्दिर और
वेदी के बीच में मार डाला जितने धर्म्मियों का लोहू पृथिवी
पर बहाया जाता है सब तुम पर पड़े। मैं तुम से सच ३६
कहता हूं यह सब बातें इसी समय के लोगों पर पड़ेंगीं।
हे यिरूशलीम यिरूशलीम जो भविष्यद्वक्ताओं को मार ३७
डालती है और जो तेरे पास भेजे गये हैं उन्हें पत्थरवाह
करती है जैसे मुर्गी अपने बच्चों को पंखों के नीचे एकट्ठे
करती है वैसे ही मैं ने कितनी बेर तेरे बालकों को एकट्ठे
करने की इच्छा किई परन्तु तुम ने न चाहा। देखो तुम्हारा ३८
घर तुम्हारे लिये उजाड़ छोड़ा जाता है। क्योंकि मैं तुम ३९
से कहता हूं जब लों तुम न कहोगे धन्य वह जो परमेश्वर
के नाम से आता है तब लों तुम मुझे अब से फिर न
देखोगे।

२४ चौबीसवां पर्व्व ।

१ मन्दिर के नाश होने की भविष्यद्वाणी। ३ उस समय के चिन्ह। ९ शिष्यों पर उपद्रव होगा। १५ यिहूदी लोग बड़ा कष्ट पावेंगे। २३ झूठे खीष्ट प्रगट होंगे। २९ मनुष्य के पुत्र के आने का वर्णन। ३२ गूलर के वृक्ष का दृष्टान्त। ३६ जलप्रलय से उस समय की उपमा। ४२ सचेत रहने का उपदेश और दासों का दृष्टान्त।

जब यीशु मन्दिर से निकलके जाता था तब उस के १

शिष्य लोग उस को मन्दिर की रचना दिखाने को उस पास
२ आये। यीशु ने उन से कहा क्या तुम यह सब नहीं देखते
हो . मैं तुम से सच कहता हूं यहां पत्थर पर पत्थर भी न
छोड़ा जायगा जो गिराया न जायगा।
३ जब वह जैतून पर्व्वत पर बैठा था तब शिष्यों ने निराले
में उस पास आ कहा हमों से कहिये यह कब होगा और
आप के आने का और जगत के अन्त का क्या चिन्ह होगा .
४ यीशु ने उन को उत्तर दिया चौकस रहो कि कोई तुम्हें
५ न भरमावे। क्योंकि बहुत लोग मेरे नाम से आके कहेंगे
६ मैं खीष्ट हूं और बहुतों को भरमावेंगे। तुम लड़ाइयां और
लड़ाइयों की चर्चा सुनोगे . देखो मत घबराओ क्योंकि
इन सभों का होना अवश्य है परन्तु अन्त उस समय में
७ नहीं होगा। क्योंकि देश देश के और राज्य राज्य के बिरुद्ध
उठेंगे और अनेक स्थानों में अकाल और मरियां और
८ भुईंडोल होंगे। यह सब दुःखों का आरंभ होगा।
९ तब वे तुम्हें पकड़वायेंगे कि क्लेश पावो और तुम्हें
मार डालेंगे और मेरे नाम के कारण सब देशों के लोग
१० तुम से बैर करेंगे। तब बहुतेरे ठोकर खायेंगे और एक
दूसरे को पकड़वायगा और एक दूसरे से बैर करेगा।
११ और बहुत से झूठे भविष्यद्वक्ता प्रगट होके बहुतों को
१२ भरमावेंगे। और अधर्म्म के बढ़ने से बहुतों का प्रेम ठंडा
१३ हो जायगा। पर जो अन्त लों स्थिर रहे सोई त्राण पावेगा।
१४ और राज्य का यह सुसमाचार सब देशों के लोगों पर साक्षी
होने के लिये समस्त संसार में सुनाया जायगा . तब अन्त
होगा।
१५ सो जब तुम उस उजाड़नेहारी घिनित बस्तु को जिस
की बात दानियेल भविष्यद्वक्ता से कही गई पवित्र स्थान

में खड़े होते देखो (जो पढ़े सो बूझे) . तब जो यिहूदिया १६ में हों सो पहाड़ों पर भागें। जो कोठे पर हो सो अपने घर में १७ से कुछ लेने को न उतरे। और जो खेत में हो सो अपना १८ वस्त्र लेने को पीछे न फिरे। उन दिनों में हाय हाय गर्भ- १९ वतियां और दूध पिलानेवालियां। परन्तु प्रार्थना करो २० कि तुम को जाड़े में अथवा विश्रामवार में भागना न होवे। क्योंकि उस समय में ऐसा महा क्लेश होगा जैसा जगत २१ के आरंभ से अब तक न हुआ और कभी न होगा। जो वे २२ दिन घटाये न जाते तो कोई प्राणी न बचता परन्तु चुने हुए लोगों के कारण वे दिन घटाये जायेंगे।

तब यदि कोई तुम से कहे देखो खीष्ट यहां है अथवा वहां २३ है तो प्रतीति मत करो। क्योंकि झूठे खीष्ट और झूठे भवि- २४ ष्यद्वक्ता प्रगट होके ऐसे बड़े चिन्ह और अद्भुत काम दिखावेंगे कि जो हो सकता तो चुने हुए लोगों को भी भरमाते। देखो मैं ने आगे से तुम्हें कह दिया है। इस लिये जो वे २५ तुम से कहें देखो जंगल में है तो बाहर मत जाओ अथवा २६ देखो कोठरियों में है तो प्रतीति मत करो। क्योंकि जैसे २७ बिजली पूर्व्व से निकलती और पश्चिम लों चमकती है वैसा ही मनुष्य के पुत्र का आना भी होगा। जहां कहीं २८ लोथ होय तहां गिद्ध एकट्ठे होंगे।

उन दिनों के क्लेश के पीछे तुरन्त सूर्य्य अंधियारा हो २९ जायगा और चांद अपनी ज्योति न देगा तारे आकाश से गिर पड़ेंगे और आकाश की सेना डिग जायगी। तब ३० मनुष्य के पुत्र का चिन्ह आकाश में दिखाई देगा और तब पृथिवी के सब कुलों के लोग छाती पीटेंगे और मनुष्य के पुत्र को पराक्रम और बड़े ऐश्वर्य्य से आकाश के मेघों पर आते देखेंगे। और वह अपने दूतों को तुरही के महा शब्द ३१

सहित भेजेगा और वे आकाश के इस सिवाने से उस सिवाने तक चहुं दिशा से उस के चुने हुए लोगों को एकट्ठे करेंगे।

३२ गूलर के वृक्ष से दृष्टान्त सीखो . जब उस की डाली कोमल हो जाती और पत्ते निकल आते तब तुम जानते
३३ हो कि धूपकाला निकट है। इस रीति से जब तुम इन सब बातों को देखो तब जानो कि वह निकट है हां द्वार
३४ पर है। मैं तुम से सच कहता हूं कि जब लों यह सब बातें पूरी न हो जायें तब लों इस समय के लोग नहीं
३५ जाते रहेंगे। आकाश औ पृथिवी टल जायेंगे परन्तु मेरी बातें कभी न टलेंगीं।

३६ उस दिन और उस घड़ी के विषय में न कोई मनुष्य
३७ जानता है न स्वर्ग के दूत परन्तु केवल मेरा पिता। जैसे नूह के दिन हुए वैसा ही मनुष्य के पुत्र का आना भी
३८ होगा। जैसे जलप्रलय के आगे के दिनों में लोग जिस दिन लों नूह जहाज पर न चढ़ा उसी दिन लों खाते औ
३९ पीते बिवाह करते औ बिवाह देते थे . और जब लों जलप्रलय आके उन सभों को ले न गया तब लों उन्हें चेत न हुआ वैसा ही मनुष्य के पुत्र का आना भी होगा।
४० तब दो जन खेत में होंगे एक लिया जायगा और दूसरा
४१ छोड़ा जायगा। दो स्त्रियां चक्की पीसती रहेंगीं एक लिई जायगी और दूसरी छोड़ी जायगी।

४२ इस लिये जागते रहो क्योंकि तुम नहीं जानते हो
४३ तुम्हारा प्रभु किस घड़ी आवेगा। पर यही जानते हो कि यदि घर का स्वामी जानता चोर किस पहर में आवेगा तो वह जागता रहता और अपने घर में सेंध पड़ने न
४४ देता। इस लिये तुम भी तैयार रहो क्योंकि जिस घड़ी का

अनुमान तुम नहीं करते हो उसी घड़ी मनुष्य का पुत्र आवेगा। वह विश्वासयोग्य और बुद्धिमान दास कौन है ४५ जिसे उस के स्वामी ने अपने परिवार पर प्रधान किया हो कि समय में उन्हें भोजन देवे। वह दास धन्य है जिसे ४६ उस का स्वामी आके ऐसा करते पावे। मैं तुम से सत्य ४७ कहता हूं वह उसे अपनी सव सम्पत्ति पर प्रधान करेगा। परन्तु जो वह दुष्ट दास अपने मन में कहे मेरा स्वामी ४८ आने में विलम्ब करता है. और अपने संगी दासों को ४९ मारने और मतवाले लोगों के संग खाने पीने लगे. तो ५० जिस दिन वह वाट जोहता न रहे और जिस घड़ी का वह अनुमान न करे उसी में उस दास का स्वामी आवेगा. और उस को वड़ी ताड़ना देके कपटियों के संग उस का ५१ अंश देगा जहां रोना और दांत पीसना होगा।

२५ पचीसवां पर्व्व।

१ दस कुंवारियों का दृष्टान्त। १४ तोड़ों का दृष्टान्त। ३१ न्याय के दिन का वर्णन।

तव स्वर्ग के राज्य की उपमा दस कुंवारियों से दिई १ जायगी जो अपनी मशालें लेके दूल्हे से मिलने को निकलीं। उन्हों में से पांच सुबुद्धि और पांच निर्बुद्धि थीं। जो निर्बुद्धि २ ३ थीं उन्हों ने अपनी मशालों को ले अपने संग तेल न लिया। परन्तु सुबुद्धियों ने अपनी मशालों के संग अपने पात्रों में तेल ४ लिया। दूल्हे के विलम्ब करने से वे सव ऊंघीं और सो गईं। ५ आधी रात को धूम मची कि देखो दूल्हा आता है उस से ६ मिलने को निकलो। तव वे सव कुंवारियां उठके अपनी ७ मशालों को सजने लगीं। और निर्बुद्धियों ने सुबुद्धियों से कहा ८ अपने तेल में से कुछ हम को दीजिये क्योंकि हमारी मशालें बुझी जाती हैं। परन्तु सुबुद्धियों ने उत्तर दिया क्या जानें ९ हमारे और तुम्हारे लिये वस न होय सो अच्छा है कि तुम

१० बेचनेहारों के पास जाके अपने लिये मोल लेओ। ज्यों वे मोल लेने को जाती थीं त्यों ही दूल्हा आ पहुंचा और जो तैयार थीं सो उस के संग बिवाह के घर में गईं और द्वार
११ मून्दा गया। पीछे दूसरी कुंवारियां भी आके बोलीं हे
१२ प्रभु हे प्रभु हमारे लिये खोलिये। उस ने उत्तर दिया कि
१३ मैं तुम से सच कहता हूं मैं तुम को नहीं जानता हूं। इस लिये जागते रहो क्योंकि तुम न वह दिन न घड़ी जानते हो जिस में मनुष्य का पुत्र आवेगा।

१४ क्योंकि वह एक मनुष्य के समान है जिस ने परदेश को जाते हुए अपने ही दासों को बुलाके उन को अपना धन
१५ सोंपा। उस ने एक को पांच तोड़े दूसरे को दो तीसरे को एक हर एक को उस के सामर्थ्य के अनुसार दिया और
१६ तुरन्त परदेश को चला। तब जिस ने पांच तोड़े पाये उस ने जाके उन से व्योपार कर पांच तोड़े और कमाये।
१७ इसी रीति से जिस ने दो पाये उस ने भी दो तोड़े और
१८ कमाये। परन्तु जिस ने एक तोड़ा पाया उस ने जाके
१९ मिट्टी में खोदके अपने स्वामी के रुपैये छिपा रखे। बहुत दिनों के पीछे उन दासों का स्वामी आया और उन से लेखा
२० लेने लगा। तब जिस ने पांच तोड़े पाये थे उस ने पांच तोड़े और लाके कहा हे प्रभु आप ने मुझे पांच तोड़े सोंपे
२१ देखिये मैं ने उन से पांच तोड़े और कमाये हैं। उस के स्वामी ने उस से कहा धन्य हे उत्तम और विश्वासयोग्य दास तू थोड़े में विश्वासयोग्य हुआ मैं तुझे बहुत पर
२२ प्रधान करूंगा. अपने प्रभु के आनन्द में प्रवेश कर। जिस ने दो तोड़े पाये थे उस ने भी आके कहा हे प्रभु आप ने मुझे दो तोड़े सोंपे देखिये मैं ने उन से दो तोड़े और
२३ कमाये हैं। उस के स्वामी ने उस से कहा धन्य हे उत्तम

श्रोर विश्वासयोग्य दास तू थोड़े में विश्वासयोग्य हुश्रा मैं तुझे बहुत पर प्रधान करूंगा . श्रपने प्रभु के श्रानन्द में प्रवेश कर। तब जिस ने एक तोड़ा पाया था उस ने श्राके २४ कहा हे प्रभु मैं श्राप को जानता था कि श्राप कठोर मनुष्य हैं जहां श्राप ने नहीं बोया वहां लवते हैं श्रोर जहां श्राप ने नहीं छींटा वहां से एकट्ठा करते हैं। सो मैं २५ डरा श्रोर जाके श्राप का तोड़ा मिट्टी में छिपाया . देखिये श्रपना ले लीजिये। उस के स्वामी ने उसे उत्तर दिया कि २६ हे दुष्ट श्रोर श्रालसी दास तू जानता था कि जहां मैं ने नहीं बोया वहां लवता हूं श्रोर जहां मैं ने नहीं छींटा वहां से एकट्ठा करता हूं। तो तुझे उचित था कि मेरे २७ रूपैये महाजनों के हाथ सोंपता तब मैं श्राके श्रपना धन व्याज समेत पाता। इस लिये वह तोड़ा उस से लेश्रो श्रोर २८ जिस पास दस तोड़े हैं उसे देश्रो। क्योंकि जो कोई २९ रखता है उस को श्रोर दिया जायगा श्रोर उस को बहुत होगा परन्तु जो नहीं रखता है उस से जो कुछ उस पास है सो भी ले लिया जायगा। श्रोर उस निकम्मे दास को ३० बाहर के श्रन्धकार में डाल देश्रो जहां रोना श्रो दांत पीसना होगा।

जब मनुष्य का पुत्र श्रपने ऐश्वर्य्य सहित श्रावेगा श्रोर ३१ सब पवित्र दूत उस के साथ तब वह श्रपने ऐश्वर्य्य के सिंहासन पर बैठेगा। श्रोर सब देशों के लोग उस के श्रागे ३२ एकट्ठे किये जायेंगे श्रोर जैसा गड़ेरिया भेड़ों को बकरियों से श्रलग करता है तैसा वह उन्हें एक दूसरे से श्रलग करेगा। श्रोर वह भेड़ों को श्रपनी दहिनी श्रोर श्रोर बकरियों ३३ को बाईं श्रोर खड़ा करेगा। तब राजा उन से जो उस की ३४ दहिनी श्रोर हैं कहेगा हे मेरे पिता के धन्य लोगो श्राश्रो

जो राज्य जगत की उत्पत्ति से तुम्हारे लिये तैयार किया
३५ गया है उस के अधिकारी होओ . क्योंकि मैं भूखा था
और तुम ने मुझे खाने को दिया मैं प्यासा था और तुम ने
मुझे पिलाया मैं परदेशी था और तुम मुझे अपने घर में
३६ लाये . मैं नंगा था और तुम ने मुझे पहिराया मैं रोगी
था और तुम ने मेरी सुध लिई मैं बन्दीगृह में था और
३७ तुम मेरे पास आये। तब धर्म्मी लोग उस को उत्तर देंगे
कि हे प्रभु हम ने कब आप को भूखा देखा और खिलाया
३८ अथवा प्यासा और पिलाया। हम ने कब आप को परदेशी
देखा और अपने घर में लाये अथवा नंगा और पहिराया।
३९ और हम ने कब आप को रोगी अथवा बन्दीगृह में देखा
४० और आप के पास गये। तब राजा उन्हें उत्तर देगा मैं
तुम से सच कहता हूं कि तुम ने मेरे इन अति छोटे भाइयों
४१ में से एक से जोई भर किया सो मुझ से किया। तब वह
उन से जो बाईं ओर हैं कहेगा हे स्रापित लोगो मेरे पास
से उस अनन्त आग में जाओ जो शैतान और उस के दूतों
४२ के लिये तैयार किई गई है . क्योंकि मैं भूखा था और
तुम ने मुझे खाने को नहीं दिया मैं प्यासा था और तुम ने
४३ मुझे नहीं पिलाया . मैं परदेशी था और तुम मुझे अपने
घर में नहीं लाये मैं नंगा था और तुम ने मुझे नहीं पहिराया
मैं रोगी और बन्दीगृह में था और तुम ने मेरी सुध न लिई।
४४ तब वे भी उत्तर देंगे कि हे प्रभु हम ने कब आप को भूखा वा
प्यासा वा परदेशी वा नंगा वा रोगी वा बन्दीगृह में देखा
४५ और आप की सेवा न किई। तब वह उन्हें उत्तर देगा मैं
तुम से सच कहता हूं कि तुम ने इन अति छोटों में से एक से
४६ जोई भर नहीं किया सो मुझ से नहीं किया। सो ये लोग
अनन्त दंड में परन्तु धर्म्मी लोग अनन्त जीवन में जा रहेंगे।

२६ छव्वीसवां पर्व्व ।

१ यीशु को वध करने का परामर्श । ६ एक स्त्री का उस के सिर पर सुगन्ध तेल ढालना । १४ यिहूदा का विश्वासघात करना । १७ शिष्यों का निस्तार पर्व्व का भोजन बनाना । २० उन के संग यीशु का भोजन करना और यिहूदा के विषय में भविष्यद्वाक्य कहना । २६ प्रभु भोज का निरूपण । ३१ पितर के यीशु से मुकर जाने की भविष्यद्वाणी । ३६ बारी में यीशु का महा शोक । ४७ उस का पकड़ा जाना । ५७ उस को महायाजक के पास ले जाना और वध के योग्य ठहराके अपमान करना । ६९ पितर का उस से मुकर जाना ।

जब यीशु यह सब बातें कह चुका तब अपने शिष्यों से १
कहा . तुम जानते हो कि दो दिन के पीछे निस्तार पर्व्व २
होगा और मनुष्य का पुत्र क्रूश पर चढ़ाये जाने को पकड़-
वाया जायगा । तब लोगों के प्रधान याजक और अध्यापक ३
और प्राचीन लोग कियाफा नाम महायाजक के घर में
एकट्ठे हुए . और आपस में विचार किया कि यीशु को ४
छल से पकड़के मार डालें । परन्तु उन्हों ने कहा पर्व्व में ५
नहीं न हो कि लोगों में हुल्लड़ होवे ।

जब यीशु बैथनिया में शिमोन कोढ़ी के घर में था . ६
तब एक स्त्री उजले पत्थर के पात्र में बहुत मोल का सुगन्ध ७
तेल लेके उस पास आई और जब वह भोजन पर बैठा
था तब उस के सिर पर ढाला । यह देखके उस के शिष्य ८
रिसियाके बोले यह क्षय क्यों हुआ । क्योंकि यह सुगन्ध ९
तेल बहुत दाम में बिक सकता और कंगालों को दिया जा
सकता । यीशु ने यह जानके उन से कहा क्यों स्त्री को दुःख १०
देते हो . उस ने अच्छा काम मुझ से किया है । कंगाल लोग ११
तुम्हारे संग सदा रहते हैं परन्तु मैं तुम्हारे संग सदा नहीं
रहूंगा । उस ने मेरे देह पर यह सुगन्ध तेल जो ढाला है १२
सो मेरे गाड़े जाने के लिये किया है । मैं तुम से सत्य कहता १३
हूं सारे जगत में जहां कहीं यह सुसमाचार सुनाया जाय

तहां यह भी जो इस ने किया है उस के स्मरण के लिये कहा जायगा ।

१४ तब बारह शिष्यों में से यिहूदा इस्करियोती नाम एक
१५ शिष्य प्रधान याजकों के पास गया . और कहा जो मैं यीशु को आप लोगों के हाथ पकड़वाऊं तो आप लोग मुझे क्या
१६ देंगे . उन्हों ने उस को तीस रुपैये देने को ठहराया । सो वह उसी समय से उस को पकड़वाने का अवसर ढूंढ़ने लगा ।

१७ अखमीरी रोटी के पर्व्व के पहिले दिन शिष्य लोग यीशु पास आ उस से बोले आप कहां चाहते हैं कि हम आप के
१८ लिये निस्तार पर्व्व का भोजन खाने की तैयारी करें। उस ने कहा नगर में अमुक मनुष्य के पास जाके उस से कहो गुरु कहता है कि मेरा समय निकट है मैं अपने शिष्यों के संग
१९ तेरे यहां निस्तार पर्व्व का भोजन करूंगा । सो शिष्यों ने जैसा यीशु ने उन्हें आज्ञा दिई वैसा किया और निस्तार पर्व्व का भोजन बनाया ।

२० सांझ को यीशु बारह शिष्यों के संग भोजन पर बैठा ।
२१ जब वे खाते थे तब उस ने कहा मैं तुम से सच कहता हूं
२२ कि तुम में से एक मुझे पकड़वायगा । इस पर वे बहुत उदास हुए और हर एक उस से कहने लगा हे प्रभु वह क्या मैं हूं ।
२३ उस ने उत्तर दिया कि जो मेरे संग थाली में हाथ डालता
२४ है सोई मुझे पकड़वायगा । मनुष्य का पुत्र जैसा उस के विषय में लिखा है वैसा ही जाता है परन्तु हाय वह मनुष्य जिस से मनुष्य का पुत्र पकड़वाया जाता है . जो उस मनुष्य का
२५ जन्म न होता तो उस के लिये भला होता । तब उस के पकड़वानेहारे यिहूदा ने उत्तर दिया कि हे गुरु वह क्या मैं हूं . यीशु उस से बोला तू तो कह चुका ।

जब वे खाते थे तब यीशु ने रोटी लेके धन्यबाद किया २६ और उसे तोड़के शिष्यों को दिया और कहा लेओ खाओ यह मेरा देह है। और उस ने कटोरा लेके धन्य माना और २७ उन को देके कहा तुम सब इस से पीओ। क्योंकि यह मेरा २८ लोहू अर्थात नये नियम का लोहू है जो बहुतों के लिये पापमोचन के निमित्त बहाया जाता है। मैं तुम से कहता २९ हूं कि जिस दिन लों मैं तुम्हारे संग अपने पिता के राज्य में उसे नया न पीऊं उस दिन लों मैं अब से यह दाख रस कभी न पीऊंगा। और वे भजन गाके जैतून पर्ब्बत पर ३० गये।

तब यीशु ने उन से कहा तुम सब इसी रात मेरे विषय ३१ में ठोकर खाओगे क्योंकि लिखा है कि मैं गड़ेरिये को मारूंगा और झुंड की भेड़ें तितर बितर हो जायेंगीं। परन्तु ३२ मैं अपने जी उठने के पीछे तुम्हारे आगे गालील को जाऊंगा। पितर ने उस को उत्तर दिया यदि सब आप के विषय में ३३ ठोकर खावें तौभी मैं कभी ठोकर न खाऊंगा। यीशु ने उस ३४ से कहा मैं तुझे सत्य कहता हूं कि इसी रात मुर्ग के बोलने से आगे तू तीन बार मुझ से मुकरेगा। पितर ने उस से कहा ३५ जो आप के संग मुझे मरना हो तौभी मैं आप से कभी न मुकरूंगा. सब शिष्यों ने भी वैसा ही कहा।

तब यीशु ने शिष्यों के संग गेतशिमनी नाम स्थान में आके ३६ उन से कहा जब लों मैं वहां जाके प्रार्थना करूं तब लों तुम यहां बैठो। और वह पितर को और जबदी के दोनों पुत्रों ३७ को अपने संग ले गया और शोक करने और बहुत उदास होने लगा। तब उस ने उन से कहा मेरा मन यहां लों अति ३८ उदास है कि मैं मरने पर हूं. तुम यहां ठहरके मेरे संग जागते रहो। और थोड़ा आगे बढ़के वह मुंह के बल गिरा ३९

और प्रार्थना किई कि हे मेरे पिता जो हो सके तो यह
कटोरा मेरे पास से टल जाय तौभी जैसा मैं चाहता हूं वैसा
४० न होय पर जैसा तू चाहता है। तब उस ने शिष्यों के पास
आ उन्हें सोते पाया और पितर से कहा सो तुम मेरे संग
४१ एक घड़ी नहीं जाग सके। जागते रहो और प्रार्थना करो
कि तुम परीक्षा में न पड़ो. मन तो तैयार है परन्तु शरीर
४२ दुर्बल है। फिर उस ने दूसरी बेर जाके प्रार्थना किई कि हे
मेरे पिता जो बिना पीने से यह कटोरा मेरे पास से नहीं
४३ टल सकता है तो तेरी इच्छा पूरी होय। तब उस ने आके
उन्हें फिर सोते पाया क्योंकि उन की आंखें नींद से भरी
४४ थीं। उन को छोड़के उस ने फिर जाके तीसरी बेर वही बात
४५ कहके प्रार्थना किई। तब उस ने अपने शिष्यों के पास आ
उन से कहा सो तुम सोते रहते और बिश्राम करते हो.
देखो घड़ी आ पहुंची है और मनुष्य का पुत्र पापियों के
४६ हाथ में पकड़वाया जाता है। उठो चलें देखो जो मुझे
पकड़वाता है सो निकट आया है।

४७ वह बोलता ही था कि देखो यिहूदा जो बारह शिष्यों
में से एक था आ पहुंचा और लोगों के प्रधान याजकों और
प्राचीनों की ओर से बहुत लोग खड्ग और लाठियां लिये
४८ हुए उस के संग। यीशु के पकड़वानेहारे ने उन्हें यह पता
दिया था कि जिस को मैं चूमूं वही है उस को पकड़ो।
४९ और वह तुरन्त यीशु पास आके बोला हे गुरु प्रणाम
५० और उस को चूमा। यीशु ने उस से कहा हे मित्र तू किस
लिये आया है. तब उन्हों ने आके यीशु पर हाथ डालके
५१ उसे पकड़ा। इस पर देखो यीशु के संगियों में से एक ने हाथ
बढ़ाके अपना खड्ग खींचके महायाजक के दास को मारा
५२ और उस का कान उड़ा दिया। तब यीशु ने उस से कहा

अपना खड्ग फिर काठी में रख क्योंकि जो लोग खड्ग
खींचते हैं सो सब खड्ग से नाश किये जायेंगे। क्या तू ५३
समझता है कि मैं अभी अपने पिता से बिन्ती नहीं कर
सकता हूं और वह मेरे पास स्वर्ग दूतों की बारह सेनाओं
से अधिक पहुंचा न देगा। परन्तु तब धर्म्मपुस्तक में जो ५४
लिखा है कि ऐसा होना अवश्य है सो क्योंकर पूरा होय।
उसी घड़ी यीशु ने लोगों से कहा क्या तुम मुझे पकड़ने को ५५
जैसे डाकू पर खड्ग और लाठियां लेके निकले हो. मैं
मन्दिर में उपदेश करता हुआ प्रतिदिन तुम्हारे संग बैठता
था और तुम ने मुझे नहीं पकड़ा। परन्तु यह सब इस लिये ५६
हुआ कि भविष्यद्वक्ताओं के पुस्तक की बातें पूरी होवें.
तब सब शिष्य उसे छोड़के भागे।

जिन्हों ने यीशु को पकड़ा सो उस को कियाफा महा- ५७
याजक के पास ले गये जहां अध्यापक और प्राचीन लोग
एकट्ठे हुए। पितर दूर दूर उस के पीछे महायाजक के ५८
अंगने लों चला गया और भीतर जाके इस का अन्त देखने
को प्यादों के संग बैठा। प्रधान याजकों और प्राचीनों ने ५९
और न्याइयों की सारी सभा ने यीशु को घात करवाने के
लिये उस पर झूठी साक्षी ढूंढ़ी परन्तु न पाई। बहुतेरे ६०
झूठे साक्षी तो आये तौभी उन्हों ने नहीं पाई। अन्त में ६१
दो झूठे साक्षी आके बोले इस ने कहा कि मैं ईश्वर का
मन्दिर ढा सकता और उसे तीन दिन में फिर बना सकता
हूं। तब महायाजक ने खड़ा हो यीशु से कहा क्या तू कुछ ६२
उत्तर नहीं देता है. ये लोग तेरे बिरुद्ध क्या साक्षी देते
हैं। परन्तु यीशु चुप रहा इस पर महायाजक ने उस से कहा ६३
मैं तुझे जीवते ईश्वर की किरिया देता हूं हमों से कह तू
ईश्वर का पुत्र ख्रीष्ट है कि नहीं। यीशु उस से बोला तू तो ६४

कह चुका और मैं यह भी तुम्हों से कहता हूं कि इस के पीछे तुम मनुष्य के पुत्र को सर्व्वशक्तिमान की दहिनी ओर
६५ बैठे और आकाश के मेघों पर आते देखोगे। तब महा-याजक ने अपने बस्त्र फाड़के कहा यह ईश्वर की निन्दा कर चुका है अब हमें साक्षियों का और क्या प्रयोजन . देखो तुम ने अभी उस के मुख से ईश्वर की निन्दा सुनी
६६ है। तुम क्या बिचार करते हो . उन्हों ने उत्तर दिया
६७ वह वध के योग्य है। तब उन्हों ने उस के मुंह पर थूका
६८ और उसे घूसे मारे। औरों ने थपेड़े मारके कहा हे ख्रीष्ट हम से भविष्यद्वाणी बोल किस ने तुझे मारा।

६९ पितर बाहर अंगने में बैठा था और एक दासी उस
७० पास आके बोली तू भी यीशु गालीली के संग था। उस ने सभों के साम्हने मुकरके कहा मैं नहीं जानता तू क्या
७१ कहती है। जब वह बाहर डेवढ़ी में गया तब दूसरी दासी ने उसे देखके जो लोग वहां थे उन से कहा यह
७२ भी यीशु नासरी के संग था। उस ने किरिया खाके फिर
७३ मुकरा कि मैं उस मनुष्य को नहीं जानता हूं। थोड़ी बेर पीछे जो लोग वहां खड़े थे उन्हों ने पितर के पास आके उस से कहा तू भी सचमुच उन में से एक है क्यों-
७४ कि तेरी बोली भी तुझे प्रगट करती है। तब वह धिक्कार देने और किरिया खाने लगा कि मैं उस मनुष्य
७५ को नहीं जानता हूं . और तुरन्त मुर्ग बोला। तब पितर ने यीशु का बचन जिस ने उस से कहा था कि मुर्ग के बोलने से आगे तू तीन बार मुझ से मुकरेगा स्मरण किया और बाहर निकलके बिलक बिलक रोया।

२७ सताईसवां पर्व्व ।

१ योशु का पिलात के हाथ सोंपा जाना । ३ यिहूदा का रुपैयों को फेर देना और अपने को फांसी देना । ११ पिलात का योशु को बिचार करना और छोड़ने की इच्छा करना । २४ उस का योशु को निर्दोष ठहराना । २६ योशु का घातकों के हाथ सोंपा जाना और योद्धाओं से निन्दित होना । ३३ उस का क्रूश पर चढ़ाया जाना । ३९ उस पर लोगों का हंसना । ४५ उस का पुकारना और सिरका पीना । ५० उस का प्राण त्यागना और अद्भुत चिन्हों का प्रगट होना । ५५ स्त्रियों का क्रूश के समीप रहना । ५७ यूसफ का योशु को कबर में रखना । ६२ कबर पर पहरुओं का बैठाया जाना ।

जब भोर हुआ तब लोगों के सब प्रधान याजकों और प्राचीनों ने आपस में योशु के बिरुद्ध बिचार किया कि उसे घात करवावें । और उन्हों ने उसे बांधा और ले जाके पन्तिय पिलात अध्यक्ष को सोंप दिया । १ २

जब उस के पकड़वानेहारे यिहूदा ने देखा कि वह दंड के योग्य ठहराया गया तब वह पछताके उन तीस रुपैयों को प्रधान याजकों और प्राचीनों के पास फेर लाया . और कहा मैं ने निर्दोषी लोहू पकड़वाने में पाप किया है . वे बोले हमें क्या तू ही जान । तब वह उन रुपैयों को मन्दिर में फेंकके चला गया और जाके अपने को फांसी दिई । प्रधान याजकों ने रुपैये लेके कहा इन्हें मन्दिर के भंडार में डालना उचित नहीं है क्योंकि यह लोहू का दाम है । सो उन्हों ने आपस में बिचार कर उन रुपैयों से पर-देशियों को गाड़ने के लिये कुम्हार का खेत मोल लिया । इस से वह खेत आज तक लोहू का खेत कहावता है । तब जो वचन यिरमियाह भविष्यद्वक्ता से कहा गया था सो पूरा हुआ कि उन्हों ने वे तीस रुपैये हां इस्रायेल के सन्तानों से उस मुलाये हुए का दाम जिसे उन्हों ने मुलाया ले लिया . और जैसे परमेश्वर ने मुझ को आज्ञा दिई तैसे उन्हें कुम्हार के खेत के दाम में दिया । ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १०

११ यीशु अध्यक्ष के आगे खड़ा हुआ और अध्यक्ष ने उस से पूछा क्या तू यिहूदियों का राजा है . यीशु ने उस से कहा
१२ आप ही तो कहते हैं। जब प्रधान याजक और प्राचीन लोग उस पर दोष लगाते थे तब उस ने कुछ उत्तर नहीं
१३ दिया। तब पिलात ने उस से कहा क्या तू नहीं सुनता कि
१४ ये लोग तेरे विरुद्ध कितनी साक्षी देते हैं। परन्तु उस ने एक बात भी उस को उत्तर न दिया यहां लों कि अध्यक्ष ने
१५ बहुत अचंभा किया। उस पर्व्व में अध्यक्ष की यह रीति थी कि एक बन्धुवे को जिसे लोग चाहते थे उन्हों के
१६ लिये छोड़ देता था। उस समय में उन्हों का एक प्रसिद्ध
१७ बन्धुवा था जिस का नाम बरब्बा था। सो जब वे एकट्ठे हुए तब पिलात ने उन से कहा तुम किस को चाहते हो कि मैं तुम्हारे लिये छोड़ देऊं बरब्बा को अथवा यीशु को जो
१८ ख्रीष्ट कहावता है। क्योंकि वह जानता था कि उन्हों ने
१९ उस को डाह से पकड़वाया था। जब वह बिचार आसन पर बैठा था तब उस की स्त्री ने उसे कहला भेजा कि आप उस धर्म्मी मनुष्य से कुछ काम न रखिये क्योंकि मैं ने आज
२० स्वप्न में उस के कारण बहुत दुःख पाया है। प्रधान याजकों और प्राचीनों ने लोगों को समझाया कि वे बरब्बा को मांग
२१ लेवें और यीशु को नाश करवावें। अध्यक्ष ने उन को उत्तर दिया कि इन दोनों में से तुम किस को चाहते हो कि मैं
२२ तुम्हारे लिये छोड़ देऊं . वे बोले बरब्बा को। पिलात ने उन से कहा तो मैं यीशु से जो ख्रीष्ट कहावता है क्या करूं .
२३ सभों ने उस से कहा वह क्रूश पर चढ़ाया जाय। अध्यक्ष ने कहा क्यों उस ने कौन सी बुराई किई है . परन्तु उन्हों ने अधिक पुकारके कहा वह क्रूश पर चढ़ाया जाय।

२४ जब पिलात ने देखा कि कुछ बन नहीं पड़ता पर और

भी हुल्लड़ होता है तब उस ने जल लेके लोगों के साम्हने हाथ धोके कहा मैं इस धर्म्मी मनुष्य के लोहू से निर्दोष हूं तुम ही जानो। सब लोगों ने उत्तर दिया कि उस का लोहू २५ हम पर और हमारे सन्तानों पर होवे।

तब उस ने बरब्बा को उन्हों के लिये छोड़ दिया और २६ यीशु को कोड़े मारके क्रूश पर चढ़ाये जाने को सौंप दिया। तब अध्यक्ष के योद्धाओं ने यीशु को अध्यक्षभवन में ले जाके २७ सारी पलटन उस पास एकट्ठी किई। और उन्हों ने उस २८ का वस्त्र उतारके उसे लाल बागा पहिराया. और कांटों २९ का मुकुट गून्थके उस के सिर पर रखा और उस के दहिने हाथ में नरकट दिया और उस के आगे घुटने टेकके यह कहके उस से ठट्ठा किया कि हे यिहूदियों के राजा प्रणाम। और उन्हों ने उस पर थूका और उस नरकट को ले उस के ३० सिर पर मारा। जब वे उस से ठट्ठा कर चुके तब उस से ३१ वह बागा उतारके और उसी का वस्त्र उस को पहिराके उसे क्रूश पर चढ़ाने को ले गये। बाहर आते हुए उन्हों ने ३२ शिमोन नाम कुरीनी देश के एक मनुष्य को पाया और उसे बेगार पकड़ा कि उस का क्रूश ले चले।

जब वे एक स्थान पर जो गलगथा अर्थात खोपड़ी का ३३ स्थान कहावता है पहुंचे. तब उन्हों ने सिरके में पित्त ३४ मिलाके उसे पीने को दिया परन्तु उस ने चीखके पीने न चाहा। तब उन्हों ने उस को क्रूश पर चढ़ाया और चिट्ठियां ३५ डालके उस के वस्त्र बांट लिये कि जो वचन भविष्यद्वक्ता ने कहा था सो पूरा होवे कि उन्हों ने मेरे कपड़े आपस में बांट लिये और मेरे वस्त्र पर चिट्ठियां डालीं। तब उन्हों ३६ ने वहां बैठके उस का पहरा दिया। और उन्हों ने उस का ३७ दोषपत्र उस के सिर से ऊपर लगाया कि यह यिहूदियों का

३८ राजा यीशु है। तब दो डाकू एक दहिनी ओर और दूसरा बाईं ओर उस के संग क्रूशों पर चढ़ाये गये।

३९ जो लोग उधर से आते जाते थे उन्हों ने अपने सिर
४० हिलाके और यह कहके उस की निन्दा किई . कि हे मन्दिर के ढानेहारे और तीन दिन में बनानेहारे अपने को बचा . जो तू ईश्वर का पुत्र है तो क्रूश पर से उतर आ।
४१ इसी रीति से प्रधान याजकों ने भी अध्यापकों और प्राचीनों
४२ के संग ठट्ठा कर कहा . उस ने औरों को बचाया अपने को बचा नहीं सकता है . जो वह इस्रायेल का राजा है तो क्रूश पर से अब उतर आवे और हम उस का बिश्वास
४३ करेंगे। वह ईश्वर पर भरोसा रखता है . यदि ईश्वर उसे चाहता है तो उस को अब बचावे क्योंकि उस ने
४४ कहा मैं ईश्वर का पुत्र हूं। जो डाकू उस के संग क्रूशों पर चढ़ाये गये उन्हों ने भी इसी रीति से उस की निन्दा किई।

४५ दो पहर से तीसरे पहर लों सारे देश में अंधकार हो
४६ गया। तीसरे पहर के निकट यीशु ने बड़े शब्द से पुकारके कहा एली एली लामा शबक्तनी अर्थात हे मेरे ईश्वर हे
४७ मेरे ईश्वर तू ने क्यों मुझे त्यागा है। जो लोग वहां खड़े थे उन में से कितनों ने यह सुनके कहा वह एलियाह को
४८ बुलाता है। उन में से एक ने तुरन्त दौड़के इस्पंज लेके सिरके में भिंगाया और नल पर रखके उसे पीने को दिया।
४९ औरों ने कहा रहने दे हम देखें कि एलियाह उसे बचाने को आता है कि नहीं।

५० तब यीशु ने फिर बड़े शब्द से पुकारके प्राण त्यागा।
५१ और देखो मन्दिर का परदा ऊपर से नीचे लों फटके दो भाग हो गया और धरती डोली और पर्व्वत तड़क गये।

और कबरें खुलीं और सोये हुए पवित्र लोगों की बहुत ५२ लोथें उठीं। और यीशु के जी उठने के पीछे वे कबरों में से ५३ निकलके पवित्र नगर में गये और बहुतेरों को दिखाई दिये। तब शतपति और वे लोग जो उस के संग यीशु का पहरा ५४ देते थे भुईंडोल और जो कुछ हुआ था सो देखके निपट डर गये और बोले सचमुच यह ईश्वर का पुत्र था।

वहां बहुत सी स्त्रियां जो यीशु की सेवा करती हुईं ५५ गालील से उस के पीछे आई थीं दूर से देखती रहीं। उन्हों ५६ में मरियम मगदलीनी और याकूब की औ योशी की माता मरियम और जबदी के पुत्रों की माता थीं।

जब सांझ हुई तब यूसफ नाम अरिमथिया नगर का ५७ एक धनवान मनुष्य जो आप भी यीशु का शिष्य था आया। उस ने पिलात के पास जाके यीशु की लोथ मांगी. तब ५८ पिलात ने आज्ञा किई कि लोथ दिई जाय। यूसफ ने लोथ ५९ को ले उसे उजली चद्दर में लपेटा. और उसे अपनी नई ६० कबर में रखा जो उस ने पत्थर में खुदवाई थी और कबर के द्वार पर बड़ा पत्थर लुढ़काके चला गया। और मरि- ६१ यम मगदलीनी और दूसरी मरियम वहां कबर के साम्हने बैठी थीं।

तैयारी के दिन के पीछे प्रधान याजक और फरीशी ६२ लोग अगले दिन पिलात के पास एकट्ठे हुए. और बोले ६३ हे प्रभु हमें चेत है कि उस भरमानेहारे ने अपने जीते जी कहा कि तीन दिन के पीछे मैं जी उठूंगा। सो आज्ञा ६४ कीजिये कि तीसरे दिन लों कबर की रखवाली किई जाय न हो कि उस के शिष्य रात को आके उसे चुरा ले जावें और लोगों से कहें कि वह मृतकों में से जी उठा है. तब पिछली भूल पहिली से बुरी होगी। पिलात ने उन से कहा ६५

तुम्हारे पास पहरुए हैं जाओ अपने जानते भर रखवाली
६६ करो। सो उन्हों ने जाके पत्थर पर छाप देके पहरुए बैठाके
कबर की रखवाली किई ।

२८ अठाईसवां पर्ब्ब ।

१ स्त्रियों का दूत से यीशु के जी उठने का समाचार सुनना । ९ यीशु का उन्हें दर्शन देना । ११ प्रधान याजकों का पहरुओं से झूठ बुलवाना । १६ यीशु का एग्यारह शिष्यों को प्रेरण करना ।

१ बिश्रामवार के पीछे अठवारे के पहिले दिन पह फटते
मरियम मगदलीनी और दूसरी मरियम कबर को देखने
२ आईं। और देखो बड़ा भुईंडोल हुआ कि परमेश्वर का एक
दूत स्वर्ग से उतरा और आके कबर के द्वार पर से पत्थर
३ लुढ़काके उस पर बैठा। उस का रूप बिजली सा और उस
४ का वस्त्र पाले की नाईं उजला था। उस के डर के मारे
५ पहरुए कांप गये और मृतकों के समान हुए। दूत ने स्त्रियों
को उत्तर दिया कि तुम मत डरो मैं जानता हूं कि तुम
६ यीशु को जो क्रूश पर घात किया गया ढूंढ़ती हो। वह
यहां नहीं है जैसे उस ने कहा वैसे जी उठा है . आओ
७ यह स्थान देखो जहां प्रभु पड़ा था। और शीघ्र जाके
उस के शिष्यों से कहो कि वह मृतकों में से जी उठा है और
देखो वह तुम्हारे आगे गालील को जाता है वहां उसे
८ देखोगे . देखो मैं ने तुम से कहा है। वे शीघ्र निकलके
भय और बड़े आनन्द से उस के शिष्यों को सन्देश देने
को कबर से दौड़ीं ।

९ जब वे उस के शिष्यों को सन्देश देने को जाती थीं
देखो यीशु उन से आ मिला और कहा कल्याण हो और
उन्हों ने निकट आ उस के पांव पकड़के उस को प्रणाम
१० किया। तब यीशु ने उन से कहा मत डरो जाके मेरे

भाइयों से कह दो कि वे गालील को जावें और वहां वे मुझे देखेंगे।

ज्यों स्त्रियां जाती थीं त्यों ही देखो पहरुओं में से कोई ११ कोई नगर में आये और सब कुछ जो हुआ था प्रधान याजकों से कह दिया। तब उन्हों ने प्राचीनों के संग एकट्ठे १२ हो आपस में विचार कर योद्धाओं को बहुत रुपैये देके कहा. तुम यह कहो कि रात को जब हम सोये थे तब १३ उस के शिष्य आके उसे चुरा ले गये। जो यह बात १४ अध्यक्ष के सुनने में आवे तो हम उस को समझाके तुम को बचा लेंगे। सो उन्हों ने रुपैये लेके जैसे सिखाये गये थे १५ वैसा ही किया और यह बात यिहूदियों में आज लों चलित है।

एग्यारह शिष्य गालील में उस पर्व्वत पर गये जो यीशु १६ ने उन को बताया था। और उन्हों ने उसे देखके उस को १७ प्रणाम किया पर कितनों को सन्देह हुआ। यीशु ने उन १८ पास आ उन से कहा स्वर्ग में और पृथिवी पर समस्त अधिकार मुझ को दिया गया है। इस लिये तुम जाके सब १९ देशों के लोगों को शिष्य करो और उन्हें पिता औ पुत्र औ पवित्र आत्मा के नाम से बपतिसमा देओ. और उन्हें सब २० बातें जो मैं ने तुम्हें आज्ञा किई हैं पालन करने को सिखाओ और देखो मैं जगत के अन्त लों सब दिन तुम्हारे संग हूं। आमीन॥

मार्क रचित सुसमाचार ।

---

१ पहिला पर्ब्ब ।

१ योहन बपतिसमा देनेहारे का वृत्तान्त और भविष्यद्वाक्य । ९ यीशु का बपतिसमा लेना । १२ उस की परीक्षा । १४ उस का उपदेश करना और कई एक शिष्यों को बुलाना । २१ एक भूतग्रस्त मनुष्य को चंगा करना । २९ पितर की सास को चंगा करना । ३२ बहुत रोगियों को चंगा करना । ३५ नगर नगर में उपदेश करना । ४० एक कोढ़ी को चंगा करना ।

१ ईश्वर के पुत्र यीशु ख्रीष्ट के सुसमाचार का आरंभ ।
२ जैसे भविष्यद्वक्ताओं के पुस्तक में लिखा है कि देख मैं अपने दूत को तेरे आगे भेजता हूं जो तेरे आगे तेरा पन्थ
३ बनावेगा । किसी का शब्द हुआ जो जंगल में पुकारता है कि परमेश्वर का पन्थ बनाओ उस के राजमार्ग सीधे करो ।
४ योहन ने जंगल में बपतिसमा दिया और पापमोचन के
५ लिये पश्चात्ताप के बपतिसमा का उपदेश किया । और सारे यिहूदिया देश के और यिरूशलीम नगर के रहनेहारे उस पास निकल आये और सभों ने अपने अपने पापों को
६ मानके यर्दन नदी में उस से बपतिसमा लिया । योहन ऊंट के रोम का वस्त्र और अपनी कटि में चमड़े का पटुका पहिनता था और टिड्डियां औ बन मधु खाया करता
७ था । उस ने प्रचार कर कहा मेरे पीछे वह आता है जो मुझ से अधिक शक्तिमान है मैं उस के जूतों का बन्ध झुकके
८ खोलने के योग्य नहीं हूं । मैं ने तुम्हें जल से बपतिसमा दिया है परन्तु वह तुम्हें पवित्र आत्मा से बपतिसमा देगा ।
९ उन दिनों में यीशु ने गालील देश के नासरत नगर से
१० आके योहन से यर्दन में बपतिसमा लिया । और तुरन्त जल से ऊपर आते हुए उस ने स्वर्ग को खुले और आत्मा को

कपोत की नाईं अपने ऊपर उतरते देखा। और यह ११
आकाशवाणी हुई कि तू मेरा प्रिय पुत्र है जिस से मैं अति
प्रसन्न हूं।

तब आत्मा तुरन्त उस को जंगल में ले गया। वहां १२ १३
जंगल में चालीस दिन शैतान से उस की परीक्षा किई गई
और वह वनपशुओं के संग था और स्वर्ग दूतों ने उस की
सेवा किई।

योहन के बन्दीगृह में डाले जाने के पीछे यीशु ने गालील १४
में आके ईश्वर के राज्य का सुसमाचार प्रचार किया. और १५
कहा समय पूरा हुआ है और ईश्वर का राज्य निकट
आया है पश्चात्ताप करो और सुसमाचार पर बिश्वास
करो। गालील के समुद्र के तीर पर फिरते हुए उस ने १६
शिमोन को और उस के भाई अन्द्रिय को समुद्र में जाल
डालते देखा क्योंकि वे मछुवे थे। यीशु ने उन से कहा मेरे १७
पीछे आओ मैं तुम को मनुष्यों के मछुवे बनाऊंगा। वे १८
तुरन्त अपने जाल छोड़के उस के पीछे हो लिये। वहां से १९
थोड़ा आगे बढ़के उस ने जबदी के पुत्र याकूब और उस के
भाई योहन को देखा कि वे नाव पर जालों को सुधारते
थे। उस ने तुरन्त उन्हें बुलाया और वे अपने पिता २०
जबदी को मजूरों के संग नाव पर छोड़के उस के पीछे हो
लिये।

वे कफर्नाहुम नगर में आये और यीशु ने तुरन्त बिश्राम २१
के दिन सभा के घर में जाके उपदेश किया। लोग उस के २२
उपदेश से अचंभित हुए क्योंकि उस ने अध्यापकों की रीति
से नहीं परन्तु अधिकारी की रीति से उन्हें उपदेश दिया।
उन की सभा के घर में एक मनुष्य था जिसे अशुद्ध भूत २३
लगा था। उस ने चिल्लाके कहा हे यीशु नासरी रहने २४

दीजिये आप को हम से क्या काम . क्या आप हमें नाश करने आये हैं . मैं आप को जानता हूं आप कौन हैं
२५ ईश्वर का पवित्र जन। यीशु ने उस को डांटके कहा चुप
२६ रह और उस में से निकल आ। तब अशुद्ध भूत उस मनुष्य को मरोड़के और बड़े शब्द से चिल्लाके उस में से
२७ निकल आया। इस पर सब लोग ऐसे अचंभित हुए कि आपस में विचार करके बोले यह क्या है . यह कौन सा नया उपदेश है कि वह अधिकारी की रीति से अशुद्ध भूतों को
२८ भी आज्ञा देता है और वे उस की आज्ञा मानते हैं। सो उस की कीर्त्ति तुरन्त गालील के आसपास के सारे देश में फैल गई।

२९ सभा के घर से निकलके वे तुरन्त याकूब और योहन के
३० संग शिमोन और अन्द्रिय के घर में आये। और शिमोन की सास ज्वर से पीड़ित पड़ी थी और उन्हों ने तुरन्त उस
३१ के विषय में उस से कहा। तब उस ने उस पास आ उस का हाथ पकड़के उसे उठाया और ज्वर ने तुरन्त उस को छोड़ा और वह उन की सेवा करने लगी।

३२ सांझ को जब सूर्य्य डूबा तब लोग सब रोगियों को और
३३ भूतग्रस्तों को उस पास लाये। सारे नगर के लोग भी द्वार
३४ पर एकट्ठे हुए। और उस ने बहुतों को जो नाना प्रकार के रोगों से दुःखी थे चंगा किया और बहुत भूतों को निकाला परन्तु भूतों को बोलने न दिया क्योंकि वे उसे जानते थे।

३५ भोर को कुछ रात रहते वह उठके निकला और जंगली
३६ स्थान में जाके वहां प्रार्थना किई। तब शिमोन और जो
३७ उस के संग थे सो उस के पीछे हो लिये . और उसे पाके
३८ उस से बोले सब लोग आप को ढूंढ़ते हैं। उस ने उन से कहा आओ हम आसपास के नगरों में जायें कि मैं वहां

भी उपदेश करूं क्योंकि मैं इसी लिये बाहर आया हूं । सो उस ने सारे गालील में उन की सभाओं में उपदेश ३९ किया और भूतों को निकाला ।

एक कोढ़ी ने उस पास आ उस से बिन्ती किई और ४० उस के आगे घुटने टेकके उस से कहा जो आप चाहें तो मुझे शुद्ध कर सकते हैं । यीशु को दया आई और ४१ उस ने हाथ बढ़ा उसे छूके उस से कहा मैं तो चाहता हूं शुद्ध हो जा । उस के कहने पर उस का कोढ़ तुरन्त ४२ जाता रहा और वह शुद्ध हुआ । तब उस ने उसे चिताके ४३ तुरन्त बिदा किया . और उस से कहा देख किसी से ४४ कुछ मत कह परन्तु जा अपने तईं याजक को दिखा और अपने शुद्ध होने के विषय में जो कुछ मूसा ने ठहराया उसे लोगों पर साक्षी होने के लिये चढ़ा । परन्तु वह ४५ बाहर जाके इस बात को बहुत सुनाने और प्रचार करने लगा यहां लों कि यीशु फिर प्रगट होके नगर में नहीं जा सका परन्तु बाहर जंगली स्थानों में रहा और लोग चहुं ओर से उस पास आये ।

२ दूसरा पर्व्व ।

१ यीशु का एक अर्द्धांगी को चंगा करना और उस का पाप क्षमा करना । १३ लेवी अर्थात मत्ती को बुलाना और पापियों के संग भोजन करना । १८ उपवास करने का ब्योरा बताना । २३ विश्रामवार के विषय में निर्णय करना ।

कई एक दिन के पीछे यीशु ने फिर कफर्नाहुम में प्रवेश १ किया और सुना गया कि वह घर में है । तुरन्त इतने २ बहुत लोग एकट्ठे हुए कि वे न घर में न द्वार के आसपास समा सके और उस ने उन्हें वचन सुनाया । और लोग ३ एक अर्द्धांगी को चार मनुष्यों से उठवाके उस पास ले आये । परन्तु जब वे भीड़ के कारण उस के निकट पहुंच न सके ४

तब जहां वह था वहां उन्हों ने छत उधेड़के और कुछ
खोलके उस खाट को जिस पर अर्द्धांगी पड़ा था लटका
५ दिया। यीशु ने उन्हों का बिश्वास देखके उस अर्द्धांगी से
६ कहा हे पुत्र तेरे पाप क्षमा किये गये हैं। और कितने
अध्यापक वहां बैठे थे और अपने अपने मन में बिचार
७ करते थे . कि यह मनुष्य क्यों इस रीति से ईश्वर की
निन्दा करता है . ईश्वर को छोड़ कौन पापों को क्षमा कर
८ सकता है। यीशु ने तुरन्त अपने आत्मा से जाना कि वे
अपने अपने मन में ऐसा विचार करते हैं और उन से कहा
तुम लोग अपने अपने मन में यह बिचार क्यों करते हो।
९ कौन बात सहज है अर्द्धांगी से यह कहना कि तेरे पाप
क्षमा किये गये हैं अथवा यह कहना कि उठ अपनी
१० खाट उठाके चल। परन्तु जिस्तें तुम जानो कि मनुष्य के
११ पुत्र को पृथिवी पर पाप क्षमा करने का अधिकार है . (उस ने
उस अर्द्धांगी से कहा) मैं तुझ से कहता हूं उठ अपनी खाट
१२ उठाके अपने घर को जा। वह तुरन्त उठके खाट उठाके सभों
के साम्ने चला गया यहां लों कि वे सब बिस्मित हुए और
ईश्वर की स्तुति करके बोले हम ने ऐसा कभी नहीं देखा।

१३ यीशु फिर बाहर समुद्र के तीर पर गया और सब लोग
१४ उस पास आये और उस ने उन्हें उपदेश दिया। जाते हुए
उस ने अलफई के पुत्र लेवी को कर उगाहने के स्थान में बैठे
देखा और उस से कहा मेरे पीछे आ . तब वह उठके
१५ उस के पीछे हो लिया। जब यीशु उस के घर में भोजन पर
बैठा तब बहुत कर उगाहनेहारे और पापी लोग उस के
और उस के शिष्यों के संग बैठ गये क्योंकि बहुत थे और
१६ वे उस के पीछे हो लिये। अध्यापकों और फरीशियों ने
उस को कर उगाहनेहारों और पापियों के संग खाते देखके

उस के शिष्यों से कहा यह क्या है कि वह कर उगाहने- हारों और पापियों के संग खाता और पीता है। यीशु ने १७ यह सुनके उन से कहा निरोगियों को वैद्य का प्रयोजन नहीं है परन्तु रोगियों को . मैं धर्म्मियों को नहीं परन्तु पापियों को पश्चात्ताप के लिये बुलाने आया हूं।

योहन के और फरीशियों के शिष्य उपवास करते थे १८ और उन्हों ने आ उस से कहा योहन के और फरीशियों के शिष्य क्यों उपवास करते हैं परन्तु आप के शिष्य उपवास नहीं करते। यीशु ने उन से कहा जब दूल्हा सखाओं के १९ संग है तब क्या वे उपवास कर सकते हैं . जब लों दूल्हा उन के संग रहे तब लों वे उपवास नहीं कर सकते हैं। परन्तु वे दिन आवेंगे जिन में दूल्हा उन से अलग किया २० जायगा तब वे उन दिनों में उपवास करेंगे। कोई मनुष्य २१ कोरे कपड़े का टुकड़ा पुराने वस्त्र में नहीं टांकता है नहीं तो वह नया टुकड़ा पुराने कपड़े से कुछ और भी फाड़ लेता है और उस का फटा बढ़ जाता है। और कोई २२ मनुष्य नया दाख रस पुराने कुप्पों में नहीं भरता है नहीं तो नया दाख रस कुप्पों को फाड़ता है और दाख रस बह जाता है और कुप्पे नष्ट होते हैं परन्तु नया दाख रस नये कुप्पों में भरा चाहिये।

विश्राम के दिन यीशु खेतों में होके जाता था और २३ उस के शिष्य जाते हुए बालें तोड़ने लगे। तब फरीशियों २४ ने उस से कहा देखिये विश्राम के दिन में जो काम उचित नहीं है सो ये लोग क्यों करते हैं। उस ने उन से कहा २५ क्या तुम ने कभी नहीं पढ़ा कि जब दाऊद को प्रयोजन था और वह और उस के संगी लोग भूखे हुए तब उस ने क्या किया। उस ने क्योंकर अबियाथर महायाजक के २६

समय में ईश्वर के घर में जाके भेंट की रोटियां खाईं जिन्हें खाना और किसी को नहीं केवल याजकों को उचित है २७ और अपने संगियों को भी दिईं। और उस ने उन से कहा बिश्रामवार मनुष्य के लिये हुआ पर मनुष्य बिश्रामवार २८ के लिये नहीं। इस लिये मनुष्य का पुत्र बिश्रामवार का भी प्रभु है।

३ तीसरा पर्ब्ब।

१ यीशु का बिश्रामवार के विषय में निर्णय करना। ६ बहुत रोगियों को चंगा करना। १३ बारह प्रेरितों को ठहराना। २० लोगों के अपवाद का खंडन। ३१ यीशु के कुटुंब का वर्णन।

१ यीशु फिर सभा के घर में गया और वहां एक मनुष्य २ था जिस का हाथ सूख गया था। और लोग उस पर दोष लगाने के लिये उसे ताकते थे कि वह बिश्राम के दिन में ३ इस को चंगा करेगा कि नहीं। उस ने सूखे हाथवाले मनुष्य ४ से कहा बीच में खड़ा हो। तब उस ने उन्हों से कहा क्या बिश्राम के दिनों में भला करना अथवा बुरा करना प्राण को बचाना अथवा घात करना उचित है. परन्तु वे चुप ५ रहे। और उस ने उन के मन की कठोरता से उदास हो उन्हों पर क्रोध से चारों ओर दृष्टि किई और उस मनुष्य से कहा अपना हाथ बढ़ा. उस ने उस को बढ़ाया और उस का हाथ फिर दूसरे की नाईं भला चंगा हो गया।

६ तब फरीशियों ने बाहर जाके तुरन्त हेरोदियों के संग यीशु के बिरुद्ध आपस में बिचार किया इस लिये कि उसे ७ नाश करें। यीशु अपने शिष्यों के संग समुद्र के निकट गया और गालील और यिहूदिया और यिरूशलीम और इदोम से और यर्दन के उस पार से बड़ी भीड़ उस के पीछे ८ हो लिई। सोर और सीदोन के आसपास के लोगों ने भी

जब सुना वह कैसे बड़े काम करता है तब उन में की एक बड़ी भीड़ उस पास आई। उस ने अपने शिष्यों से कहा ९ भीड़ के कारण एक नाव मेरे लिये लगी रहे न हो कि वे मुझे दबावें। क्योंकि उस ने बहुतों को चंगा किया यहां १० लों कि जितने रोगी थे उसे छूने को उस पर गिरे पड़ते थे। अशुद्ध भूतों ने भी जब उसे देखा तब उस को दंडवत ११ किई और पुकारके बोले आप ईश्वर के पुत्र हैं। और उस १२ ने उन को बहुत दृढ़ आज्ञा दिई कि मुझे प्रगट मत करो।

फिर उस ने पर्व्वत पर चढ़के जिन्हें चाहा उन्हें अपने १३ पास बुलाया और वे उस पास गये। तब उस ने बारह १४ जनों को ठहराया कि वे उस के संग रहें. और कि वह १५ उन्हें उपदेश करने को और रोगों को चंगा करने और भूतों को निकालने का अधिकार रखने को भेजे. अर्थात शिमोन १६ को जिस का नाम उस ने पितर रखा. और जबदी के पुत्र १७ याकूब और याकूब के भाई योहन को जिन का नाम उस ने बनेरगश अर्थात गर्जन के पुत्र रखा. और अन्द्रिय और १८ फिलिप और बर्थलमई और मत्ती और थोमा को और अलफई के पुत्र याकूब को और थद्दई को और शिमोन कानानी को. और यहूदा इस्करियोती को जिस ने उसे १९ पकड़वाया. और वे घर में आये।

तब बहुत लोग फिर एकट्ठे हुए यहां लों कि वे रोटी २० खाने भी न सके। और उस के कुटुम्ब यह सुनके उसे २१ पकड़ने को निकल आये क्योंकि उन्हों ने कहा उस का चित्त ठिकाने नहीं है। तब अध्यापक लोग जो यिरूशलीम से २२ आये थे बोले कि उसे बालजिबूल लगा है और कि वह भूतों के प्रधान की सहायता से भूतों को निकालता है। उस २३ ने उन्हें अपने पास बुलाके दृष्टान्तों में उन से कहा शैतान

२४ क्योंकर शैतान को निकाल सकता है। यदि किसी राज्य में
२५ फूट पड़ी होय तो वह राज्य नहीं ठहर सकता है। और
यदि किसी घराने में फूट पड़ी होय तो वह घराना नहीं
२६ ठहर सकता है। और यदि शैतान अपने बिरोध में उठके
अलग बिलग हुआ है तो वह नहीं ठहर सकता है पर
२७ उस का अन्त होता है। यदि बलवन्त को कोई पहिले न
बांधे तो उस बलवन्त के घर में पैठके उस की सामग्री लूट
२८ नहीं सकता है. परन्तु उसे बांधके उस के घर को लूटेगा। मैं
तुम से सत्य कहता हूं कि मनुष्यों के सन्तानों के सब पाप और
२९ सब निन्दा जिस से वे निन्दा करें क्षमा किई जायगी। परन्तु
जो कोई पवित्र आत्मा की निन्दा करे सो कभी नहीं क्षमा
३० किया जायगा पर अनन्त दंड के योग्य है। वे जो बोले कि
उसे अशुद्ध भूत लगा है इसी लिये यीशु ने यह बात कही।
३१ सो उस के भाई और उस की माता आये और बाहर खड़े
३२ हो उस को बुलवा भेजा। बहुत लोग उस के आसपास बैठे थे
और उन्हों ने उस से कहा देखिये आप की माता और आप के
३३ भाई बाहर आप को ढूंढ़ते हैं। उस ने उन को उत्तर दिया कि
३४ मेरी माता अथवा मेरे भाई कौन हैं। और जो लोग उस के
आसपास बैठे थे उन पर चारों ओर दृष्टि कर उस ने कहा
३५ देखो मेरी माता और मेरे भाई। क्योंकि जो कोई ईश्वर की
इच्छा पर चले वही मेरा भाई और मेरी बहिन और माता है।

४ चौथा पर्व्व ।

१ बीज बोनेहारे का दृष्टान्त। १० दृष्टान्तों से उपदेश करने का कारण। १३ बोनेहारे के दृष्टान्त का अर्थ। २१ दीपक का दृष्टान्त और बचन सुनने का उपदेश। २६ बीज बढ़ने का दृष्टान्त। ३० राई के दाने का दृष्टान्त। ३३ यीशु का और और दृष्टान्त कहना। ३५ आंधी को थांभना।

१ यीशु फिर समुद्र के तीर पर उपदेश करने लगा और

ऐसी बड़ी भीड़ उस पास एकट्ठी हुई कि वह नाव पर चढ़के समुद्र पर बैठा और सब लोग समुद्र के निकट भूमि पर रहे। तब उस ने उन्हें दृष्टान्तों में बहुत सी बातें सिखाईं २ और अपने उपदेश में उन से कहा. सुनो देखो एक बोने- ३ हारा बीज बोने को निकला। बीज बोने में कुछ मार्ग की ४ ओर गिरा और आकाश के पंछियों ने आके उसे चुग लिया। कुछ पत्थरैली भूमि पर गिरा जहां उस को बहुत मिट्टी न ५ मिली और बहुत मिट्टी न मिलने से वह बेग उगा। परन्तु ६ सूर्य्य उदय होने पर वह झुलस गया और जड़ न पकड़ने से सूख गया। कुछ कांटों के बीच में गिरा और कांटों ने ७ बढ़के उस को दबा डाला और उस ने फल न दिया। परन्तु ८ कुछ अच्छी भूमि पर गिरा और फल दिया जो उत्पन्न होके बढ़ता गया और कोई तीस गुणे कोई साठ गुणे कोई सौ गुणे फल फला। और उस ने उन से कहा जिस को सुनने ९ के कान हों सो सुने।

जब वह एकान्त में था तब जो लोग उस के समीप थे १० उन्हों ने बारह शिष्यों के साथ इस दृष्टान्त का अर्थ उस से पूछा। उस ने उन से कहा तुम को ईश्वर के राज्य का भेद ११ जानने का अधिकार दिया गया है परन्तु जो बाहर हैं उन्हों से सब बातें दृष्टान्तों में होती हैं. इस लिये कि वे १२ देखते हुए देखें और उन्हें न सूझे और सुनते हुए सुनें और न बूझें ऐसा न हो कि वे कभी फिर जावें और उन के पाप क्षमा किये जायें।

फिर उस ने उन से कहा क्या तुम यह दृष्टान्त नहीं १३ समझते हो तो सब दृष्टान्त क्योंकर समझोगे। बोनेहारा १४ वह है जो वचन को बोता है। मार्ग की ओर के जहां वचन १५ बोया जाता है वे हैं कि जब वे सुनते हैं तब शैतान

तुरन्त आके जो बचन उन के मन में बोया गया था उसे
१६ छीन लेता है। वैसे ही जिन में बीज पत्थरैली भूमि पर
बोया जाता है सो वे हैं कि जब बचन सुनते हैं तब
१७ तुरन्त आनन्द से उस को ग्रहण करते हैं। परन्तु उन में
जड़ न बंधने से वे थोड़ी बेर ठहरते हैं तब बचन के
कारण क्लेश अथवा उपद्रव होने पर तुरन्त ठोकर खाते
१८ हैं। जिन में बीज कांटों के बीच में बोया जाता है सो वे
१९ हैं जो बचन सुनते हैं। पर इस संसार की चिन्ता और
धन की माया और और वस्तुओं का लोभ उन में समाके
२० बचन को दबाते हैं और वह निष्फल होता है। पर जिन
में बीज अच्छी भूमि पर बोया गया सो वे हैं जो बचन
सुनके ग्रहण करते हैं और फल फलते हैं कोई तीस गुणे
कोई साठ गुणे कोई सौ गुणे।

२१ और उस ने उन से कहा क्या दीपक को लाते हैं कि
वर्त्तन के नीचे अथवा खाट के नीचे रखा जाय. क्या इस
२२ लिये नहीं कि दीवट पर रखा जाय। कुछ गुप्त नहीं है
जो प्रगट न किया जायगा और न कुछ छिपा था परन्तु
२३ इस लिये कि प्रसिद्ध हो जावे। यदि किसी को सुनने के
२४ कान हों तो सुने। फिर उस ने उन से कहा सचेत रहो तुम
क्या सुनते हो. जिस नाप से तुम नापते हो उसी से
तुम्हारे लिये नापा जायगा और तुम को जो सुनते हो
२५ अधिक दिया जायगा। क्योंकि जो कोई रखता है उस
को और दिया जायगा परन्तु जो नहीं रखता है उस से
जो कुछ उस के पास है सो भी ले लिया जायगा।

२६ फिर उस ने कहा ईश्वर का राज्य ऐसा है जैसा कि
२७ मनुष्य भूमि में बीज बोय. और रात दिन सोय और उठे
और वह बीज जन्मे और बढ़े पर किस रीति से वह नहीं

जानता है । क्योंकि पृथिवी आप से आप फल फलती है २८
पहिले अंकुर तब बाल तब बाल में पक्का दाना । परन्तु २९
जब दाना पक चुका है तब वह तुरन्त हंसुआ लगाता है
क्योंकि कटनी आ पहुंची है ।

फिर उस ने कहा हम ईश्वर के राज्य की उपमा किस से ३०
दें और किस दृष्टान्त से उसे वर्णन करें । वह राई के एक ३१
दाने की नाईं है कि जब भूमि में बोया जाता तब भूमि में के
सब बीजों से छोटा है । परन्तु जब बोया जाता तब ३२
बढ़ता और सब सागपात से बड़ा हो जाता है और उस
की ऐसी बड़ी डालियां निकलती हैं कि आकाश के पंछी
उस की छाया में बसेरा कर सकते हैं ।

ऐसे ऐसे बहुत दृष्टान्तों से यीशु ने लोगों को जैसा वे ३३
सुन सकते थे वैसा वचन सुनाया । परन्तु बिना दृष्टान्त से ३४
उस ने उन को कुछ न कहा और एकान्त में उस ने अपने
शिष्यों को सब बातों का अर्थ बताया ।

उसी दिन सांझ को उस ने उन से कहा कि आओ हम ३५
उस पार चलें । सो उन्हों ने लोगों को बिदा कर उसे नाव ३६
पर जैसा था वैसा चढ़ा लिया और कितनी और नावें
भी उस के संग थीं । और बड़ी आंधी उठी और लहरें ३७
नाव पर ऐसी लगीं कि वह अब भर जाने लगी । परन्तु ३८
यीशु नाव की पिछली ओर तकिया दिये हुए सोता था
और उन्हों ने उसे जगाके उस से कहा हे गुरु क्या आप को
सोच नहीं कि हम नष्ट होते हैं । तब उस ने उठके बयार ३९
को डांटा और समुद्र से कहा चुप रह और थम जा और
बयार थम गई और बड़ा नीवा हो गया । और उस ने ४०
उन से कहा तुम क्यों ऐसे डरते हो तुम्हें विश्वास क्यों
नहीं है । परन्तु वे बहुत ही डर गये और आपस में बोले ४१

यह कौन है कि बयार और समुद्र भी उस की आज्ञा मानते हैं ।

५ पांचवां पर्ब्ब ।

१ यीशु का एक मनुष्य में से बहुत भूतों को निकालना । २१ एक कन्या को जिलाना और एक स्त्री को चंगा करना ।

१/२ वे समुद्र के उस पार गदेरियों के देश में पहुंचे । जब यीशु नाव पर से उतरा तब एक मनुष्य जिसे अशुद्ध भूत ३ लगा था कबरस्थान में से तुरन्त उस से आ मिला । उस मनुष्य का बासा कबरस्थान में था और कोई उसे जंजीरों ४ से भी बांध नहीं सकता था । क्योंकि वह बहुत बार बेड़ियों और जंजीरों से बांधा गया था और उस ने ज़ंजीरें तोड़ डालीं और बेड़ियां टुकड़े टुकड़े किईं और कोई उसे ५ बश में नहीं कर सकता था । वह सदा रात दिन पहाड़ों और कबरों में रहता था और चिल्लाता और अपने को ६ पत्थरों से काटता था । वह यीशु को दूर से देखके दौड़ा ७ और उस को प्रणाम किया . और बड़े शब्द से चिल्लाके कहा हे यीशु सर्ब्बप्रधान ईश्वर के पुत्र आप को मुझ से क्या काम . मैं आप को ईश्वर की किरिया देता हूं कि मुझे ८ पीड़ा न दीजिये । क्योंकि यीशु ने उस से कहा हे अशुद्ध ९ भूत इस मनुष्य से निकल आ । और उस ने उस से पूछा तेरा नाम क्या है . उस ने उत्तर दिया कि मेरा नाम १० सेना है क्योंकि हम बहुत हैं । और उस ने यीशु से बहुत ११ बिन्ती किई कि हमें इस देश से बाहर न भेजिये । वहां १२ पहाड़ों के निकट सूअरों का बड़ा झुंड चरता था । सो सब भूतों ने उस से बिन्ती कर कहा हमें सूअरों में भेजिये कि हम १३ उन में पैठें । यीशु ने तुरन्त उन्हें जाने दिया और अशुद्ध भूत निकलके सूअरों में पैठे और झुंड जो दो सहस्र के

अटकल थे कड़ाड़े पर से समुद्र में दौड़ गये और समुद्र में डूब मरे। पर सूअरों के चरवाहे भागे और नगर में और १४ गांवों में इस का समाचार कहा और लोग बाहर निकले कि देखें क्या हुआ है। और यीशु पास आके वे उस १५ भूतग्रस्त को जिसे भूतों की सेना लगी थी बैठे और बस्त्र पहिने और सुबुद्धि देखके डर गये। जिन लोगों ने देखा १६ था उन्हों ने उन से कह दिया कि भूतग्रस्त मनुष्य को और सूअरों के विषय में कैसा हुआ था। तब वे यीशु से बिन्ती १७ करने लगे कि हमारे सिवानों से निकल जाइये। जब वह १८ नाव पर चढ़ा तब जो मनुष्य आगे भूतग्रस्त था उस ने उस से बिन्ती किई कि मैं आप के संग रहूं। पर यीशु ने उसे १९ नहीं रहने दिया परन्तु उस से कहा अपने घर को अपने कुटुम्बों के पास जाके उन्हों से कह दे कि परमेश्वर ने तुझ पर दया करके तेरे लिये कैसे बड़े काम किये हैं। वह जाके २० दिकापलि देश में प्रचार करने लगा कि यीशु ने उस के लिये कैसे बड़े काम किये थे और सभों ने अचंभा किया।

जब यीशु नाव पर फिर पार उतरा तब बहुत लोग २१ उस पास एकट्ठे हुए और वह समुद्र के तीर पर था। और २२ देखो सभा के अध्यक्षों में से याईर नाम एक अध्यक्ष आया और उसे देखके उस के पांवों पड़ा और उस से बहुत २३ बिन्ती कर कहा मेरी बेटी मरने पर है आप आके उस पर हाथ रखिये कि वह चंगी हो जाय तो वह जीयेगी। तब यीशु उस के संग गया और बड़ी भीड़ उस के पीछे २४ हो लिई और उसे दबाती थी।

और एक स्त्री जिसे बारह बरस से लोहू बहने का रोग २५ था जो बहुत बैद्यों से बड़ा दुःख पाके अपना सब धन २६ उठा चुकी थी और कुछ लाभ नहीं पाया परन्तु अधिक

२७ रोगी हुई . तिस ने यीशु की चर्चा सुनके उस भीड़ में पीछे
२८ से आ उस के बस्त्र को छूआ । क्योंकि उस ने कहा यदि
मैं केवल उस के बस्त्र को छूओं तो चंगी हो जाऊंगी ।
२९ और उस के लोहू का सोता तुरन्त सूख गया और उस ने
अपने देह में जान लिया कि मैं उस रोग से चंगी हुई हूं ।
३० यीशु ने तुरन्त अपने में जाना कि मुझ में से शक्ति निकली
है और भीड़ में पीछे फिरके कहा किस ने मेरे बस्त्र को
३१ छूआ । उस के शिष्यों ने उस से कहा आप देखते हैं कि
भीड़ आप को दबा रही है और आप कहते हैं किस ने
३२ मुझे छूआ . तब जिस ने यह काम किया था उसे देखने
३३ को यीशु ने चारों ओर दृष्टि किई । तब वह स्त्री जो उस
पर हुआ था सो जानके डरती और कांपती हुई आई
और उसे दंडवत कर उस से सच सच सब कुछ कह दिया ।
३४ उस ने उस से कहा हे पुत्री तेरे विश्वास ने तुझे चंगा किया
है कुशल से जा और अपने रोग से चंगी रह ।

३५ वह बोलता ही था कि लोगों ने सभा के अध्यक्ष के घर से
आ कहा आप की बेटी मर गई है आप गुरु को और दुःख
३६ क्यों देते हैं । जो बचन कहा जाता था उस को सुनके
यीशु ने तुरन्त सभा के अध्यक्ष से कहा मत डर केवल
३७ बिश्वास कर । और उस ने पितर और याकूब और
याकूब के भाई योहन को छोड़ और किसी को अपने संग
३८ जाने नहीं दिया । सभा के अध्यक्ष के घर पर पहुंचके उस
ने धूमधाम अर्थात लोगों को बहुत रोते और चिल्लाते
३९ देखा । उस ने भीतर जाके उन से कहा क्यों धूम मचाते
४० और रोते हो . कन्या मरी नहीं पर सोती है । वे उस का
उपहास करने लगे परन्तु उस ने सभों को बाहर किया और
कन्या के माता पिता को और अपने संगियों को लेके जहां

कन्या पड़ी थी वहां पैठा । और उस ने कन्या का हाथ ४१ पकड़के उस से कहा तालिथा कूमी अर्थात हे कन्या मैं तुझ से कहता हूं उठ । और कन्या तुरन्त उठी और ४२ फिरने लगी क्योंकि वह बारह बरस की थी . और वे अत्यन्त विस्मित हुए । पर उस ने उन को दृढ़ आज्ञा दिई ४३ कि यह बात कोई न जाने और कहा कि कन्या को कुछ खाने को दिया जाय ।

६ छठवां पर्ब्ब ।

१ यीशु का अपने देश के लोगों में अपमान होना । ७ बारह प्रेरितों को भेजना । १४ योहन बपतिसमा देनेहारे की मृत्यु । ३० यीशु का प्रेरितों का समाचार सुनना और लोगों को उपदेश देना । ३५ पांच सहस्र मनुष्यों को थोड़े भोजन से तृप्त करना । ४५ समुद्र पर चलना । ५३ गिनेसरत के रोगियों को चंगा करना ।

यीशु वहां से जाके अपने देश में आया और उस के शिष्य १ उस के पीछे हो लिये । बिश्राम के दिन वह सभा के घर में २ उपदेश करने लगा और बहुत लोग सुनके अचंभित हो बोले इस को यह बातें कहां से हुईं और यह कौन सा ज्ञान है जो उस को दिया गया है कि ऐसे आश्चर्य्य कर्म्म भी उस के हाथों से किये जाते हैं । यह क्या बढ़ई नहीं है ३ मरियम का पुत्र और याकूब और योशी और यिहूदा और शिमोन का भाई और क्या उस की बहिनें यहां हमारे पास नहीं हैं . सो उन्हों ने उस के बिषय में ठोकर खाई । यीशु ने उन से कहा भविष्यद्वक्ता अपना देश और अपने ४ कुटुम्ब और अपना घर छोड़के और कहीं निरादर नहीं होता है । और वह वहां कोई आश्चर्य्य कर्म्म नहीं कर ५ सका केवल थोड़े रोगियों पर हाथ रखके उन्हें चंगा किया । और उस ने उन के अविश्वास से अचंभा किया और चहुं ६ ओर के गांवों में उपदेश करता फिरा ।

७ और वह बारह शिष्यों को अपने पास बुलाके उन्हें दो दो करके भेजने लगा और उन को अशुद्ध भूतों पर अधिकार
८ दिया । और उस ने उन्हें आज्ञा दिई कि मार्ग के लिये लाठी छोड़के और कुछ मत लेओ न झोली न रोटी न
९ पटुके में पैसे । परन्तु जूते पहिनो और दो अंगे मत पहिनो ।
१० और उस ने उन से कहा जहां कहीं तुम किसी घर में प्रवेश करो जब लों वहां से न निकलो तब लों उसी घर में रहो ।
११ जो कोई तुम्हें ग्रहण न करें और तुम्हारी न सुनें वहां से निकलते हुए उन पर साक्षी होने के लिये अपने पांवों के नीचे की धूल झाड़ डालो . मैं तुम से सच कहता हूं कि विचार के दिन में उस नगर की दशा से सदोम अथवा अमोरा
१२ की दशा सहने योग्य होगी । सो उन्हों ने निकलके पश्चा-
१३ त्ताप करने का उपदेश किया . और बहुतेरे भूतों को निकाला और बहुत रोगियों पर तेल मलके उन्हें चंगा किया ।
१४ हेरोद राजा ने यीशु की कीर्त्ति सुनी क्योंकि उस का नाम प्रसिद्ध हुआ और उस ने कहा योहन बपतिसमा देनेहारा मृतकों में से जी उठा है इस लिये आश्चर्य्य कर्म्म
१५ उस से प्रगट होते हैं । औरों ने कहा यह एलियाह है औरों ने कहा भविष्यद्वक्ता है अथवा भविष्यद्वक्ताओं में से
१६ एक के समान है । परन्तु हेरोद ने सुनके कहा जिस योहन का मैं ने सिर कटवाया सोई है वह मृतकों में से जी उठा है ।
१७ क्योंकि हेरोद ने आप अपने भाई फिलिप की स्त्री हेरोदिया के कारण जिस से उस ने बिवाह किया था लोगों को भेजके योहन को पकड़ा था और उसे बन्दीगृह में बांधा था ।
१८ क्योंकि योहन ने हेरोद से कहा था कि अपने भाई की स्त्री
१९ को रखना तुझ को उचित नहीं है । हेरोदिया भी उस से बैर रखती थी और उसे मार डालने चाहती थी पर नहीं

सकती थी। क्योंकि हेरोद योहन को धर्म्मी और पवित्र २० पुरुष जानके उस से डरता था और उस की रक्षा करता था और उस की सुनके बहुत बातों पर चलता था और प्रसन्नता से उस की सुनता था। परन्तु जब अवकाश का २१ दिन हुआ कि हेरोद ने अपने जन्म दिन में अपने प्रधानों और सहस्रपतिओं और गालील के बड़े लोगों के लिये वियारी बनाई. और जब हेरोदिया की पुत्री ने भीतर आ २२ नाचकर हेरोद को और उस के संग बैठनेहारों को प्रसन्न किया तब राजा ने कन्या से कहा जो कुछ तेरी इच्छा होय सो मुझ से मांग और मैं तुझे देऊंगा। और उस ने उस से किरिया २३ खाई कि मेरे आधे राज्य लों जो कुछ तू मुझ से मांगे मैं तुझे देऊंगा। उस ने बाहर जा अपनी माता से कहा मैं २४ क्या मांगूंगी . वह बोली योहन बपतिसमा देनेहारे का सिर। उस ने तुरन्त उतावली से राजा के पास भीतर आ २५ बिन्ती कर कहा मैं चाहती हूं कि आप योहन बपतिसमा देनेहारे का सिर थाल में अभी मुझे दीजिये। तब राजा २६ अति उदास हुआ परन्तु उस किरिया के और अपने संग बैठनेहारों के कारण उसे टालने नहीं चाहा। और राजा २७ ने तुरन्त पहरुए को भेजकर योहन का सिर लाने की आज्ञा किई। उस ने जाके बन्दीगृह में उस का सिर काटा और २८ उस का सिर थाल में लाके कन्या को दिया और कन्या ने उसे अपनी मां को दिया। उस के शिष्य यह सुनके आये २९ और उस की लोथ को उठाके कबर में रखा।

प्रेरितों ने यीशु पास एकट्ठे हो उस से सब कुछ कह ३० दिया उन्हों ने क्या क्या किया और क्या क्या सिखाया था। उस ने उन से कहा तुम आप एकान्त में किसी जंगली ३१ स्थान में आके थोड़ा विश्राम करो . क्योंकि बहुत लोग

आते जाते थे और उन्हें खाने का भी अवकाश न मिला ।
३२ ३३ सो वे नाव पर चढ़के जंगली स्थान में एकान्त में गये । और लोगों ने उन को जाते देखा और बहुतों ने उसे चीन्हा और पैदल सब नगरों में से उधर दौड़े और उन के आगे बढ़के उस
३४ पास एकट्ठे हुए । यीशु ने निकलके बड़ी भीड़ को देखा और उस को उन पर दया आई क्योंकि वे बिन रखवाले की भेड़ों की नाईं थे और वह उन्हें बहुत सा उपदेश देने लगा ।
३५ जब अबेर हो गई तब उस के शिष्यों ने उस पास आ
३६ कहा यह तो जंगली स्थान है और अबेर हुई है । लोगों को बिदा कीजिये कि वे चारों ओर के गांवों और बस्तियों में जाके अपने लिये रोटी मोल लेवें क्योंकि उन के पास कुछ
३७ खाने को नहीं है । उस ने उन को उत्तर दिया कि तुम उन्हें खाने को देओ . उन्हों ने उस से कहा क्या हम जाके दो सौ सूकियों की रोटी मोल लेवें और उन्हें खाने को देवें ।
३८ उस ने उन से कहा तुम्हारे पास कितनी रोटियां हैं जाके
३९ देखो . उन्हों ने बूझके कहा पांच और दो मछली । तब उस ने सब लोगों को हरी घास पर पांति पांति बैठाने की
४० आज्ञा उन्हें दिई । वे सौ सौ और पचास पचास करके
४१ पांति पांति बैठ गये । और उस ने उन पांच रोटियों और दो मछलियों को ले स्वर्ग की ओर देखके धन्यबाद किया और रोटियां तोड़के अपने शिष्यों को दिईं कि लोगों के आगे रखें और उन दो मछलियों को भी सभों में बांट
४२ ४३ दिया । सो सब खाके तृप्त हुए । और उन्हों ने रोटियों के टुकड़ों को और मछलियों की बारह टोकरी भरी उठाईं ।
४४ जिन्हों ने रोटी खाई सो पांच सहस्र पुरुषों के अटकल थे ।
४५ तब यीशु ने तुरन्त अपने शिष्यों को दृढ़ आज्ञा दिई कि जब लों मैं लोगों को बिदा करूं तुम नाव पर चढ़के मेरे

आगे उस पार बैतसैदा नगर को जाओ । वह उन्हें बिदा ४६
कर प्रार्थना करने को पर्व्वत पर गया । सांझ को नाव समुद्र ४७
के बीच में थी और यीशु भूमि पर अकेला था । और उस ४८
ने शिष्यों को खेवने में व्याकुल देखा क्योंकि बयार उन के
सन्मुख की थी और रात के चौथे पहरके निकट वह समुद्र
पर चलते हुए उन के पास आया और उन के पास से होके
निकला चाहता था । पर उन्हों ने उसे समुद्र पर चलते ४९
देखके समझा कि प्रेत है और चिल्लाये क्योंकि वे सब
उसे देखके घबरा गये । वह तुरन्त उन से बात करने ५०
लगा और उन से कहा ढाढ़स बांधो मैं हूं डरो मत ।
तब वह उन पास नाव पर चढ़ा और बयार थम गई ५१
और वे अपने अपने मन में अत्यन्त बिस्मित और अचंभित
हुए । क्योंकि उन्हों का मन कठोर था इस लिये उन ५२
रोटियों के आश्चर्य्य कर्म्म से उन्हें ज्ञान न हुआ ।

वे पार उतरके गिनेसरत देश में पहुंचे और लगान ५३
किया । जब वे नाव पर से उतरे तब लोगों ने तुरन्त यीशु ५४
को चीन्हा . और आसपास के सारे देश में दौड़के जहां ५५
सुना कि वह वहां है तहां रोगियों को खाटों पर ले जाने
लगे । और जहां जहां उस ने बस्तियों अथवा नगरों अथवा ५६
गांवों में प्रवेश किया तहां उन्हों ने रोगियों को बाजारों में
रखके उस से बिन्ती किई कि वे उस के बस्त्र के आंचल को
भी छूवें और जितनों ने उसे छूआ सब चंगे हुए ।

७ सातवां पर्व्व ।

१ यीशु का फरीशियों को उन के व्यवहारों के विषय में डपटना । १४ अपवित्रता के हेतु का वर्णन करना । २४ एक अन्यदेशी स्त्री की बेटी को चंगा करना । ३१ एक बहिरे और तोतले को चंगा करना ।

तब फरीशी लोग और कितने अध्यापक जो यिरू- १

२ शलीम से आये थे यीशु पास एकट्ठे हुए। उन्हों ने उस के कितने शिष्यों को अशुद्ध अर्थात बिन धोये हाथों से रोटी
३ खाते देखके दोष दिया। क्योंकि फरीशी और सब यिहूदी लोग प्राचीनों के ब्यवहार धारण कर जब लों यत्न
४ से हाथ न धोवें तब लों नहीं खाते हैं। और बाजार से आके जब लों स्नान न करें तब लों नहीं खाते हैं और बहुत और बातें हैं जो उन्हों ने मानने को ग्रहण किई हैं जैसे कटोरों और बर्त्तनों और थालियों और खाटों को
५ धोना। सो उन फरीशियों और अध्यापकों ने उस से पूछा कि आप के शिष्य लोग क्यों प्राचीनों के ब्यवहारों पर नहीं
६ चलते परन्तु बिन धोये हाथों से रोटी खाते हैं। उस ने उन को उत्तर दिया कि यिशैयाह ने तुम कपटियों के विषय में भविष्यद्वाणी अच्छी कही जैसा लिखा है कि ये लोग होंठों से मेरा आदर करते हैं परन्तु उन का मन मुझ से
७ दूर रहता है। पर वे बृथा मेरी उपासना करते हैं क्यों-कि मनुष्यों की आज्ञाओं को धर्म्मोपदेश ठहराके सिखाते
८ हैं। क्योंकि तुम ईश्वर की आज्ञा को छोड़के मनुष्यों के ब्यवहार धारण करते हो जैसे बर्त्तनों और कटोरों को धोना. और ऐसे ऐसे बहुत और काम भी करते हो।
९ और उस ने उन से कहा तुम अपने ब्यवहार पालन करने
१० को ईश्वर की आज्ञा भली रीति से टाल देते हो। क्योंकि मूसा ने कहा अपनी माता और अपने पिता का आदर कर और जो कोई माता अथवा पिता की निन्दा करे सो मार
११ डाला जाय। परन्तु तुम कहते हो यदि मनुष्य अपने माता अथवा पिता से कहे कि जो कुछ तुझ को मुझ से लाभ होता सो कुर्बान अर्थात संकल्प किया गया है तो बस।
१२ और तुम उस को उस की माता अथवा उस के पिता के

लिये और कुछ करने नहीं देते हो। सो तुम अपने व्यव- १३
हारों से जिन्हें तुम ने ठहराया है ईश्वर के वचन को उठा
देते हो और ऐसे ऐसे वहुत काम करते हो।

और उस ने सब लोगों को अपने पास बुलाके उन से १४
कहा तुम सब मेरी सुनो और बूझो। मनुष्य के बाहर से १५
जो उस में समावे ऐसा कुछ नहीं है जो उस को अपवित्र
कर सकता है परन्तु जो कुछ उस में से निकलता है सोई
है जो मनुष्य को अपवित्र करता है। यदि किसी को सुनने १६
के कान हों तो सुने। जब वह लोगों के पास से घर में १७
आया तब उस के शिष्यों ने इस दृष्टान्त के विषय में उस से
पूछा। उस ने उन से कहा तुम भी क्या ऐसे निर्बुद्धि हो. १८
क्या तुम नहीं बूझते हो कि जो कुछ बाहर से मनुष्य में
समाता है सो उस को अपवित्र नहीं कर सकता है। क्यों- १९
कि वह उस के मन में नहीं परन्तु पेट में समाता है और
संडास में गिरता है जिस से सब भोजन शुद्ध होता है।
फिर उस ने कहा जो मनुष्य में से निकलता है सोई मनुष्य २०
को अपवित्र करता है। क्योंकि भीतर से मनुष्यों के मन से २१
नाना भांति की वुरी चिन्ता परस्त्रीगमन व्यभिचार नर-
हिंसा . चोरी लोभ औ दुष्टता और छल लुचपन कुदृष्टि २२
ईश्वर की निन्दा अभिमान और अज्ञानता निकलती हैं।
यह सब वुरी वातें भीतर से निकलती हैं और मनुष्य को २३
अपवित्र करती हैं।

यीशु वहां से उठके सोर और सीदोन के सिवानों में २४
गया और किसी घर में प्रवेश करके चाहा कि कोई न
जाने परन्तु वह छिप न सका। क्योंकि सुरोफैनीकिया २५
देश की एक यूनानीय मत माननेवाली स्त्री जिस की वेटी
को अशुद्ध भूत लगा था उस का चर्चा सुनके आई और

२६ उस के पांवों पड़ी . और उस से बिन्ती किई कि आप
२७ मेरी बेटी से भूत निकालिये । यीशु ने उस से कहा लड़कों
को पहिले तृप्त होने दे क्योंकि लड़कों की रोटी लेके कुत्तों
२८ के आगे फेंकना अच्छा नहीं है । स्त्री ने उस को उत्तर
दिया कि सच है प्रभु तौभी कुत्ते मेज के नीचे बालकों के
२९ चूरचार खाते हैं । उस ने उस से कहा इस बात के कारण
३० चली जा भूत तेरी बेटी से निकल गया है । सो उस ने
अपने घर जाके भूत को निकले हुए और अपनी बेटी को
खाट पर लेटी हुई पाई ।

३१ फिर वह सोर और सीदोन के सिवानों से निकलके
दिकापलि के सिवानों के बीच में होके गालील के समुद्र के
३२ निकट आया । और लोगों ने एक बहिरे तोतले मनुष्य को
उस पास लाके उस से बिन्ती किई कि आप इस पर हाथ
३३ रखिये । उस ने उस को भीड़ में से एकान्त ले जाके अपनी
उंगलियां उस के कानों में डालीं और थूकके उस की जीभ
३४ छूई . और स्वर्ग की ओर देखके लंबी सांस भरके उस से
३५ कहा इप्फातह अर्थात खुल जा । और तुरन्त उस के कान
खुल गये और उस की जीभ का बंधन भी खुल गया
३६ और वह शुद्ध रीति से बोलने लगा । तब यीशु ने उन्हें
चिताया कि किसी से मत कहो परन्तु जितना उस ने उन्हें
३७ चिताया उतना उन्हों ने बहुत अधिक प्रचार किया । और
वे अत्यन्त अचंभित हो बोले उस ने सब कुछ अच्छा किया
है वह बहिरों को सुनने और गूंगों को बोलने की शक्ति
देता है ।

८ आठवां पर्ब्ब ।

१ यीशु का चार सहस्र मनुष्यों को थोड़े भोजन से तृप्त करना । १० चिन्ह मांगनेहारों को डांटना । १४ अपने शिष्यों को फरीशियों की शिक्षा के बिषय में

चिताना । २२ एक अन्धे के नेत्र खोलना । २७ यीशु के विषय में लोगों का और शिष्यों का विचार । ३१ उस का अपनी मृत्यु का भविष्यद्वाक्य कहना और पितर को डांटना । ३४ शिष्य होने की विधि ।

१ उन दिनों में जब बड़ी भीड़ हुई और उन के पास कुछ खाने को नहीं था तब यीशु ने अपने शिष्यों को अपने पास बुलाके उन से कहा . २ मुझे इन लोगों पर दया आती है क्योंकि वे तीन दिन से मेरे संग रहे हैं और उन के पास कुछ खाने को नहीं है । ३ जो मैं उन्हें भोजन बिना अपने अपने घर जाने को विदा करूं तो मार्ग में उन का बल घट जायगा क्योंकि उन में से कोई कोई दूर से आये हैं । ४ उस के शिष्यों ने उस को उत्तर दिया कि यहां जंगल में कहां से कोई इन लोगों को रोटी से तृप्त कर सके । ५ उस ने उन से पूछा तुम्हारे पास कितनी रोटियां हैं . उन्हों ने कहा सात । ६ तब उस ने लोगों को भूमि पर बैठने की आज्ञा दिई और उन सात रोटियों को लेके धन्य मानके तोड़ा और अपने शिष्यों को दिया कि उन के आगे रखें और शिष्यों ने लोगों के आगे रखा । ७ उन के पास थोड़ी सी छोटी मछलियां भी थीं और उस ने धन्यवाद कर उन्हें भी लोगों के आगे रखने की आज्ञा किई । ८ सो वे खाके तृप्त हुए और जो टुकड़े बच रहे उन्हों ने उन के सात टोकरे उठाये । ९ जिन्हों ने खाया सो चार सहस्र पुरुषों के अटकल थे और उस ने उन को विदा किया ।

१० तब वह तुरन्त अपने शिष्यों के संग नाव पर चढ़के दलमनूथा नगर के सिवानों में आया । ११ और फरीशी लोग निकल आये और उस से विवाद करने लगे और उस की परीक्षा करने को उस से आकाश का एक चिन्ह मांगा । १२ उस ने अपने आत्मा में हाय मारके कहा इस समय के लोग क्यों चिन्ह ढूंढ़ते हैं . मैं तुम से सच कहता हूं कि इस

१३ समय के लोगों को कोई चिन्ह नहीं दिया जायगा। और वह उन्हें छोड़के नाव पर फिर चढ़के उस पार चला गया।
१४ शिष्य लोग रोटी लेना भूल गये और नाव पर उन के
१५ साथ एक रोटी से अधिक न थी। और उस ने उन्हें चिताया कि देखो फरीशियों के खमीर से और हेरोद के खमीर से
१६ चौकस रहो। वे आपस में बिचार करने लगे यह इस लिये
१७ है कि हमारे पास रोटी नहीं है। यह जानके यीशु ने उन से कहा तुम्हारे पास रोटी न होने के कारण तुम क्यों आपस में विचार करते हो . क्या तुम अब लों नहीं बूझते और नहीं समझते हो . क्या तुम्हारा मन अब लों कठोर
१८ है। आंखें रहते हुए क्या नहीं देखते हो और कान रहते हुए क्या नहीं सुनते हो और क्या स्मरण नहीं करते हो।
१९ जब मैं ने पांच सहस्र के लिये पांच रोटी तोड़ीं तब तुम ने टुकड़ों की कितनी टोकरियां भरी उठाईं . उन्हों ने उस से
२० कहा बारह। और जब चार सहस्र के लिये सात रोटी तब तुम ने टुकड़ों के कितने टोकरे भरे उठाये . वे बोले
२१ सात। उस ने उन से कहा तुम क्यों नहीं समझते हो।
२२ तब वह बैतसैदा में आया और लोगों ने एक अन्धे को
२३ उस पास ला उस से बिन्ती किई कि उस को छूवे। वह उस अन्धे का हाथ पकड़के उसे नगर के बाहर ले गया और उस के नेत्रों पर थूकके उस पर हाथ रखके उस से पूछा
२४ क्या तू कुछ देखता है। उस ने नेत्र उठाके कहा मैं वृक्षों की
२५ नाईं मनुष्यों को फिरते देखता हूं। तब उस ने फिर उस के नेत्रों पर हाथ रखके उस से नेत्र उठवाये और वह चंगा
२६ हो गया और सभों को फरछाईं से देखने लगा। और उस ने उसे यह कहके घर भेजा कि नगर में मत जा और नगर में किसी से मत कह।

यीशु और उस के शिष्य कैसरिया फिलिपी के गांवों में २७ निकल गये और मार्ग में उस ने अपने शिष्यों से पूछा कि लोग क्या कहते हैं मैं कौन हूं। उन्हों ने उत्तर दिया कि २८ वे आप को योहन बपतिसमा देनेहारा कहते हैं परन्तु कितने एलियाह कहते हैं और कितने भविष्यद्वक्ताओं में से एक कहते हैं। उस ने उन से कहा तुम क्या कहते हो २९ मैं कौन हूं. पितर ने उस को उत्तर दिया कि आप ख्रीष्ट हैं। तब उस ने उन्हें दृढ़ आज्ञा दिई कि मेरे विषय में ३० किसी से मत कहो।

और वह उन्हें बताने लगा कि मनुष्य के पुत्र को अवश्य ३१ है कि बहुत दुःख उठावे और प्राचीनों और प्रधान याजकों और अध्यापकों से तुच्छ किया जाय और मार डाला जाय और तीन दिन के पीछे जी उठे। उस ने यह बात ३२ खोलके कही और पितर उसे लेके उस को डांटने लगा। उस ने मुंह फेरके और अपने शिष्यों पर दृष्टि करके पितर ३३ को डांटा कि हे शैतान मेरे साम्हने से दूर हो क्योंकि तुझे ईश्वर की बातों का नहीं परन्तु मनुष्यों की बातों का सोच रहता है।

उस ने अपने शिष्यों के संग लोगों को अपने पास बुलाके ३४ उन से कहा जो कोई मेरे पीछे आने चाहे सो अपनी इच्छा को मारे और अपना क्रूश उठाके मेरे पीछे आवे। क्योंकि जो कोई अपना प्राण बचाने चाहे सो उसे खोवेगा ३५ परन्तु जो कोई मेरे और सुसमाचार के लिये अपना प्राण खोवे सो उसे बचावेगा। यदि मनुष्य सारे जगत को प्राप्त ३६ करे और अपना प्राण गंवावे तो उस को क्या लाभ होगा। अथवा मनुष्य अपने प्राण की सन्ती क्या देगा। जो कोई ३७ ३८ इस समय के व्यभिचारी और पापी लोगों के बीच में मुझ

से और मेरी बातों से लजावे मनुष्य का पुत्र भी जब वह पवित्र दूतों के संग अपने पिता के ऐश्वर्य्य में आवेगा तब उस से लजावेगा ।

९ नवां पर्व्व ।

१ ईश्वर के राज्य के आने की भविष्यद्वाणी । २ यीशु का शिष्यों के आगे तेजस्वी दिखाई देना । ११ एलियाह के आने का अर्थ उन्हें बताना । १४ एक भूतग्रस्त लड़के को चंगा करना । ३० अपनी मृत्यु का भविष्यद्वाक्य कहना । ३३ नम्र होने का उपदेश । ३८ दूसरे उपदेशक को बर्जने का और ठोकर खाने का निषेध ।

१ यीशु ने उन से कहा मैं तुम से सच कहता हूं कि जो यहां खड़े हैं उन में से कोई कोई हैं कि जब लों ईश्वर का राज्य पराक्रम से आया हुआ न देखें तब लों मृत्यु का स्वाद न चीखेंगे ।

२ छः दिन के पीछे यीशु पितर और याकूब और योहन को लेके उन्हें किसी ऊंचे पर्व्वत पर एकान्त में ले गया और ३ उन के आगे उस का रूप बदल गया । और उस का बस्त्र चमकने लगा और पाले की नाईं अति उजला हुआ जैसा ४ कोई धोबी धरती पर उजला नहीं कर सकता है । और मूसा के संग एलियाह उन को दिखाई दिया और वे यीशु ५ के संग बात करते थे । इस पर पितर ने यीशु से कहा हे गुरु हमारा यहां रहना अच्छा है . हम तीन डेरे बनावें एक आप के लिये एक मूसा के लिये और एक एलियाह के ६ लिये । वह नहीं जानता था कि क्या कहे क्योंकि वे ७ बहुत डरते थे । तब एक मेघ ने उन्हें छा लिया और उस मेघ से यह शब्द हुआ कि यह मेरा प्रिय पुत्र है उस की सुनो । ८ और उन्हों ने अचानक चारों ओर दृष्टि कर यीशु को छोड़के ९ अपने संग और किसी को न देखा । जब वे उस पर्व्वत से उतरते थे तब उस ने उन को आज्ञा दिई कि जब लों

मनुष्य का पुत्र मृतकों में से नहीं जी उठे तब लों जो तुम ने १०
देखा है सो किसी से मत कहो। उन्हों ने यह बात अपने ही
में रखके आपस में विचार किया कि मृतकों में से जी उठने का
अर्थ क्या है।
और उन्हों ने उस से पूछा अध्यापक लोग क्यों कहते हैं ११
कि एलियाह को पहिले आना होगा। उस ने उन को उत्तर १२
दिया कि सच है एलियाह पहिले आके सब कुछ सुधा-
रेगा. और मनुष्य के पुत्र के विषय में क्योंकर लिखा है कि
वह बहुत दुःख उठावेगा और तुच्छ किया जायगा। परन्तु १३
मैं तुम से कहता हूं कि एलियाह भी आ चुका है और जैसा
उस के विषय में लिखा है तैसा उन्हों ने उस से जो कुछ
चाहा सो किया है।
उस ने शिष्यों के पास आ बहुत लोगों को उन की चारों १४
ओर और अध्यापकों को उन से बिबाद करते हुए देखा।
सब लोग उसे देखते ही विस्मित हुए और उस की ओर १५
दौड़के उसे प्रणाम किया। उस ने अध्यापकों से पूछा तुम १६
इन से किस बात का बिबाद करते हो। भीड़ में से एक ने १७
उत्तर दिया कि हे गुरु मैं अपने पुत्र को जिसे गूंगा भूत
लगा है आप के पास लाया हूं। भूत उसे जहां पकड़ता १८
है तहां पटकता है और वह मुंह से फेन बहाता और
अपने दांत पीसता है और सूख जाता है और मैं ने आप
के शिष्यों से कहा कि उसे निकालें परन्तु वे नहीं सके।
यीशु ने उत्तर दिया कि हे अबिश्वासी लोगो मैं कब लों १९
तुम्हारे संग रहूंगा और कब लों तुम्हारी सहूंगा. उस को
मेरे पास लाओ। वे उस को उस पास लाये और जब २०
उस ने उसे देखा तब भूत ने तुरन्त उस को मरोड़ा और
वह भूमि पर गिरा और मुंह से फेन बहाते हुए लोटने

२१ लगा । यीशु ने उस के पिता से पूछा यह उस को कितने
२२ दिनों से हुआ . उस ने कहा बालकपन से । भूत ने उसे नाश
करने को बार बार आग में और पानी में भी गिराया है
परन्तु जो आप कुछ कर सकें तो हम पर दया करके
२३ हमारा उपकार कीजिये । यीशु ने उस से कहा जो तू
बिश्वास कर सके तो बिश्वास करनेहारे के लिये सब कुछ
२४ हो सकता है । तब बालक के पिता ने तुरन्त पुकारके रो
रोके कहा हे प्रभु मैं बिश्वास करता हूं मेरे अबिश्वास का
२५ उपकार कीजिये । जब यीशु ने देखा कि बहुत लोग एकट्ठे
दौड़े आते हैं तब उस ने अशुद्ध भूत को डांटके उस से कहा
हे गूंगे बहिरे भूत मैं तुझे आज्ञा देता हूं कि उस में से
२६ निकल आ और उस में फिर कभी मत पैठ । तब भूत
चिल्लाके और बालक को बहुत मरोड़के निकल आया और
बालक मृतक के समान हो गया यहां लों कि बहुतों ने कहा
२७ वह तो मर गया है । परन्तु यीशु ने उस का हाथ पकड़के
२८ उसे उठाया और वह खड़ा हुआ । जब यीशु घर में
आया तब उस के शिष्यों ने निराले में उस से पूछा हम उस
२९ भूत को क्यों नहीं निकाल सके । उस ने उन से कहा कि
जो इस प्रकार के हैं सो प्रार्थना और उपवास बिना और
किसी उपाय से निकाले नहीं जा सकते हैं ।

३० वे वहां से निकलके गालील में होके गये और वह नहीं
३१ चाहता था कि कोई जाने । क्योंकि उस ने अपने शिष्यों
को उपदेश दे उन से कहा मनुष्य का पुत्र मनुष्यों के हाथ में
पकड़वाया जायगा और वे उस को मार डालेंगे और वह
३२ मरके तीसरे दिन जी उठेगा । परन्तु उन्हों ने यह बात
नहीं समझी और उस से पूछने को डरते थे ।

३३ वह कफर्नाहुम में आया और घर में पहुंचके शिष्यों से

पूछा मार्ग में तुम आपस में किस बात का विचार करते थे। वे चुप रहे क्योंकि मार्ग में उन्हों ने आपस में इसी का ३४ विचार किया था कि हम में से बड़ा कौन है। तब उस ने ३५ बैठके बारह शिष्यों को बुलाके उन से कहा यदि कोई प्रधान हुआ चाहे तो सभों से छोटा और सभों का सेवक होगा। और उस ने एक बालक को लेके उन के बीच में खड़ा किया ३६ और उसे गोदी में ले उन से कहा. जो कोई मेरे नाम से ३७ ऐसे बालकों में से एक को ग्रहण करे वह मुझे ग्रहण करता है और जो कोई मुझे ग्रहण करे वह मुझे नहीं परन्तु मेरे भेजनेहारे को ग्रहण करता है।

तब योहन ने उस को उत्तर दिया कि हे गुरु हम ने ३८ किसी मनुष्य को जो हमारे पीछे नहीं आता है आप के नाम से भूतों को निकालते देखा और हम ने उसे बर्जा क्योंकि वह हमारे पीछे नहीं आता है। यीशु ने कहा उस को मत ३९ बर्जो क्योंकि कोई नहीं है जो मेरे नाम से आश्चर्य्य कर्म्म करेगा और शीघ्र मेरी निन्दा कर सकेगा। जो हमारे ४० विरुद्ध नहीं है सो हमारी ओर है। जो कोई मेरे नाम से ४१ एक कटोरा पानी तुम को इस लिये पिलावे कि ख्रीष्ट के हो मैं तुम से सच कहता हूं वह किसी रीति से अपना फल न खोवेगा। परन्तु जो कोई उन छोटों में से जो मुझ ४२ पर विश्वास करते हैं एक को ठोकर खिलावे उस के लिये भला होता कि चक्की का पाट उस के गले में बांधा जाता और वह समुद्र में डाला जाता। जो तेरा हाथ तुझे ठोकर ४३ खिलावे तो उसे काट डाल. टुंडा होके जीवन में प्रवेश करना तेरे लिये इस से भला है कि दो हाथ रहते हुए तू नरक में अर्थात न बुझनेहारी आग में जाय. जहां उन ४४ का कीड़ा नहीं मरता और आग नहीं बुझती। और जो ४५

तेरा पांव तुझे ठोकर खिलावे तो उसे काट डाल . लंगड़ा होके जीवन में प्रवेश करना तेरे लिये इस से भला है कि दो पांव रहते हुए तू नरक में अर्थात न बुझनेहारी
४६ आग में डाला जाय . जहां उन का कीड़ा नहीं मरता और
४७ आग नहीं बुझती । और जो तेरी आंख तुझे ठोकर खिलावे तो उसे निकाल डाल . काना होके ईश्वर के राज्य में प्रवेश करना तेरे लिये इस से भला है कि दो
४८ आंखें रहते हुए तू नरक की आग में डाला जाय . जहां
४९ उन का कीड़ा नहीं मरता और आग नहीं बुझती । क्यों-कि हर एक जन आग से लोणा किया जायगा और हर
५० एक बलि लोण से लोणा किया जायगा । लोण अच्छा है परन्तु यदि लोण अलोणा हो जाय तो किस से उस को स्वादित करोगे . अपने में लोण रखो और आपस में मिले रहो ।

१० दसवां पर्ब्ब ।

१ पत्नी को त्यागने का निषेध । १३ यीशु का बालकों को आशीष देना । १७ एक धनवान जवान से उस की बातचीत । २३ धनी लोगों की दशा का वर्णन । २८ शिष्यों के फल की प्रतिज्ञा । ३२ यीशु का अपनी मृत्यु का भविष्यद्वाक्य कहना । ३५ दो शिष्यों की बिन्ती का उत्तर देना । ४१ दीन होने का उपदेश । ४६ यीशु का एक अंधे के नेत्र खोलना ।

१ यीशु वहां से उठके यर्दन के उस पार से देके यिहूदिया के सिवानों में आया और बहुत लोग फिर उस पास एकट्ठे आये और उस ने अपनी रीति पर उन्हों को फिर
२ उपदेश दिया । तब फरीशियों ने उस पास आ उस की परीक्षा करने को उस से पूछा क्या अपनी स्त्री को त्यागना
३ मनुष्य को उचित है कि नहीं । उस ने उन को उत्तर दिया
४ कि मूसा ने तुम को क्या आज्ञा दिई । उन्हों ने कहा मूसा
५ ने त्यागपत्र लिखने और स्त्री को त्यागने दिया । यीशु ने

उन्हें उत्तर दिया कि तुम्हारे मन की कठोरता के कारण उस ने यह आज्ञा तुम को लिख दिई। परन्तु सृष्टि के आरंभ ६ से ईश्वर ने नर और नारी करके मनुष्यों को उत्पन्न किया। इस हेतु से मनुष्य अपने माता पिता को छोड़के अपनी स्त्री ७ से मिला रहेगा और वे दोनों एक तन होंगे। सो वे ८ आगे दो नहीं पर एक तन हैं। इस लिये जो कुछ ईश्वर ९ ने जोड़ा है उस को मनुष्य अलग न करे। घर में उस के १० शिष्यों ने फिर इस बात के विषय में उस से पूछा। उस ने ११ उन से कहा जो कोई अपनी स्त्री को त्यागके दूसरी से बिवाह करे सो उस के बिरुद्ध परस्त्रीगमन करता है। और यदि १२ स्त्री अपने स्वामी को त्यागके दूसरे से बिवाह करे तो वह व्यभिचार करती है।

तब लोग कितने बालकों को यीशु पास लाये कि वह १३ उन्हें छूवे परन्तु शिष्यों ने लानेहारों को डांटा। यीशु ने १४ यह देखके अप्रसन्न हो उन से कहा बालकों को मेरे पास आने दो और उन्हें मत बर्जो क्योंकि ईश्वर का राज्य ऐसों का है। मैं तुम से सच कहता हूं कि जो कोई ईश्वर १५ के राज्य को बालक की नाईं ग्रहण न करे वह उस में प्रवेश करने न पावेगा। तब उस ने उन्हें गोदी में लेके उन पर १६ हाथ रखके उन्हें आशीस दिई।

जब वह मार्ग में जाता था तब एक मनुष्य उस की ओर १७ दौड़ा और उस के आगे घुटने टेकके उस से पूछा हे उत्तम गुरु अनन्त जीवन का अधिकारी होने को मैं क्या करूं। यीशु ने उस से कहा तू मुझे उत्तम क्यों कहता है. कोई १८ उत्तम नहीं है केवल एक अर्थात ईश्वर। तू आज्ञाओं को १९ जानता है कि परस्त्रीगमन मत कर नरहिंसा मत कर चोरी मत कर झूठी साची मत दे ठगाई मत कर अपने

२० माता पिता का आदर कर। उस ने उस को उत्तर दिया कि हे गुरु इन सभों को मैं ने अपने लड़कपन से पालन किया
२१ है। यीशु ने उस पर दृष्टि कर उसे प्यार किया और उस से कहा तुझे एक बात की घटी है. जा जो कुछ तेरा है सो बेचके कंगालों को दे और तू स्वर्ग में धन पावेगा और आ
२२ क्रूश उठाके मेरे पीछे हो ले। वह इस बात से अप्रसन्न हो उदास चला गया क्योंकि उस को बहुत धन था।
२३ यीशु ने चारों ओर दृष्टि कर अपने शिष्यों से कहा धनवानों को ईश्वर के राज्य में प्रवेश करना कैसा कठिन
२४ होगा। शिष्य लोग उस की बातों से अचंभित हुए परन्तु यीशु ने फिर उन को उत्तर दिया कि हे बालको जो धन पर भरोसा रखते हैं उन्हों को ईश्वर के राज्य में प्रवेश
२५ करना कैसा कठिन है। ईश्वर के राज्य में धनवान के प्रवेश
२६ करने से ऊंट का सूई के नाके में से जाना सहज है। वे अत्यन्त अचंभित हो आपस में बोले तब तो किस का त्राण हो सकता
२७ है। यीशु ने उन पर दृष्टि कर कहा मनुष्यों से यह अन्होना है परन्तु ईश्वर से नहीं क्योंकि ईश्वर से सब कुछ हो सकता है।

२८ पितर उस से कहने लगा कि देखिये हम लोग सब
२९ कुछ छोड़के आप के पीछे हो लिये हैं। यीशु ने उत्तर दिया मैं तुम से सच कहता हूं कि जिस ने मेरे और सुसमाचार के लिये घर वा भाइयों वा बहिनों वा पिता वा माता
३० वा स्त्री वा लड़कों वा भूमि को त्यागा हो. ऐसा कोई नहीं है जो अब इस समय में उपद्रव सहित सौ गुणे घरों और भाइयों और बहिनों और माताओं और लड़कों और
३१ भूमि को और परलोक में अनन्त जीवन न पावेगा। परन्तु बहुतेरे जो अगले हैं पिछले होंगे और जो पिछले हैं अगले होंगे।

16

वे यिरूशलीम को जाते हुए मार्ग में थे और यीशु उन ३२ के आगे आगे चलता था और वे अचंभित हुए और उस के पीछे चलते हुए डरते थे और वह फिर बारह शिष्यों को लेके जो कुछ उस पर होन्हार था सो उन से कहने लगा. कि देखो हम यिरूशलीम को जाते हैं और मनुष्य का पुत्र ३३ प्रधान याजकों और अध्यापकों के हाथ पकड़वाया जायगा और वे उस को बध के योग्य ठहराके अन्यदेशियों के हाथ सौंपेंगे। और वे उस से ठट्ठा करेंगे और कोड़े मारेंगे और ३४ उस पर थूकेंगे और उसे घात करेंगे और वह तीसरे दिन जी उठेगा।

तब जबदी के पुत्र याकूब और योहन ने यीशु पास आ ३५ कहा हे गुरु हम चाहते हैं कि जो कुछ हम मांगें सो आप हमारे लिये करें। उस ने उन से कहा तुम क्या चाहते ३६ हो कि मैं तुम्हारे लिये करूं। वे उस से बोले हमें यह ३७ दीजिये कि आप के ऐश्वर्य्य में हम में से एक आप की दहिनी ओर और दूसरा आप की बाईं ओर बैठे। यीशु ने उन से ३८ कहा तुम नहीं बूझते कि क्या मांगते हो. जिस कटोरे से मैं पीता हूं क्या तुम उस से पी सकते हो और जो बपतिसमा मैं लेता हूं क्या तुम उसे ले सकते हो। उन्हों ३९ ने उस से कहा हम सकते हैं. यीशु ने उन से कहा जिस कटोरे से मैं पीता हूं उस से तुम तो पीओगे और जो बप-तिसमा मैं लेता हूं उसे लेओगे। परन्तु जिन्हों के लिये ४० तैयार किया गया है उन्हें छोड़ और किसी को अपनी दहिनी और अपनी बाईं ओर बैठने देना मेरा अधिकार नहीं है।

यह सुनके दसों शिष्य याकूब और योहन पर रिसियाने ४१ लगे। यीशु ने उन को अपने पास बुलाके उन से कहा तुम ४२ जानते हो कि जो अन्यदेशियों के अध्यक्ष समझे जाते सो

उन्हों पर प्रभुता करते हैं और उन में के बड़े लोग उन्हों पर ४३ अधिकार रखते हैं । परन्तु तुम्हों में ऐसा नहीं होगा पर जो कोई तुम्हों में बड़ा हुआ चाहे सो तुम्हारा सेवक ४४ होगा । और जो कोई तुम्हारा प्रधान हुआ चाहे सो ४५ सभों का दास होगा। क्योंकि मनुष्य का पुत्र भी सेवा कर- वाने को नहीं परन्तु सेवा करने को और बहुतों के उद्धार के दाम में अपना प्राण देने को आया है ।

४६ वे यिरीहो नगर में आये और जब वह और उस के शिष्य और बहुत लोग यिरीहो से निकलते थे तब तीमई का पुत्र बर्तीमई एक अंधा मनुष्य मार्ग की ओर बैठा भीख ४७ मांगता था । वह यह सुनके कि यीशु नासरी है पुकारने और कहने लगा कि हे दाऊद के सन्तान यीशु मुझ पर दया ४८ कीजिये । बहुत लोगों ने उसे डांटा कि वह चुप रहे परन्तु उस ने बहुत अधिक पुकारा हे दाऊद के सन्तान मुझ पर दया ४९ कीजिये । तब यीशु खड़ा रहा और उसे बुलाने को कहा और लोगों ने उस अंधे को बुलाके उस से कहा ढाढ़स कर ५० उठ वह तुझे बुलाता है । वह अपना कपड़ा फेंकके उठा ५१ और यीशु पास आया । इस पर यीशु ने उस से कहा तू क्या चाहता है कि मैं तेरे लिये करूं . अंधा उस से बोला ५२ हे गुरु मैं अपनी दृष्टि पाऊं । यीशु ने उस से कहा चला जा तेरे विश्वास ने तुझे चंगा किया है . और वह तुरन्त देखने लगा और मार्ग में यीशु के पीछे हो लिया ।

११ ग्यारहवां पर्ब्ब ।

१ यीशु का यिरूशलीम में जाना । १२ गूलर के वृक्ष को साप देना । १५ ब्यो- पारियों को मन्दिर से निकालना । २० विश्वास के गुण का बखान और क्षमा करने का उपदेश । २७ यीशु का प्रधान याजकों को निरुत्तर करना ।

१ जब वे यिरूशलीम के निकट अर्थात जैतून पर्ब्बत के

समीप वैतफगी और वैथनिया गांवों पास पहुंचे तब उस ने
अपने शिष्यों में से दो को यह कहके भेजा . कि जो गांव २
तुम्हारे सन्मुख है उस में जाओ और उस में प्रवेश करते
ही तुम एक गदही के बच्चे को जिस पर कभी कोई मनुष्य
नहीं चढ़ा बंधे हुए पाओगे उसे खोलके लाओ। जो तुम ३
से कोई कहे तुम यह क्यों करते हो तो कहो कि प्रभु को
इस का प्रयोजन है तब वह उसे तुरन्त यहां भेजेगा।
उन्हों ने जाके उस बच्चे को दो बाटों के सिरे पर द्वार के पास ४
बाहर बंधे हुए पाया और उस को खोलने लगे। तब जो ५
लोग वहां खड़े थे उन में से कितनों ने उन से कहा तुम क्या
करते हो कि बच्चे को खोलते हो। उन्हों ने जैसा यीशु ने ६
आज्ञा किई वैसा उन से कहा तब उन्हों ने उन्हें जाने दिया।
और उन्हों ने बच्चे को यीशु पास लाके उस पर अपने कपड़े ७
डाले और वह उस पर बैठा। और बहुत लोगों ने अपने ८
अपने कपड़े मार्ग में बिछाये और औरों ने वृक्षों से डालियां
काटके मार्ग में बिछाईं। और जो लोग आगे पीछे चलते ९
थे उन्हों ने पुकारके कहा जय जय धन्य वह जो परमेश्वर
के नाम से आता है। धन्य हमारे पिता दाऊद का राज्य १०
जो परमेश्वर के नाम से आता है . सब से ऊंचे स्थान में
जयजयकार होवे। यीशु ने यिरूशलीम में आ मन्दिर में ११
प्रवेश किया और जब उस ने चारों ओर सब वस्तुओं पर
दृष्टि किई और संध्याकाल आ चुका तब वह बारह
शिष्यों के संग वैथनिया को निकल गया।
दूसरे दिन जब वे वैथनिया से निकलते थे तब उस १२
को भूख लगी। और वह पत्ते लगे हुए एक गूलर का वृक्ष १३
दूर से देखके आया कि क्या जाने उस में कुछ पावे परन्तु
उस पास आके और कुछ न पाया केवल पत्ते . गूलर के

१४ पकने का समय नहीं था। इस पर यीशु ने उस वृक्ष को कहा कोई मनुष्य फिर कभी तुझ से फल न खावे . और उस के शिष्यों ने यह बात सुनी।

१५ वे यिरूशलीम में आये और यीशु मन्दिर में जाके जो लोग मन्दिर में बेचते औ मोल लेते थे उन्हें निकालने लगा और सर्राफों के पीढ़ों को और कपोतों के बेचनेहारों
१६ की चौकियों को उलट दिया . और किसी को मन्दिर के
१७ बीच से कोई पात्र ले जाने न दिया। और उस ने उपदेश कर उन से कहा क्या नहीं लिखा है कि मेरा घर सब देशों के लोगों के लिये प्रार्थना का घर कहावेगा . परन्तु
१८ तुम ने उसे डाकूओं का खोह बनाया है। यह सुनके अध्यापकों और प्रधान याजकों ने खोज किया कि उसे किस रीति से नाश करें क्योंकि वे उस से डरते थे इस लिये
१९ कि सब लोग उस के उपदेश से अचंभित होते थे। जब सांझ हुई तब वह नगर से बाहर निकला।

२० भोर को जब वे उधर से जाते थे तब उन्हों ने वह गूलर
२१ का वृक्ष जड़ से सूखा हुआ देखा। पितर ने स्मरण कर यीशु से कहा हे गुरु देखिये यह गूलर का वृक्ष जिसे आप
२२ ने स्राप दिया सूख गया है। यीशु ने उन को उत्तर
२३ दिया कि ईश्वर पर बिश्वास रखो। क्योंकि मैं तुम से सच कहता हूं जो कोई इस पहाड़ से कहे कि उठ समुद्र में गिर पड़ और अपने मन में सन्देह न रखे परन्तु बिश्वास करे कि जो मैं कहता हूं सो हो जायगा उस के लिये
२४ जो कुछ वह कहेगा सो हो जायगा। इस लिये मैं तुम से कहता हूं जो कुछ तुम प्रार्थना करके मांगो बिश्वास
२५ करो कि हम पावेंगे तो तुम्हें मिलेगा। और जब तुम प्रार्थना करने को खड़े हो तब यदि तुम्हारे मन में किसी

की ओर कुछ होय तो क्षमा करो इस लिये कि तुम्हारा स्वर्गवासी पिता भी तुम्हारे अपराध क्षमा करे। परन्तु जो २६ तुम क्षमा न करो तो तुम्हारा स्वर्गवासी पिता भी तुम्हारे अपराध क्षमा न करेगा।

वे फिर यिरूशलीम में आये और जब यीशु मन्दिर में २७ फिरता था तब प्रधान याजक और अध्यापक और प्राचीन लोग उस पास आये . और उस से बोले तुझे ये काम २८ करने का कैसा अधिकार है और ये काम करने को किस ने तुझ को यह अधिकार दिया। यीशु ने उन को उत्तर दिया २९ कि मैं भी तुम से एक बात पूछूंगा . तुम मुझे उत्तर देओ तो मैं तुम्हें बताऊंगा कि मुझे ये काम करने का कैसा अधिकार है। योहन का बपतिसमा देना क्या स्वर्ग की ३० अथवा मनुष्यों की ओर से हुआ मुझे उत्तर देओ। तब वे ३१ आपस में विचार करने लगे कि जो हम कहें स्वर्ग की ओर से तो वह कहेगा फिर तुम ने उस का विश्वास क्यों नहीं किया। परन्तु जो हम कहें मनुष्यों की ओर से . तब उन्हें ३२ लोगों का डर लगा क्योंकि सब लोग योहन को जानते थे कि निश्चय वह भविष्यद्वक्ता था। सो उन्हों ने यीशु को ३३ उत्तर दिया कि हम नहीं जानते . यीशु ने उन्हें उत्तर दिया तो मैं भी तुम को नहीं बताता हूं कि मुझे ये काम करने का कैसा अधिकार है।

१२ बारहवां पर्व्व।

१ दुष्ट मालियों का दृष्टान्त। १३ यीशु का कर देने के विषय में फरीशियों को निरुत्तर करना। १८ जी उठने के विषय में सदूकियों को निरुत्तर करना। २८ श्रेष्ठ आज्ञा के विषय में अध्यापक को उत्तर देना। ३५ अपनी पदवी के विषय में अध्यापकों को निरुत्तर करना। ३८ अध्यापकों के दोष प्रगट करना। ४१ एक विधवा के दान की प्रशंसा।

यीशु दृष्टान्तों में उन से कहने लगा कि किसी मनुष्य ने १

दाख की बारी लगाई और चहुं ओर बेड़ दिया और रस का
कुंड खोदा और गढ़ बनाया और मालियों को उस का
२ ठीका दे परदेश को चला गया। समय में उस ने मालियों के
पास एक दास को भेजा कि मालियों से दाख की बारी का
३ कुछ फल लेवे। परन्तु उन्हों ने उसे लेके मारा और छूछे
४ हाथ फेर दिया। फिर उस ने दूसरे दास को उन के पास
भेजा और उन्हों ने उसे पत्थरवाह कर उस का सिर फोड़ा
५ और उसे अपमान करके फेर दिया। फिर उस ने तीसरे
को भेजा और उन्हों ने उसे मार डाला और बहुत औरों
से उन्हों ने वैसा ही किया कितनों को मारा और कितनों
६ को घात किया। फिर उस को एक ही पुत्र था जो उस का
प्रिय था सो सब के पीछे उस ने यह कहके उसे भी
७ उन के पास भेजा कि वे मेरे पुत्र का आदर करेंगे। परन्तु
उन मालियों ने आपस में कहा यह तो अधिकारी है आओ
८ हम उसे मार डालें तब अधिकार हमारा होगा। और
उन्हों ने उसे लेके मार डाला और दाख की बारी के बाहर
९ फेंक दिया। इस लिये दाख की बारी का स्वामी क्या करेगा.
वह आके उन मालियों को नाश करेगा और दाख की
१० बारी दूसरों के हाथ देगा। क्या तुम ने धर्म्मपुस्तक का यह
बचन नहीं पढ़ा है कि जिस पत्थर को थवइयों ने निकम्मा
११ जाना वही कोने का सिरा हुआ है. यह परमेश्वर का कार्य्य
१२ है और हमारी दृष्टि में अद्भुत है। तब उन्हों ने उसे पकड़ने
चाहा क्योंकि जानते थे कि उस ने हमारे बिरुद्ध यह
दृष्टान्त कहा परन्तु वे लोगों से डरे और उसे छोड़के चले गये।
१३　　तब उन्हों ने उसे बात में फंसाने को कई एक फरीशियों
१४ और हेरोदियों को उस पास भेजा। वे आके उस से बोले
हे गुरु हम जानते हैं कि आप सत्य हैं और किसी का

खटका नहीं रखते हैं क्योंकि आप मनुष्यों का मुंह देखके बात नहीं करते हैं परन्तु ईश्वर का मार्ग सत्यता से बताते हैं . क्या कैसर को कर देना उचित है अथवा नहीं . हम देवें अथवा न देवें। उस ने उन का कपट जानके उन से १५ कहा मेरी परीक्षा क्यों करते हो . एक सूकी मेरे पास लाओ कि मैं देखूं। वे लाये और उस ने उन से कहा यह १६ मूर्त्ति और छाप किस की है . वे उस से बोले कैसर की। यीशु ने उन को उत्तर दिया कि जो कैसर का है सो कैसर १७ को देओ और जो ईश्वर का है सो ईश्वर को देओ . तब वे उस से अचंभित हुए।

सदूकी लोग भी जो कहते हैं कि मृतकों का जी १८ उठना नहीं होगा उस पास आये और उस से पूछा . कि १९ हे गुरु मूसा ने हमारे लिये लिखा कि यदि किसी का भाई मर जाय और स्त्री को छोड़े और उस को सन्तान न हों तो उस का भाई उस की स्त्री से बिवाह करे और अपने भाई के लिये वंश खड़ा करे। सो सात भाई थे . पहिला २० भाई बिवाह कर निःसन्तान मर गया। तब दूसरे भाई २१ ने उस स्त्री से बिवाह किया और मर गया और उस को भी सन्तान न हुआ . और वैसे ही तीसरे ने भी। सातों २२ ने उस से बिवाह किया पर किसी को सन्तान न हुआ . सब के पीछे स्त्री भी मर गई। सो मृतकों के जी उठने पर २३ जब वे सब उठेंगे तब वह उन में से किस की स्त्री होगी क्योंकि सातों ने उस से बिवाह किया। यीशु ने उन को २४ उत्तर दिया क्या तुम इसी कारण भूल में न पड़े हो कि धर्म्मपुस्तक और ईश्वर की शक्ति नहीं बूझते हो। क्योंकि २५ जब वे मृतकों में से जी उठें तब न बिवाह करते न बिवाह दिये जाते हैं परन्तु स्वर्ग में दूतों के समान हैं।

२६ मृतकों के जी उठने के विषय में क्या तुम ने मूसा के पुस्तक में झाड़ी की कथा में नहीं पढ़ा है कि ईश्वर ने उस से कहा मैं इब्राहीम का ईश्वर और इसहाक का ईश्वर और याकूब
२७ का ईश्वर हूं । ईश्वर मृतकों का नहीं परन्तु जीवतों का ईश्वर है सो तुम बड़ी भूल में पड़े हो ।

२८ अध्यापकों में से एक ने आ उन्हें बिवाद करते सुना और यह जानके कि यीशु ने उन्हें अच्छी रीति से उत्तर दिया
२९ उस से पूछा सब से बड़ी आज्ञा कौन है। यीशु ने उसे उत्तर दिया सब आज्ञाओं में से यही बड़ी है कि हे इस्रायेल
३० सुनो परमेश्वर हमारा ईश्वर एक ही परमेश्वर है। और तू परमेश्वर अपने ईश्वर को अपने सारे मन से और अपने सारे प्राण से और अपनी सारी बुद्धि से और अपनी सारी
३१ शक्ति से प्रेम कर . यही सब से बड़ी आज्ञा है। और दूसरी उस के समान है सो यह है कि तू अपने पड़ोसी को अपने समान प्रेम कर . इन से और कोई आज्ञा बड़ी नहीं।
३२ उस अध्यापक ने उस से कहा अच्छा हे गुरु आप ने सत्य कहा है कि एक ही ईश्वर है और उसे छोड़ कोई दूसरा
३३ नहीं है। और उस को सारे मन से और सारी बुद्धि से और सारे प्राण से और सारी शक्ति से प्रेम करना और पड़ोसी को अपने समान प्रेम करना सारे होमों से और बलिदानों
३४ से अधिक है। जब यीशु ने देखा कि उस ने बुद्धि से उत्तर दिया था तब उस से कहा तू ईश्वर के राज्य से दूर नहीं है . और किसी को फिर उस से कुछ पूछने का साहस न हुआ।

३५ इस पर यीशु ने मन्दिर में उपदेश करते हुए कहा अध्यापक लोग क्योंकर कहते हैं कि ख्रीष्ट दाऊद का पुत्र
३६ है। दाऊद आप ही पवित्र आत्मा की शिक्षा से बोला कि परमेश्वर ने मेरे प्रभु से कहा जब लों मैं तेरे शत्रुओं को तेरे

चरणों की पीढ़ी न बनाऊं तब लों तू मेरी दहिनी ओर बैठ । दाऊद तो आप ही उसे प्रभु कहता है फिर वह ३७ उस का पुत्र कहां से है . भीड़ के अधिक लोग प्रसन्नता से उस की सुनते थे ।

उस ने अपने उपदेश में उन से कहा अध्यापकों से चौकस ३८ रहो जो लंबे वस्त्र पहिने हुए फिरने चाहते हैं . और ३९ बाजारों में नमस्कार और सभा के घरों में ऊंचे आसन और जेवनारों में ऊंचे स्थान भी चाहते हैं । वे बिधवाओं के ४० घर खा जाते हैं और बहाना के लिये बड़ी बेर लों प्रार्थना करते हैं . वे अधिक दंड पावेंगे ।

यीशु भंडार के साम्हने बैठके देखता था कि लोग क्यों‍ ४१ कर भंडार में रोकड़ डालते हैं और बहुत धनवानों ने बहुत कुछ डाला । और एक कंगाल बिधवा ने आके दो ४२ छदाम अर्थात आध पैसा डाला । तब उस ने अपने ४३ शिष्यों को अपने पास बुलाके उन से कहा मैं तुम से सच कहता हूं कि जिन्हों ने भंडार में डाला है उन सभों से इस कंगाल बिधवा ने अधिक डाला है । क्योंकि सभों ने अपनी ४४ बढ़ती में से कुछ कुछ डाला है परन्तु इस ने अपनी घटती में से जो कुछ उस का था अर्थात अपनी सारी जीविका डाली है ।

१३ तेरहवां पर्व्व ।

१ मन्दिर के नाश होने की भविष्यद्वाणी । ३ उस समय के चिन्ह । ९ शिष्यों पर उपद्रव होगा । १४ यिहूदी लोग बड़ा कष्ट पावेंगे । २१ झूठे खीष्ट प्रगट होंगे । २४ मनुष्य के पुत्र के आने का वर्णन । २८ गूलर के वृक्ष का दृष्टान्त । ३२ सचेत रहने का उपदेश और दासों का दृष्टान्त ।

जब यीशु मन्दिर में से निकलता था तब उस के शिष्यों १ में से एक ने उस से कहा हे गुरु देखिये कैसे पत्थर और कैसी रचना है । यीशु ने उसे उत्तर दिया क्या तू यह बड़ी

बड़ी रचना देखता है . पत्थर पर पत्थर भी न छोड़ा जायगा जो गिराया न जाय ।

३ जब वह जैतून पर्ब्बत पर मन्दिर के साम्ने बैठा था तब पितर और याकूब और योहन और अन्द्रिय ने निराले में ४ उस से पूछा . कि हमों से कहिये यह कब होगा और यह सब बातें जिस समय में पूरी होंगीं उस समय का क्या ५ चिन्ह होगा । यीशु उन्हें उत्तर दे कहने लगा चौकस ६ रहो कि कोई तुम्हें न भरमावे । क्योंकि बहुत लोग मेरे नाम से आके कहेंगे मैं वही हूं और बहुतों को भरमावेंगे । ७ जब तुम लड़ाइयां और लड़ाइयों की चर्चा सुनो तब मत घबराओ क्योंकि इन का होना अवश्य है परन्तु अन्त उस ८ समय में नहीं होगा । क्योंकि देश देश के और राज्य राज्य के विरुद्ध उठेंगे और अनेक स्थानों में भुईंडोल होंगे और अकाल और हुल्लड़ होंगे . यह तो दुःखों का आरंभ होगा ।

९ तुम अपने विषय में चौकस रहो क्योंकि लोग तुम्हें पंचायतों में सौंपेंगे और तुम सभाओं में मारे जाओगे और मेरे लिये अध्यक्षों और राजाओं के आगे उन पर साक्षी १० होने के लिये खड़े किये जाओगे । परन्तु अवश्य है कि पहिले सुसमाचार सब देशों के लोगों में सुनाया जाय । ११ जब वे तुम्हें ले जाके सौंप देवें तब क्या कहोगे इस की चिन्ता आगे से मत करो और न सोच करो परन्तु जो कुछ तुम्हें उसी घड़ी दिया जाय सोई कहो क्योंकि तुम १२ नहीं परन्तु पवित्र आत्मा बोलनेहारा होगा । भाई भाई को और पिता पुत्र को बध किये जाने को सौंपेंगे और लड़के माता पिता के विरुद्ध उठके उन्हें घात करवावेंगे । १३ और मेरे नाम के कारण सब लोग तुम से बैर करेंगे पर जो अन्त लों स्थिर रहे सोई त्राण पावेगा ।

जब तुम उस उजाड़नेहारी घिनित वस्तु को जिस की १४ बात दानियेल भविष्यद्वक्ता ने कही जहां उचित नहीं तहां खड़े होते देखो (जो पढ़े सो बूझे) तब जो यिहूदिया में हों सो पहाड़ों पर भागें। जो कोठे पर हो सो न घर में १५ उतरे और न अपने घर में से कुछ लेने को उस में पैठे। और १६ जो खेत में हो सो अपना वस्त्र लेने को पीछे न फिरे। उन १७ दिनों में हाय हाय गर्भवतियां और दूध पिलानेवालियां। परन्तु प्रार्थना करो कि तुम को जाड़े में भागना न होवे। १८ क्योंकि उन दिनों में ऐसा क्लेश होगा जैसा उस सृष्टि के १९ आरंभ से जो ईश्वर ने सृजी अब तक न हुआ और कभी न होगा। यदि परमेश्वर उन दिनों को न घटाता तो कोई २० प्राणी न बचता परन्तु उन चुने हुए लोगों के कारण जिन को उस ने चुना है उस ने उन दिनों को घटाया है।

तब यदि कोई तुम से कहे देखो ख्रीष्ट यहां है अथवा २१ देखो वहां है तो प्रतीति मत करो। क्योंकि झूठे ख्रीष्ट २२ और झूठे भविष्यद्वक्ता प्रगट होके चिन्ह और अद्भुत काम दिखावेंगे इस लिये कि जो हो सके तो चुने हुए लोगों को भी भरमावें। पर तुम चौकस रहो देखो मैं ने आगे से तुम्हें २३ सब बातें कह दिई हैं।

उन दिनों में उस क्लेश के पीछे सूर्य्य अंधियारा हो २४ जायगा और चांद अपनी ज्योति न देगा। आकाश के २५ तारे गिर पड़ेंगे और आकाश में की सेना डिग जायगी। तब लोग मनुष्य के पुत्र को बड़े पराक्रम और ऐश्वर्य्य से २६ मेघों पर आते देखेंगे। और तब वह अपने दूतों को भेजेगा २७ और पृथिवी के इस सिवाने से आकाश के उस सिवाने तक चहुं दिशा से अपने चुने हुए लोगों को एकट्ठे करेगा।

गूलर के वृक्ष से दृष्टान्त सीखो. जब उस की डाली २८

कोमल हो जाती और पत्ते निकल आते तब तुम जानते
२९ हो कि धूपकाला निकट है। इस रीति से जब तुम यह
बातें होते देखो तब जानो कि वह निकट है हां द्वार पर
३० है। मैं तुम से सच कहता हूं कि जब लों यह सब बातें पूरी
न हो जायें तब लों इस समय के लोग नहीं जाते रहेंगे।
३१ आकाश औ पृथिवी टल जायेंगे परन्तु मेरी बातें कभी
न टलेंगीं ।

३२ उस दिन और उस घड़ी के विषय में न कोई मनुष्य
जानता है न स्वर्गवासी दूतगण और न पुत्र परन्तु केवल
३३ पिता। देखो जागते रहो और प्रार्थना करो क्योंकि तुम
३४ नहीं जानते हो वह समय कब होगा। वह ऐसा है जैसे
परदेश जानेवाले एक मनुष्य ने अपना घर छोड़ा और
अपने दासों को अधिकार और हर एक को उस का काम
दिया और द्वारपाल को जागते रहने की आज्ञा दिई ।
३५ इस लिये जागते रहो क्योंकि तुम नहीं जानते हो घर का
स्वामी कब आवेगा सांझ को अथवा आधी रात को अथवा
३६ मुर्ग बोलने के समय में अथवा भोर को। ऐसा न हो कि
३७ वह अचांचक आके तुम्हें सोते पावे। और जो मैं तुम से
कहता हूं सो सभों से कहता हूं जागते रहो।

१४ चौदहवां पर्व्व ।

१ यीशु को वध करने का परामर्श। ३ एक स्त्री का उस के सिर पर सुगन्ध तेल
ढालना। १० यिहूदा का विश्वासघात करना। १२ शिष्यों का निस्तार पर्व्व का
भोजन बनाना। १७ उन के संग यीशु का भोजन करना और यिहूदा के विषय में
भविष्यद्वाक्य कहना। २२ प्रभुभोज का निरूपण। २७ पितर के यीशु से मुकर
जाने की भविष्यद्वाणी। ३२ बारी में यीशु का महा शोक। ४३ उस का पकड़ा
जाना। ५३ उस को महायाजक के पास ले जाना और वध के योग्य ठहराके
अपमान करना। ६६ पितर का उस से मुकर जाना।

१ निस्तार पर्व्व और अखमीरी रोटी का पर्व्व दो दिन के
पीछे होनेवाला था और प्रधान याजक और अध्यापक

लोग खोज करते थे कि यीशु को क्योंकर छल से पकड़के मार डालें। परन्तु उन्हों ने कहा पर्ब्ब में नहीं न हो कि २ लोगों का हुल्लड़ होवे।

जब वह बैथनिया में शिमोन कोढ़ी के घर में था और ३ भोजन पर बैठा तब एक स्त्री उजले पत्थर के पात्र में जटा- मांसी का बहुमूल्य सुगन्ध तेल लेके आई और पात्र तोड़के उस के सिर पर ढाला। कोई कोई अपने मन में रिसियाते ४ थे और बोले सुगन्ध तेल का यह क्षय क्यों हुआ। क्यों- ५ कि वह तीन सौ सूकियों से अधिक दाम में बिक सकता और कंगालों को दिया जा सकता. और वे उस स्त्री पर कुड़कुड़ाये। यीशु ने कहा उस को रहने दो क्यों उस को ६ दुःख देते हो. उस ने अच्छा काम मुझ से किया है। कंगाल ७ लोग तुम्हारे संग सदा रहते हैं और तुम जब चाहो तब उन से भलाई कर सकते हो परन्तु मैं तुम्हारे संग सदा नहीं रहूंगा। जो कुछ वह कर सकी सो किया है. उस ८ ने मेरे गाड़े जाने के लिये आगे से मेरे देह पर सुगन्ध तेल लगाया है। मैं तुम से सत्य कहता हूं सारे जगत में जहां ९ कहीं यह सुसमाचार सुनाया जाय तहां यह भी जो इस ने किया है उस के स्मरण के लिये कहा जायगा।

तब यिहूदा इस्करियोती जो बारह शिष्यों में से एक १० था प्रधान याजकों के पास गया इस लिये कि यीशु को उन्हों के हाथ पकड़वाय। वे यह सुनके आनन्दित हुए और ११ उस को रुपैये देने की प्रतिज्ञा किई और वह खोज करने लगा कि उसे क्योंकर अवसर पाके पकड़वाय।

अखमीरी रोटी के पर्ब्ब के पहिले दिन जिस में वे निस्तार १२ पर्ब्ब का मेम्ना मारते थे यीशु के शिष्य लोग उस से बोले आप कहां चाहते हैं कि हम जाके तैयार करें कि आप

१३ निस्तार पर्ब्ब का भोजन खावें। उस ने अपने शिष्यों में से दो को यह कहके भेजा कि नगर में जाओ और एक मनुष्य जल का घड़ा उठाये हुए तुम्हें मिलेगा उस के पीछे हो
१४ लेओ। जिस घर में वह पैठे उस घर के स्वामी से कहो गुरु कहता है कि पाहुनशाला कहां है जिस में मैं अपने शिष्यों
१५ के संग निस्तार पर्ब्ब का भोजन खाऊं। वह तुम्हें एक सजी हुई और तैयार किई हुई बड़ी उपरौठी कोठरी
१६ दिखावेगा वहां हमारे लिये तैयार करो। तब उस के शिष्य लोग चले और नगर में आके जैसा उस ने उन्हों से कहा तैसा पाया और निस्तार पर्ब्ब का भोजन बनाया।
१७ १८ सांझ को यीशु बारह शिष्यों के संग आया। जब वे भोजन पर बैठके खाते थे तब यीशु ने कहा मैं तुम से सच कहता हूं कि तुम में से एक जो मेरे संग खाता है मुझे
१९ पकड़वायगा। इस पर वे उदास होने और एक एक करके उस से कहने लगे वह क्या मैं हूं और दूसरे ने कहा क्या
२० मैं हूं। उस ने उन को उत्तर दिया कि बारहों में से एक
२१ जो मेरे संग थाली में हाथ डालता है सोई है। मनुष्य का पुत्र जैसा उस के विषय में लिखा है वैसा ही जाता है परन्तु हाय वह मनुष्य जिस से मनुष्य का पुत्र पकड़वाया जाता है. जो उस मनुष्य का जन्म न होता तो उस के लिये भला होता।

२२ जब वे खाते थे तब यीशु ने रोटी लेके धन्यबाद किया और उसे तोड़के उन को दिया और कहा लेओ खाओ
२३ यह मेरा देह है। और उस ने कटोरा ले धन्य मानके उन्हें
२४ दिया और सभों ने उस से पीया। और उस ने उन से कहा यह मेरा लोहू अर्थात नये नियम का लोहू है जो बहुतों
२५ के लिये बहाया जाता है। मैं तुम से सच कहता हूं कि

जिस दिन लों मैं ईश्वर के राज्य में उसे नया न पीऊं उस दिन लों मैं दाख रस फिर कभी न पीऊंगा। और वे २६ भजन गाके जैतून पर्व्वत पर गये।

तब यीशु ने उन से कहा तुम सब इसी रात मेरे विषय २७ में ठोकर खाओगे क्योंकि लिखा है कि मैं गड़ेरिये को मारूंगा और भेड़ें तितर बितर हो जायेंगीं। परन्तु मैं २८ अपने जी उठने के पीछे तुम्हारे आगे गालील को जाऊंगा। पितर ने उस से कहा यदि सब ठोकर खावें तौभी मैं नहीं २९ ठोकर खाऊंगा। यीशु ने उस से कहा मैं तुझे सत्य कहता ३० हूं कि आज इसी रात मुर्ग के दो बार बोलने से आगे तू तीन बार मुझ से मुकरेगा। उस ने और भी दृढ़ता से कहा ३१ जो आप के संग मुझे मरना हो तौभी मैं आप से कभी न मुकरूंगा. सभों ने भी वैसा ही कहा।

वे गेतशिमनी नाम स्थान में आये और यीशु ने अपने ३२ शिष्यों से कहा जब लों मैं प्रार्थना करूं तब लों तुम यहां बैठो। और वह पितर और याकूब और योहन को अपने ३३ संग ले गया और व्याकुल और बहुत उदास होने लगा। और उस ने उन से कहा मेरा मन यहां लों अति उदास ३४ है कि मैं मरने पर हूं. तुम यहां ठहरो और जागते रहो। और थोड़ा आगे बढ़के वह भूमि पर गिरा और प्रार्थना ३५ किई कि जो हो सके तो वह घड़ी उस से टल जाय। उस ने कहा हे अब्बा हे पिता तुझ से सब कुछ हो सकता ३६ है यह कटोरा मेरे पास से टाल दे तौभी जो मैं चाहता हूं सो न होय पर जो तू चाहता है। तब उस ने आ उन्हें ३७ सोते पाया और पितर से कहा हे शिमोन सो तू सोता है क्या तू एक घड़ी नहीं जाग सका। जागते रहो और ३८ प्रार्थना करो कि तुम परीक्षा में न पड़ो. मन तो तैयार

३९ है परन्तु शरीर दुर्बल है। उस ने फिर जाके वही बात
४० कहके प्रार्थना किई। तब उस ने लौटके उन्हें फिर सोते
पाया क्योंकि उन की आंखें नींद से भरी थीं. और वे नहीं
४१ जानते थे कि उस को क्या उत्तर देवें। और उस ने तीसरी
बेर आ उन से कहा सो तुम सोते रहते और बिश्राम
करते हो. बहुत है घड़ी आ पहुंची है देखो मनुष्य का
४२ पुत्र पापियों के हाथ में पकड़वाया जाता है। उठो चलें
देखो जो मुझे पकड़वाता है सो निकट आया है।

४३ वह बोलता ही था कि यिहूदा जो बारह शिष्यों में से
एक था तुरन्त आ पहुंचा और प्रधान याजकों और
अध्यापकों और प्राचीनों की ओर से बहुत लोग खड्ग और
४४ लाठियां लिये हुए उस के संग। यीशु के पकड़वानेहारे ने
उन्हें यह पता दिया था कि जिस को मैं चूमूं वही है उस
४५ को पकड़के यत्न से ले जाओ। और वह आया और तुरन्त
यीशु पास जाके कहा हे गुरु हे गुरु और उस को चूमा।
४६ तब उन्हों ने उस पर अपने हाथ डालके उसे पकड़ा।
४७ जो लोग निकट खड़े थे उन में से एक ने खड्ग खींचके महा-
याजक के दास को मारा और उस का कान उड़ा दिया।
४८ इस पर यीशु ने लोगों से कहा क्या तुम मुझे पकड़ने को जैसे
४९ डाकू पर खड्ग और लाठियां लेके निकले हो। मैं मन्दिर में
उपदेश करता हुआ प्रतिदिन तुम्हारे संग था और तुम
ने मुझे नहीं पकड़ा. परन्तु यह इस लिये है कि धर्म्म-
५० पुस्तक की बातें पूरी होवें। तब सब शिष्य उसे छोड़के
भागे।

५१ और एक जवान जो देह पर चद्दर ओढ़े हुए था उस
५२ के पीछे हो लिया और प्यादों ने उसे पकड़ा। वह चद्दर
छोड़के उन से नंगा भागा।

वे यीशु को महायाजक के पास ले गये और सब प्रधान ५३ याजक और प्राचीन और अध्यापक लोग उस पास एकट्ठे हुए। पितर दूर दूर उस के पीछे महायाजक के अंगने के ५४ भीतर लों चला गया और प्यादों के संग बैठके आग तापने लगा। प्रधान याजकों ने और न्याइयों की सारी सभा ने ५५ यीशु को घात करवाने के लिये उस पर साक्षी ढूंढ़ी परन्तु न पाई। क्योंकि बहुतों ने उस पर झूठी साक्षी दिई परन्तु ५६ उन की साक्षी एक समान न थी। तब कितनों ने खड़े हो ५७ उस पर यह झूठी साक्षी दिई . कि हमों ने इस को कहते ५८ सुना कि मैं यह हाथ का बनाया हुआ मन्दिर गिराऊंगा और तीन दिन में दूसरा बिन हाथ का बनाया हुआ मन्दिर उठाऊंगा। पर यूं भी उन की साक्षी एक समान न ५९ थी। तब महायाजक ने बीच में खड़ा हो यीशु से पूछा क्या ६० तू कुछ उत्तर नहीं देता है . ये लोग तेरे बिरुद्ध क्या साक्षी देते हैं। परन्तु वह चुप रहा और कुछ उत्तर न दिया . ६१ महायाजक ने उस से फिर पूछा और उस से कहा क्या तू उस परमधन्य का पुत्र ख्रीष्ट है। यीशु ने कहा मैं हूं ६२ और तुम मनुष्य के पुत्र को सर्व्वशक्तिमान की दहिनी ओर बैठे और आकाश के मेघों पर आते देखोगे। तब महा- ६३ याजक ने अपने वस्त्र फाड़के कहा अब हमें साक्षियों का और क्या प्रयोजन। ईश्वर की यह निन्दा तुम ने सुनी है ६४ तुम्हें क्या समझ पड़ता है . सभों ने उस को बध के योग्य ठहराया। तब कोई कोई उस पर थूकने लगे और उस का ६५ मुंह ढांपके उसे घूसे मारके उस से कहने लगे कि भविष्य-द्वाणी बोल . प्यादों ने भी उसे थपेड़े मारे।

जब पितर नीचे अंगने में था तब महायाजक की दासि- ६६ यों में से एक आई . और पितर को आग तापते देखके उस ६७

६८ पर दृष्टि करके बोली तू भी यीशु नासरी के संग था। उस
ने मुकरके कहा मैं नहीं जानता और नहीं बूझता तू क्या
कहती है . तब वह बाहर डेवढ़ी में गया और मुर्ग बोला।
६९ दासी उसे फिर देखके जो लोग निकट खड़े थे उन से कहने
लगी कि यह उन में से एक है . वह फिर मुकर गया।
७० फिर थोड़ी बेर पीछे जो लोग निकट खड़े थे उन्हों ने पितर
से कहा तू सचमुच उन में से एक है क्योंकि तू गालीली भी
७१ है और तेरी बोली वैसी ही है। तब वह धिक्कार देने और
किरिया खाने लगा कि मैं उस मनुष्य को जिस के विषय में
७२ बोलते हो नहीं जानता हूं। तब मुर्ग दूसरी बार बोला
और जो बात यीशु ने उस से कही थी कि मुर्ग के दो बार
बोलने से आगे तू तीन बार मुझ से मुकरेगा उस बात को
पितर ने स्मरण किया और सोच करते हुए रोने लगा।

१५ पन्द्रहवां पर्व्व ।

१ यीशु का पिलात के हाथ सौंपा जाना और पिलात का उसे विचार करना और छोड़ने की इच्छा करना। १५ यीशु का घातकों के हाथ सौंपा जाना और योद्धाओं से निन्दित होना। २२ उस का क्रूश पर चढ़ाया जाना। २९ उस पर लोगों का हंसना। ३३ उस का पुकारना और सिरका पीना। ३७ उस का प्राण त्यागना और अद्भुत चिन्हों का प्रगट होना। ४० स्त्रियों का क्रूश के समीप रहना। ४२ यूसफ का यीशु को कबर में रखना।

१ भोर को प्रधान याजकों ने प्राचीनों और अध्यापकों के
संग बरन न्याइयों की सारी सभा ने तुरन्त आपस में बिचार
कर यीशु को बांधा और उसे ले जाके पिलात को सौंप दिया।
२ पिलात ने उस से पूछा क्या तू यिहूदियों का राजा है . उस
३ ने उस को उत्तर दिया कि आप ही तो कहते हैं। और
४ प्रधान याजकों ने उस पर बहुत से दोष लगाये। तब पिलात
ने उस से फिर पूछा क्या तू कुछ उत्तर नहीं देता . देख
५ वे तेरे बिरुद्ध कितनी साक्षी देते हैं। परन्तु यीशु ने और

कुछ उत्तर नहीं दिया यहां लों कि पिलात ने अचंभा किया।
उस पर्व्व में वह एक वन्धुवे को जिसे लोग मांगते थे उन्हीं ६
के लिये छोड़ देता था। वरव्वा नाम एक मनुष्य अपने ७
संगी राजद्रोहियों के साथ जिन्हों ने वलवे में नरहिंसा किई
थी वंधा हुआ था। और लोग पुकारके पिलात से मांगने लगे ८
कि जैसा उन्हों के लिये सदा करता था तैसा करे। पिलात ९
ने उन को उत्तर दिया क्या तुम चाहते हो कि मैं तुम्हारे
लिये यिहूदियों के राजा को छोड़ देऊं। क्योंकि वह जानता १०
था कि प्रधान याजकों ने उस को डाह से पकड़वाया था।
परन्तु प्रधान याजकों ने लोगों को उस्काया इस लिये कि ११
वह वरव्वा ही को उन के लिये छोड़ देवे। पिलात ने उत्तर १२
देके उन से फिर कहा तुम क्या चाहते हो जिसे तुम यिहू-
दियों का राजा कहते हो उस से मैं क्या करूं। उन्हों ने १३
फिर पुकारा कि उसे क्रूश पर चढ़ाइये। पिलात ने उन से १४
कहा क्यों उस ने कौन सी वुराई किई है. परन्तु उन्हों ने
वहुत अधिक पुकारा कि उसे क्रूश पर चढ़ाइये।

तव पिलात ने लोगों को सन्तुष्ट करने की इच्छा कर १५
वरव्वा को उन्हों के लिये छोड़ दिया और यीशु को कोड़े
मारके क्रूश पर चढ़ाये जाने को सोंप दिया। तव योद्धाओं १६
ने उसे घर के अर्थात अध्यक्षभवन के भीतर ले जाके सारी
पलटन को एकट्ठे वुलाया। और उन्हों ने उसे वैजनी वस्त्र १७
पहिराया और कांटों का मुकुट गून्थके उस के सिर पर रखा.
और उसे नमस्कार करने लगे कि हे यिहूदियों के राजा १८
प्रणाम। और उन्हों ने नरकट से उस के सिर पर मारा और १९
उस पर थूका और घुटने टेकके उस को प्रणाम किया। जव २०
वे उस से ठट्ठा कर चुके तव उस से वह वैजनी वस्त्र उतारके
और उस का निज वस्त्र उस को पहिराके उसे क्रूश पर चढ़ाने

२१ को बाहर ले गये। और उन्हों ने कुरीनी देश के एक मनुष्य को अर्थात सिकन्दर और रूफ के पिता शिमोन को जो गांव से आते हुए उधर से जाता था बेगार पकड़ा कि उस का क्रूश ले चले।

२२ तब वे उसे गलगथा स्थान पर लाये जिस का अर्थ यह
२३ है खोपड़ी का स्थान। और उन्हों ने दाख रस में मुर मिलाके
२४ उसे पीने को दिया परन्तु उस ने न लिया। तब उन्हों ने उस को क्रूश पर चढ़ाया और उस के कपड़ों पर चिट्ठियां
२५ डालके कि कौन किस को लेगा उन्हें बांट लिया। एक पहर दिन चढ़ा था कि उन्हों ने उस को क्रूश पर चढ़ाया।
२६ और उस का यह दोषपत्र ऊपर लिखा गया कि यिहूदियों
२७ का राजा। उन्हों ने उस के संग दो डाकूओं को एक को उस की दहिनी ओर और दूसरे को बाईं ओर क्रूशों पर चढ़ाया।
२८ तब धर्म्मपुस्तक का यह बचन पूरा हुआ कि वह कुकर्म्मियों के संग गिना गया।

२९ जो लोग उधर से आते जाते थे उन्हों ने अपने सिर
३० हिलाके और यह कहके उस की निन्दा किई . कि हा मन्दिर के ढानेहारे और तीन दिन में बनानेहारे अपने को
३१ बचा और क्रूश पर से उतर आ। इसी रीति से प्रधान याजकों ने भी अध्यापकों के संग आपस में ठट्ठा कर कहा उस ने
३२ औरों को बचाया अपने को बचा नहीं सकता है। इस्रायेल का राजा ख्रीष्ट क्रूश पर से अब उतर आवे कि हम देखके बिश्वास करें . जो उस के संग क्रूशों पर चढ़ाये गये उन्हों ने भी उस की निन्दा किई।

३३ जब दो पहर हुआ तब सारे देश में तीसरे पहर लों
३४ अंधकार हो गया। तीसरे पहर यीशु ने बड़े शब्द से पुकारके कहा एली एली लामा शबक्तनी अर्थात हे मेरे ईश्वर हे

मेरे ईश्वर तू ने क्यों मुझे त्यागा है। जो लोग निकट ३५ खड़े थे उन में से कितनों ने यह सुनके कहा देखो वह एलि- याह को बुलाता है। और एक ने दौड़के इस्पंज को सिरके में ३६ भिंगाया और नल पर रखके उसे पीने को दिया और कहा रहने दो हम देखें कि एलियाह उसे उतारने को आता है कि नहीं।

तब यीशु ने बड़े शब्द से पुकारके प्राण त्यागा। और ३७ ३८ मन्दिर का परदा ऊपर से नीचे लों फटके दो भाग हो गया। जो शतपति उस के सन्मुख खड़ा था उस ने जब उसे यूं ३९ पुकारके प्राण त्यागते देखा तब कहा सचमुच यह मनुष्य ईश्वर का पुत्र था।

कितनी स्त्रियां भी दूर से देखती रहीं जिन्हों में मरियम ४० मगदलीनी और छोटे याकूब की ओ योशी की माता मरि- यम और शालोमी थीं। जब यीशु गालील में था तब ये ४१ उस के पीछे हो लेती थीं और उस की सेवा करती थीं. बहुत सी और स्त्रियां भी जो उस के संग यिरूशलीम में आईं वहां थीं।

यह दिन तैयारी का दिन था जो बिश्रामवार के एक ४२ दिन आगे है. इस लिये जब सांझ हुई तब अरिमथिया ४३ नगर का यूसफ एक आदरवन्त मन्त्री जो आप भी ईश्वर के राज्य की बाट जोहता था आया और साहस से पिलात के पास जाके यीशु की लोथ मांगी। पिलात ने अचंभा ४४ किया कि वह क्या मर गया है और शतपति को अपने पास बुलाके उस से पूछा क्या उस को मरे कुछ बेर हुई। शतपति से जानके उस ने यूसफ को लोथ दिई। यूसफ ने एक ४५ ४६ चद्दर मोल लेके यीशु को उतारके उस चद्दर में लपेटा और उसे एक कबर में जो पत्थर में खोदी हुई थी रखा और

४७ क़बर के द्वार पर पत्थर लुढ़का दिया। मरियम मगदलीनी और योशी की माता मरियम ने वह स्थान देखा जहां वह रखा गया।

१६ सोलहवां पर्ब्ब ।

१ स्त्रियों का दूत से यीशु के जी उठने का समाचार सुनना। ९ यीशु का मरियम मगदलीनी को दर्शन देना। १२ दो शिष्यों को दर्शन देना। १४ एग्यारह शिष्यों को दर्शन देना और उन्हें प्रेरण करना। १९ स्वर्ग में जाना।

१ जब बिश्रामवार बीत गया तब मरियम मगदलीनी और याकूब की माता मरियम और शालोमी ने सुगन्ध मोल २ लिया कि आके यीशु को मलें। और अठवारे के पहिले दिन बड़ी भोर सूर्य्य उदय होते हुए वे क़बर पर आईं। ३ और वे आपस में बोलीं कौन हमारे लिये क़बर के द्वार पर ४ से पत्थर लुढ़कावेगा। परन्तु उन्हों ने दृष्टि कर देखा कि पत्थर लुढ़काया गया है. और वह बहुत बड़ा था। ५ क़बर के भीतर जाके उन्हों ने उजले लंबे बस्त्र पहिने हुए एक ज्वान को दहिनी ओर बैठे देखा और चकित हुईं। ६ उस ने उन से कहा चकित मत होओ तुम यीशु नासरी को जो क्रूश पर घात किया गया ढूंढ़ती हो. वह जी उठा है वह यहां नहीं है. देखो यही स्थान है जहां उन्हों ने ७ उसे रखा। परन्तु जाके उस के शिष्यों से और पितर से कहो कि वह तुम्हारे आगे गालील को जाता है. जैसे उस ८ ने तुम से कहा वैसे तुम उसे वहां देखोगे। वे शीघ्र निकलके क़बर से भाग गईं और कम्पित और बिस्मित हुईं और किसी से कुछ न बोलीं क्योंकि वे डरती थीं।

९ यीशु ने अठवारे के पहिले दिन भोर को जी उठके पहिले मरियम मगदलीनी को जिस में से उस ने सात भूत निकाले १० थे दर्शन दिया। उस ने जाके उस के संगियों को जो शोक

करते और रोते थे कह दिया । उन्हों ने जब सुना कि ११
वह जीता है और मरियम से देखा गया है तब प्रतीति
न किई ।

इस के पीछे उस ने उन में से दो को जो मार्ग में चलते १२
और किसी गांव को जाते थे दूसरे रूप में दर्शन दिया ।
उन्हों ने भी जाके औरों से कह दिया परन्तु उन्हों ने उन १३
को भी प्रतीति न किई ।

पीछे उस ने एग्यारह शिष्यों को जब वे भोजन पर बैठे १४
थे दर्शन दिया और उन के अविश्वास और मन की
कठोरता पर उलहना दिया इस लिये कि जिन्हों ने उसे
जी उठे हुए देखा था उन लोगों की उन्हों ने प्रतीति न
किई । और उस ने उन से कहा तुम सारे जगत में जाके १५
हर एक मनुष्य को सुसमाचार सुनाओ । जो विश्वास करे १६
और बपतिसमा लेवे सो त्राण पावेगा परन्तु जो विश्वास
न करे सो दंड के योग्य ठहराया जायगा । और ये चिन्ह १७
विश्वास करनेहारों के संग प्रगट होंगे . वे मेरे नाम से
भूतों को निकालेंगे वे नई नई भाषा बोलेंगे । वे सांपों को १८
उठा लेंगे और जो वे कुछ विष पीवें तो उस से उन की
कुछ हानि न होगी . वे रोगियों पर हाथ रखेंगे और वे
चंगे हो जायेंगे ।

सो प्रभु उन्हों से बोलने के पीछे स्वर्ग पर उठा लिया १९
गया और ईश्वर की दहिनी ओर बैठा । और उन्हों ने २०
निकलके सर्व्वत्र उपदेश किया और प्रभु ने उन के संग
कार्य्य किया और जो चिन्ह साथ में प्रगट होते थे उन्हों
से वचन को दृढ़ किया । आमीन ॥

लूक रचित सुसमाचार ।

---

१ पहिला पर्ब्ब ।

१ सुसमाचार लिखने का प्रयोजन । ५ इलीशिबा को गर्भ रहने का बर्णन । २६ मरियम को गर्भ रहने का बर्णन । ३९ मरियम और इलीशिबा की भेंट । ४६ मरियम को गीत । ५७ योहन के जन्म का बर्णन । ६७ जिखरियाह की भविष्यद्वाणी । ८० योहन का जंगल में रहना ।

१ हे महामहिमन थियोफिल जो बातें हम लोगों में अति प्रमाण हैं उन बातों का बृत्तान्त जिस रीति से उन्हों ने जो आरंभ से साक्षी और बचन के सेवक थे हम लोगों को २ सोंपा . उसी रीति से लिखने को बहुतों ने हाथ लगाया ३ है . इस लिये मुझे भी जिस ने सब बातों को आदि से ठीक करके जांचा है अच्छा लगा कि एक ओर से आप के पास ४ लिखूं . इस लिये कि जिन बातों का उपदेश आप को दिया गया है आप उन बातों की दृढ़ता जानें ।

५ यिहूदिया देश के हेरोद राजा के दिनों में अबियाह की पारी में जिखरियाह नाम एक याजक था और उस की स्त्री जिस का नाम इलीशिबा था हारोन के बंश की थी । ६ वे दोनों ईश्वर के सन्मुख धर्म्मी थे और परमेश्वर की समस्त आज्ञाओं और बिधियों पर निर्दोष चलते थे । ७ उन को कोई लड़का न था क्योंकि इलीशिबा बांझ थी ८ और वे दोनों बूढ़े थे । जब जिखरियाह अपनी पारी की ९ रीति पर ईश्वर के आगे याजक का काम करता था . तब चिट्ठियां डालने से उस को याजकीय व्यवहार के अनुसार १० परमेश्वर के मन्दिर में जाके धूप जलाना पड़ा । धूप जलाने के समय लोगों की सारी मंडली बाहर प्रार्थना करती

थी । तब परमेश्वर का एक दूत धूप की वेदी की दहिनी ११ ओर खड़ा हुआ उस को दिखाई दिया । जिखरियाह उसे १२ देखके घबरा गया और उसे डर लगा । दूत ने उस से १३ कहा हे जिखरियाह मत डर क्योंकि तेरी प्रार्थना सुनी गई है और तेरी स्त्री इलीशिबा पुत्र जनेगी और तू उस का नाम योहन रखना । तुझे आनन्द और आह्लाद होगा १४ और बहुत लोग उस के जन्मने से आनन्दित होंगे । क्योंकि १५ वह परमेश्वर के सन्मुख बड़ा होगा और न दाख रस न मद्य पीयेगा और अपनी माता के गर्भ ही से पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होगा । और वह इस्रायेल के सन्तानों में से १६ बहुतों को परमेश्वर उन के ईश्वर की ओर फिरावेगा । वह १७ उस के आगे एलियाह के आत्मा और सामर्थ्य से जायगा इस लिये कि पितरों का मन लड़कों की ओर फेर दे और आज्ञा लंघन करनेहारों को धर्म्मियों के मत पर लावे और प्रभु के लिये एक सजे हुए लोग को तैयार करे । तब जिख- १८ रियाह ने दूत से कहा यह मैं किस रीति से जानूं क्योंकि मैं बूढ़ा हूं और मेरी स्त्री भी बूढ़ी है । दूत ने उस को उत्तर १९ दिया कि मैं जब्रायेल हूं जो ईश्वर के साम्ने खड़ा रहता हूं और मैं तुझ से बात करने और तुझे यह सुसमाचार सुनाने को भेजा गया हूं । और देख जिस दिन लों यह २० सब पूरा न हो जाय उस दिन लों तू गूंगा हो रहेगा और बोल न सकेगा क्योंकि तू ने मेरी बातों पर जो अपने समय में पूरी किई जायेंगीं विश्वास नहीं किया । लोग जिख- २१ रियाह की बाट देखते थे और अचंभा करते थे कि उस ने मन्दिर में बिलंब किया । जब वह बाहर आया तब उन्हों २२ से बोल न सका और उन्हों ने जामा कि उस ने मन्दिर में कोई दर्शन पाया था और वह उन्हों से सैन करने लगा

२३ और गूंगा रह गया। जब उस की सेवा के दिन पूरे हुए
२४ तब वह अपने घर गया। इन दिनों के पीछे उस की स्त्री
इलीशिबा गर्भवती हुई और अपने को पांच मास यह
२५ कहके छिपाया . कि मनुष्यों में मेरा अपमान मिटाने को
परमेश्वर ने इन दिनों में कृपादृष्टि कर मुझ से ऐसा व्यवहार
किया है।

२६ छठवें मास में ईश्वर ने जब्रायेल दूत को गालील देश के
एक नगर में जो नासरत कहावता है किसी कुंवारी के
२७ पास भेजा . जिस की मंगनी यूसफ नाम दाऊद के घराने
के एक पुरुष से हुई थी . उस कुंवारी का नाम मरियम
२८ था। दूत ने घर में प्रवेश कर उस से कहा हे अनुग्रहीत
२९ कल्याण परमेश्वर तेरे संग है स्त्रियों में तू धन्य है। मरि-
यम उसे देखके उस के बचन से घबरा गई और सोचने
३० लगी कि यह कैसा नमस्कार है। तब दूत ने उस से कहा
हे मरियम मत डर क्योंकि ईश्वर का अनुग्रह तुझ पर
३१ हुआ है। देख तू गर्भवती होगी और पुत्र जनेगी और
३२ उस का नाम तू यीशु रखना। वह महान होगा और
सर्ब्बप्रधान का पुत्र कहावेगा और परमेश्वर ईश्वर उस के
३३ पिता दाऊद का सिंहासन उस को देगा। और वह याकूब
के घराने पर सदा राज्य करेगा और उस के राज्य का अन्त
३४ न होगा। तब मरियम ने दूत से कहा यह किस रीति से
३५ होगा क्योंकि मैं पुरुष को नहीं जानती हूं। दूत ने उस को
उत्तर दिया कि पवित्र आत्मा तुझ पर आवेगा और सर्ब्ब-
प्रधान की शक्ति तुझ पर छाया करेगी इस लिये वह पवित्र
३६ बालक ईश्वर का पुत्र कहावेगा। और देख तेरी कुटुंबिनी
इलीशिबा को भी बुढ़ापे में पुत्र का गर्भ रहा है और जो
३७ बांझ कहावती थी उस का यह छठवां मास है। क्योंकि

कोई वात ईश्वर से असाध्य नहीं है। मरियम ने कहा ३८
देखिये मैं परमेश्वर की दासी मुझे आप के वचन के अनुसार
होय. तब दूत उस के पास से चला गया।

उन दिनों में मरियम उठके शीघ्र से पर्व्वतीय देश में ३९
यिहूदा के एक नगर को गई. और जिखरियाह के घर में ४०
प्रवेश कर इलीशिवा को नमस्कार किया। ज्यों ही इली- ४१
शिवा ने मरियम का नमस्कार सुना त्यों ही वालक उस के
गर्भ में उछला और इलीशिवा पवित्र आत्मा से परिपूर्ण
हुई। और उस ने वड़े शब्द से वोलते हुए कहा तू स्त्रियों ४२
में धन्य है और तेरे गर्भ का फल धन्य है। और यह ४३
मुझे कहां से हुआ कि मेरे प्रभु की माता मेरे पास आवे।
देख ज्यों ही तेरे नमस्कार का शब्द मेरे कानों में पड़ा त्यों ही ४४
वालक मेरे गर्भ में आनन्द से उछला। और धन्य विश्वास ४५
करनेहारी कि परमेश्वर की ओर से जो वातें तुझ से कही
गई हैं सो पूरी किई जायेंगीं।

तब मरियम ने कहा मेरा प्राण परमेश्वर की महिमा ४६
करता है. और मेरा आत्मा मेरे त्राणकर्त्ता ईश्वर से ४७
आनन्दित हुआ है। क्योंकि उस ने अपनी दासी की दीन- ४८
ताई पर दृष्टि किई है देखो अब से सब समयों के लोग मुझे
धन्य कहेंगे। क्योंकि सर्व्वशक्तिमान ने मेरे लिये महाकार्य्यों ४९
को किया है और उस का नाम पवित्र है। उस की दया ५०
उन्हों पर जो उस से डरते हैं पीढ़ी से पीढ़ी लों नित्य रहती
है। उस ने अपनी भुजा का वल दिखाया है उस ने अभि- ५१
मानियों को उन के मन के परामर्श में छिन्न भिन्न किया है।
उस ने वलवानों को सिंहासनों से उतारा और दीनों को ऊंचा ५२
किया है। उस ने भूखों को उत्तम वस्तुओं से तृप्त किया ५३
और धनवानों को छूछे हाथ फेर दिया है। उस ने जैसे ५४

५५ हमारे पितरों से कहा . तैसे सर्ब्बदा इब्राहीम और उस के बंश पर अपनी दया स्मरण करने के कारण अपने सेवक
५६ इस्रायेल का उपकार किया है । मरियम तीन मास के अटकल इलीशिबा के संग रही तब अपने घर को लौटी ।
५७ तब इलीशिबा के जनने का समय पूरा हुआ और वह
५८ पुत्र जनी । उस के पड़ोसियों और कुटुंबों ने सुना कि परमेश्वर ने उस पर बड़ी दया किई है और उन्हों ने उस के
५९ संग आनन्द किया । आठवें दिन वे बालक का खतना करने को आये और उस के पिता के नाम पर उस का नाम
६० जिखरियाह रखने लगे । इस पर उस की माता ने कहा सो
६१ नहीं परन्तु उस का नाम योहन रखा जायगा । उन्हों ने उस से कहा आप के कुटुंबों में से कोई नहीं है जो इस नाम
६२ से कहावता है । तब उन्हों ने उस के पिता से सैन किया कि आप क्या चाहते हैं कि इस का नाम रखा जाय ।
६३ उस ने पटिया मंगाके यह लिखा कि उस का नाम योहन
६४ है . इस से वे सब अचंभित हुए । तब उस का मुंह और उस की जीभ तुरन्त खुल गये और वह बोलने और ईश्वर
६५ का धन्यबाद करने लगा । और उन्हों के आसपास के सब रहनेहारों को भय हुआ और इन सब बातों की चर्चा
६६ यिहूदिया के सारे पर्ब्बतीय देश में होने लगी । और सब सुननेहारों ने अपने अपने मन में सोचकर कहा यह कैसा बालक होगा . और परमेश्वर का हाथ उस के संग था ।
६७ तब उस का पिता जिखरियाह पवित्र आत्मा से परिपूर्ण
६८ हुआ और यह भविष्यद्वाणी बोला . कि परमेश्वर इस्रायेल का ईश्वर धन्य होवे कि उस ने अपने लोगों पर दृष्टि
६९ कर उन्हों का उद्धार किया है . और जैसे उस ने अपने पवित्र भविष्यद्वक्ताओं के मुख से जो आदि से होते आये

हैं कहा . तैसे हमारे लिये अपने सेवक दाऊद के घराने ७० में एक त्राण के सींग को . अर्थात हमारे शत्रुओं से और ७१ हमारे सब वैरियों के हाथ से एक बचानेहारे को प्रगट किया है . इस लिये कि वह हमारे पितरों के संग दया का व्यवहार ७२ करे और अपना पवित्र नियम स्मरण करे . अर्थात वह ७३ किरिया जो उस ने हमारे पिता इब्राहीम से खाई . कि ७४ हमें यह देवे कि हम अपने शत्रुओं के हाथ से बचके . निर्भय जीवन भर प्रतिदिन उस के सन्मुख पवित्रताई ७५ और धर्म्म से उस की सेवा करें। और तू हे बालक सर्व्व- ७६ प्रधान का भविष्यद्वक्ता कहावेगा क्योंकि तू परमेश्वर के आगे जायगा कि उस के पंथ बनावे . अर्थात हमारे ईश्वर ७७ की महा करुणा से उस के लोगों को उन्हों के पापमोचन के द्वारा से निस्तार का ज्ञान देवे। उसी करुणा से सूर्य्य का ७८ उदय ऊपर से हमों पर प्रकाशित हुआ है . कि अंधकार में ७९ और मृत्यु की छाया में बैठनेहारों को ज्योति देवे और हमारे पांव कुशल के मार्ग पर सीधे चलावे।

और वह बालक बढ़ा और आत्मा में बलवन्त होता ८० गया और इस्रायेली लोगों पर प्रगट होने के दिन लों जंगली स्थानों में रहा।

२ दूसरा पर्व्व ।

१ यूसफ का बैतलहम में आना और यीशु का जन्म। ८ स्वर्गदूतों का गड़ेरियों को यीशु के जन्म का सन्देश देना। २१ यीशु का खतना करना और ईश्वर के आगे धरना। २५ शिमियोन और हन्ना का उसे चीन्हना और उस का नासरत को लौटना। ४१ बारह बरस के वयस में उपदेशकों के संग उस की बातचीत।

उन दिनों में अगस्त कैसर महाराजा की ओर से आज्ञा १ हुई कि उस के राज्य के सब लोगों के नाम लिखे जावें। कुरीनिय के सुरिया देश के अध्यक्ष होने के पहिले यह नाम २

३ लिखाई हुई । और सब लोग नाम लिखाने को अपने
४ अपने नगर को गये । यूसफ भी इस लिये कि वह दाऊद
५ के घराने औ बंश का था . मरियम स्त्री के संग जिस से
उस की मंगनी हुई थी नाम लिखाने को गालील देश के
नासरत नगर से यिहूदिया में बैतलहम नाम दाऊद के
६ नगर को गया . उस समय मरियम गर्भवती थी । उन के
७ वहां रहते उस के जनने के दिन पूरे हुए । और वह अपना
पहिलौठा पुत्र जनी और उस को कपड़े में लपेटके चरनी में
रखा क्योंकि उन के लिये सराय में जगह न थी ।

८ उस देश में कितने गड़ेरिये थे जो खेत में रहते थे और
९ रात को अपने झुंड का पहरा देते थे । और देखो परमेश्वर
का एक दूत उन के पास आ खड़ा हुआ और परमेश्वर का
तेज उन की चारों ओर चमका और वे बहुत डर गये ।
१० दूत ने उन से कहा मत डरो क्योंकि देखो मैं तुम्हें बड़े
आनन्द का सुसमाचार सुनाता हूं जिस से सब लोगों को
११ आनन्द होगा . कि आज दाऊद के नगर में तुम्हारे लिये एक
१२ त्राणकर्त्ता अर्थात ख्रीष्ट प्रभु जन्मा है । और तुम्हारे लिये
यह पता होगा कि तुम एक बालक को कपड़े में लपेटे हुए
१३ और चरनी में पड़े हुए पाओगे । तब अचांचक स्वर्गीय
सेना में से बहुतेरे उस दूत के संग प्रगट हुए और ईश्वर की
१४ स्तुति करते हुए बोले . सब से ऊंचे स्थान में ईश्वर का
गुणानुबाद और पृथिवी पर शांति होय . मनुष्यों पर
१५ प्रसन्नता है । ज्यों ही दूतगण उन्हों के पास से स्वर्ग को गये
त्यों ही गड़ेरियों ने आपस में कहा आओ हम बैतलहम लों
जाके यह बात जो हुई है जिसे परमेश्वर ने हमों को
१६ बताया है देखें । और उन्हों ने शीघ्र जाके मरियम और
१७ यूसफ को और बालक को चरनी में पड़े हुए पाया । इन्हें

देखके उन्हों ने वह बात जो इस बालक के बिषय में उन्हों
से कही गई थी प्रचार किई। और सब सुननेहारे उन १८
बातों से जो गड़ेरियों ने उन से कहीं अचंभित हुए। परन्तु १९
मरियम ने इन सब बातों को अपने मन में रखा और उन्हें
सोचती रही। तब गड़ेरिये जैसा उन्हों से कहा गया था २०
तैसा ही सब बातें सुनके और देखके उन बातों के लिये
ईश्वर का गुणानुवाद और स्तुति करते हुए लौट गये।

जब आठ दिन पूरे होने से बालक का खतना करना २१
हुआ तब उस का नाम यीशु रखा गया कि वही नाम उस
के गर्भ में पड़ने के आगे दूत से रखा गया था। और जब २२
मूसा की व्यवस्था के अनुसार उन के शुद्ध होने के दिन पूरे
हुए तब वे बालक को यिरूशलीम में ले गये. कि जैसा २३
परमेश्वर की व्यवस्था में लिखा है कि हर एक पहिलौठा
नर परमेश्वर के लिये पवित्र कहावेगा तैसा उसे परमेश्वर
के आगे धरें. और परमेश्वर की व्यवस्था की बात के अनुसार २४
पंडुकों की जोड़ी अथवा कपोत के दो बच्चे बलिदान करें।

तब देखो यिरूशलीम में शिमियोन नाम एक मनुष्य था. २५
वह मनुष्य धर्म्मी और भक्त था और इस्रायेल की शांति की
बाट जोहता था और पवित्र आत्मा उस पर था। पवित्र २६
आत्मा से उस को प्रतिज्ञा दिई गई थी कि जब लों तू पर-
मेश्वर के अभिषिक्त जन को न देखे तब लों मृत्यु को न
देखेगा। और वह आत्मा की शिक्षा से मन्दिर में आया २७
और जब उस बालक अर्थात यीशु के माता पिता उस के
विषय में व्यवस्था के व्यवहार के अनुसार करने को उसे
भीतर लाये. तब शिमियोन ने उस को अपनी गोदी में २८
लेके ईश्वर का धन्यबाद कर कहा. हे प्रभु अभी तू अपने २९
बचन के अनुसार अपने दास को कुशल से बिदा करता है.

३० ३१ क्योंकि मेरी आंखों ने तेरे त्राणकर्त्ता को देखा है . जिसे
३२ तू ने सब देशों के लोगों के सन्मुख तैयार किया है . कि वह
अन्यदेशियों को प्रकाश करने की ज्योति और तेरे इस्रायेली
३३ लोग का तेज होवे । यूसफ और यीशु की माता इन बातों
३४ से जो उस के विषय में कही गईं अचंभा करते थे । तब
शिमियोन ने उन को आशीस देके उस की माता मरियम से
कहा देख यह तो इस्रायेल में बहुतों के गिरने और फिर
उठने का कारण होगा और एक चिन्ह जिस के बिरुद्ध में बातें
३५ किई जायेंगीं . हां तेरा निज प्राण भी खड्ग से वारपार
छिदेगा . इस से बहुत हृदयों के बिचार प्रगट किये जायेंगे ।
३६ और हन्ना नाम एक भविष्यद्वक्त्री थी जो आशेर के
कुल के पनूएल की पुत्री थी . वह बहुत बूढ़ी थी और
अपने कुंवारपन से सात बरस स्वामी के संग रही थी ।
३७ और वह बरस चौरासी एक की बिधवा थी जो मन्दिर से
बाहर न जाती थी परन्तु उपवास औ प्रार्थना से रात
३८ दिन सेवा करती थी । उस ने भी उसी घड़ी निकट आके
परमेश्वर का धन्य माना और यिरूशलीम में जो लोग उद्धार
की बाट देखते थे उन सभों से यीशु के विषय में बात किई ।
३९ जब वे परमेश्वर की व्यवस्था के अनुसार सब कुछ कर
४० चुके तब गालील को अपने नगर नासरत को लौटे । और
बालक बढ़ा और आत्मा में बलवन्त और बुद्धि से परिपूर्ण
होता गया और ईश्वर का अनुग्रह उस पर था ।
४१ उस के माता पिता बरस बरस निस्तार पर्व्व में यिरू-
४२ शलीम को जाते थे । जब वह बारह बरस का हुआ तब
४३ वे पर्व्व की रीति पर यिरूशलीम को गये । और जब वे
पर्व्व के दिनों को पूरा करके लौटने लगे तब वह लड़का
यीशु यिरूशलीम में रह गया परन्तु यूसफ और उस की

माता नहीं जानते थे। वे यह समझके कि वह संगवाले ४४
पथिकों के बीच में है एक दिन की बाट गये और अपने
कुटुंबों और चिन्हारों के बीच में उस को ढूंढ़ने लगे। परन्तु ४५
जब उन्हों ने उस को न पाया तब उसे ढूंढ़ते हुए यिरू-
शलीम को फिर गये। तीन दिन के पीछे उन्हों ने उसे ४६
मन्दिर में पाया कि उपदेशकों के बीच में बैठा हुआ उन की
सुनता और उन से प्रश्न करता था। और जो लोग उस ४७
की सुनते थे सो सब उस की बुद्धि और उस के उत्तरों से
विस्मित हुए। और वे उसे देखके अचंभित हुए और उस की ४८
माता ने उस से कहा हे पुत्र हम से क्यों ऐसा किया. देख
तेरा पिता और मैं कुढ़ते हुए तुझे ढूंढ़ते थे। उस ने उन ४९
से कहा तुम क्यों मुझे ढूंढ़ते थे. क्या नहीं जानते थे कि
मुझे अपने पिता के विषयों में लगा रहना अवश्य है।
परन्तु उन्हों ने यह बात जो उस ने उन से कही न समझी। ५०
तब वह उन के संग चला और नासरत में आया और उन ५१
के वश में रहा और उस की माता ने इन सब बातों को
अपने मन में रखा। और यीशु की बुद्धि और डील और ५२
उस पर ईश्वर का और मनुष्यों का अनुग्रह बढ़ता गया।

३ तीसरा पर्ब्ब।

१ योहन बपतिसमा देनेहारे का वृत्तान्त। ७ उस का उपदेश और भविष्यद्वाक्य। १९ उस का बन्दीगृह में डाला जाना। २१ यीशु का बपतिसमा लेना। २३ उस की वंशावलि।

तिबरिय कैसर के राज्य के पन्द्रहवें बरस में जब पन्तिय १
पिलात यिहूदिया का अध्यक्ष था और हेरोद एक चौथाई
अर्थात गालील का राजा और उस का भाई फिलिप एक
चौथाई अर्थात इतूरिया और त्राखोनीतिया देशों का राजा
और लुसानिय एक चौथाई अर्थात अबिलीनी देश का

२ राजा था । और जब हन्नस और कियाफा महायाजक थे तब ईश्वर का बचन जंगल में जिखरियाह के पुत्र योहन ३ पास आया। और वह यर्दन नदी के आसपास के सारे देश में आके पापमोचन के लिये पश्चात्ताप के बपतिसमा का ४ उपदेश करने लगा। जैसे यिशैयाह भविष्यद्वक्ता के कहे हुए पुस्तक में लिखा है कि किसी का शब्द हुआ जो जंगल में पुकारता है कि परमेश्वर का पन्थ बनाओ उस के राज- ५ मार्ग सीधे करो। हर एक नाला भरा जायगा और हर एक पर्ब्बत और टीला नीचा किया जायगा और टेढ़े पन्थ ६ सीधे और ऊंचनीच मार्ग चौरस बन जायेंगे। और सब प्राणी ईश्वर के त्राण को देखेंगे।

७ तब बहुत लोग जो उस से बपतिसमा लेने को निकल आये उन्हों से योहन ने कहा हे सांपों के बंश किस ने तुम्हें ८ आनेवाले क्रोध से भागने को चिताया है। पश्चात्ताप के योग्य फल लाओ और अपने अपने मन में मत कहने लगो कि हमारा पिता इब्राहीम है क्योंकि मैं तुम से कहता हूं कि ईश्वर इन पत्थरों से इब्राहीम के लिये सन्तान उत्पन्न ९ कर सकता है। और अब भी कुल्हाड़ी पेड़ों की जड़ पर लगी है इस लिये जो जो पेड़ अच्छा फल नहीं फलता है १० सो काटा जाता और आग में डाला जाता है। तब ११ लोगों ने उस से पूछा तो हम क्या करें। उस ने उन्हें उत्तर दिया कि जिस पास दो अंगे हों सो जिस पास न हो उस के साथ बांट लेवे और जिस पास भोजन होय सो १२ भी वैसा ही करे। कर उगाहनेहारे भी बपतिसमा लेने १३ को आये और उस से बोले हे गुरु हम क्या करें। उस ने उन से कहा जो तुम्हें ठहराया गया है उस से अधिक मत १४ ले लो। योद्धाओं ने भी उस से पूछा हम क्या करें। उस

ने उन से कहा किसी पर उपद्रव मत करो और न झूठे दोष लगाओ और अपने वेतन से सन्तुष्ट रहो।

जब लोग आस देखते थे और सब अपने अपने मन १५ में योहन के विषय में बिचार करते थे कि होय न होय यही ख्रीष्ट है. तब योहन ने सभों को उत्तर दिया कि मैं १६ तो तुम्हें जल से बपतिसमा देता हूं परन्तु वह आता है जो मुझ से अधिक शक्तिमान है मैं उस के जूतों का बंध खोलने के योग्य नहीं हूं वह तुम्हें पवित्र आत्मा से और आग से बपतिसमा देगा। उस का सूप उस के हाथ में है १७ और वह अपना सारा खलिहान शुद्ध करेगा और गेहूं को अपने खत्ते में एकट्ठा करेगा परन्तु भूसी को उस आग से जो नहीं बुझती है जलावेगा। उस ने बहुत और बातों का १८ भी उपदेश करके लोगों को सुसमाचार सुनाया।

पर उस ने चौथाई के राजा हेरोद को उस के भाई फिलिप १९ की स्त्री हेरोदिया के विषय में और सब कुकर्म्मों के विषय में जो उस ने किये थे उलहना दिया। इस लिये हेरोद ने २० उन सभों के उपरांत यह कुकर्म्म भी किया कि योहन को बन्दीगृह में मूंद रखा।

सब लोगों के बपतिसमा लेने के पीछे जब यीशु ने भी २१ बपतिसमा लिया था और प्रार्थना करता था तब स्वर्ग खुल गया। और पवित्र आत्मा देही रूप में कपोत की नाईं २२ उस पर उतरा और यह आकाशवाणी हुई कि तू मेरा प्रिय पुत्र है मैं तुझ से अति प्रसन्न हूं।

और यीशु आप तीस बरस के अटकल होने लगा और २३ लोगों की समझ में यूसफ का पुत्र था। यूसफ एली का २४ पुत्र था वह मत्तात का पुत्र वह लेवी का वह मलकि का वह यान्ना का वह यूसफ का. वह मत्तथियाह का वह २५

२६ आमोस का वह नहूम का वह इसलि का वह नग्गई का . वह
माट का वह मत्तथियाह का वह शिमिई का वह यूसफ का
२७ वह यिहूदा का . वह योहाना का वह रीसा का वह जिरु-
२८ बाबुल का वह शलतिएल का वह नेरि का . वह मलकि का
वह अद्दी का वह कोसम का वह इलमोदद का वह एर का .
२९ वह योशी का वह इलियेजर का वह योरीम का वह मत्तात
३० का वह लेवी का . वह शिमियोन का वह यिहूदा का वह
३१ यूसफ का वह योनन का वह इलियाकीम का . वह मिलेया
का वह मैनन का वह मत्तथ का वह नाथन का वह दाऊद
३२ का . वह यिशी का वह ओबेद का वह बोअस का वह
३३ सलमोन का वह नहशोन का . वह अम्मीनादब का वह
अराम का वह हिस्रोन का वह पेरस का वह यिहूदा का .
३४ वह याकूब का वह इसहाक का वह इब्राहीम का वह तेराह
३५ का वह नाहोर का . वह सिरूग का वह रियू का वह पेलग का
३६ वह एबर का वह शेलह का . वह कैनन का वह अर्फकसद का
३७ वह शेम का वह नूह का वह लमक का . वह मिथूशलह का
वह हनोक का वह येरद का वह महललेल का वह कैनन का.
३८ वह इनोश का वह शेत का वह आदम का वह ईश्वर का ।

४ चौथा पर्व्व ।

१ यीशु की परीक्षा । १४ उस का उपदेश करना । १६ नासरत के लोगों को कथा सुनाना । ३१ एक भूतग्रस्त मनुष्य को चंगा करना । ३८ पितर की सास को चंगा करना । ४० बहुत रोगियों को चंगा करना । ४२ नगर नगर में उपदेश करना ।

१ यीशु पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो यर्दन से फिरा और
२ आत्मा की शिक्षा से जंगल में गया । और चालीस दिन
शैतान से उस की परीक्षा किई गई और उन दिनों में उस
ने कुछ नहीं खाया पर पीछे उन के पूरे होने पर भूखा
३ हुआ । तब शैतान ने उस से कहा जो तू ईश्वर का पुत्र है

तो इस पत्थर से कह दे कि रोटी बन जाय। यीशु ने ४
उस को उत्तर दिया कि लिखा है मनुष्य केवल रोटी से
नहीं परन्तु ईश्वर की हर एक बात से जीयेगा। तब ५
शैतान ने उसे एक ऊंचे पर्व्वत पर ले जाके उस को पल भर
में जगत के सब राज्य दिखाये। और शैतान ने उस से ६
कहा मैं यह सब अधिकार और इन्हों का बिभव तुझे
देऊंगा क्योंकि वह मुझे सोंपा गया है और मैं उसे जिस
को चाहता हूं उस को देता हूं। इस लिये जो तू मुझे ७
प्रणाम करे तो सब तेरा होगा। यीशु ने उस को उत्तर ८
दिया कि हे शैतान मेरे साम्हने से दूर हो क्योंकि लिखा
है कि तू परमेश्वर अपने ईश्वर को प्रणाम कर और केवल
उसी की सेवा कर। तब उस ने उस को यिरूशलीम में ले ९
जाके मन्दिर के कलश पर खड़ा किया और उस से कहा जो
तू ईश्वर का पुत्र है तो अपने को यहां से नीचे गिरा.
क्योंकि लिखा है कि वह तेरे विषय में अपने दूतों को आज्ञा १०
देगा कि वे तेरी रक्षा करें. और वे तुझे हाथों हाथ उठा ११
लेंगे न हो कि तेरे पांव में पत्थर पर चोट लगे। यीशु ने उस १२
को उत्तर दिया यह भी कहा गया है कि तू परमेश्वर
अपने ईश्वर की परीक्षा मत कर। जब शैतान सब परीक्षा १३
कर चुका तब कुछ समय के लिये उस के पास से चला गया।

यीशु आत्मा की शक्ति से गालील को फिर गया और उस १४
की कीर्त्ति आसपास के सारे देश में फैल गई। और उस ने उन १५
की सभाओं में उपदेश किया और सभों ने उस की बड़ाई किई।

तब वह नासरत को आया जहां पाला गया था और १६
अपनी रीति पर विश्राम के दिन सभा के घर में जाके पढ़ने
को खड़ा हुआ। यिशैयाह भविष्यद्वक्ता का पुस्तक उस को १७
दिया गया और उस ने पुस्तक खोलके वह स्थान पाया

१८ जिस में लिखा था . कि परमेश्वर का आत्मा मुझ पर है
इस लिये कि उस ने मुझे अभिषेक किया है कि कंगालों को
१९ सुसमाचार सुनाऊं . उस ने मुझे भेजा है कि जिन के मन
चूर हैं उन्हें चंगा करूं और बंधुओं को छूटने की और
अंधों को दृष्टि पाने की बार्त्ता सुनाऊं और पेरे हुओं का
निस्तार करूं और परमेश्वर के ग्राह्य बरस का प्रचार करूं ।
२० तब वह पुस्तक लपेटके सेवक के हाथ में देके बैठ गया
२१ और सभा में सब लोगों की आंखें उसे तक रहीं । तब वह
उन्हों से कहने लगा कि आज ही धर्म्मपुस्तक का यह बचन
२२ तुम्हारे सुनने में पूरा हुआ है । और सभों ने उस को सराहा
और जो अनुग्रह की बातें उस के मुख से निकलीं उन से
अचंभा किया और कहा क्या यह यूसफ का पुत्र नहीं है ।
२३ उस ने उन्हों से कहा तुम अवश्य मुझ से यह दृष्टान्त कहोगे
कि हे वैद्य अपने को चंगा कर . जो कुछ हमों ने सुना है
कि कफर्नाहुम में किया गया सो यहां अपने देश में भी
२४ कर । और उस ने कहा मैं तुम से सच कहता हूं कोई
२५ भविष्यद्वक्ता अपने देश में ग्राह्य नहीं होता है । और मैं
तुम से सत्य कहता हूं कि एलियाह के दिनों में जब आकाश
साढ़े तीन बरस बन्द रहा यहां लों कि सारे देश में बड़ा
२६ अकाल पड़ा तब इस्रायेल में बहुत बिधवा थीं । परन्तु
एलियाह उन्हों में से किसी के पास नहीं भेजा गया केवल
सीदोन देश के सारिफत नगर में एक बिधवा के पास ।
२७ और इलीशा भविष्यद्वक्ता के समय में इस्रायेल में बहुत
कोढ़ी थे परन्तु उन्हों में से कोई शुद्ध नहीं किया गया
२८ केवल सुरिया देश का नामान । यह बातें सुनके सब लोग
२९ सभा में क्रोध से भर गये . और उठके उस को नगर से बाहर
निकालके जिस पर्ब्बत पर उन का नगर बना हुआ था उस

की चोटी पर ले चले कि उस को नीचे गिरा देवें। परन्तु ३०
वह उन्हों के बीच में से होके निकला और चला गया।

और उस ने गालील के कफर्नाहुम नगर में जाके बिश्राम ३१
के दिन लोगों को उपदेश दिया। वे उस के उपदेश से अचं- ३२
भित हुए क्योंकि उस का बचन अधिकार सहित था।
सभा के घर में एक मनुष्य था जिसे अशुद्ध भूत का आत्मा ३३
लगा था। उस ने बड़े शब्द से चिल्लाके कहा हे यीशु नासरी ३४
रहने दीजिये आप को हम से क्या काम . क्या आप हमें
नाश करने आये हैं . मैं आप को जानता हूं आप कौन हैं
ईश्वर के पवित्र जन। यीशु ने उस को डांटके कहा चुप रह ३५
और उस में से निकल आ . तब भूत उस मनुष्य को बीच में
गिराके उस में से निकल आया और उस की कुछ हानि न
किई। इस पर सभों को अचंभा हुआ और वे आपस में बात ३६
करके बोले यह कौन सी बात है कि वह प्रभाव और पराक्रम
से अशुद्ध भूतों को आज्ञा देता है और वे निकल आते हैं।
सो उस की कीर्त्ति आसपास के देश में सर्ब्बत्र फैल गई। ३७

सभा के घर में से उठके उस ने शिमोन के घर में प्रवेश ३८
किया और शिमोन की सास बड़े ज्वर से पीड़ित थी और
उन्हों ने उस के लिये उस से बिन्ती किई। उस ने उस के ३९
निकट खड़ा हो ज्वर को डांटा और वह उसे छोड़ गया
और वह तुरन्त उठके उन की सेवा करने लगी।

सूर्य्य डूबते हुए जिन्हों के पास दुःखी लोग नाना प्रकार के ४०
रोगों में पड़े थे वे सब उन्हें उस पास लाये और उस ने
एक एक पर हाथ रखके उन्हें चंगा किया। भूत भी चिल्लाते ४१
और यह कहते हुए कि आप ईश्वर के पुत्र ख्रीष्ट हैं बहुतों में
से निकले परन्तु उस ने उन्हें डांटा और बोलने न दिया
क्योंकि वे जानते थे कि वह ख्रीष्ट है।

४२ बिहान हुए वह निकलके जंगली स्थान में गया और लोगों ने उस को ढूंढ़ा और उस पास आके उसे रोकने लगे ४३ कि वह उन के पास से न जाय। परन्तु उस ने उन्हों से कहा मुझे और और नगरों में भी ईश्वर के राज्य का सुसमाचार सुनाना होगा क्योंकि मैं इसी लिये भेजा गया ४४ हूं। सो उस ने गालील की सभाओं में उपदेश किया।

५ पांचवां पर्ब्ब ।

१ यीशु का अद्भुत रीति से बहुत मछलियों को पकड़वाना और शिमोन को बुलाना। १२ एक कोढ़ी को चंगा करना। १७ एक अर्द्धांगी को चंगा करना और उस का पाप क्षमा करना। २७ लेवी अर्थात मत्ती को बुलाना और पापियों के संग भोजन करना। ३३ उपवास करने का ब्योरा बताना।

१ एक दिन बहुत लोग ईश्वर का बचन सुनने को यीशु पर गिरे पड़ते थे और वह गिनेसरत की झील के पास खड़ा २ था। और उस ने दो नाव झील के तीर पर लगी देखीं और ३ मछुवे उन पर से उतरके जालों को धोते थे। उन नावों में से एक पर जो शिमोन की थी चढ़के उस ने उस से बिन्ती किई कि तीर से थोड़ी दूर ले जाय और उस ने बैठके नाव पर से ४ लोगों को उपदेश दिया। जब वह बात कर चुका तब शिमोन से कहा गहिरे में ले जा और मछलियां पकड़ने को ५ अपने जालों को डालो। शिमोन ने उस को उत्तर दिया कि हे गुरु हम ने सारी रात परिश्रम किया और कुछ नहीं ६ पकड़ा तौभी आप की बात पर मैं जाल डालूंगा। जब उन्हों ने ऐसा किया तब बहुत मछलियां बझाईं और उन ७ का जाल फटने लगा। इस पर उन्हों ने अपने साझियों को जो दूसरी नाव पर थे सैन किया कि वे आके उन की सहायता करें और उन्हों ने आके दोनों नाव ऐसी भरीं ८ कि वे डूबने लगीं। यह देखके शिमोन पितर यीशु के

गोड़ों पर गिरा और कहा हे प्रभु मेरे पास से जाइये मैं पापी मनुष्य हूं । क्योंकि वह और उस के सब संगी लोग ९ इन मछलियों के बझ जाने से जो उन्हों ने पकड़ी थीं विस्मित हुए । और वैसे ही जवदी के पुत्र याकूब और योहन भी जो १० शिमोन के साझी थे विस्मित हुए . तब यीशु ने शिमोन से कहा मत डर अब से तू मनुष्यों को पकड़ेगा । और वे नावों ११ को तीर पर लाके सब कुछ छोड़के उस के पीछे हो लिये ।

जब वह एक नगर में था तब देखो एक मनुष्य कोढ़ से १२ भरा हुआ वहां था और वह यीशु को देखके मुंह के बल गिरा और उस से बिन्ती किई कि हे प्रभु जो आप चाहें तो मुझे शुद्ध कर सकते हैं । उस ने हाथ बढ़ा उसे छूके १३ कहा मैं तो चाहता हूं शुद्ध हो जा . और उस का कोढ़ तुरन्त जाता रहा । तब उस ने उसे आज्ञा दिई कि किसी १४ से मत कह परन्तु जाके अपने तईं याजक को दिखा और अपने शुद्ध होने के विषय में का चढ़ावा जैसा मूसा ने आज्ञा दिई तैसा लोगों पर साक्षी होने के लिये चढ़ा । परन्तु १५ यीशु की कीर्त्ति अधिक फैल गई और बहुतेरे लोग सुनने को और उस से अपने रोगों से चंगे किये जाने को एकट्ठे हुए । और उस ने जंगली स्थानों में अलग जाके प्रार्थना किई । १६

एक दिन वह उपदेश करता था और फरीशी और १७ व्यवस्थापक लोग जो गालील और यिहूदिया के हर एक गांव से और यिरूशलीम से आये थे वहां बैठे थे और उन्हें चंगा करने को प्रभु का सामर्थ्य प्रगट हुआ । और देखो १८ लोग एक मनुष्य को जो अर्द्धांगी था खाट पर लाये और वे उस को भीतर ले जाने और यीशु के आगे रखने चाहते थे । परन्तु जब भीड़ के कारण उसे भीतर ले जाने का कोई १९ उपाय उन्हें न मिला तब उन्हों ने कोठे पर चढ़के उस को

खाट समेत छत में से बीच में यीशु के आगे उतार दिया।
२० उस ने उन्हों का बिश्वास देखके उस से कहा हे मनुष्य तेरे
२१ पाप क्षमा किये गये हैं। तब अध्यापक और फरीशी
लोग बिचार करने लगे कि यह कौन है जो ईश्वर की
निन्दा करता है . ईश्वर को छोड़ कौन पापों को क्षमा कर
२२ सकता है। यीशु ने उन के मन की बातें जानके उन को
उत्तर दिया कि तुम लोग अपने अपने मन में क्या क्या
२३ बिचार करते हो। कौन बात सहज है यह कहना कि
तेरे पाप क्षमा किये गये हैं अथवा यह कहना कि उठ
२४ और चल। परन्तु जिस्तें तुम जानो कि मनुष्य के पुत्र को
पृथिवी पर पाप क्षमा करने का अधिकार है (उस ने उस
अर्द्धांगी से कहा) मैं तुझ से कहता हूं उठ अपनी खाट उठाके
२५ अपने घर को जा। वह तुरन्त उन्हों के साम्ने उठके जिस
पर वह पड़ा था उस को उठाके ईश्वर की स्तुति करता
२६ हुआ अपने घर को चला गया। तब सब लोग बिस्मित
हुए और ईश्वर की स्तुति करने लगे और अति भयमान
होके बोले हम ने आज अनोखी बातें देखी हैं।

२७ इस के पीछे यीशु ने बाहर जाके लेवी नाम एक कर
उगाहनेहारे को कर उगाहने के स्थान में बैठे देखा और उस
२८ से कहा मेरे पीछे आ। वह सब कुछ छोड़के उठा और
२९ उस के पीछे हो लिया। और लेवी ने अपने घर में उस के
लिये बड़ा भोज बनाया और बहुत कर उगाहनेहारे और
३० बहुत से और लोग थे जो उन के संग भोजन पर बैठे। तब
उन्हों के अध्यापक और फरीशी उस के शिष्यों पर कुड़कुड़ाके
बोले तुम कर उगाहनेहारों और पापियों के संग क्यों खाते
३१ और पीते हो। यीशु ने उन को उत्तर दिया कि निरोगियों
३२ को बैद्य का प्रयोजन नहीं है परन्तु रोगियों को। मैं धर्म्मियों

को नहीं परन्तु पापियों को पश्चात्ताप के लिये बुलाने आया हूं।

और उन्हों ने उस से कहा योहन के शिष्य क्यों बार ३३ बार उपवास और प्रार्थना करते हैं और वैसे ही फरीशियों के शिष्य भी परन्तु आप के शिष्य खाते और पीते हैं। उस ३४ ने उन से कहा जब दूल्हा सखाओं के संग है तब क्या तुम उन से उपवास करवा सकते हो। परन्तु वे दिन आवेंगे ३५ जिन में दूल्हा उन से अलग किया जायगा तब वे उन दिनों में उपवास करेंगे। उस ने एक दृष्टान्त भी उन से कहा कि ३६ कोई मनुष्य नये कपड़े का टुकड़ा पुराने बस्त्र में नहीं लगाता है नहीं तो नया कपड़ा उसे फाड़ता है और नये कपड़े का टुकड़ा पुराने में मिलता भी नहीं। और कोई मनुष्य ३७ नया दाख रस पुराने कुप्पों में नहीं भरता है नहीं तो नया दाख रस कुप्पों को फाड़ेगा और वह आप वह जायगा और कुप्पे नष्ट होंगे। परन्तु नया दाख रस नये कुप्पों में ३८ भरा चाहिये तब दोनों की रक्षा होती है। कोई मनुष्य ३९ पुराना दाख रस पीके तुरन्त नया नहीं चाहता है क्योंकि वह कहता है पुराना ही अच्छा है।

६ छठवां पर्ब्ब ।

१ यीशु का विश्रामवार के विषय में निर्णय करना। १२ बारह प्रेरितों को ठहराना। १७ बहुत रोगियों को चंगा करना। २० धन्य कौन हैं इस के विषय में यीशु का उपदेश। २७ शत्रुओं को प्रेम करने का उपदेश और लड़ाई करने का निषेध। ३७ दूसरों पर दोष लगाने का निषेध और झूठे उपदेशकों का निर्णय। ४३ मन के स्वभाव का दृष्टान्त। ४६ घर की नेव डालने का दृष्टान्त।

पर्ब्ब के दूसरे दिन के पीछे विश्राम के दिन यीशु खेतों में १ होके जाता था और उस के शिष्य बालें तोड़के हाथों में मल मलके खाने लगे। तब कई एक फरीशियों ने उन से २

कहा जो काम बिस्राम के दिन में करना उचित नहीं है
३ सो क्यों करते हो। यीशु ने उन को उत्तर दिया क्या तुम
ने यह नहीं पढ़ा है कि दाऊद ने जब वह और उस के
४ संगी लोग भूखे हुए तब क्या किया . उस ने क्योंकर
ईश्वर के घर में जाके भेंट की रोटियां लेके खाईं जिन्हें
खाना और किसी को नहीं केवल याजकों को उचित है और
५ अपने संगियों को भी दिईं। और उस ने उन से कहा मनुष्य
का पुत्र बिस्रामवार का भी प्रभु है।

६ दूसरे बिस्रामवार को भी वह सभा के घर में जाके उपदेश
करने लगा और वहां एक मनुष्य था जिस का दहिना
७ हाथ सूख गया था। अध्यापक और फरीशी लोग उस में
दोष ठहराने के लिये उसे ताकते थे कि वह बिस्राम के
८ दिन में चंगा करेगा कि नहीं। पर वह उन के मन की बातें
जानता था और सूखे हाथवाले मनुष्य से कहा उठ बीच
९ में खड़ा हो . वह उठके खड़ा हुआ। तब यीशु ने उन्हों
से कहा मैं तुम से एक बात पूछूंगा क्या बिस्राम के दिनों
में भला करना अथवा बुरा करना प्राण को बचाना अथवा
१० नाश करना उचित है। और उस ने उन सभों पर चारों
ओर दृष्टि कर उस मनुष्य से कहा अपना हाथ बढ़ा . उस
ने ऐसा किया और उस का हाथ फिर दूसरे की नाईं भला
११ चंगा हो गया। पर वे बड़े क्रोध से भर गये और आपस
में बोले हम यीशु को क्या करें।

१२ उन दिनों में वह प्रार्थना करने को पर्ब्बत पर गया और
१३ ईश्वर से प्रार्थना करने में सारी रात बिताई। जब बिहान
हुआ तब उस ने अपने शिष्यों को अपने पास बुलाके उन में
से बारह जनों को चुना जिन का नाम उस ने प्रेरित भी
१४ रखा . अर्थात शिमोन को जिस का नाम उस ने पितर भी

रखा औ उस के भाई अन्द्रिय को और याकूब औ योहन को और फिलिप औ वर्थलमई को . और मत्ती औ थोमा १५ को और अलफई के पुत्र याकूब को औ शिमोन को जो उद्योगी कहावता है . और याकूब के भाई यिहूदा को औ १६ यिहूदा इस्करियोती को जो विश्वासघातक हुआ ।

तब वह उन के संग उतरके चौरस स्थान में खड़ा हुआ १७ और उस के बहुत शिष्य भी थे और लोगों की बड़ी भीड़ सारे यिहूदिया से और यिरूशलीम से और सोर औ सीदोन के समुद्र के तीर से जो उस की सुनने को और अपने रोगों से चंगे किये जाने को आये थे . और अशुद्ध भूतों के सताये १८ हुए लोग भी . और वे चंगे किये जाते थे । और सब १९ लोग उसे छूने चाहते थे क्योंकि शक्ति उस से निकलती थी और सभों को चंगा करती थी ।

तब उस ने अपने शिष्यों की ओर दृष्टि कर कहा धन्य २० तुम जो दीन हो क्योंकि ईश्वर का राज्य तुम्हारा है । धन्य तुम जो अब भूखे हो क्योंकि तुम तृप्त किये जाओगे . २१ धन्य तुम जो अब रोते हो क्योंकि तुम हंसोगे । धन्य २२ तुम हो जब मनुष्य तुम से वैर करें और जब वे मनुष्य के पुत्र के लिये तुम्हें अलग करें और तुम्हारी निन्दा करें और तुम्हारा नाम दुष्ट सा दूर करें । उस दिन आनन्दित हो और २३ उछलो क्योंकि देखो तुम स्वर्ग में बहुत फल पाओगे . उन के पितरों ने भविष्यद्वक्ताओं से वैसा ही किया । परन्तु हाय २४ तुम जो धनवान हो क्योंकि तुम अपनी शांति पा चुके हो । हाय तुम जो भरपूर हो क्योंकि तुम भूखे होगे . हाय तुम २५ जो अब हंसते हो क्योंकि तुम शोक करोगे और रोओगे । हाय तुम लोग जब सब मनुष्य तुम्हारे विषय में भला कहें . २६ उन के पितरों ने झूठे भविष्यद्वक्ताओं से वैसा ही किया ।

२७ और भी मैं तुम्हों से जो सुनते हो कहता हूं कि अपने शत्रुओं को प्यार करो . जो तुम से बैर करें उन से भलाई
२८ करो। जो तुम्हें स्राप देवें उन को आशीस देओ और जो
२९ तुम्हारा अपमान करें उन के लिये प्रार्थना करो। जो तुझे एक गाल पर मारे उस की ओर दूसरा भी फेर दे और जो तेरा दोहर छीन लेवे उस को अंगा भी लेने से मत बर्ज।
३० जो कोई तुझ से मांगे उस को दे और जो तेरी बस्तु छीन
३१ लेवे उस से फिर मत मांग। और जैसा तुम चाहते हो
३२ कि मनुष्य तुम से करें तुम भी उन से वैसा ही करो। जो तुम उन से प्रेम करो जो तुम से प्रेम करते हैं तो तुम्हारी क्या बड़ाई क्योंकि पापी लोग भी अपने प्रेम करनेहारों
३३ से प्रेम करते हैं। और जो तुम उन से भलाई करो जो तुम से भलाई करते हैं तो तुम्हारी क्या बड़ाई क्योंकि
३४ पापी लोग भी ऐसा करते हैं। और जो तुम उन्हें ऋण देओ जिन से फिर पाने की आशा रखते हो तो तुम्हारी क्या बड़ाई क्योंकि पापी लोग भी पापियों को ऋण देते
३५ हैं कि उतना फिर पावें। परन्तु अपने शत्रुओं को प्यार करो औ भलाई करो और फिर पाने की आशा न रखके ऋण देओ और तुम बहुत फल पाओगे और सर्ब्बप्रधान के सन्तान होगे क्योंकि वह उन्हों पर जो धन्य नहीं मानते
३६ हैं और दुष्टों पर कृपाल है। सो जैसा तुम्हारा पिता दयावन्त है तैसे तुम भी दयावन्त होओ।

३७ दूसरों का बिचार मत करो तो तुम्हारा बिचार न किया जायगा . दोषी मत ठहराओ तो तुम दोषी न ठहराये जाओगे . क्षमा करो तो तुम्हारी क्षमा किई जायगी।
३८ देओ तो तुम को दिया जायगा . लोग पूरा नाप दबाया और हिलाया हुआ और उभरता हुआ तुम्हारी गोद में

देंगे क्योंकि जिस नाप से तुम नापते हो उसी से तुम्हारे लिये भी नापा जायगा। फिर उस ने उन से एक दृष्टान्त ३९ कहा क्या अन्धा अन्धे को मार्ग बता सकता है. क्या दोनों गढ़े में नहीं गिरेंगे। शिष्य अपने गुरु से बड़ा नहीं है परन्तु ४० जो कोई सिद्ध होवे सो अपने गुरु के समान होगा। जो ४१ तिनका तेरे भाई के नेत्र में है उसे तू क्यों देखता है और जो लट्ठा तेरे ही नेत्र में है सो तुझे नहीं सूझता। अथवा ४२ तू जो आप अपने नेत्र में का लट्ठा नहीं देखता है क्योंकर अपने भाई से कह सकता है कि हे भाई रहिये मैं यह तिनका जो तेरे नेत्र में है निकालूं. हे कपटी पहिले अपने नेत्र से लट्ठा निकाल दे तब जो तिनका तेरे भाई के नेत्र में है उसे निकालने को तू अच्छी रीति से देखेगा।

कोई अच्छा पेड़ नहीं है जो निकम्मा फल फले और ४३ कोई निकम्मा पेड़ नहीं है जो अच्छा फल फले। हर एक ४४ पेड़ अपने ही फल से पहचाना जाता है क्योंकि लोग कांटों के पेड़ से गूलर नहीं तोड़ते और न कटैले झूड़ से दाख तोड़ते हैं। भला मनुष्य अपने मन के भले भंडार से भली ४५ बात निकालता है और बुरा मनुष्य अपने मन के बुरे भंडार से बुरी बात निकालता है क्योंकि जो मन में भरा है सोई उस का मुंह बोलता है।

तुम मुझे हे प्रभु हे प्रभु क्यों पुकारते हो और जो मैं ४६ कहता हूं सो नहीं करते। जो कोई मेरे पास आके मेरी ४७ बातें सुनके उन्हें पालन करे मैं तुम्हें बताऊंगा वह किस के समान है। वह एक मनुष्य के समान है जो घर बनाता ४८ था और उस ने गहरे खोदके पत्थर पर नेव डाली और जब बाढ़ आई तब धारा उस घर पर लगी पर उसे हिला न सकी क्योंकि उस की नेव पत्थर पर डाली गई थी।

४९ परन्तु जो सुनके पालन न करे सो एक मनुष्य के समान है जिस ने मिट्टी पर बिना नेव का घर बनाया जिस पर धारा लगी और वह तुरन्त गिर पड़ा और उस घर का बड़ा बिनाश हुआ ।

७ सातवां पर्ब्ब ।

१ यीशु का एक शतपति के दास को चंगा करना । ११ नाइन नगर की बिधवा के पुत्र को जिलाना । १८ योहन के शिष्यों को उत्तर देना । २४ योहन के विषय में उस की साक्षी । ३१ उस समय के लोगों की उपमा । ३६ एक पापिनी के विषय में शिमोन फरीशी से उस की बातचीत ।

१ जब यीशु लोगों को अपनी सब बातें सुना चुका तब २ कफर्नाहुम में प्रवेश किया । और किसी शतपति का एक ३ दास जो उस का प्रिय था रोगी हो मरने पर था । शतपति ने यीशु का चर्चा सुनके यिहूदियों के कई एक प्राचीनों को उस से यह बिन्ती करने को उस पास भेजा कि आके ४ मेरे दास को चंगा कीजिये । उन्हों ने यीशु पास आके उस से बड़े यत्न से बिन्ती किई और कहा आप जिस के लिये यह ५ काम करेंगे सो इस के योग्य है . क्योंकि वह हमारे लोग से प्रेम करता है और उसी ने सभा का घर हमारे लिये ६ बनाया । तब यीशु उन के संग गया और वह घर से दूर न था कि शतपति ने उस पास मित्रों को भेजके उस से कहा हे प्रभु दुःख न उठाइये क्योंकि मैं इस योग्य नहीं कि ७ आप मेरे घर में आवें । इस लिये मैं ने अपने को आप के पास जाने के भी योग्य नहीं समझा परन्तु बचन कहिये तो मेरा ८ सेवक चंगा हो जायगा । क्योंकि मैं पराधीन मनुष्य हूं और योद्धा मेरे बश में हैं और मैं एक को कहता हूं जा तो वह जाता है और दूसरे को आ तो वह आता है और ९ अपने दास को यह कर तो वह करता है । यह सुनके

यीशु ने उस मनुष्य पर अचंभा किया और मुंह फेरके जो बहुत लोग उस के पीछे से आते थे उन्हों से कहा मैं तुम से कहता हूं कि मैं ने इस्रायेली लोगों में भी ऐसा बड़ा बिश्वास नहीं पाया है। और जो लोग भेजे गये उन्हों १० ने जब घर को लौटे तब उस रोगी दास को चंगा पाया।

दूसरे दिन यीशु नाइन नाम एक नगर को जाता था ११ और उस के अनेक शिष्य और बहुतेरे लोग उस के संग जाते थे। ज्यों ही वह नगर के फाटक के पास पहुंचा त्यों ही १२ देखो लोग एक मृतक को बाहर ले जाते थे जो अपनी मां का एकलौता पुत्र था और वह बिधवा थी और नगर के बहुत लोग उस के संग थे। प्रभु ने उस को देखके उस पर १३ दया किई और उस से कहा मत रो। तब उस ने निकट १४ आके अर्थी को छूआ और उठानेहारे खड़े हुए और उस ने कहा हे जवान मैं तुझ से कहता हूं उठ। तब मृतक उठ १५ बैठा और बोलने लगा और यीशु ने उसे उस की मां को सोंप दिया। इस से सभों को भय हुआ और वे ईश्वर की १६ स्तुति करके बोले कि हमारे बीच में बड़ा भविष्यद्वक्ता प्रगट हुआ है और कि ईश्वर ने अपने लोगों पर दृष्टि किई है। और उस के विषय में यह बात सारे यिहूदिया में और १७ आसपास के सारे देश में फैल गई।

योहन के शिष्यों ने इन सब बातों के विषय में योहन से १८ कहा। तब उस ने अपने शिष्यों में से दो जनों को बुलाके १९ यीशु पास यह कहने को भेजा कि जो आनेवाला था सो क्या आप ही हैं अथवा हम दूसरे की बाट जोहें। उन २० मनुष्यों ने उस पास आ कहा योहन बपतिसमा देनेहारे ने हमें आप के पास यह कहने को भेजा है कि जो आनेवाला था सो क्या आप ही हैं अथवा हम दूसरे की बाट जोहें।

२१ उसी घड़ी यीशु ने बहुतों को जो रोगों और पीड़ाओं और दुष्ट भूतों से दुःखी थे चंगा किया और बहुत से अन्धों को
२२ नेत्र दिये। और उस ने उन्हों को उत्तर दिया कि जो कुछ तुम ने देखा और सुना है सो जाके योहन से कहो कि अन्धे देखते हैं लंगड़े चलते हैं कोढ़ी शुद्ध किये जाते हैं बहिरे सुनते हैं मृतक जिलाये जाते हैं और कंगालों को सुसमा-
२३ चार सुनाया जाता है। और जो कोई मेरे विषय में ठोकर न खावे सो धन्य है।

२४ जब योहन के दूत लोग चले गये तब यीशु योहन के विषय में लोगों से कहने लगा तुम जंगल में क्या देखने को
२५ निकले क्या पवन से हिलते हुए नरकट को। फिर तुम क्या देखने को निकले क्या सूक्ष्म बस्त्र पहिने हुए मनुष्य को . देखो जो भड़कीला बस्त्र पहिनते और सुख से रहते हैं
२६ सो राजभवनों में हैं। फिर तुम क्या देखने को निकले क्या भविष्यद्वक्ता को . हां मैं तुम से कहता हूं एक मनुष्य को
२७ जो भविष्यद्वक्ता से भी अधिक है। यह वही है जिस के विषय में लिखा है कि देख मैं अपने दूत को तेरे आगे
२८ भेजता हूं जो तेरे आगे तेरा पन्थ बनावेगा। मैं तुम से कहता हूं कि जो स्त्रियों से जन्मे हैं उन में से योहन बप-तिसमा देनेहारे से बड़ा भविष्यद्वक्ता कोई नहीं है परन्तु जो ईश्वर के राज्य में अति छोटा है सो उस से बड़ा है।
२९ और सब लोगों ने जिन्हों ने सुना और कर उगाहनेहारों ने योहन से बपतिसमा लेके ईश्वर को निर्दोष ठहराया।
३० परन्तु फरीशियों और व्यवस्थापकों ने उस से बपतिसमा न लेके ईश्वर के अभिप्राय को अपने विषय में टाल दिया।

३१ तब प्रभु ने कहा मैं इस समय के लोगों की उपमा किस
३२ से देऊंगा वे किस के समान हैं। वे बालकों के समान हैं

जो बाजार में बैठके एक दूसरे को पुकारके कहते हैं हम ने तुम्हारे लिये बांसली बजाई और तुम न नाचे हम ने तुम्हारे लिये विलाप किया और तुम न रोये। क्योंकि ३३ योहन बपतिसमा देनेहारा न रोटी खाता न दाख रस पीता आया है और तुम कहते हो उसे भूत लगा है। मनुष्य का पुत्र खाता और पीता आया है और तुम कहते ३४ हो देखो पेटू और मद्यप मनुष्य कर उगाहनेहारों और पापियों का मित्र। परन्तु ज्ञान अपने सब सन्तानों से निर्दोष ३५ ठहराया गया है।

फरीशियों में से एक ने यीशु से बिन्ती किई कि मेरे संग ३६ भोजन कीजिये और वह फरीशी के घर में जाके भोजन पर बैठा। और देखो उस नगर की एक स्त्री जो पापिनी थी ३७ जब उस ने जाना कि वह फरीशी के घर में भोजन पर बैठा है तब उजले पत्थर के पात्र में सुगन्ध तेल लाई. और पीछे ३८ से उस के पांवों पास खड़ी हो रोते रोते उस के चरणों को आंसुओं से भिंगाने लगी और अपने सिर के बालों से पोंछा और उस के पांव चूमके उन पर सुगन्ध तेल मला। यह ३९ देखके फरीशी जिस ने यीशु को बुलाया था अपने मन में कहने लगा यह यदि भविष्यद्वक्ता होता तो जानता कि यह स्त्री जो उस को छूती है कौन और कैसी है क्योंकि वह पापिनी है। यीशु ने उस को उत्तर दिया कि हे शिमोन ४० मैं तुझ से कुछ कहा चाहता हूं. वह बोला हे गुरु कहिये। किसी महाजन के दो ऋणी थे एक पांच सौ सूकी धारता ४१ था और दूसरा पचास। जब कि भर देने को उन्हों के पास ४२ कुछ न था उस ने दोनों को क्षमा किया सो कहिये उन में से कौन उस को अधिक प्यार करेगा। शिमोन ने उत्तर ४३ दिया मैं समझता हूं कि वह जिस का उस ने अधिक क्षमा

किया . यीशु ने उस से कहा तू ने ठीक बिचार किया है ।
४४ और स्त्री की ओर फिरके उस ने शिमोन से कहा तू इस
स्त्री को देखता है . मैं तेरे घर में आया तू ने मेरे पांवों पर
जल नहीं दिया परन्तु इस ने मेरे चरणों को आंसूओं से
४५ भिंगाया और अपने सिर के बालों से पोंछा है । तू ने मेरा
चूमा नहीं लिया परन्तु यह जब से मैं आया तब से मेरे
४६ पांवों को चूम रही है । तू ने मेरे सिर पर तेल नहीं लगाया
४७ परन्तु इस ने मेरे पांवों पर सुगन्ध तेल मला है । इस लिये
मैं तुझ से कहता हूं कि उस के पाप जो बहुत हैं क्षमा किये
गये हैं . कि उस ने तो बहुत प्रेम किया है परन्तु जिस
का थोड़ा क्षमा किया जाता है वह थोड़ा प्रेम करता है ।
४८ और उस ने स्त्री से कहा तेरे पाप क्षमा किये गये हैं ।
४९ तब जो लोग उस के संग भोजन पर बैठे थे सो अपने अपने
मन में कहने लगे यह कौन है जो पापों को भी क्षमा करता
५० है । परन्तु उस ने स्त्री से कहा तेरे बिश्वास ने तुझे बचाया
है कुशल से चली जा ।

८ आठवां पर्ब्ब ।

१ यीशु का नगर नगर में फिरना । ४ बीज बोनेहारे का दृष्टान्त । ९ दृष्टान्तों से उपदेश करने का कारण और इस दृष्टान्त का अर्थ । १६ दीपक का दृष्टान्त और बचन सुनने के विषय में उपदेश । १९ यीशु के कुटुंब का बर्णन । २२ उस का आंधी को थांभना । २६ एक मनुष्य में से बहुत भूतों को निकालना । ४० एक कन्या को जिलाना और एक स्त्री को चंगा करना ।

१ इस पीछे यीशु नगर नगर और गांव गांव उपदेश
करता हुआ और ईश्वर के राज्य का सुसमाचार सुनाता
२ हुआ फिरा किया । और बारहों शिष्य उस के संग थे
और कितनी स्त्रियां भी जो दुष्ट भूतों से और रोगों से
चंगी किई गई थीं अर्थात मरियम जो मगदलीनी कहावती
३ है जिस में से सात भूत निकल गये थे . और हेरोद के

भंडारी कूज़ा की स्त्री योहाना और सोसन्ना और बहुत सी और स्त्रियां. ये तो अपनी सम्पत्ति से उस की सेवा करती थीं।

४ जब बड़ी भीड़ एकट्ठी होती थी और नगर नगर के ५ लोग उस पास आते थे तब उस ने दृष्टान्त में कहा. एक बोनेहारा अपना बीज बोने को निकला. बीज बोने में कुछ मार्ग की ओर गिरा और पांवों से रौंदा गया और आकाश ६ के पंछियों ने उसे चुग लिया। कुछ पत्थर पर गिरा और ७ उपजा परन्तु तरावट न पाने से सूख गया। कुछ कांटों के बीच में गिरा और कांटों ने एक संग बढ़के उस को दबा ८ डाला। परन्तु कुछ अच्छी भूमि पर गिरा और उपजा और सौ गुणे फल फला. यह बातें कहके उस ने ऊंचे शब्द से कहा जिस को सुनने के कान हों सो सुने।

९ तब उस के शिष्यों ने उस से पूछा इस दृष्टान्त का अर्थ १० क्या है। उस ने कहा तुम को ईश्वर के राज्य के भेद जानने का अधिकार दिया गया है परन्तु और लोगों से दृष्टान्तों में बात होती है इस लिये कि वे देखते हुए न देखें और ११ सुनते हुए न बूझें। इस दृष्टान्त का अर्थ यह है. बीज १२ तो ईश्वर का वचन है। मार्ग की ओर के वे हैं जो सुनते हैं तब शैतान आके उन के मन में से वचन छीन लेता है १३ ऐसा न हो कि वे विश्वास करके त्राण पावें. पत्थर पर के वे हैं कि जब सुनते हैं तब आनन्द से वचन को ग्रहण करते हैं परन्तु उन में जड़ न बंधने से वे थोड़ी बेर लों बिश्वास १४ करते हैं और परीक्षा के समय में बहक जाते हैं। जो कांटों के बीच में गिरा सो वे हैं जो सुनते हैं पर अनेक चिन्ता और धन और जीवन के सुख बिलास से दबते दबते दबाये १५ जाते और पक्के फल नहीं फलते हैं। परन्तु अच्छी भूमि में

का बीज वे हैं जो बचन सुनके भले और उत्तम मन में
रखते हैं और धीरज से फल फलते हैं ।

१६ कोई मनुष्य दीपक को बारके बर्त्तन से नहीं ढांपता
और न खाट के नीचे रखता है परन्तु दीवट पर रखता है
१७ कि जो भीतर आवें सो उजियाला देखें । कुछ गुप्त नहीं
है जो प्रगट न होगा और न कुछ छिपा है जो जाना न
१८ जायगा और प्रसिद्ध न होगा । इस लिये सचेत रहो तुम
किस रीति से सुनते हो क्योंकि जो कोई रखता है उस को
और दिया जायगा परन्तु जो कोई नहीं रखता है उस से जो
कुछ वह समझता कि मेरे पास है सो भी ले लिया जायगा ।

१९ यीशु की माता और उस के भाई उस पास आये परन्तु
२० भीड़ के कारण उस से भेंट नहीं कर सके । और कितनों ने
उस से कह दिया कि आप की माता और आप के भाई
२१ बाहर खड़े हुए आप को देखने चाहते हैं । उस ने उन को
उत्तर दिया कि मेरी माता और मेरे भाई ये ही लोग हैं
जो ईश्वर का बचन सुनके पालन करते हैं ।

२२ एक दिन वह और उस के शिष्य नाव पर चढ़े और
उस ने उन से कहा कि आओ हम झील के उस पार चलें .
२३ सो उन्हों ने खोल दिई । ज्यों वे जाते थे त्यों वह सो
गया और झील पर आंधी उठी और उन की नाव भर जाने
२४ लगी और वे जोखिम में थे । तब उन्हों ने उस पास आके
उसे जगाके कहा हे गुरु हे गुरु हम नष्ट होते हैं . तब
उस ने उठके बयार को और जल के हिलकोरे को डांटा और
२५ वे थम गये और चैन हो गया । और उस ने उन से कहा
तुम्हारा बिश्वास कहां है . परन्तु वे भयमान और अचंभित
हो आपस में बोले यह कौन है जो बयार और जल को भी
आज्ञा देता है और वे उस की आज्ञा मानते हैं ।

वे गदेरियों के देश में जो गालील के साम्ने उस पार है २६
पहुंचे । जब यीशु तीर पर उतरा तब नगर का एक मनुष्य २७
उस से आ मिला जिस को बहुत दिनों से भूत लगे थे और
जो वस्त्र नहीं पहिनता न घर में रहता था परन्तु कबर-
स्थान में रहता था । वह यीशु को देखके चिल्लाया और २८
उस को दंडवत कर बड़े शब्द से कहा हे यीशु सर्व्वप्रधान
ईश्वर के पुत्र आप को मुझ से क्या काम . मैं आप से बिन्ती
करता हूं कि मुझे पीड़ा न दीजिये । क्योंकि यीशु ने २९
अशुद्ध भूत को उस मनुष्य से निकलने की आज्ञा दिई थी .
उस भूत ने बहुत बार उसे पकड़ा था और वह ज़ंजीरों
और बेड़ियों से बंधा हुआ रखा जाता था परन्तु बंधनों
को तोड़ देता था और भूत उसे ज़ंगल में खदेड़ता था ।
यीशु ने उस से पूछा तेरा नाम क्या है . उस ने कहा सेना . ३०
क्योंकि बहुत भूत उस में पैठ गये थे । और उन्हों ने उस से ३१
बिन्ती किई कि हमें अथाह कुंड में जाने की आज्ञा न
दीजिये । वहां बहुत सूअरों का जो पहाड़ पर चरते थे एक ३२
झुंड था सो उन्हों ने उस से बिन्ती किई कि हमें उन्हों में
पैठने दीजिये और उस ने उन्हें जाने दिया । तब भूत ३३
उस मनुष्य से निकलके सूअरों में पैठे और वह झुंड कड़ाड़े
पर से झील में दौड़ गया और डूब मरा । यह जो हुआ था ३४
सो देखके चरवाहे भागे और जाके नगर में और गांवों में
उस का समाचार कहा । और लोग यह जो हुआ था देखने ३५
को बाहर निकले और यीशु पास आके जिस मनुष्य से
भूत निकले थे उस को यीशु के चरणों के पास वस्त्र पहिने
और सुबुद्धि बैठे हुए पाके डर गये । जिन लोगों ने देखा ३६
था उन्हों ने उन से कह दिया कि वह भूतग्रस्त मनुष्य क्यों-
कर चंगा हो गया था । तब गदेरा के आसपास के सारे ३७

लोगों ने यीशु से बिन्ती किई कि हमारे यहां से चले जाइये क्योंकि उन्हें बड़ा डर लगा . सो वह नाव पर चढ़के लौट
३८ गया। जिस मनुष्य से भूत निकले थे उस ने उस से बिन्ती किई
३९ कि मैं आप के संग रहूं पर यीशु ने उसे बिदा किया . और कहा अपने घर को फिर जा और कह दे कि ईश्वर ने तेरे लिये कैसे बड़े काम किये हैं . उस ने जाके सारे नगर में प्रचार किया कि यीशु ने उस के लिये कैसे बड़े काम किये थे।

४० जब यीशु लौट गया तब लोगों ने उसे ग्रहण किया
४१ क्योंकि वे सब उस की बाट जोहते थे। और देखो याईर नाम एक मनुष्य जो सभा का अध्यक्ष भी था आया और यीशु के पांवों पड़के उस से बिन्ती किई कि वह उस के घर
४२ जाय। क्योंकि उस को बारह बरस की एकलौती बेटी थी और वह मरने पर थी . जब यीशु जाता था तब भीड़ उसे दबाती थी।

४३ और एक स्त्री जिसे बारह बरस से लोहू बहने का रोग था जो अपनी सारी जीविका वैद्यों के पीछे उठाके किसी
४४ से चंगी न हो सकी . तिस ने पीछे से आ उस के वस्त्र के आंचल को छूआ और उस के लोहू का बहना तुरन्त थम
४५ गया। यीशु ने कहा किस ने मुझे छूआ . जब सब मुकर गये तब पितर ने और उस के संगियों ने कहा हे गुरु लोग आप पर भीड़ लगाते और आप को दबाते हैं और आप
४६ कहते हैं किस ने मुझे छूआ। यीशु ने कहा किसी ने मुझे छूआ क्योंकि मैं जानता हूं कि मुझ में से शक्ति निकली है।
४७ जब स्त्री ने देखा कि मैं छिपी नहीं हूं तब कांपती हुई आई और उसे दंडवत कर सब लोगों के साम्ने उस को बताया कि उस ने किस कारण से उस को छूआ था और
४८ क्योंकर तुरन्त चंगी हुई थी। उस ने उस से कहा हे पुत्री

ढाढ़स कर तेरे विश्वास ने तुझे चंगा किया है कुशल से चली जा ।

वह बोलता ही था कि किसी ने सभा के अध्यक्ष के घर से ४९ आ उस से कहा आप की बेटी मर गई है गुरु को दुःख न दीजिये । यीशु ने यह सुनके उस को उत्तर दिया कि मत ५० डर केवल विश्वास कर तो वह चंगी हो जायगी । घर में ५१ आके उस ने पितर और याकूब और योहन और कन्या के माता पिता को छोड़ और किसी को भीतर जाने न दिया । सब लोग कन्या के लिये रोते और छाती पीटते थे परन्तु ५२ उस ने कहा मत रोओ वह मरी नहीं पर सोती है । वे ५३ यह जानके कि मर गई है उस का उपहास करने लगे । परन्तु उस ने सभों को बाहर निकाला और कन्या का हाथ ५४ पकड़के ऊंचे शब्द से कहा हे कन्या उठ । तब उस का प्राण ५५ फिर आया और वह तुरन्त उठी और उस ने आज्ञा किई कि उसे कुछ खाने को दिया जाय । उस के माता पिता ५६ विस्मित हुए पर उस ने उन को आज्ञा दिई कि यह जो हुआ है किसी से मत कहो ।

९ नवां पर्व्व ।

१ यीशु का बारह प्रेरितों को भेजना । ७ उस के विषय में हेरोद की चिन्ता । १० यीशु का प्रेरितों का समाचार सुनना और लोगों को उपदेश देना । १२ पांच सहस्र मनुष्यों को थोड़े भोजन से तृप्त करना । १८ यीशु के विषय में लोगों का और शिष्यों का विचार और उस का अपनी मृत्यु का भविष्यद्वाक्य कहना । २३ शिष्य होने की विधि । २८ यीशु का शिष्यों के आगे तेजस्वी दिखाई देना । ३७ एक भूतग्रस्त लड़के को चंगा करना । ४४ अपनी मृत्यु का भविष्यद्वाक्य कहना । ४६ नम्र होने का उपदेश । ४९ दूसरे उपदेशक को बर्जने का निषेध । ५१ शोमिरोनियों की और जिन्हों ने उस को ग्रहण न किया यीशु की नम्रता । ५७ शिष्य होने के विषय में यीशु की कथा ।

यीशु ने अपने बारह शिष्यों को एकट्ठे बुलाके उन्हें सब १ भूतों को निकालने का और रोगों को चंगा करने का सामर्थ्य

२ और अधिकार दिया . और उन्हें ईश्वर के राज्य की कथा
३ सुनाने और रोगियों को चंगा करने को भेजा । और उस ने उन से कहा मार्ग के लिये कुछ मत लेओ न लाठी न झोली न रोटी न रुपैये और दो दो अंगे तुम्हारे पास न होवें ।
४ जिस किसी घर में तुम प्रवेश करो उसी में रहो और वहीं से
५ निकल जाओ । जो कोई तुम्हें ग्रहण न करें उस नगर से निकलते हुए उन पर साक्षी होने के लिये अपने पांवों की धूल
६ भी झाड़ डालो । सो वे निकलके सर्ब्बत्र सुसमाचार सुनाते और लोगों को चंगा करते हुए गांव गांव फिरे ।

७ चौथाई का राजा हेरोद सब कुछ जो यीशु करता था सुनके दुबधा में पड़ा क्योंकि कितनों ने कहा योहन मृतकों में
८ से जी उठा है . और कितनों ने कि एलियाह दिखाई दिया है और औरों ने कि अगले भविष्यद्वक्ताओं में से एक जी उठा
९ है। और हेरोद ने कहा योहन का तो मैं ने सिर कटवाया परन्तु यह कौन है जिस के विषय में मैं ऐसी बातें सुनता हूं . और उस ने उसे देखने चाहा ।

१० प्रेरितों ने फिर आके जो कुछ उन्हों ने किया था सो यीशु को सुनाया और वह उन्हें संग लेके बैतसैदा नाम एक नगर
११ के किसी जंगली स्थान में एकांत में गया । लोग यह जानके उस के पीछे हो लिये और उस ने उन्हें ग्रहण कर ईश्वर के राज्य के विषय में उन से बातें किईं और जिन्हों को चंगा किये जाने का प्रयोजन था उन्हें चंगा किया ।

१२ जब दिन ढलने लगा तब बारह शिष्यों ने आ उस से कहा लोगों को बिदा कीजिये कि वे चारों ओर की बस्तियों और गांवों में जाके टिकें और भोजन पावें क्योंकि हम यहां
१३ जंगली स्थान में हैं । उस ने उन से कहा तुम उन्हें खाने को देओ . वे बोले हमारे पास पांच रोटियां और दो मछलियां

से अधिक कुछ नहीं है पर हां हम जाके इन सब लोगों के लिये भोजन मोल लेवें तो होय। वे लोग पांच सहस्र पुरुषों १४ के अटकल थे. उस ने अपने शिष्यों से कहा उन्हें पचास पचास करके पांति पांति बैठाओ। उन्हों ने ऐसा किया और १५ सभों को बैठाया। तब उस ने उन पांच रोटियों और दो १६ मछलियों को ले स्वर्ग की ओर देखके उन पर आशीस दिई और उन्हें तोड़के शिष्यों को दिया कि लोगों के आगे रखें। सो सब खाके तृप्त हुए और जो टुकड़े उन्हों से बच रहे १७ उन की बारह टोकरी उठाई गईं।

जब वह एकांत में प्रार्थना करता था और शिष्य लोग १८ उस के संग थे तब उस ने उन से पूछा कि लोग क्या कहते हैं मैं कौन हूं। उन्हों ने उत्तर दिया कि वे आप को योहन बप- १९ तिसमा देनेहारा कहते हैं परन्तु कितने एलियाह कहते हैं और कितने कहते हैं कि अगले भविष्यद्वक्ताओं में से कोई जी उठा है। उस ने उन से कहा तुम क्या कहते हो मैं कौन २० हूं. पितर ने उत्तर दिया कि ईश्वर का अभिषिक्त जन। तब २१ उस ने उन्हें दृढ़ता से आज्ञा दिई कि यह बात किसी से मत कहो। और उस ने कहा मनुष्य के पुत्र को अवश्य है कि बहुत २२ दुःख उठावे और प्राचीनों और प्रधान याजकों और अध्या- पकों से तुच्छ किया जाय और मार डाला जाय और तीसरे दिन जी उठे।

उस ने सभों से कहा यदि कोई मेरे पीछे आने चाहे तो २३ अपनी इच्छा को मारे और प्रतिदिन अपना क्रूश उठाके मेरे पीछे आवे। क्योंकि जो कोई अपना प्राण बचाने चाहे सो २४ उसे खोवेगा परन्तु जो कोई मेरे लिये अपना प्राण खोवे सो उसे बचावेगा। जो मनुष्य सारे जगत को प्राप्त करे और २५ अपने को नाश करे अथवा गंवावे उस को क्या लाभ होगा।

२६ जो कोई मुझ से और मेरी बातों से लजावे मनुष्य का पुत्र जब अपने और पिता के और पवित्र दूतों के ऐश्वर्य्य में आवेगा
२७ तब उस से लजावेगा । मैं तुम से सच कहता हूं कि जो यहां खड़े हैं उन में से कोई कोई हैं कि जब लों ईश्वर का राज्य न देखें तब लों मृत्यु का स्वाद न चीखेंगे ।

२८ इन बातों से दिन आठ एक के पीछे यीशु पितर और योहन और याकूब को संग ले प्रार्थना करने को पर्ब्बत पर
२९ चढ़ गया । जब वह प्रार्थना करता था तब उस के मुंह का रूप और ही हो गया और उस का बस्त्र उजला हुआ और
३० चमकने लगा । और देखो दो मनुष्य अर्थात मूसा और
३१ एलियाह उस के संग बात करते थे । वे तेजोमय दिखाई दिये और उस की मृत्यु की जिसे वह यिरूशलीम में पूरी
३२ करने पर था बात करते थे । पितर और उस के संगियों की आंखें नींद से भरी थीं परन्तु वे जागते रहे और उस का ऐश्वर्य्य और उन दो मनुष्यों को जो उस के संग खड़े थे
३३ देखा । जब वे उस के पास से जाने लगे तब पितर ने यीशु से कहा हे गुरु हमारा यहां रहना अच्छा है . हम तीन डेरे बनावें एक आप के लिये एक मूसा के लिये और एक एलियाह के लिये . वह नहीं जानता था कि क्या कहता
३४ था । उस के यह कहते हुए एक मेघ ने आ उन्हें छा लिया और जब उन दोनों ने उस मेघ में प्रवेश किया तब वे डर
३५ गये । और उस मेघ से यह शब्द हुआ कि यह मेरा प्रिय
३६ पुत्र है उस की सुनो । यह शब्द होने के पीछे यीशु अकेला पाया गया और उन्हों ने इस को गुप्त रखा और जो देखा था उस की कोई बात उन दिनों में किसी से न कही ।

३७ दूसरे दिन जब वे उस पर्ब्बत से उतरे तब बहुत लोग उस
३८ से आ मिले । और देखो भीड़ में से एक मनुष्य ने पुकारके

कहा हे गुरु मैं आप से बिन्ती करता हूं कि मेरे पुत्र पर दृष्टि कीजिये क्योंकि वह मेरा एकलौता है। और देखिये ३९ एक भूत उसे पकड़ता है और वह अचांचक चिल्लाता है और भूत उसे ऐसा मरोड़ता कि वह मुंह से फेन बहाता है और उसे चूर कर कठिन से छोड़ता है। और मैं ने आप ४० के शिष्यों से बिन्ती किई कि उसे निकालें परन्तु वे नहीं सके। यीशु ने उत्तर दिया कि हे अबिश्वासी और हठीले ४१ लोगो मैं कब लों तुम्हारे संग रहूंगा और तुम्हारी सहूंगा. अपने पुत्र को यहां ले आ। वह आता ही था कि भूत ने ४२ उसे पटकके मरोड़ा परन्तु यीशु ने अशुद्ध भूत को डांटके लड़के को चंगा किया और उसे उस के पिता को सोंप दिया। तब सब लोग ईश्वर की महा शक्ति से अचंभित हुए। ४३

जब समस्त लोग सब कामों से जो यीशु ने किये अचंभा ४४ करते थे तब उस ने अपने शिष्यों से कहा तुम इन बातों को अपने कानों में रखो क्योंकि मनुष्य का पुत्र मनुष्यों के हाथ में पकड़वाया जायगा। परन्तु उन्हों ने यह बात न समझी ४५ और वह उन से छिपी थी कि उन्हें बूझ न पड़े और वे इस बात के विषय में उस से पूछने को डरते थे।

उन्हों में यह विचार होने लगा कि हम में से बड़ा कौन ४६ है। यीशु ने उन के मन का विचार जानके एक बालक को ४७ लेके अपने पास खड़ा किया. और उन से कहा जो कोई मेरे ४८ नाम से इस बालक को ग्रहण करे वह मुझे ग्रहण करता है और जो कोई मुझे ग्रहण करे वह मेरे भेजनेहारे को ग्रहण करता है. जो तुम सभों में अति छोटा है वही बड़ा होगा।

तब योहन ने उत्तर दिया कि हे गुरु हम ने किसी ४९ मनुष्य को आप के नाम से भूतों को निकालते देखा और हम ने उसे वर्जा क्योंकि वह हमारे संग नहीं चलता है।

५० यीशु ने उस से कहा मत बर्जो क्योंकि जो हमारे बिरुद्ध नहीं है सो हमारी ओर है ।

५१ जब उस के उठाये जाने के दिन पहुंचे तब उस ने यिरू-
५२ शलीम जाने को अपना मन दृढ़ किया । और उस ने दूतों को अपने आगे भेजा और उन्हों ने जाके उस के लिये तैयारी
५३ करने को शोमिरोनियों के एक गांव में प्रवेश किया । परन्तु उन लोगों ने उसे ग्रहण न किया क्योंकि वह यिरूशलीम
५४ की ओर जाने का मुंह किये था । यह देखके उस के शिष्य याकूब और योहन बोले हे प्रभु आप की इच्छा होय तो हम आग के आकाश से गिरने और उन्हें नाश करने को
५५ आज्ञा देवें जैसा एलियाह ने भी किया । परन्तु उस ने पीछे फिरके उन्हें डांटके कहा क्या तुम नहीं जानते हो
५६ तुम कैसे आत्मा के हो । मनुष्य का पुत्र मनुष्यों के प्राण नाश करने को नहीं परन्तु बचाने को आया है . तब वे दूसरे गांव को चले गये ।

५७ जब वे मार्ग में जाते थे तब किसी मनुष्य ने यीशु से कहा हे प्रभु जहां जहां आप जायें तहां मैं आप के पीछे चलूंगा ।
५८ यीशु ने उस से कहा लोमड़ियों को मांदें और आकाश के पंछियों को बसेरे हैं परन्तु मनुष्य के पुत्र को सिर रखने का
५९ स्थान नहीं है । उस ने दूसरे से कहा मेरे पीछे आ . उस ने कहा हे प्रभु मुझे पहिले जाके अपने पिता को गाड़ने
६० दीजिये । यीशु ने उस से कहा मृतकों को अपने मृतकों को गाड़ने दे परन्तु तू जाके ईश्वर के राज्य की कथा सुना ।
६१ दूसरे ने भी कहा हे प्रभु मैं आप के पीछे चलूंगा परन्तु पहिले मुझे अपने घर के लोगों से बिदा होने दीजिये ।
६२ यीशु ने उस से कहा अपना हाथ हल पर रखके जो कोई पीछे देखे सो ईश्वर के राज्य के योग्य नहीं है ।

१० दसवां पर्व्व।

१ यीशु का सत्तर शिष्यों को ठहराके भेजना। १३ कई एक नगरों के अविश्वास पर उलहना। १७ सत्तर शिष्यों के संग यीशु की बातचीत और उस का अपने पिता का धन्य मानना। २५ व्यवस्थापक का उत्तर देना और दयावन्त शोमिरोनी का दृष्टान्त। ३८ मर्था और मरियम से यीशु की बातचीत।

इस के पीछे प्रभु ने सत्तर और शिष्यों को भी ठहराके १ उन्हें दो दो करके हर एक नगर और स्थान को जहां वह आप जाने पर था अपने आगे भेजा। और उस ने उन से २ कहा कटनी बहुत है परन्तु बनिहार थोड़े हैं इस लिये कटनी के स्वामी से बिन्ती करो कि वह अपनी कटनी में बनिहारों को भेजे। जाओ देखो मैं तुम्हें मेम्नों की नाईं ३ हुंड़ारों के बीच में भेजता हूं। न थैली न झोली न जूते ४ ले जाओ और मार्ग में किसी को नमस्कार मत करो। जिस ५ किसी घर में तुम प्रवेश करो पहिले कहो इस घर का कल्याण होय। यदि वहां कोई कल्याण के योग्य हो तो ६ तुम्हारा कल्याण उस पर ठहरेगा नहीं तो तुम्हारे पास फिर आवेगा। जो कुछ उन्हों के यहां मिले सोई खाते और ७ पीते हुए उसी घर में रहो क्योंकि बनिहार अपनी बनि के योग्य है. घर घर मत फिरो। जिस किसी नगर में तुम ८ प्रवेश करो और लोग तुम्हें ग्रहण करें वहां जो कुछ तुम्हारे आगे रखा जाय सो खाओ। और उस में के रोगियों को चंगा ९ करो और लोगों से कहो कि ईश्वर का राज्य तुम्हारे निकट पहुंचा है। परन्तु जिस किसी नगर में प्रवेश करो और लोग १० तुम्हें ग्रहण न करें उस की सड़कों पर जाके कहो. तुम्हारे ११ नगर की धूल भी जो हमों पर लगी है हम तुम्हारे आगे पोंछ डालते हैं तौभी यह जानो कि ईश्वर का राज्य तुम्हारे निकट पहुंचा है। मैं तुम से कहता हूं कि उस दिन में उस १२ नगर की दशा से सदोम की दशा सहने योग्य होगी।

१३　हाय तू कोराजीन . हाय तू बैतसैदा . जो आश्चर्य्य कर्म्म तुम्हों में किये गये हैं सो यदि सोर और सीदोन में किये जाते तो बहुत दिन बीते होते कि वे टाट पहिने
१४ राख में बैठके पश्चात्ताप करते । परन्तु बिचार के दिन में तुम्हारी दशा से सोर और सीदोन की दशा सहने योग्य
१५ होगी । और हे कफर्नाहुम जो स्वर्ग लों ऊंचा किया गया है
१६ तू नरक लों नीचा किया जायगा । जो तुम्हारी सुनता है सो मेरी सुनता है और जो तुम्हें तुच्छ जानता है सो मुझे तुच्छ जानता है और जो मुझे तुच्छ जानता है सो मेरे भेजनेहारे को तुच्छ जानता है ।

१७　तब वे सत्तर शिष्य आनन्द से फिर आके बोले हे प्रभु
१८ आप के नाम से भूत भी हमारे बश में हैं । उस ने उन से कहा मैं ने शैतान को बिजली की नाईं स्वर्ग से गिरते देखा ।
१९ देखो मैं तुम्हें सांपों और बिच्छूओं को रौंदने का और शत्रु के सारे पराक्रम पर सामर्थ्य देता हूं और किसी बस्तु से
२० तुम्हें कुछ हानि न होगी । तौभी इस में आनन्द मत करो कि भूत तुम्हारे बश में हैं परन्तु इसी में आनन्द करो कि
२१ तुम्हारे नाम स्वर्ग में लिखे हुए हैं । उसी घड़ी यीशु आत्मा में आनन्दित हुआ और कहा हे पिता स्वर्ग और पृथिवी के प्रभु मैं तेरा धन्य मानता हूं कि तू ने इन बातों को ज्ञानवानों और बुद्धिमानों से गुप्त रखा है और उन्हें बालकों पर प्रगट किया है . हां हे पिता क्योंकि तेरी दृष्टि में यही
२२ अच्छा लगा । मेरे पिता ने मुझे सब कुछ सोंपा है और पुत्र कौन है सो कोई नहीं जानता केवल पिता और पिता कौन है सो कोई नहीं जानता केवल पुत्र और वही जिस
२३ पर पुत्र उसे प्रगट किया चाहे । तब उस ने अपने शिष्यों की ओर फिरके निराले में कहा जो तुम देखते हो उसे जो

नेत्र देखें सो धन्य हैं । क्योंकि मैं तुम से कहता हूं कि जो २४ तुम देखते हो उस को बहुतेरे भविष्यद्वक्ताओं और राजाओं ने देखने चाहा पर न देखा और जो तुम सुनते हो उस को सुनने चाहा पर न सुना ।

देखो किसी व्यवस्थापक ने उठके उस की परीक्षा करने २५ को कहा हे गुरु कौन काम करने से मैं अनन्त जीवन का अधिकारी होंगा । उस ने उस से कहा व्यवस्था में क्या लिखा २६ है . तू कैसे पढ़ता है । उस ने उत्तर दिया कि तू परमे- २७ श्वर अपने ईश्वर को अपने सारे मन से और अपने सारे प्राण से और अपनी सारी शक्ति से और अपनी सारी बुद्धि से प्रेम कर और अपने पड़ोसी को अपने समान प्रेम कर । यीशु ने उस से कहा तू ने ठीक उत्तर दिया है . यह कर २८ तो तू जीयेगा । परन्तु उस ने अपने तईं धर्म्मी ठहराने की २९ इच्छा कर यीशु से कहा मेरा पड़ोसी कौन है । यीशु ने ३० उत्तर दिया कि एक मनुष्य यिरूशलीम से यिरीहो को जाते हुए डाकूओं के हाथ में पड़ा जिन्हों ने उस के बस्त्र उतार लिये और उसे घायल कर अधमूआ छोड़के चले गये । संयोग से कोई याजक उस मार्ग से जाता था परन्तु उसे ३१ देखके साम्हने से होके चला गया । इसी रीति से एक लेवीय ३२ भी जब उस स्थान पर पहुंचा तब आके उसे देखा और साम्हने से होके चला गया । परन्तु एक शोमिरोनी पथिक ३३ उस स्थान पर आया और उसे देखके दया किई . और ३४ उस पास जाके उस के घावों पर तेल और दाख रस ढालके पट्टियां बांधीं और उसे अपने ही पशु पर बैठाके सराय में लाके उस की सेवा किई । बिहान हुए उस ने बाहर आ ३५ दो सूकी निकालके भटियारे को दिईं और उस से कहा उस मनुष्य की सेवा कर और जो कुछ तेरा और लगेगा सो मैं

३६ जब फिर आऊंगा तब तुझे भर देऊंगा। सो तू क्या समझता है जो डाकूओं के हाथ में पड़ा उस का पड़ोसी इन ३७ तीनों में से कौन था। व्यवस्थापक ने कहा वह जिस ने उस पर दया किई . तब यीशु ने उस से कहा जा तू भी वैसा ही कर।

३८ उन्हों के जाते हुए उस ने किसी गांव में प्रवेश किया और मर्था नाम एक स्त्री ने अपने घर में उस की पहुनई ३९ किई। उस को मरियम नाम एक बहिन थी जो यीशु के ४० चरणों के पास बैठके उस का बचन सुनती थी। परन्तु मर्था बहुत सेवकाई में बझी हुई थी और वह निकट आके बोली हे प्रभु क्या आप को सोच नहीं है कि मेरी बहिन ने मुझे अकेली सेवा करने को छोड़ी है . इस लिये उस को ४१ आज्ञा दीजिये कि मेरी सहायता करे। यीशु ने उस को उत्तर दिया हे मर्था हे मर्था तू बहुत बातों के लिये चिन्ता ४२ करती और घबराती है। परन्तु एक बात आवश्यक है . और मरियम ने उस उत्तम भाग को चुना है जो उस से नहीं लिया जायगा।

११ एग्यारहवां पर्ब्ब ।

१ प्रार्थना के विषय में यीशु का उपदेश। १४ लोगों के अपवाद का खंडन। २४ यिहूदियों की बुरी दशा। २७ धन्य कौन हैं उस का वर्णन। २९ यिहूदियों के दोष का प्रमाण। ३३ दीपक का दृष्टान्त। ३७ यीशु का फरीशियों को उलहना देना। ४५ व्यवस्थापकों को उलहना देना।

१ जब यीशु एक स्थान में प्रार्थना करता था ज्यों उस ने समाप्ति किई त्यों उस के शिष्यों में से एक ने उस से कहा हे प्रभु जैसे योहन ने अपने शिष्यों को सिखाया तैसे आप हमें २ प्रार्थना करने को सिखाइये। उस ने उन से कहा जब तुम प्रार्थना करो तब कहो हे हमारे स्वर्गबासी पिता तेरा

नाम पवित्र किया जाय तेरा राज्य आवे तेरी इच्छा जैसे स्वर्ग में वैसे पृथिवी पर पूरी होय . हमारी दिन भर की ३ रोटी प्रतिदिन हमें दे . और हमारे पापों को क्षमा कर ४ क्योंकि हम भी अपने हर एक ऋणी को क्षमा करते हैं और हमें परीक्षा में मत डाल परन्तु दुष्ट से बचा।

और उस ने उन से कहा तुम में से कौन है कि उस का एक ५ मित्र होय और वह आधी रात को उस पास जाके उस से कहे कि हे मित्र मुझे तीन रोटी उधार दीजिये . क्योंकि ६ एक पथिक मेरा मित्र मुझ पास आया है और उस के आगे रखने को मेरे पास कुछ नहीं है . और वह भीतर से उत्तर ७ देवे कि मुझे दुःख न देना अब तो द्वार मूंदा गया है और मेरे बालक मेरे संग सोये हुए हैं मैं उठके तुझे नहीं दे सकता हूं। मैं तुम से कहता हूं जो वह इस लिये नहीं ८ उसे उठके देगा कि उस का मित्र है तौभी उस के लाज छोड़के मांगने के कारण उठके उस को जितना कुछ आवश्यक हो उतना देगा। और मैं तुम्हों से कहता हूं कि मांगो तो ९ तुम्हें दिया जायगा ढूंढ़ो तो तुम पाओगे खटखटाओ तो तुम्हारे लिये खोला जायगा। क्योंकि जो कोई मांगता १० है उसे मिलता है और जो ढूंढ़ता है सो पाता है और जो खटखटाता है उस के लिये खोला जायगा। तुम में से कौन ११ पिता होगा जिस से पुत्र रोटी मांगे क्या वह उस को पत्थर देगा . और जो वह मछली मांगे तो क्या वह मछली की सन्ती उस को सांप देगा। अथवा जो वह अंडा १२ मांगे तो क्या वह उस को बिच्छू देगा। सो यदि तुम बुरे १३ होके अपने लड़कों को अच्छे दान देने जानते हो तो कितना अधिक करके स्वर्गीय पिता उन्हों को जो उस से मांगते हैं पवित्र आत्मा देगा।

१४ यीशु एक भूत को जो गूंगा था निकालता था . जब भूत निकल गया तब वह गूंगा बोलने लगा और लोगों
१५ ने अचंभा किया। परन्तु उन में से कोई कोई बोले यह तो बालजिबूल नाम भूतों के प्रधान की सहायता से भूतों को
१६ निकालता है। औरों ने उस की परीक्षा करने को उस से
१७ आकाश का एक चिन्ह मांगा। पर उस ने उन के मन की बातें जानके उन से कहा जिस जिस राज्य में फूट पड़ी है वह राज्य उजड़ जाता है और घर से घर जो बिगड़ता
१८ है सो नाश होता है। और यदि शैतान में भी फूट पड़ी है तो उस का राज्य क्योंकर ठहरेगा . तुम लोग तो कहते हो कि मैं बालजिबूल की सहायता से भूतों को निकालता
१९ हूं। पर यदि मैं बालजिबूल की सहायता से भूतों को निकालता हूं तो तुम्हारे सन्तान किस की सहायता से निकालते हैं . इस लिये वे तुम्हारे न्याय करनेहारे होंगे।
२० परन्तु जो मैं ईश्वर की उंगली से भूतों को निकालता हूं तो
२१ अवश्य ईश्वर का राज्य तुम्हारे पास पहुंच चुका है। जब हथियार बांधे हुए बलवन्त अपने घर की रखवाली करता
२२ है तब उस की सम्पत्ति कुशल से रहती है। परन्तु जब वह जो उस से अधिक बलवन्त है उस पर आ पहुंचकर उसे जीतता है तब उस के सम्पूर्ण हथियार जिन पर वह भरोसा रखता था छीन लेता और उस का लूटा हुआ धन
२३ बांटता है। जो मेरे संग नहीं है सो मेरे बिरुद्ध है और जो मेरे संग नहीं बटोरता सो बिथराता है।

२४ जब अशुद्ध भूत मनुष्य से निकल जाता है तब सूखे स्थानों में बिश्राम ढूंढ़ता फिरता है परन्तु जब नहीं पाता तब कहता है कि मैं अपने घर में जहां से निकला फिर
२५ जाऊंगा। और वह आके उसे झाड़ा बुहारा सुथरा पाता

है। तब वह जाके अपने से अधिक दुष्ट सात और भूतों २६ को ले आता है और वे भीतर पैठके वहां बास करते हैं और उस मनुष्य की पिछली दशा पहिली से बुरी होती है।

वह यह बातें कहता ही था कि भीड़ में से किसी स्त्री ने २७ ऊंचे शब्द से उस से कहा धन्य वह गर्भ जिस ने तुझे धारण किया और वे स्तन जो तू ने पिये। उस ने कहा हां पर २८ वे ही धन्य हैं जो ईश्वर का वचन सुनके पालन करते हैं।

जब बहुत लोगों की भीड़ एकट्ठी होने लगी तब वह २९ कहने लगा कि इस समय के लोग दुष्ट हैं. वे चिन्ह ढूंढ़ते हैं परन्तु कोई चिन्ह उन को नहीं दिया जायगा केवल यूनस भविष्यद्वक्ता का चिन्ह। जैसा यूनस निनिवीय लोगों ३० के लिये चिन्ह था वैसा ही मनुष्य का पुत्र इस समय के लोगों के लिये होगा। दक्षिण की राणी बिचार के दिन में ३१ इस समय के मनुष्यों के संग उठके उन्हें दोषी ठहरावेगी क्योंकि वह सुलेमान का ज्ञान सुनने को पृथिवी के अन्त से आई और देखो यहां एक है जो सुलेमान से भी बड़ा है। निनिवी के लोग बिचार के दिन में इस समय के लोगों के संग ३२ खड़े हो उन्हें दोषी ठहरावेंगे क्योंकि उन्हों ने यूनस का उपदेश सुनके पश्चात्ताप किया और देखो यहां एक है जो यूनस से भी बड़ा है।

कोई मनुष्य दीपक को बारके गुप्त में अथवा वर्त्तन के ३३ नीचे नहीं रखता है परन्तु दीवट पर कि जो भीतर आवें सो उजियाला देखें। शरीर का दीपक आंख है इस लिये ३४ जब तेरी आंख निर्मल है तब तेरा सकल शरीर भी उजियाला है परन्तु जब वह बुरी है तब तेरा शरीर भी अंधियारा है। सो देख लो कि जो ज्योति तुझ में है सो ३५ अंधकार न होवे। यदि तेरा सकल शरीर उजियाला हो ३६

और उस का कोई अंश अंधियारा न हो तो जैसा कि जब दीपक अपनी चमक से तुझे ज्योति देवे तैसा ही वह सब प्रकाशमान होगा ।

३७ जब यीशु बात करता था तब किसी फरीशी ने उस से बिन्ती किई कि मेरे यहां भोजन कीजिये और वह भीतर ३८ जाके भोजन पर बैठा । फरीशी ने जब देखा कि उस ने ३९ भोजन के पहिले नहीं धोया तब अचंभा किया । प्रभु ने उस से कहा अब तुम फरीशी लोग कटोरे और थाल को बाहर बाहर शुद्ध करते हो परन्तु तुम्हारा अन्तर अन्धेर ४० और दुष्टता से भरा है । हे निर्बुद्धि लोगो जिस ने बाहर को ४१ बनाया क्या उस ने भीतर को भी नहीं बनाया । परन्तु भीतरवाली वस्तुओं को दान करो तो देखो तुम्हारे लिये ४२ सब कुछ शुद्ध है । परन्तु हाय तुम फरीशियो तुम पोदीने और आरूदे का और सब भांति के सागपात का दसवां अंश देते हो परन्तु न्याय को और ईश्वर के प्रेम को उल्लंघन करते हो . इन्हें करना और उन्हें न छोड़ना उचित था । ४३ हाय तुम फरीशियो तुम्हें सभा के घरों में ऊंचे आसन और ४४ बाजारों में नमस्कार प्रिय लगते हैं । हाय तुम कपटी अध्यापको और फरीशियो तुम उन कबरों के समान हो जो दिखाई नहीं देतीं और मनुष्य जो उन के ऊपर से चलते हैं नहीं जानते हैं ।

४५ तब व्यवस्थापकों में से किसी ने उस को उत्तर दिया कि हे गुरु यह बातें कहने से आप हमों की भी निन्दा करते ४६ हैं । उस ने कहा हाय तुम व्यवस्थापको भी तुम बोझे जिन को उठाना कठिन है मनुष्यों पर लादते हो परन्तु तुम आप उन बोझों को अपनी एक उंगली से नहीं ४७ छूते हो । हाय तुम लोग तुम भविष्यद्वक्ताओं की कबरें

बनाते हो जिन्हें तुम्हारे पितरों ने मार डाला। सो तुम ४८ अपने पितरों के कामों पर साक्षी देते हो और उन में सम्मति देते हो क्योंकि उन्हों ने तो उन्हें मार डाला और तुम उन की कबरें बनाते हो। इस लिये ईश्वर के ज्ञान ने कहा ४९ है कि मैं उन्हों के पास भविष्यद्वक्ताओं और प्रेरितों को भेजूंगा और वे उन में से कितनों को मार डालेंगे और सतावेंगे. कि हाबिल के लोहू से लेके जिखरियाह के लोहू ५० तक जो वेदी और मन्दिर के बीच में घात किया गया जितने भविष्यद्वक्ताओं का लोहू जगत की उत्पत्ति से बहाया जाता है सब का लेखा इस समय के लोगों से लिया जाय। हां मैं तुम से कहता हूं उस का लेखा इसी समय के लोगों से ५१ लिया जायगा। हाय तुम व्यवस्थापको तुम ने ज्ञान की ५२ कुंजी ले लिई है. तुम ने आप ही प्रवेश नहीं किया है और प्रवेश करनेहारों को वर्जा है।

जब वह उन्हों से यह बातें कहता था तब अध्यापक ५३ और फरीशी लोग निपट बैर करने और बहुत बातों के विषय में उसे कहवाने लगे. और दांव ताकते हुए उस के ५४ मुंह से कुछ पकड़ने चाहते थे कि उस पर दोष लगावें।

१२ बारहवां पर्ब्ब।

१ यीशु का अपने शिष्यों को अनेक बातों के विषय में चिताना। १३ निर्बुद्धि धनवान का दृष्टान्त। २२ संसार में मन लगाने का निषेध। ३५ सचेत रहने का उपदेश और दासों का दृष्टान्त। ४९ अवैये दुःखों का भविष्यद्वाक्य। ५४ कपटियों पर उलहना।

उस समय में सहस्रों लोग एकट्ठे हुए यहां लों कि एक १ दूसरे पर गिरे पड़ते थे इस पर यीशु अपने शिष्यों से पहिले कहने लगा कि फरीशियों के खमीर से अर्थात कपट से चौकस रहो। कुछ छिपा नहीं है जो प्रगट न किया जायगा और २

३ न कुछ गुप्त है जो जाना न जायगा । इस लिये जो कुछ तुम ने अंधियारे में कहा है सो उजियाले में सुना जायगा और जो तुम ने कोठरियों में कानों में कहा है सो कोठों पर
४ से प्रचार किया जायगा । मैं तुम्हों से जो मेरे मित्र हो कहता हूं कि जो शरीर को मार डालते हैं परन्तु उस के
५ पीछे और कुछ नहीं कर सकते हैं उन से मत डरो । मैं तुम्हें बताऊंगा तुम किस से डरो . घात करने के पीछे नरक में डालने का जिस को अधिकार है उसी से डरो . हां मैं
६ तुम से कहता हूं उसी से डरो । क्या दो पैसे में पांच गौरैया नहीं बिकतीं तौभी ईश्वर उन में से एक को भी नहीं भूलता
७ है । परन्तु तुम्हारे सिर के बाल भी सब गिने हुए हैं इस लिये मत डरो तुम बहुत गौरैयाओं से अधिक मोल के हो ।
८ मैं तुम से कहता हूं जो कोई मनुष्यों के आगे मुझे मान लेवे उसे मनुष्य का पुत्र भी ईश्वर के दूतों के आगे मान
९ लेगा । परन्तु जो मनुष्यों के आगे मुझे नकारे सो ईश्वर के
१० दूतों के आगे नकारा जायगा । जो कोई मनुष्य के पुत्र के बिरोध में बात कहे वह उस के लिये क्षमा किई जायगी परन्तु जो पवित्र आत्मा की निन्दा करे वह उस के लिये
११ नहीं क्षमा किई जायगी । जब लोग तुम्हें सभाओं और अध्यक्षों और अधिकारियों के आगे ले जावें तब किस रीति से अथवा क्या उत्तर देओगे अथवा क्या कहोगे इस
१२ की चिन्ता मत करो । क्योंकि जो कुछ कहना उचित होगा सो पवित्र आत्मा उसी घड़ी तुम्हें सिखावेगा ।
१३ भीड़ में से किसी ने उस से कहा हे गुरु मेरे भाई से कहिये
१४ कि पिता का धन मेरे संग बांट लेवे । उस ने उस से कहा हे मनुष्य किस ने मुझे तुम्हों पर न्यायी अथवा बांटनेहारा
१५ ठहराया । और उस ने लोगों से कहा देखो लोभ से बचे

रहो क्योंकि किसी को धन बहुत होय तौभी उस का जीवन उस के धन से नहीं है। उस ने उन्हों से एक दृष्टान्त १६ भी कहा कि किसी धनवान मनुष्य की भूमि में बहुत कुछ उपजा। तब वह अपने मन में बिचार करने लगा कि मैं १७ क्या करूं क्योंकि मुझ को अपना अन्न रखने का स्थान नहीं है। और उस ने कहा मैं यही करूंगा मैं अपनी बखारियां १८ तोड़के बड़ी बड़ी बनाऊंगा और वहां अपना सब अन्न और अपनी सम्पत्ति रखूंगा। और मैं अपने मन से कहूंगा १९ हे मन तेरे पास बहुत बरसों के लिये बहुत सम्पत्ति रखी हुई है विश्राम कर खा पी सुख से रह। परन्तु ईश्वर ने २० उस से कहा हे मूर्ख इसी रात तेरा प्राण तुझ से ले लिया जायगा तब जो कुछ तू ने एकट्ठा किया है सो किस का होगा। जो अपने लिये धन बटोरता है और ईश्वर की २१ ओर धनी नहीं है सो ऐसा ही है।

फिर उस ने अपने शिष्यों से कहा इस लिये मैं तुम से २२ कहता हूं अपने प्राण के लिये चिन्ता मत करो कि हम क्या खायेंगे न शरीर के लिये कि क्या पहिरेंगे। भोजन २३ से प्राण और वस्त्र से शरीर बड़ा है। कौवों को देख लो. २४ वे न बोते हैं न लवते हैं उन को न भंडार न खत्ता है तौभी ईश्वर उन को पालता है. तुम पंछियों से कितने बड़े हो। तुम में से कौन मनुष्य चिन्ता करने से अपनी आयु २५ की दौड़ को एक हाथ भी बढ़ा सकता है। सो यदि तुम २६ अति छोटा काम भी नहीं कर सकते हो तो और बातों के लिये क्यों चिन्ता करते हो। सोसन फूलों को देख लो २७ वे कैसे बढ़ते हैं. वे न परिश्रम करते हैं न कातते हैं परन्तु मैं तुम से कहता हूं कि सुलेमान भी अपने सारे विभव में इन में से एक के तुल्य विभूषित न था। यदि २८

ईश्वर घास को जो आज खेत में है और कल चूल्हे में झोंकी जायगी ऐसी बिभूषित करता है तो हे अल्पबिश्वासियो
२९ कितना अधिक करके वह तुम्हें पहिरावेगा । तुम यह खोज मत करो कि हम क्या खायेंगे अथवा क्या पीयेंगे
३० और न सन्देह करो । जगत के देवपूजक लोग इन सब बस्तुओं का खोज करते हैं और तुम्हारा पिता जानता है
३१ कि तुम्हें इन बस्तुओं का प्रयोजन है । परन्तु ईश्वर के राज्य का खोज करो तब यह सब बस्तु भी तुम्हें दिई
३२ जायेंगीं । हे छोटे झुंड मत डरो क्योंकि तुम्हारे पिता को
३३ तुम्हें राज्य देने में प्रसन्नता है । अपनी सम्पत्ति बेचके दान करो . अजर थैलियां और अक्षय धन अपने लिये स्वर्ग में एकट्ठा करो जहां चोर नहीं पहुंचता है और न कीड़ा
३४ बिगाड़ता है । क्योंकि जहां तुम्हारा धन है तहां तुम्हारा मन भी लगा रहेगा ।

३५ ३६ तुम्हारी कमरें बंधी और दीपक जलते रहें । और तुम उन मनुष्यों के समान होओ जो अपने स्वामी की बाट देखते हैं कि वह बिवाह से कब लौटेगा इस लिये कि जब वह आके द्वार खटखटावे तब वे उस के लिये तुरन्त
३७ खोलें । वे दास धन्य हैं जिन्हें स्वामी आके जागते पावे : मैं तुम से सच कहता हूं वह कमर बांधके उन्हें भोजन पर
३८ बैठावेगा और आके उन की सेवा करेगा । जो वह दूसरे पहर आवे अथवा तीसरे पहर आवे और ऐसा ही पावे
३९ तो वे दास धन्य हैं । तुम यह जानते हो कि यदि घर का स्वामी जानता चोर किस घड़ी आवेगा तो वह जागता
४० रहता और अपने घर में सेंध पड़ने न देता । इस लिये तुम भी तैयार रहो क्योंकि जिस घड़ी का अनुमान तुम
४१ नहीं करते हो उसी घड़ी मनुष्य का पुत्र आवेगा । तब

पितर ने उस से कहा हे प्रभु क्या आप हमों से अथवा सब लोगों से भी यह दृष्टान्त कहते हैं। प्रभु ने कहा वह विश्वास- ४२ योग्य और बुद्धिमान भंडारी कौन है जिसे स्वामी अपने परिवार पर प्रधान करेगा कि समय में उन्हें सीधा देवे। वह दास धन्य है जिसे उस का स्वामी आके ऐसा करते ४३ पावे। मैं तुम से सच कहता हूं वह उसे अपनी सब सम्पत्ति ४४ पर प्रधान करेगा। परन्तु जो वह दास अपने मन में कहे ४५ कि मेरा स्वामी आने में विलंब करता है और दासों और दासियों को मारने लगे और खाने पीने और मतवाला होने लगे. तो जिस दिन वह बाट जोहता न रहे और ४६ जिस घड़ी का वह अनुमान न करे उसी में उस दास का स्वामी आवेगा और उस को बड़ी ताड़ना देके अविश्वासियों के संग उस का अंश देगा। वह दास जो अपने स्वामी की ४७ इच्छा जानता था परन्तु तैयार न रहा और उस की इच्छा के समान न किया बहुत सी मार खायगा परन्तु जो नहीं जानता था और मार खाने के योग्य काम किया सो थोड़ी सी मार खायगा। और जिस किसी को बहुत दिया गया ४८ है उस से बहुत मांगा जायगा और जिस को लोगों ने बहुत सौंपा है उस से वे अधिक मांगेंगे।

मैं पृथिवी पर आग लगाने आया हूं और मैं क्या ४९ चाहता हूं केवल यह कि अभी सुलग जाती। मुझे एक ५० बपतिसमा लेना है और जब लों वह सम्पूर्ण न होय तब लों मैं कैसे सकेते में हूं। क्या तुम समझते हो कि मैं ५१ पृथिवी पर मिलाप करवाने आया हूं. मैं तुम से कहता हूं सो नहीं परन्तु फूट। क्योंकि अब से एक घर में पांच ५२ जन अलग अलग होंगे तीन दो के विरुद्ध और दो तीन के विरुद्ध। पिता पुत्र के विरुद्ध और पुत्र पिता के विरुद्ध मां बेटी ५३

के बिरुद्ध और बेटी मां के बिरुद्ध सास अपनी पतोह के बिरुद्ध और पतोह अपनी सास के बिरुद्ध अलग अलग होंगे।

५४ और भी उस ने लोगों से कहा जब तुम मेघ को पश्चिम से उठते देखते हो तब तुरन्त कहते हो कि झड़ी आती है और

५५ ऐसा होता है। और जब दक्षिण की बयार चलते देखते हो

५६ तब कहते हो कि घाम होगा और वह भी होता है। हे कप-टियो तुम धरती और आकाश का रूप चीन्ह सकते हो परन्तु

५७ इस समय को क्योंकर नहीं चीन्हते हो। और जो उचित है

५८ उस को तुम आप ही से क्यों नहीं बिचार करते हो। जब तू अपने मुद्दई के संग अध्यक्ष के पास जाता है मार्ग ही में उस से छूटने का यत्न कर ऐसा न हो कि वह तुझे न्यायी के पास खींच ले जाय और न्यायी तुझे प्यादे को सौंपे और प्यादा

५९ तुझे बन्दीगृह में डाले। मैं तुझ से कहता हूं कि जब लों तू कौड़ी कौड़ी भर न देवे तब लों वहां से छूटने न पावेगा।

१३ तेरहवां पर्व्व ।

१ पश्चात्ताप करने की आवश्यकता। ६ निष्फल गूलर का दृष्टान्त। १० यीशु का एक कुबड़ी स्त्री को चंगा करना और बिश्रामवार के विषय में निर्णय करना। १८ राई के दाने और खमीर के दृष्टान्त। २२ सकेत फाटक से पैठने का उपदेश। ३१ हेरोद पर उलहना और यिरूशलीम के नाश होने की भविष्यद्वाणी।

१ उस समय में कितने लोग आ पहुंचे और उन गालीलियों के विषय में जिन का लोहू पिलात ने उन के बलिदानों के संग

२ मिलाया था यीशु से बात करने लगे। उस ने उन्हें उत्तर दिया क्या तुम समझते हो कि ये गालीली लोग सब गाली-लियों से अधिक पापी थे कि उन्हों पर ऐसी बिपत्ति पड़ी।

३ मैं तुम से कहता हूं सो नहीं परन्तु जो तुम पश्चात्ताप न

४ करो तो तुम सब उसी रीति से नष्ट होगे। अथवा क्या तुम समझते हो कि वे अठारह जन जिन्हों पर शीलोह में गुम्मट

गिर पड़ा और उन्हें नाश किया सब मनुष्यों से जो यिरू-शलीम में रहते थे अधिक अपराधी थे। मैं तुम से कहता हूं ५ सो नहीं परन्तु जो तुम पश्चात्ताप न करो तो तुम सब उसी रीति से नष्ट होगे।

उस ने यह दृष्टान्त भी कहा कि किसी मनुष्य की दाख की ६ बारी में एक गूलर का वृक्ष लगाया गया था और उस ने आके उस में फल ढूंढ़ा पर न पाया। तब उस ने माली से कहा ७ देख मैं तीन बरस से आके इस गूलर के वृक्ष में फल ढूंढ़ता हूं पर नहीं पाता हूं. उसे काट डाल वह भूमि को क्यों निकम्मी करता है। माली ने उस को उत्तर दिया कि हे ८ स्वामी उस को इस बरस भी रहने दीजिये जब लों मैं उस का थाला खोदके खाद भरूं। तब जो उस में फल ९ लगे तो भला. नहीं तो पीछे उसे कटवा डालिये।

विश्राम के दिन यीशु एक सभा के घर में उपदेश करता १० था। और देखो एक स्त्री थी जिसे अठारह बरस से एक ११ दुर्बल करनेवाला भूत लगा था और वह कुबड़ी थी और किसी रीति से अपने को सीधी न कर सकती थी। यीशु १२ ने उसे देखके अपने पास बुलाया और उस से कहा हे नारी तू अपनी दुर्बलता से छुड़ाई गई है। तब उस ने उस पर १३ हाथ रखा और वह तुरन्त सीधी हुई और ईश्वर की स्तुति करने लगी। परन्तु यीशु ने विश्राम के दिन में चंगा १४ किया इस से सभा का अध्यक्ष रिसियाने लगा और उत्तर दे लोगों से कहा छः दिन हैं जिन में काम करना उचित है सो उन दिनों में आके चंगे किये जाओ और विश्राम के दिन में नहीं। प्रभु ने उस को उत्तर दिया कि हे कपटी क्या १५ विश्राम के दिन तुम्हों में से हर एक अपने बैल अथवा गदहे को थान से खोलके जल पिलाने को नहीं ले जाता। और १६

क्या उचित न था कि यह स्त्री जो इब्राहीम की पुत्री है जिसे शैतान ने देखो अठारह बरस से बांध रखा था बिश्राम
१७ के दिन में इस बंधन से खोली जाय। जब उस ने यह बातें कहीं तब उस के सब बिरोधी लज्जित हुए और समस्त लोग सब प्रताप के कर्म्मों के लिये जो वह करता था आनन्दित हुए।
१८ फिर उस ने कहा ईश्वर का राज्य किस के समान है और
१९ मैं उस की उपमा किस से देऊंगा। वह राई के एक दाने की नाईं है जिसे किसी मनुष्य ने लेके अपनी बारी में बोया और वह बढ़ा और बड़ा पेड़ हो गया और आकाश के
२० पंछियों ने उस की डालियों पर बसेरा किया। उस ने फिर
२१ कहा मैं ईश्वर के राज्य की उपमा किस से देऊंगा। वह खमीर की नाईं है जिस को किसी स्त्री ने लेके तीन पसेरी आटे में छिपा रखा यहां लों कि सब खमीर हो गया।
२२ वह उपदेश करता हुआ नगर नगर और गांव गांव
२३ होके यिरूशलीम की ओर जाता था। तब किसी ने उस से
२४ कहा हे प्रभु क्या त्राण पानेहारे थोड़े हैं। उस ने उन्हों से कहा सकेत फाटक से प्रवेश करने को साहस करो क्योंकि मैं तुम से कहता हूं कि बहुत लोग प्रवेश करने चाहेंगे
२५ और नहीं सकेंगे। जब घर का स्वामी उठके द्वार मूंद चुकेगा और तुम बाहर खड़े हुए द्वार खटखटाने लगोगे और कहोगे हे प्रभु हे प्रभु हमारे लिये खोलिये और वह तुम्हें उत्तर देगा मैं तुम्हें नहीं जानता हूं तुम कहां के हो.
२६ तब तुम कहने लगोगे कि हम लोग आप के साम्ने खाते औ पीते थे और आप ने हमारी सड़कों में उपदेश किया।
२७ परन्तु वह कहेगा मैं तुम से कहता हूं मैं तुम्हें नहीं जानता हूं तुम कहां के हो. हे कुकर्म्म करनेहारो तुम सब मुझ से
२८ दूर होओ। वहां रोना औ दांत पीसना होगा कि उस

समय तुम इब्राहीम और इसहाक़ और याकूब और सब भविष्यद्वक्ताओं को ईश्वर के राज्य में बैठे हुए और अपने को बाहर निकाले हुए देखोगे। और लोग पूर्व्व और २९ पश्चिम और उत्तर और दक्षिण से आके ईश्वर के राज्य में बैठेंगे। और देखो कितने पिछले हैं जो अगले होंगे और ३० कितने अगले हैं जो पिछले होंगे।

उसी दिन कितने फरीशियों ने आके उस से कहा यहां से ३१ निकलके चला जा क्योंकि हेरोद तुझे मार डालने चाहता है। उस ने उन से कहा जाके उस लोमड़ी से कहो कि देखो मैं आज ३२ और कल भूतों को निकालता और रोगियों को चंगा करता हूं और तीसरे दिन सिद्ध होंगा। तौभी आज और कल और ३३ परसों फिरना मुझे अवश्य है क्योंकि हो नहीं सकता कि कोई भविष्यद्वक्ता यिरूशलीम के बाहर नाश किया जाय। हे यिरू- ३४ शलीम यिरूशलीम जो भविष्यद्वक्ताओं को मार डालती है और जो तेरे पास भेजे गये हैं उन्हें पत्थरवाह करती है जैसे मुर्गी अपने बच्चों को पंखों के नीचे एकट्ठे करती है वैसे ही मैं ने कितनी बेर तेरे बालकों को एकट्ठे करने की इच्छा किई परन्तु तुम ने न चाहा। देखो तुम्हारा घर तुम्हारे लिये उजाड़ छोड़ा ३५ जाता है और मैं तुम से सच कहता हूं जिस समय में तुम कहोगे धन्य वह जो परमेश्वर के नाम से आता है वह समय जब लों न आवे तब लों तुम मुझे फिर न देखोगे।

१४ चौदहवां पर्व्व।

१ यीशु का विश्राम के दिन में एक जलंधरी को चंगा करना। ७ नेवतहरियों के दृष्टान्त से नम्र होने का उपदेश। १२ नेवता करने के दृष्टान्त से परोपकार का उपदेश। १५ बियारी का दृष्टान्त। २५ यीशु के शिष्य होने में जो दुःख सहना होगा उसे आगे से सोचने का उपदेश।

जब यीशु विश्राम के दिन प्रधान फरीशियों में से किसी १

२ के घर में रोटी खाने को गया तब वे उस को ताकते थे। और देखो एक मनुष्य उस के साम्हने था जिसे जलंधर रोग था।
३ इस पर यीशु ने व्यवस्थापकों और फरीशियों से कहा क्या बिश्राम के दिन में चंगा करना उचित है. परन्तु वे चुप रहे।
४ तब उस ने उस मनुष्य को लेके चंगा करके बिदा किया.
५ और उन्हें उत्तर दिया कि तुम में से किस का गदहा अथवा बैल कूए में गिरेगा और वह तुरन्त बिश्राम के दिन में उसे न
६ निकालेगा। वे उस को इन बातों का उत्तर नहीं दे सके।
७ जब उस ने देखा कि नेवतहरी लोग क्योंकर ऊंचे ऊंचे
८ स्थान चुन लेते हैं तब एक दृष्टान्त दे उन्हों से कहा. जब कोई तुझे बिवाह के भोज में बुलावे तब ऊंचे स्थान में मत बैठ ऐसा न हो कि उस ने तुझ से अधिक आदर के योग्य
९ किसी को बुलाया हो. और जिस ने तुझे और उसे नेवता दिया सो आके तुझ से कहे कि इस मनुष्य को स्थान दीजिये और तब तू लज्जित हो सब से नीचा स्थान लेने लगे।
१० परन्तु जब तू बुलाया जाय तब सब से नीचे स्थान में जाके बैठ इस लिये कि जब वह जिस ने तुझे नेवता दिया है आवे तब तुझ से कहे हे मित्र और ऊपर आइये. तब तेरे
११ संग बैठनेहारों के साम्ने तेरा आदर होगा। क्योंकि जो कोई अपने को ऊंचा करे सो नीचा किया जायगा और जो अपने को नीचा करे सो ऊंचा किया जायगा।
१२ तब जिस ने उसे नेवता दिया था उस ने उस से भी कहा जब तू दिन का अथवा रात का भोजन बनावे तब अपने मित्रों वा अपने भाइयों वा अपने कुटुंबों वा धनवान पड़ोसियों को मत बुला ऐसा न हो कि वे भी इस के बदले
१३ तुझे नेवता देवें और यही तेरा प्रतिफल होय। परन्तु जब तू भोज करे तब कंगालों टुंडों लंगड़ों और अन्धों को

वुला। और तू धन्य होगा क्योंकि वे तुझे प्रतिफल नहीं १४ दे सकते हैं परन्तु धर्म्मियों के जी उठने पर प्रतिफल तुझ को दिया जायगा।

उस के संग बैठनेहारों में से एक ने यह बातें सुनके उस से १५ कहा धन्य वह जो ईश्वर के राज्य में रोटी खायगा। उस १६ ने उस से कहा किसी मनुष्य ने बड़ी बियारी बनाई और बहुतों को वुलाया। बियारी के समय में उस ने अपने दास १७ के हाथ नेवतहरियों को कहला भेजा कि आओ सब कुछ अब तैयार है। परन्तु वे सब एक मत होके क्षमा मांगने १८ लगे . पहिले ने उस दास से कहा मैं ने कुछ भूमि मोल लिई है और उसे जाके देखना मुझे अवश्य है मैं तुझ से विन्ती करता हूं मुझे क्षमा करवा। दूसरे ने कहा मैं ने १९ पांच जोड़े बैल मोल लिये हैं और उन्हें परखने को जाता हूं मैं तुझ से विन्ती करता हूं मुझे क्षमा करवा। तीसरे २० ने कहा मैं ने विवाह किया है इस लिये मैं नहीं आ सकता हूं। उस दास ने आके अपने स्वामी को यह बातें सुनाईं २१ तब घर के स्वामी ने क्रोध कर अपने दास से कहा नगर की सड़कों और गलियों में शीघ्र जाके कंगालों औ टुंडों औ लंगड़ों और अन्धों को यहां ले आ। दास ने फिर कहा हे २२ स्वामी जैसे आप ने आज्ञा दिई तैसे किया गया है और अब भी जगह है। स्वामी ने दास से कहा राजपथों में और २३ गाछों के नीचे जाके लोगों को बिन लाने से मत छोड़ कि मेरा घर भर जावे। क्योंकि मैं तुम से कहता हूं कि उन २४ नेवते हुए मनुष्यों में से कोई मेरी बियारी न चीखेगा।

बड़ी भीड़ यीशु के संग जाती थी और उस ने पीछे फिरके २५ उन्हों से कहा . यदि कोई मेरे पास आवे और अपनी २६ माता और पिता और स्त्री और लड़कों और भाइयों

और बहिनों को हां और अपने प्राण को भी अप्रिय न जाने
२७ तो वह मेरा शिष्य नहीं हो सकता है । और जो कोई
अपना क्रूश उठाये हुए मेरे पीछे न आवे वह मेरा शिष्य
२८ नहीं हो सकता है । तुम में से कौन है कि गढ़ बनाने
चाहता हो और पहिले बैठके खर्च न जोड़े कि समाप्ति
२९ करने की बिसात मुझे है कि नहीं । ऐसा न हो कि जब
वह नेव डालके समाप्ति न कर सके तब सब देखनेहारे
३० उसे ठट्ठे में उड़ाने लगें . और कहें यह मनुष्य बनाने लगा
३१ परन्तु समाप्ति नहीं कर सका । अथवा कौन राजा है कि
दूसरे राजा से लड़ाई करने को जाता हो और पहिले बैठके
बिचार न करे कि जो बीस सहस्र लेके मेरे बिरुद्ध आता
है मैं दस सहस्र लेके उस का साम्हना कर सकता हूं कि
३२ नहीं । और जो नहीं तो उस के दूर रहते ही वह दूतों
३३ को भेजके मिलाप चाहता है । इसी रीति से तुम्हों में से
जो कोई अपना सर्बस्व त्यागन न करे वह मेरा शिष्य
३४ नहीं हो सकता है । लोण अच्छा है परन्तु यदि लोण का
स्वाद बिगड़ जाय तो वह किस से स्वादित किया जायगा ।
३५ वह न भूमि के न खाद के लिये काम आता है . लोग उसे
बाहर फेंकते हैं . जिस को सुनने के कान हों सो सुने ।

१५ पन्द्रहवां पर्ब्ब ।

१ खोई हुई भेड़ और खोई हुई सूकी के दृष्टान्त । ११ उड़ाऊ पुत्र का दृष्टान्त ।

१　कर उगाहनेहारे और पापी लोग सब यीशु पास आते
२ थे कि उस की सुनें । और फरीशी और अध्यापक कुड़-
कुड़ाके कहने लगे यह तो पापियों को ग्रहण करता और
३ उन के संग खाता है । तब उस ने उन्हों से यह दृष्टान्त
४ कहा . तुम में से कौन मनुष्य है कि उस की सौ भेड़ हों

और उस ने उन में से एक को खोया हो और वह निन्नानवे को जंगल में न छोड़े और जब लों उस खोई हुई को न पावे तब लों उस के खोज में न जाय। और वह उसे पाके आनन्द ५ से अपने कांधों पर रखता है. और घर में आके मित्रों औ ६ पड़ोसियों को एकट्ठे बुलाके उन्हों से कहता है मेरे संग आनन्द करो कि मैं ने अपनी खोई हुई भेड़ पाई है। मैं ७ तुम से कहता हूं कि इसी रीति से जिन्हें पश्चात्ताप करने का प्रयोजन न होय ऐसे निन्नानवे धर्म्मियों से अधिक एक पापी के लिये जो पश्चात्ताप करे स्वर्ग में आनन्द होगा।

अथवा कौन स्त्री है कि उस की दस सूकी हों और ८ वह जो एक सूकी खोवे तो दीपक बारके औ घर बुहार के उसे जब लों न पावे तब लों यत्न से न ढूंढ़े। और वह ९ उसे पाके सखियों औ पड़ोसिनियों को एकट्ठी बुलाके कहती है मेरे संग आनन्द करो कि मैं ने जो सूकी खोई थी सो पाई है। मैं तुम से कहता हूं कि इसी रीति से एक पापी १० के लिये जो पश्चात्ताप करता है ईश्वर के दूतों में आनन्द होता है।

फिर उस ने कहा किसी मनुष्य के दो पुत्र थे। उन में से ११ १२ छुटके ने पिता से कहा हे पिता सम्पत्ति में से जो मेरा अंश होय सो मुझे दीजिये. तब उस ने उन को अपनी सम्पत्ति बांट दिई। बहुत दिन नहीं बीते कि छुटका पुत्र सब १३ कुछ एकट्ठा करके दूर देश चला गया और वहां लुचपन में दिन बिताते हुए अपनी सम्पत्ति उड़ा दिई। जब वह १४ सब कुछ उठा चुका तब उस देश में बड़ा अकाल पड़ा और वह कंगाल हो गया। और वह जाके उस देश के निवा- १५ सियों में से एक के यहां रहने लगा जिस ने उसे अपने खेतों में सूअर चराने को भेजा। और वह उन छीमियों से जिन्हें १६

सूअर खाते थे अपना पेट भरने चाहता था और कोई
१७ नहीं उस को कुछ देता था। तब उसे चेत हुआ और उस
ने कहा मेरे पिता के कितने मजूरों को भोजन से अधिक
१८ रोटी होती है और मैं भूख से मरता हूं। मैं उठके अपने
पिता पास जाऊंगा और उस से कहूंगा हे पिता मैं ने स्वर्ग
१९ के बिरुद्ध और आप के साम्ने पाप किया है। मैं फिर आप
का पुत्र कहावने के योग्य नहीं हूं मुझे अपने मजूरों में से
२० एक के समान कीजिये। तब वह उठके अपने पिता पास
चला पर वह दूर ही था कि उस के पिता ने उसे देखके
दया किई और दौड़के उस के गले में लिपटके उसे चूमा।
२१ पुत्र ने उस से कहा हे पिता मैं ने स्वर्ग के बिरुद्ध और आप
के साम्ने पाप किया है और फिर आप का पुत्र कहावने के
२२ योग्य नहीं हूं। परन्तु पिता ने अपने दासों से कहा सब से
उत्तम वस्त्र निकालके उसे पहिनाओ और उस के हाथ में
२३ अंगूठी और पांवों में जूते पहिनाओ। और मोटा बछड़ू
२४ लाके मारो और हम खावें और आनन्द करें। क्योंकि
यह मेरा पुत्र मूआ था फिर जीआ है खो गया था फिर
२५ मिला है. तब वे आनन्द करने लगे। उस का जेठा पुत्र
खेत में था और जब वह आते हुए घर के निकट पहुंचा
२६ तब बाजा और नाच का शब्द सुना। और उस ने अपने
सेवकों में से एक को अपने पास बुलाके पूछा यह क्या है।
२७ उस ने उस से कहा आप का भाई आया है और आप के पिता
ने मोटा बछड़ू मारा है इस लिये कि उसे भला चंगा पाया
२८ है। परन्तु उस ने क्रोध किया और भीतर जाने न चाहा
२९ इस लिये उस का पिता बाहर आ उसे मनाने लगा। उस
ने पिता को उत्तर दिया कि देखिये मैं इतने बरसों से आप
की सेवा करता हूं और कभी आप की आज्ञा को उल्लंघन

न किया और आप ने मुझे कभी एक मेम्ना भी न दिया
कि मैं अपने मित्रों के संग आनन्द करता। परन्तु आप का ३०
यह पुत्र जो वेश्याओं के संग आप की सम्पत्ति खा गया है
ज्यों ही आया त्यों ही आप ने उस के लिये मोटा बछड़ू
मारा है। पिता ने उस से कहा हे पुत्र तू सदा मेरे संग ३१
है और जो कुछ मेरा है सो सब तेरा है। परन्तु आनन्द ३२
करना और हर्षित होना उचित था क्योंकि यह तेरा भाई
मूआ था फिर जीआ है खो गया था फिर मिला है।

१६ सोलहवां पर्ब्ब ।

१ चतुर भंडारी का दृष्टान्त। १० अनेक बातों का उपदेश। १९ धनवान और भिखारी का दृष्टान्त।

यीशु ने अपने शिष्यों से भी कहा कोई धनवान मनुष्य १
था जिस का एक भंडारी था और यह दोष उस के आगे
भंडारी पर लगाया गया कि वह आप की सम्पत्ति उड़ा
देता है। उस ने उसे बुलाके उस से कहा यह क्या है जो २
मैं तेरे विषय में सुनता हूं. अपने भंडारपन का लेखा दे
क्योंकि तू आगे को भंडारी नहीं रह सकेगा। तब भंडारी ३
ने अपने मन में कहा मैं क्या करूं कि मेरा स्वामी भंडारी
का काम मुझ से छीन लेता है. मैं कोड़ नहीं सकता हूं
और भीख मांगने से मुझे लाज आती है। मैं जानता हूं ४
मैं क्या करूंगा इस लिये कि जब मैं भंडारपन से छुड़ाया
जाऊं तब लोग मुझे अपने घरों में ग्रहण करें। और उस ने ५
अपने स्वामी के ऋणियों में से एक एक को अपने पास बुलाके
पहिले से कहा तू मेरे स्वामी का कितना धारता है। उस ६
ने कहा सौ मन तेल. वह उस से बोला अपना पत्र ले
और बैठके शीघ्र पचास मन लिख। फिर दूसरे से कहा ७
तू कितना धारता है. उस ने कहा सौ मन गेहूं. वह

८ उस से बोला अपना पत्र ले और अस्सी मन लिख। स्वामी ने उस अधर्म्मी भंडारी को सराहा कि इस ने बुद्धि का काम किया है . क्योंकि इस संसार के सन्तान अपने समय के लोगों के विषय में ज्योति के सन्तानों से अधिक बुद्धिमान हैं।
९ और मैं तुम्हों से कहता हूं कि अधर्म्म के धन के द्वारा अपने लिये मित्र कर लो कि जब तुम छूट जावो तब वे तुम्हें अनन्त निवासों में ग्रहण करें।

१० जो अति थोड़े में बिश्वासयोग्य है सो बहुत में भी बिश्वासयोग्य है और जो अति थोड़े में अधर्म्मी है सो बहुत
११ में भी अधर्म्मी है। इस लिये जो तुम अधर्म्म के धन में बिश्वासयोग्य न हुए हो तो सच्चा धन तुम्हें कौन सोंपेगा।
१२ और जो तुम पराये धन में बिश्वासयोग्य न हुए हो तो
१३ तुम्हारा धन तुम्हें कौन देगा। कोई सेवक दो स्वामियों की सेवा नहीं कर सकता है क्योंकि वह एक से बैर करेगा और दूसरे को प्यार करेगा अथवा एक से लगा रहेगा और दूसरे को तुच्छ जानेगा . तुम ईश्वर और धन दोनों की सेवा नहीं कर सकते हो।

१४ फरीशियों ने भी जो लोभी थे यह सब बातें सुनीं और
१५ उस का ठट्ठा किया। उस ने उन्हों से कहा तुम तो मनुष्यों के आगे अपने को धर्म्मी ठहराते हो परन्तु ईश्वर तुम्हारे मन को जानता है . जो मनुष्यों के लेखे महान है सो ईश्वर
१६ के आगे घिनित है। व्यवस्था और भविष्यद्वक्ता लोग योहन लों थे तब से ईश्वर के राज्य का सुसमाचार सुनाया जाता है और सब कोई उस में बरियाई से प्रवेश करते हैं।
१७ व्यवस्था के एक बिन्दु के लोप होने से आकाश औ पृथिवी
१८ का टल जाना सहज है। जो कोई अपनी स्त्री को त्याग के दूसरी से बिवाह करे सो परस्त्रीगमन करता है और

जो स्त्री अपने स्वामी से त्यागी गई है उस से जो कोई विवाह करे सो परस्त्रीगमन करता है।

एक धनवान मनुष्य था जो बैंजनी वस्त्र और मलमल १९ पहिनता और प्रतिदिन विभव और सुख से रहता था। और इलियाजर नाम एक कंगाल उस की डेवढ़ी पर डाला २० गया था जो घावों से भरा हुआ था . और उन चूरचारों २१ से जो धनवान की मेज से गिरते थे पेट भरने चाहता था और कुत्ते भी आके उस के घावों को चाटते थे। वह कंगाल २२ मर गया और दूतों ने उस को इब्राहीम की गोद में पहुंचाया और वह धनवान भी मरा और गाड़ा गया। और परलोक में २३ उस ने पीड़ा में पड़े हुए अपनी आंखें उठाईं और दूर से इब्राहीम को और उस की गोद में इलियाजर को देखा। तब वह पुकारके २४ बोला हे पिता इब्राहीम मुझ पर दया करके इलियाजर को भेजिये कि अपनी उंगली का छोर पानी में डुबोके मेरी जीभ को ठंढी करे क्योंकि मैं इस ज्वाला में कलपता हूं। परन्तु २५ इब्राहीम ने कहा हे पुत्र स्मरण कर कि तू अपने जीते जी अपनी सम्पत्ति पा चुका है और वैसा ही इलियाजर विपत्ति परन्तु अब वह शांति पाता है और तू कलपता है। और भी हमारे और तुम्हारे बीच में बड़ा अन्तर ठहराया २६ गया है कि जो लोग इधर से उस पार तुम्हारे पास जाया चाहें सो नहीं जा सकें और न उधर के लोग इस पार हमारे पास आवें। उस ने कहा तब हे पिता मैं आप से २७ बिन्ती करता हूं उसे मेरे पिता के घर भेजिये . क्योंकि २८ मेरे पांच भाई हैं वह उन्हें साक्षी देवे ऐसा न हो कि वे भी इस पीड़ा के स्थान में आवें। इब्राहीम ने उस से कहा २९ मूसा और भविष्यद्वक्ताओं के पुस्तक उन के पास हैं वे उन की सुनें। वह बोला हे पिता इब्राहीम सो नहीं परन्तु ३०

यदि मृतकों में से कोई उन के पास जाय तो वे पश्चात्ताप
३१ करेंगे। उस ने उस से कहा जो वे मूसा और भविष्यद्वक्ताओं
की नहीं सुनते हैं तो यदि मृतकों में से कोई जी उठे तौभी
नहीं मानेंगे।

१७ सत्रहवां पर्ब्ब ।

१ ठोकर खिलाने का निषेध । ३ क्षमा करने का उपदेश और बिश्वास के गुण का बखान । ७ दास के दृष्टान्त से अभिमान का निषेध । ११ यीशु का दस कोढ़ियों को चंगा करना । २० ईश्वर के राज्य के आने का बर्णन । २२ मनुष्य के पुत्र के आने का बर्णन और जलप्रलय से और सदोम के बिनाश से उस समय की उपमा ।

१ यीशु ने शिष्यों से कहा ठोकरों का न लगना अन्होना है
२ परन्तु हाय वह मनुष्य जिस के द्वारा से वे लगती हैं। इन
छोटों में से एक को ठोकर खिलाने से उस के लिये भला होता
कि चक्की का पाट उस के गले में बांधा जाता और वह
समुद्र में डाला जाता।

३ अपने विषय में सचेत रहो. यदि तेरा भाई तेरा
अपराध करे तो उस को समझा दे और यदि पछतावे तो
४ उसे क्षमा कर। जो वह दिन भर में सात बेर तेरा अपराध
करे और सात बेर दिन भर में तेरी ओर फिरके कहे मैं
५ पछताता हूं तो उसे क्षमा कर। तब प्रेरितों ने प्रभु से कहा
६ हमारा बिश्वास बढ़ाइये। प्रभु ने कहा यदि तुम को राई
के एक दाने के तुल्य बिश्वास होता तो तुम इस गूलर के
वृक्ष से जो कहते कि उखड़ जा और समुद्र में लग जा वह
तुम्हारी आज्ञा मानता।

७ तुम में से कौन है कि उस का दास हल जोतता अथवा
चरवाही करता हो और ज्यों ही वह खेत से आवे त्यों ही
८ उस से कहेगा तुरन्त आ भोजन पर बैठ। क्या वह उस से
न कहेगा मेरी बियारी बनाके जब लों मैं खाऊं और पीऊं

तब लों कमर बांधके मेरी सेवा कर और इस के पीछे तू खायगा और पीयेगा। क्या उस दास का उस पर कुछ ९ निहोरा हुआ कि उस ने वह काम किया जिस की आज्ञा उस को दिई गई. मैं ऐसा नहीं समझता हूं। इस रीति से १० तुम भी जब सब काम कर चुको जिस की आज्ञा तुम्हें दिई गई है तब कहो हम निकम्मे दास हैं कि जो हमें करना उचित था सोई भर किया है।

यीशु यिरूशलीम को जाते हुए शोमिरोन और गालील ११ के बीच में से होके जाता था। जब वह किसी गांव में प्रवेश १२ करता था तब दस कोढ़ी उस के सन्मुख आ दूर खड़े हुए। और वे ऊंचे शब्द से बोले हे यीशु गुरु हम पर दया कीजिये। १३ यह देखके उस ने उन्हों से कहा जाके अपने तईं याजकों १४ को दिखाओ. जाते हुए वे शुद्ध किये गये। तब उन में १५ से एक ने जब देखा कि मैं चंगा हुआ हूं बड़े शब्द से ईश्वर की स्तुति करता हुआ फिर आया. और यीशु का धन्य १६ मानते हुए उस के चरणों पर मुंह के बल गिरा. और वह शोमिरोनी था। इस पर यीशु ने कहा क्या दसों शुद्ध न किये १७ गये तो नौ कहां हैं। क्या इस अन्यदेशी को छोड़ कोई नहीं १८ ठहरे जो ईश्वर की स्तुति करने को फिर आवें। तब उस ने १९ उस से कहा उठ चला जा तेरे विश्वास ने तुझे बचाया है।

जब फरीशियों ने उस से पूछा कि ईश्वर का राज्य कब २० आवेगा तब उस ने उन्हों को उत्तर दिया कि ईश्वर का राज्य प्रत्यक्ष रूप से नहीं आता है. और न लोग कहेंगे २१ देखो यहां है अथवा देखो वहां है क्योंकि देखो ईश्वर का राज्य तुम्हों में है।

उस ने शिष्यों से कहा वे दिन आवेंगे जिन में तुम मनुष्य २२ के पुत्र के दिनों में से एक दिन देखने चाहोगे पर न

२३ देखोगे । लोग तुम्हों से कहेंगे देखो यहां है अथवा देखो वहां है पर तुम मत जाओ और न उन के पीछे हो लेओ ।
२४ क्योंकि जैसे बिजली जो आकाश की एक ओर से चमकती है आकाश की दूसरी ओर तक ज्योति देती है वैसा ही
२५ मनुष्य का पुत्र भी अपने दिन में होगा । परन्तु पहिले उस को अवश्य है कि बहुत दुःख उठावे और इस समय के
२६ लोगों से तुच्छ किया जाय । जैसा नूह के दिनों में हुआ
२७ वैसा ही मनुष्य के पुत्र के दिनों में भी होगा । जिस दिन लों नूह जहाज पर न चढ़ा उस दिन लों लोग खाते पीते बिवाह करते औा बिवाह दिये जाते थे . तब उस दिन
२८ जलप्रलय ने आके उन सभों को नाश किया । और जिस रीति से लूत के दिनों में हुआ कि लोग खाते पीते मोल
२९ लेते बेचते बोते औा घर बनाते थे . परन्तु जिस दिन लूत सदोम से निकला उस दिन आग और गन्धक आकाश
३० से बरसी और उन सभों को नाश किया . उसी रीति से
३१ मनुष्य के पुत्र के प्रगट होने के दिन में होगा । उस दिन में जो कोठे पर हो और उस की सामग्री घर में होय सो उसे लेने को न उतरे और वैसे ही जो खेत में हो सो पीछे न
३२ ३३ फिरे । लूत की स्त्री को स्मरण करो । जो कोई अपना प्राण बचाने चाहे सो उसे खोवेगा और जो कोई उसे
३४ खोवे सो उस की रक्षा करेगा । मैं तुम से कहता हूं उस रात में दो मनुष्य एक खाट पर होंगे एक लिया जायगा और
३५ दूसरा छोड़ा जायगा । दो स्त्रियां एक संग चक्की पीसती
३६ रहेंगीं एक लिई जायगी और दूसरी छोड़ी जायगी । दो जन खेत में होंगे एक लिया जायगा और दूसरा छोड़ा
३७ जायगा । उन्हों ने उस को उत्तर दिया हे प्रभु कहां . उस ने उन से कहा जहां लोथ होय तहां गिद्ध एकट्ठे होंगे ।

१८ अठारहवां पर्व्व ।

१ अधर्म्मी विचारकर्त्ता के पास विधवा की प्रार्थना का दृष्टान्त । ९ फरीशी और कर उगाहनेहारे का दृष्टान्त । १५ यीशु का बालकों को आशीस देना । १८ एक धनवान अध्यान से उस की बातचीत । २४ धनी लोगों की दशा का वर्णन । २८ शिष्यों के फल की प्रतिज्ञा । ३१ यीशु का अपनी मृत्यु का भविष्यद्वाक्य कहना । ३५ एक अंधे के नेत्र खोलना ।

नित्य प्रार्थना करने और साहस न छोड़ने की आव- १ श्यकता के विषय में यीशु ने उन्हों से एक दृष्टान्त कहा . कि २ किसी नगर में एक विचारकर्त्ता था जो न ईश्वर से डरता न मनुष्य को मानता था । और उसी नगर में एक विधवा ३ थी जिस ने उस पास आ कहा मेरे मुद्दई से मेरा पलटा लीजिये । उस ने कितनी बेर लों न माना परन्तु पीछे अपने ४ मन में कहा यद्यपि मैं न ईश्वर से डरता न मनुष्य को मानता हूं . तौभी यह विधवा मुझे दुःख देती है इस ५ कारण मैं उस का पलटा लेऊंगा ऐसा न हो कि नित्य नित्य आने से वह मेरे मुंह में कालिख लगावे । तब प्रभु ने ६ कहा सुनो यह अधर्म्मी विचारकर्त्ता क्या कहता है । और ७ ईश्वर यद्यपि अपने चुने हुए लोगों के विषय में जो रात दिन उस पास पुकारते हैं धीरज धरे तौभी क्या उन का पलटा न लेगा । मैं तुम से कहता हूं वह शीघ्र उन का ८ पलटा लेगा तौभी मनुष्य का पुत्र जब आवेगा तब क्या पृथिवी पर विश्वास पावेगा ।

और उस ने कितनों से जो अपने पर भरोसा रखते थे ९ कि हम धर्म्मी हैं और औरों को तुच्छ जानते थे यह दृष्टान्त कहा । दो मनुष्य मन्दिर में प्रार्थना करने को गये एक १० फरीशी और दूसरा कर उगाहनेहारा । फरीशी ने अलग ११ खड़ा हो यह प्रार्थना किई कि हे ईश्वर मैं तेरा धन्य

मानता हूं कि मैं और मनुष्यों के समान नहीं हूं जो उपद्रवी अन्यायी और परस्त्रीगामी हैं और न इस कर
१२ उगाहनेहारे के समान । मैं अठवारे में दो बार उपवास करता हूं मैं अपनी सब कमाई का दसवां अंश देता हूं ।
१३ कर उगाहनेहारे ने दूर खड़ा हो स्वर्ग की ओर आंखें उठाने भी न चाहा परन्तु अपनी छाती पीटके कहा हे ईश्वर
१४ मुझ पापी पर दया कर। मैं तुम से कहता हूं कि वह दूसरा नहीं पर यही मनुष्य धर्म्मी ठहराया हुआ अपने घर को गया क्योंकि जो कोई अपने को ऊंचा करे सो नीचा किया जायगा और जो अपने को नीचा करे सो ऊंचा किया जायगा ।

१५ लोग कितने बालकों को भी यीशु पास लाये कि वह
१६ उन्हें छूवे परन्तु शिष्यों ने यह देखके उन्हें डांटा । यीशु ने बालकों को अपने पास बुलाके कहा बालकों को मेरे पास आने दो और उन्हें मत बर्जो क्योंकि ईश्वर का राज्य
१७ ऐसों का है। मैं तुम से सच कहता हूं कि जो कोई ईश्वर के राज्य को बालक की नाईं ग्रहण न करे वह उस में प्रवेश करने न पावेगा ।

१८ किसी प्रधान ने उस से पूछा हे उत्तम गुरु कौन काम
१९ करने से मैं अनन्त जीवन का अधिकारी होंगा। यीशु ने उस से कहा तू मुझे उत्तम क्यों कहता है . कोई उत्तम नहीं
२० है केवल एक अर्थात ईश्वर । तू आज्ञाओं को जानता है कि परस्त्रीगमन मत कर नरहिंसा मत कर चोरी मत कर झूठी साक्षी मत दे अपनी माता और अपने पिता
२१ का आदर कर। उस ने कहा इन सभों को मैं ने अपने लड़क-
२२ पन से पालन किया है। यीशु ने यह सुनके उस से कहा तुझे अब भी एक बात की घटी है . जो कुछ तेरा है सो बेचके कंगालों को बांट दे और तू स्वर्ग में धन पावेगा और

आ मेरे पीछे हो ले। वह यह सुनके अति उदास हुआ २३
क्योंकि वह बड़ा धनी था।

यीशु ने उसे अति उदास देखके कहा धनवानों को २४
ईश्वर के राज्य में प्रवेश करना कैसा कठिन होगा। ईश्वर २५
के राज्य में धनवान के प्रवेश करने से ऊंट का सूई के नाके में
से जाना सहज है। सुननेहारों ने कहा तब तो किस का २६
त्राण हो सकता है। उस ने कहा जो बातें मनुष्यों से २७
अन्होनी हैं सो ईश्वर से हो सकती हैं।

पितर ने कहा देखिये हम लोग सब कुछ छोड़के आप के २८
पीछे हो लिये हैं। उस ने उन से कहा मैं तुम से सच कहता २९
हूं कि जिस ने ईश्वर के राज्य के लिये घर वा माता पिता
वा भाइयों वा स्त्री वा लड़कों को त्यागा हो . ऐसा कोई ३०
नहीं है जो इस समय में बहुत गुण अधिक और परलोक
में अनन्त जीवन न पावेगा।

यीशु ने बारह शिष्यों को लेके उन से कहा देखो हम ३१
यिरूशलीम को जाते हैं और जो कुछ मनुष्य के पुत्र के विषय
में भविष्यद्वक्ताओं से लिखा गया है सो सब पूरा किया
जायगा। वह अन्यदेशियों के हाथ सौंपा जायगा और ३२
उस से ठट्ठा और अपमान किया जायगा और वे उस पर
थूकेंगे . और उसे कोड़े मारके घात करेंगे और वह तीसरे ३३
दिन जी उठेगा। उन्हों ने इन बातों में से कोई बात न ३४
समझी और यह बात उन से गुप्त रही और जो कहा जाता
था सो वे नहीं बूझते थे।

जब वह यिरीहो नगर के निकट आता था तब एक ३५
अन्धा मनुष्य मार्ग की ओर बैठा भीख मांगता था। जब ३६
उस ने सुना कि बहुत लोग साम्ने से जाते हैं तब पूछा यह
क्या है। लोगों ने उस को बताया कि यीशु नासरी जाता है। ३७

३८ तब उस ने पुकारके कहा हे यीशु दाऊद के सन्तान मुझ पर
३९ दया कीजिये। जो लोग आगे जाते थे उन्हों ने उसे डांटा
कि वह चुप रहे परन्तु उस ने बहुत अधिक पुकारा हे
४० दाऊद के सन्तान मुझ पर दया कीजिये। तब यीशु खड़ा
रहा और उसे अपने पास लाने की आज्ञा किई और जब
४१ वह निकट आया तब उस से पूछा. तू क्या चाहता है
कि मैं तेरे लिये करूं. वह बोला हे प्रभु मैं अपनी दृष्टि
४२ पाऊं। यीशु ने उस से कहा अपनी दृष्टि पा तेरे बिश्वास
४३ ने तुझे चंगा किया है। और वह तुरन्त देखने लगा और
ईश्वर की स्तुति करता हुआ यीशु के पीछे हो लिया और
सब लोगों ने देखके ईश्वर का धन्यबाद किया।

१९ उनीसवां पर्ब्ब ।

१ जक्कई नाम कर उगाहनेहारे का वृत्तान्त। ११ दस मोहर का दृष्टान्त। २८ यीशु का यिरूशलीम में जाना। ४१ उस पर आनेवाली बिपत्ति का भविष्यद्वाक्य कहना। ४५ ब्योपारियों को मन्दिर से निकालना और उपदेश वहां करना।

१ यीशु यिरीहो में प्रवेश करके उस के बीच से होके जाता
२ था। और देखो जक्कई नाम एक मनुष्य था जो कर उगाह-
३ नेहारों का प्रधान था और वह धनवान था। वह यीशु
को देखने चाहता था कि वह कैसा मनुष्य है परन्तु भीड़
४ के कारण नहीं सका क्योंकि नाटा था। तब जिस मार्ग
से यीशु जाने पर था उस में वह आगे दौड़के उसे देखने को
५ एक गूलर के वृक्ष पर चढ़ा। जब यीशु उस स्थान पर पहुंचा
तब ऊपर दृष्टि कर उसे देखा और उस से कहा हे जक्कई
शीघ्र उतर आ क्योंकि आज मुझे तेरे घर में रहना होगा।
६ उस ने शीघ्र उतरके आनन्द से उस की पहुनई किई। यह
७ देखके सब लोग कुड़कुड़ाके बोले वह तो पापी मनुष्य के
८ यहां पाहुन होने गया है। जक्कई ने खड़ा हो प्रभु से कहा

हे प्रभु देखिये मैं अपना आधा धन कंगालों को देता हूं
और यदि झूठे दोष लगाके किसी से कुछ ले लिया है तो
चौगुणा फेर देता हूं। तब यीशु ने उस को कहा आज इस ९
घराने का त्राण हुआ है इस लिये कि यह भी इब्राहीम
का सन्तान है। क्योंकि मनुष्य का पुत्र खोये हुए को ढूंढ़ने १०
और बचाने आया है।

जब लोग यह सुनते थे तब वह एक दृष्टान्त भी कहने ११
लगा इस लिये कि वह यिरूशलीम के निकट था और वे
समझते थे कि ईश्वर का राज्य तुरन्त प्रगट होगा। उस १२
ने कहा एक कुलीन मनुष्य दूर देश को जाता था कि
राजपद पाके फिर आवे। और उस ने अपने दासों में से १३
दस को बुलाके उन्हें दस मोहर देके उन से कहा जब लों
मैं न आऊं तब लों व्योपार करो। परन्तु उस के नगर के १४
निवासी उस से बैर रखते थे और उस के पीछे यह सन्देश
भेजा कि हम नहीं चाहते हैं कि यह हमों पर राज्य करे।
जब वह राजपद पाके फिर आया तब उस ने उन दासों १५
को जिन्हें रोकड़ दिई थी अपने पास बुलाने की आज्ञा
किई जिस्तें वह जाने कि किस ने कौन सा व्योपार किया
है। तब पहिले ने आके कहा हे प्रभु आप की मोहर से दस १६
मोहर लाभ हुईं। उस ने उस से कहा धन्य हे उत्तम दास १७
तू अति थोड़े में विश्वासयोग्य हुआ तू दस नगरों पर
अधिकारी हो। दूसरे ने आके कहा हे प्रभु आप की मोहर १८
से पांच मोहर लाभ हुईं। उस ने उस से भी कहा तू भी १९
पांच नगरों का प्रधान हो। तीसरे ने आके कहा हे प्रभु २०
देखिये आप की मोहर जिसे मैं ने अंगोछे में धर रखा।
क्योंकि मैं आप से डरता था इस लिये कि आप कठोर २१
मनुष्य हैं जो आप ने नहीं धरा सो उठा लेते हैं और जो

२२ आप ने नहीं बोया सो लवते हैं। उस ने उस से कहा हे दुष्ट दास मैं तेरे ही मुंह से तुझे दोषी ठहराऊंगा . तू जानता था कि मैं कठोर मनुष्य हूं जो मैं ने नहीं धरा सो उठा लेता हूं और जो मैं ने नहीं बोया सो लवता हूं।
२३ तो तू ने मेरी रोकड़ कोठी में क्यों नहीं दिई और मैं आके
२४ उसे ब्याज समेत ले लेता। तब जो लोग निकट खड़े थे उस ने उन्हों से कहा वह मोहर उस से लेओ और जिस
२५ पास दस मोहर हैं उस को देओ। उन्हों ने उस से कहा हे
२६ प्रभु उस पास दस मोहर हैं। मैं तुम से कहता हूं जो कोई रखता है उस को और दिया जायगा परन्तु जो नहीं रखता है उस से जो कुछ उस पास है सो भी ले लिया
२७ जायगा। परन्तु मेरे उन बैरियों को जो नहीं चाहते थे कि मैं उन्हों पर राज्य करूं यहां लाके मेरे साम्हने बध करो।

२८ जब यीशु यह बातें कह चुका तब यिरूशलीम को
२९ जाते हुए आगे बढ़ा। और जब वह जैतून नाम पर्ब्बत के निकट बैतफगी और बैथनिया गांवों पास पहुंचा तब
३० उस ने अपने शिष्यों में से दो को यह कहके भेजा . कि जो गांव सन्मुख है उस में जाओ और उस में प्रवेश करते हुए तुम एक गदही के बच्चे को जिस पर कभी कोई मनुष्य नहीं
३१ चढ़ा बंधे हुए पाओगे उसे खोलके लाओ। जो तुम से कोई पूछे तुम उसे क्यों खोलते हो तो उस से यूं कहो
३२ प्रभु को इस का प्रयोजन है। जो भेजे गये थे उन्हों ने जाके
३३ जैसा उस ने उन से कहा वैसा पाया। जब वे बच्चे को खोलते थे तब उस के स्वामियों ने उन से कहा तुम बच्चे को
३४ क्यों खोलते हो। उन्हों ने कहा प्रभु को इस का प्रयोजन
३५ है। सो वे बच्चे को यीशु पास लाये और अपने कपड़े उस

पर डालके यीशु को बैठाया। ज्यों ज्यों वह आगे बढ़ा ३६ त्यों त्यों लोगों ने अपने अपने कपड़े मार्ग में बिछाये। जब ३७ वह निकट आया अर्थात जैतून पर्व्वत के उतार लों पहुंचा तब शिष्यों की सारी मंडली आनन्दित हो सब आश्चर्य्य कर्म्मों के लिये जो उन्हों ने देखे थे बड़े शब्द से ईश्वर की स्तुति करने लगी . कि धन्य वह राजा जो परमेश्वर के ३८ नाम से आता है . स्वर्ग में शांति और सब से ऊंचे स्थान में गुणानुवाद होय। तब भीड़ में से कितने फरीशी लोग उस ३९ से बोले हे गुरु अपने शिष्यों को डांटिये। उस ने उन्हें उत्तर ४० दिया कि मैं तुम से कहता हूं जो ये लोग चुप रहें तो पत्थर पुकार उठेंगे।

जब वह निकट आया तब नगर को देखके उस पर ४१ रोया . और कहा तू भी अपने कुशल की बातें हां अपने ४२ इस दिन में भी जो जानता . परन्तु अब वे तेरे नेत्रों से छिपी हैं। वे दिन तुझ पर आवेंगे कि तेरे शत्रु तुझ पर ४३ मोर्चा बांधेंगे और तुझे घेरेंगे और चारों ओर रोक रखेंगे . और तुझ को औ तुझ में तेरे बालकों को मिट्टी में मिलावेंगे ४४ और तुझ में पत्थर पर पत्थर न छोड़ेंगे क्योंकि तू ने वह समय जिस में तुझ पर दृष्टि किई गई न जाना।

तब वह मन्दिर में जाके जो लोग उस में बेचते औ ४५ मोल लेते थे उन्हें निकालने लगा . और उन से बोला ४६ लिखा है कि मेरा घर प्रार्थना का घर है . परन्तु तुम ने उसे डाकूओं का खोह बनाया है। वह मन्दिर में प्रतिदिन ४७ उपदेश करता था और प्रधान याजक और अध्यापक और लोगों के प्रधान उसे नाश करने चाहते थे . परन्तु ४८ नहीं जानते थे कि क्या करें क्योंकि सब लोग उस को सुनने को लौलीन थे।

२० बीसवां पर्ब्ब ।

१ यीशु का प्रधान याजकों को निरुत्तर करना । ९ दुष्ट मालियों का दृष्टान्त । २० यीशु का कर देने के विषय में फरीशियों को निरुत्तर करना । २७ जी उठने के विषय में सदूकियों को निरुत्तर करना । ४१ अपनी पदवी के विषय में लोगों को निरुत्तर करना । ४५ अध्यापकों के दोष प्रगट करना ।

१ उन दिनों में से एक दिन जब यीशु मन्दिर में लोगों को उपदेश देता और सुसमाचार सुनाता था तब प्रधान याजक और अध्यापक लोग प्राचीनों के संग निकट आये । २ और उस से बोले हम से कह तुझे ये काम करने का कैसा अधिकार है अथवा कौन है जिस ने तुझ को यह अधिकार ३ दिया । उस ने उन को उत्तर दिया कि मैं भी तुम से एक ४ बात पूछूंगा मुझे उत्तर देओ । योहन का बपतिसमा देना ५ क्या स्वर्ग की अथवा मनुष्यों की ओर से हुआ । तब उन्हों ने आपस में बिचार किया कि जो हम कहें स्वर्ग की ओर से तो वह कहेगा फिर तुम ने उस का बिश्वास क्यों नहीं ६ किया । और जो हम कहें मनुष्यों की ओर से तो सब लोग हमें पत्थरवाह करेंगे क्योंकि वे निश्चय जानते हैं कि ७ योहन भविष्यद्वक्ता था । सो उन्हों ने उत्तर दिया कि हम ८ नहीं जानते वह कहां से हुआ । यीशु ने उन से कहा तो मैं भी तुम को नहीं बताता हूं कि मुझे ये काम करने का कैसा अधिकार है ।

९ तब वह लोगों से यह दृष्टान्त कहने लगा कि किसी मनुष्य ने दाख की बारी लगाई और मालियों को उस का १० ठीका दे बहुत दिन लों परदेश को चला गया । समय में उस ने मालियों के पास एक दास को भेजा कि वे दाख की बारी का कुछ फल उस को देवें परन्तु मालियों ने उसे मारके ११ छूछे हाथ फेर दिया । फिर उस ने दूसरे दास को भेजा

और उन्हों ने उसे भी मारके और अपमान करके छूछे हाथ फेर दिया। फिर उस ने तीसरे को भेजा और उन्हों ने उसे १२ भी घायल करके निकाल दिया। तब दाख की बारी के १३ स्वामी ने कहा मैं क्या करूं. मैं अपने प्रिय पुत्र को भेजूंगा क्या जाने वे उसे देखके उस का आदर करेंगे। परन्तु १४ माली लोग उसे देखके आपस में विचार करने लगे कि यह तो अधिकारी है आओ हम उसे मार डालें कि अधिकार हमारा हो जाय। और उन्हों ने उसे दाख की बारी से १५ बाहर निकालके मार डाला. इस लिये दाख की बारी का स्वामी उन्हों से क्या करेगा। वह आके इन मालियों को १६ नाश करेगा और दाख की बारी दूसरों के हाथ देगा. यह सुनके उन्हों ने कहा ऐसा न होवे। उस ने उन्हों पर दृष्टि १७ कर कहा तो धर्म्मपुस्तक के इस बचन का अर्थ क्या है कि जिस पत्थर को थवइयों ने निकम्मा जाना वही कोने का सिरा हुआ है। जो कोई उस पत्थर पर गिरेगा सो चूर हो १८ जायगा और जिस किसी पर वह गिरेगा उस को पीस डालेगा। प्रधान याजकों और अध्यापकों ने उसी घड़ी १९ उस पर हाथ बढ़ाने चाहा क्योंकि जानते थे कि उस ने हमारे विरुद्ध यह दृष्टान्त कहा परन्तु वे लोगों से डरे।

तब उन्हों ने दांव ताकके भेदियों को भेजा जो छल से २० अपने को धर्म्मी दिखावें इस लिये कि उस का बचन पकड़ें और उसे देशाध्यक्ष के न्याय और अधिकार में सौंप देवें। उन्हों ने उस से पूछा कि हे गुरु हम जानते हैं कि आप २१ यथार्थ कहते और सिखाते हैं और पक्षपात नहीं करते हैं परन्तु ईश्वर का मार्ग सत्यता से बताते हैं। क्या कैसर को २२ कर देना हमें उचित है अथवा नहीं। उस ने उन की चतु- २३ राई बूझके उन से कहा मेरी परीक्षा क्यों करते हो। एक २४

सूकी मुझे दिखाओ . इस पर किस की मूर्त्ति और छाप है .
२५ उन्हों ने उत्तर दिया कैसर की। उस ने उन से कहा तो जो
कैसर का है सो कैसर को देओ और जो ईश्वर का है सो
२६ ईश्वर को देओ। वे लोगों के साम्ने उस की बात पकड़ न
सके और उस के उत्तर से अचंभित हो चुप रहे।

२७ सदूकी लोग भी जो कहते हैं कि मृतकों का जी उठना
नहीं होगा उन्हों में से कितने उस पास आये और उस से
२८ पूछा . कि हे गुरु मूसा ने हमारे लिये लिखा कि यदि
किसी का भाई अपनी स्त्री के रहते हुए निःसन्तान मर
जाय तो उस का भाई उस स्त्री से बिवाह करे और अपने
२९ भाई के लिये बंश खड़ा करे। सो सात भाई थे . पहिला
३० भाई बिवाह कर निःसन्तान मर गया। तब दूसरे भाई
ने उस स्त्री से बिवाह किया और वह भी निःसन्तान मर
३१ गया। तब तीसरे ने उस से बिवाह किया और वैसा ही
३२ सातों भाइयों ने . पर वे सब निःसन्तान मर गये। सब के
३३ पीछे स्त्री भी मर गई। सो मृतकों के जी उठने पर वह
उन में से किस की स्त्री होगी क्योंकि सातों ने उस से बिवाह
३४ किया। यीशु ने उन को उत्तर दिया कि इस लोक के सन्तान
३५ बिवाह करते और बिवाह दिये जाते हैं। परन्तु जो
लोग उस लोक में पहुंचने और मृतकों में से जी उठने के
योग्य गिने जाते वे न बिवाह करते न बिवाह दिये जाते
३६ हैं। और न वे फिर मर सकते हैं क्योंकि वे स्वर्गदूतों के
समान हैं और जी उठने के सन्तान होने से ईश्वर के सन्तान
३७ हैं। और मृतक लोग जो जी उठते हैं यह बात मूसा ने
भी झाड़ी की कथा में प्रगट किई है कि वह परमेश्वर को
इब्राहीम का ईश्वर और इसहाक का ईश्वर और याकूब का
३८ ईश्वर कहता है। ईश्वर मृतकों का नहीं परन्तु जीवतों

का ईश्वर है क्योंकि उस के लिये सब जीते हैं। अध्या- ३९
पकों में से कितनों ने उत्तर दिया कि हे गुरु आप ने अच्छा
कहा है। और उन्हें फिर उस से कुछ पूछने का साहस ४०
न हुआ।

तब उस ने उन से कहा लोग क्योंकर कहते हैं कि ४१
खीष्ट दाऊद का पुत्र है। दाऊद आप ही गीतों के पुस्तक ४२
में कहता है कि परमेश्वर ने मेरे प्रभु से कहा . जब लों ४३
मैं तेरे शत्रुओं को तेरे चरणों की पीढ़ी न बनाऊं तब लों
तू मेरी दहिनी ओर बैठ। दाऊद तो उसे प्रभु कहता है ४४
फिर वह उस का पुत्र क्योंकर है।

जब सब लोग सुनते थे तब उस ने अपने शिष्यों से ४५
कहा . अध्यापकों से चौकस रहो जो लंबे वस्त्र पहिने हुए ४६
फिरने चाहते हैं और जिन को बाजारों में नमस्कार और
सभा के घरों में ऊंचे आसन और जेवनारों में ऊंचे स्थान
प्रिय लगते हैं। वे विधवाओं के घर खा जाते हैं और ४७
बहाना के लिये बड़ी बेर लों प्रार्थना करते हैं . वे अधिक
दंड पावेंगे।

२१ एकईसवां पर्ब्ब।

१ एक विधवा के दान की प्रशंसा। ५ मन्दिर के नाश होने की भविष्यद्वाणी। ७ उस समय के चिन्ह। १२ शिष्यों पर उपद्रव होगा। २० यिहूदी लोग बड़ा कष्ट पावेंगे। २५ मनुष्य के पुत्र के आने का वर्णन। २९ गूलर के वृक्ष का दृष्टान्त। ३४ सचेत रहने का उपदेश।

यीशु ने आंख उठाके धनवानों को अपने अपने दान १
भंडार में डालते देखा। और उस ने एक कंगाल विधवा २
को भी उस में दो छदाम डालते देखा। तब उस ने कहा ३
मैं तुम से सच कहता हूं कि इस कंगाल विधवा ने सभों से
अधिक डाला है। क्योंकि इन सभों ने अपनी बढ़ती में से ४

ईश्वर को चढ़ाई हुई बस्तुओं में कुछ कुछ डाला है परन्तु इस ने अपनी घटती में से अपनी सारी जीविका डाली है।

५ जब कितने लोग मन्दिर के विषय में बोलते थे कि वह सुन्दर पत्थरों से और चढ़ाई हुई बस्तुओं से संवारा गया ६ है तब उस ने कहा. यह सब जो तुम देखते हो वे दिन आवेंगे जिन्हों में पत्थर पर पत्थर भी न छोड़ा जायगा जो गिराया न जायगा।

७ उन्हों ने उस से पूछा हे गुरु यह कब होगा और यह बातें जिस समय में हो जायेंगीं उस समय का क्या चिन्ह ८ होगा। उस ने कहा चौकस रहो कि भरमाये न जावो क्योंकि बहुत लोग मेरे नाम से आके कहेंगे मैं वही हूं और समय निकट आया है. सो तुम उन के पीछे मत ९ जाओ। जब तुम लड़ाइयों और हुल्लड़ों की चर्चा सुनो तब मत घबराओ क्योंकि इन का पहिले होना अवश्य है पर १० अन्त तुरन्त नहीं होगा। तब उस ने उन्हों से कहा देश ११ देश के और राज्य राज्य के बिरुद्ध उठेंगे। और अनेक स्थानों में बड़े भुईंडोल और अकाल और मरियां होंगीं और भयंकर लक्षण और आकाश से बड़े बड़े चिन्ह प्रगट होंगे।

१२ परन्तु इन सभों के पहिले लोग तुम पर अपने हाथ बढ़ावेंगे और तुम्हें सतावेंगे और मेरे नाम के कारण सभा के घरों और बन्दीगृहों में रखवावेंगे और राजाओं और १३ अध्यक्षों के आगे ले जावेंगे। पर इस से तुम्हारे लिये साक्षी १४ हो जायगी। सो अपने अपने मन में ठहरा रखो कि हम १५ उत्तर देने के लिये आगे से चिन्ता न करेंगे। क्योंकि मैं तुम्हें ऐसा बचन और ज्ञान देऊंगा कि तुम्हारे सब बिरोधी १६ उस का खंडन अथवा साम्हना नहीं कर सकेंगे। तुम्हारे माता पिता और भाई और कुटुंब और मित्र लोग तुम्हें

पकड़वायेंगे और तुम में से कितनों को घात करवायेंगे। और १७ मेरे नाम के कारण सब लोग तुम से बैर करेंगे। परन्तु १८ तुम्हारे सिर का एक बाल भी नष्ट न होगा। अपनी धीरता १९ से अपने प्राणों की रक्षा करो।

जब तुम यिरूशलीम को सेनाओं से घेरे हुए देखो तब २० जानो कि उस का उजड़ जाना निकट आया है। तब जो २१ यिहूदिया में हों सो पहाड़ों पर भागें. जो यिरूशलीम के बीच में हों सो निकल जावें और जो गांवों में हों सो उस में प्रवेश न करें। क्योंकि ये ही दंड देने के दिन होंगे कि २२ धर्म्मपुस्तक की सब बातें पूरी होवें। उन दिनों में हाय २३ हाय गर्भवतियां और दूध पिलानेवालियां क्योंकि देश में बड़ा क्लेश और इन लोगों पर क्रोध होगा। वे खड्ग की धार २४ से मारे पड़ेंगे और सब देशों के लोगों में बंधुवे किये जायेंगे और जब लों अन्यदेशियों का समय पूरा न होवे तब लों यिरूशलीम अन्यदेशियों से रौंदा जायगा।

सूर्य्य और चांद और तारों में चिन्ह दिखाई देंगे और २५ पृथिवी पर देश देश के लोगों को संकट औ घबराहट होगी और समुद्र औ लहरों का गर्जना होगा। और संसार पर २६ आनेहारी बातों के भय से और बाट देखने से मनुष्य मृतक के ऐसे हो जायेंगे क्योंकि आकाश की सेना डिग जायगी। तब वे मनुष्य के पुत्र को पराक्रम और बड़े ऐश्वर्य्य से मेघ २७ पर आते देखेंगे। जब इन बातों का आरंभ होगा तब तुम २८ सीधे होके अपने सिर उठाओ क्योंकि तुम्हारा उद्धार निकट आता है।

उस ने उन्हों से एक दृष्टान्त भी कहा कि गूलर का वृक्ष २९ और सब वृक्षों को देखो। जब उन की कोंपलें निकलती ३० हैं तब तुम देखकर आप ही जानते हो कि धूपकाला अब

३१ निकट है। इस रीति से जब तुम यह बातें होते देखो
३२ तब जानो कि ईश्वर का राज्य निकट है। मैं तुम से सच
कहता हूं कि जब लों सब बातें पूरी न हो जायें तब लों
३३ इस समय के लोग नहीं जाते रहेंगे। आकाश और पृथिवी
टल जायेंगे परन्तु मेरी बातें कभी न टलेंगीं।

३४ अपने विषय में सचेत रहो ऐसा न हो कि तुम्हारे मन
अफराई और मतवालपन और सांसारिक चिन्ताओं से
भारी हो जावें और वह दिन तुम पर अचांचक आ पहुंचे।
३५ क्योंकि वह फंदे की नाईं सारी पृथिवी के सब रहनेहारों
३६ पर आवेगा। इस लिये जागते रहो और नित्य प्रार्थना
करो कि तुम इन सब आनेहारी बातों से बचने के और
मनुष्य के पुत्र के सन्मुख खड़े होने के योग्य गिने जावो।

३७ यीशु दिन को मन्दिर में उपदेश करता था और रात
३८ को बाहर जाके जैतून नाम पर्ब्बत पर टिकता था। और
तड़के सब लोग उस की सुनने को मन्दिर में उस पास आते थे।

२२ बाईसवां पर्ब्ब।

१ यीशु को बध करने का परामर्श। ३ यिहूदा का बिश्वासघात करना। ७ शिष्यों का निस्तार पर्ब्ब का भोजन बनाना। १४ उन के संग यीशु का भोजन करना। १९ प्रभु भोज का निरूपण। २१ यिहूदा के विषय में यीशु का भविष्यद्वाक्य। २४ दीन होने का उपदेश। ३१ पितर के यीशु से मुकर जाने की भविष्यद्वाणी। ३५ शिष्यों के साहस करने का उपदेश। ३९ बारी में यीशु का महा शोक। ४७ उस का पकड़ा जाना। ५४ उस को महायाजक के पास ले जाना और पितर का उस से मुकर जाना। ६३ उस को अपमान करना और बध के योग्य ठहराना।

१ अखमीरी रोटी का पर्ब्ब जो निस्तार पर्ब्ब कहावता है
२ निकट आया। और प्रधान याजक और अध्यापक लोग
खोज करते थे कि यीशु को क्योंकर मार डालें क्योंकि वे
लोगों से डरते थे।

३ तब शैतान ने यिहूदा में जो इस्करियोती कहावता है

और बारह शिष्यों में गिना जाता था प्रवेश किया। उस ४
ने जाके प्रधान याजकों और पहरुओं के अध्यक्षों के संग
बातचीत किई कि यीशु को क्योंकर उन्हों के हाथ पकड़वावे। वे आनन्दित हुए और रुपैये देने को उस से नियम ५
बांधा। वह अंगीकार करके उसे बिना हुल्लड़ के उन्हों के ६
हाथ पकड़वाने का अवसर ढूंढ़ने लगा।

तब अखमीरी रोटी के पर्ब्ब का दिन जिस में निस्तार ७
पर्ब्ब का मेम्ना मारना उचित था आ पहुंचा। और यीशु ने ८
पितर और योहन को यह कहके भेजा कि जाके हमारे
लिये निस्तार पर्ब्ब का भोजन बनाओ कि हम खायें। वे ९
उस से बोले आप कहां चाहते हैं कि हम बनावें। उस ने १०
उन से कहा देखो जब तुम नगर में प्रवेश करो तब एक
मनुष्य जल का घड़ा उठाये हुए तुम्हें मिलेगा. जिस घर में
वह पैठे तुम उस के पीछे उस घर में जाओ। और उस घर ११
के स्वामी से कहो गुरु तुझ से कहता है कि पाहुनशाला
कहां है जिस में मैं अपने शिष्यों के संग निस्तार पर्ब्ब का
भोजन खाऊं। वह तुम्हें एक सजी हुई बड़ी उपरौठी १२
कोठरी दिखावेगा वहां तैयार करो। उन्हों ने जाके जैसा १३
उस ने उन्हों से कहा तैसा पाया और निस्तार पर्ब्ब का
भोजन बनाया।

जब वह घड़ी पहुंची तब यीशु और बारहों प्रेरित १४
उस के संग भोजन पर बैठे। और उस ने उन से कहा मैं ने १५
यह निस्तार पर्ब्ब का भोजन दुःख भोगने के पहिले तुम्हारे
संग खाने की बड़ी लालसा किई। क्योंकि मैं तुम से कहता १६
हूं कि जब लों वह ईश्वर के राज्य में पूरा न होवे तब लों
मैं उसे फिर कभी न खाऊंगा। तब उस ने कटोरा ले १७
धन्य मानके कहा इस को लेओ और आपस में बांटो।

१८ क्योंकि मैं तुम से कहता हूं कि जब लों ईश्वर का राज्य न आवे तब लों मैं दाख रस कभी न पीऊंगा ।

१९ फिर उस ने रोटी लेके धन्य माना और उसे तोड़के उन को दिया और कहा यह मेरा देह है जो तुम्हारे लिये दिया
२० जाता है . मेरे स्मरण के लिये यह किया करो । इसी रीति से उस ने बियारी के पीछे कटोरा भी देके कहा यह कटोरा मेरे लोहू पर जो तुम्हारे लिये बहाया जाता है नया नियम है ।

२१ परन्तु देखो मेरे पकड़वानेहारे का हाथ मेरे संग मेज
२२ पर है । मनुष्य का पुत्र जैसा ठहराया गया है वैसा ही जाता है परन्तु हाय वह मनुष्य जिस से वह पकड़वाया जाता
२३ है । तब वे आपस में बिचार करने लगे कि हम में से कौन है जो यह काम करेगा ।

२४ उन्हों में यह बिबाद भी हुआ कि उन में से कौन बड़ा
२५ समझा जाय । यीशु ने उन से कहा अन्यदेशियों के राजा उन्हों पर प्रभुता करते हैं और उन्हों के अधिकारी लोग
२६ परोपकारी कहावते हैं । परन्तु तुम ऐसे न होओ पर जो तुम्हों में बड़ा है सो छोटे की नाईं होवे और जो प्रधान है
२७ सो सेवक की नाईं होवे । कौन बड़ा है भोजन पर बैठनेहारा अथवा सेवक . क्या भोजन पर बैठनेहारा बड़ा नहीं है .
२८ परन्तु मैं तुम्हारे बीच में सेवक की नाईं हूं । तुम ही हो जो
२९ मेरी परीक्षाओं में मेरे संग रहे हो । और जैसे मेरे पिता ने मेरे लिये राज्य ठहराया है तैसा मैं तुम्हारे लिये ठहराता हूं .
३० कि तुम मेरे राज्य में मेरी मेज पर खावो और पीवो और सिंहासनों पर बैठके इस्रायेल के बारह कुलों का न्याय करो ।

३१ और प्रभु ने कहा हे शिमोन हे शिमोन देख शैतान ने तुम्हें मांग लिया है इस लिये कि गेहूं की नाईं तुम्हें फटके ।
३२ परन्तु मैं ने तेरे लिये प्रार्थना किई है कि तेरा बिश्वास

घट न जाय और जब तू फिरे तब अपने भाइयों को स्थिर कर। उस ने उस से कहा हे प्रभु मैं आप के संग बंदीगृह में जाने ३३ को और मरने को तैयार हूं। उस ने कहा हे पितर मैं तुझ से ३४ कहता हूं कि आज ही जब लों तू तीन बार मुझे नकारके न कहे कि मैं उसे नहीं जानता हूं तब लों मुर्ग न बोलेगा।

और उस ने उन से कहा जब मैं ने तुम्हें बिन थैली औ ३५ बिन झोली औ बिन जूते भेजा तब क्या तुम को किसी वस्तु की घटी हुई. वे बोले किसू की नहीं। उस ने उन से ३६ कहा परन्तु अब जिस पास थैली हो सो उसे ले ले और वैसे ही झोली भी और जिस पास खड्ग न होय सो अपना वस्त्र बेचके एक को मोल लेवे। क्योंकि मैं तुम से कहता ३७ हूं अवश्य है कि धर्म्मपुस्तक का यह बचन भी कि वह कुकर्म्मियों के संग गिना गया मुझ पर पूरा किया जाय क्योंकि मेरे विषय में की बातें सम्पूर्ण होने पर हैं। तब वे बोले ३८ हे प्रभु देखिये यहां दो खड्ग हैं. उस ने उन से कहा बहुत है।

तब यीशु बाहर निकलके अपनी रीति के अनुसार ३९ जैतून पर्व्वत पर गया और उस के शिष्य भी उस के पीछे हो लिये। उस स्थान में पहुंचके उस ने उन से कहा प्रार्थना ४० करो कि तुम परीक्षा में न पड़ो। और वह आप ढेला फेंकने ४१ के टप्पे भर उन से अलग गया और घुटने टेकके प्रार्थना किई. कि हे पिता जो तेरी इच्छा होय तो इस कटोरे को मेरे ४२ पास से टाल दे तौभी मेरी नहीं पर तेरी इच्छा पूरी हो जाय। तब एक दूत उसे सामर्थ्य देने को स्वर्ग से उस को ४३ दिखाई दिया। और उस ने बड़े संकट में होके अधिक दृढ़ता ४४ से प्रार्थना किई और उस का पसीना ऐसा हुआ जैसे लोहू के थक्के जो भूमि पर गिरें। तब वह प्रार्थना से उठा और ४५ अपने शिष्यों के पास आ उन्हें शोक के मारे सोते पाया.

४६ और उन से कहा क्यों सोते हो उठो प्रार्थना करो कि तुम परीक्षा में न पड़ो ।

४७ वह बोलता ही था कि देखो बहुत लोग आये और बारह शिष्यों में से एक शिष्य जिस का नाम यिहूदा था उन के आगे आगे चलता था और यीशु का चूमा लेने को
४८ उस पास आया । यीशु ने उस से कहा हे यिहूदा क्या तू
४९ मनुष्य के पुत्र को चूमा लेके पकड़वाता है। यीशु के संगियों ने जब देखा कि क्या होनेवाला है तब उस से कहा हे
५० प्रभु क्या हम खड्ग से मारें । और उन में से एक ने महा-याजक के दास को मारा और उस का दहिना कान उड़ा
५१ दिया । इस पर यीशु ने कहा यहां तक रहने दो . और उस
५२ दास का कान छूके उसे चंगा किया । तब यीशु ने प्रधान याजकों और मन्दिर के पहरुओं के अध्यक्षों और प्राचीनों से जो उस पास आये थे कहा क्या तुम जैसे डाकू पर खड्ग
५३ और लाठियां लेके निकले हो । जब मैं मन्दिर में प्रतिदिन तुम्हारे संग था तब तुम्हों ने मुझ पर हाथ न बढ़ाये परन्तु यही तुम्हारी घड़ी और अंधकार का पराक्रम है ।

५४ वे उसे पकड़के ले चले और महायाजक के घर में लाये
५५ और पितर दूर दूर उस के पीछे हो लिया । जब वे अंगने में आग सुलगाके एकट्ठे बैठे तब पितर उन्हों के बीच में
५६ बैठ गया । और एक दासी उसे आग के पास बैठे देखके
५७ उस की ओर ताकके बोली यह भी उस के संग था । उस ने
५८ उसे नकारके कहा हे नारी मैं उसे नहीं जानता हूं । थोड़ी बेर पीछे दूसरे ने उसे देखके कहा तू भी उन में से एक है .
५९ पितर ने कहा हे मनुष्य मैं नहीं हूं । घड़ी एक बीते दूसरे ने दृढ़ता से कहा यह भी सचमुच उस के संग था क्योंकि वह
६० गालीली भी है । पितर ने कहा हे मनुष्य मैं नहीं जानता

तू क्या कहता है. और तुरन्त ज्यों वह कह रहा त्यों मुर्ग बोला। तब प्रभु ने मुंह फेरके पितर पर दृष्टि किई और पितर ६१ ने प्रभु का वचन स्मरण किया कि उस ने उस से कहा था मुर्ग के बोलने से आगे तू तीन बार मुझ से मुकरेगा। तब पितर ६२ बाहर निकलके बिलक बिलक रोया।

जो मनुष्य यीशु को धरे हुए थे वे उसे मारके ठट्ठा करने ६३ लगे. और उस की आंखें ढांपके उस के मुंह पर थपेड़े मारके ६४ उस से पूछा कि भविष्यद्वाणी बोल किस ने तुझे मारा। और ६५ उन्हों ने बहुत सी और निन्दा की बातें उस के विरुद्ध में कहीं। ज्यों ही बिहान हुआ त्यों ही लोगों के प्राचीन और प्रधान ६६ याजक और अध्यापक लोग एकट्ठे हुए और उसे अपनी न्याय-सभा में लाये और बोले जो तू ख्रीष्ट है तो हम से कह। उस ने ६७ उन से कहा जो मैं तुम से कहूं तो तुम प्रतीति नहीं करोगे। और जो मैं कुछ पूछूं तो तुम न उत्तर देओगे न मुझे छोड़ोगे। ६८ अब से मनुष्य का पुत्र सर्व्वशक्तिमान ईश्वर की दहिनी ओर ६९ बैठेगा। सभों ने कहा तो क्या तू ईश्वर का पुत्र है. उस ने ७० उन्हों से कहा तुम तो कहते हो कि मैं हूं। तब उन्हों ने कहा ७१ अब हमें साक्षी का और क्या प्रयोजन क्योंकि हम ने आप ही उस के मुख से सुना है।

२३ तेईसवां पर्ब्ब।

१ यीशु का पिलात के हाथ सौंपा जाना और पिलात का उसे विचार करना। ६ पिलात का उसे हेरोद के पास भेजना। १३ उस को छोड़ने की युक्ति करने के पीछे घातकों के हाथ सौंपना। २७ विलाप करनेहारी स्त्रियों से यीशु की कथा। ३३ उस का क्रूश पर चढ़ाया जाना। ३५ उस पर लोगों का हंसना। ३९ क्रूश पर चढ़ाये हुए डाकूओं का वृतान्त। ४४ यीशु का पुकारना और प्राण त्यागना और लोगों का अचंभा करना। ५० यूसफ का उस को कबर में रखना।

तब सारा समाज उठके यीशु को पिलात के पास ले गया. १ और उस पर यह कहके दोष लगाने लगा कि हम ने यही २

पाया है कि यह मनुष्य लोगों को बहकाता है और अपने को
३ ख्रीष्ट राजा कहके कैसर को कर देना बर्जता है। पिलात ने
उस से पूछा क्या तू यिहूदियों का राजा है . उस ने उस को
४ उत्तर दिया कि आप ही तो कहते हैं। तब पिलात ने प्रधान
याजकों और लोगों से कहा मैं इस मनुष्य में कुछ दोष नहीं
५ पाता हूं। परन्तु उन्हों ने अधिक दृढ़ताई से कहा वह
गालील से लेके यहां लों सारे यिहूदिया में उपदेश करके
लोगों को उसकाता है।

६ पिलात ने गालील का नाम सुनके पूछा क्या यह मनुष्य
७ गालीली है। जब उस ने जाना कि वह हेरोद के राज्य में का
है तब उसे हेरोद के पास भेजा कि वह भी उन दिनों में
८ यिरूशलीम में था। हेरोद यीशु को देखके अति आनन्दित
हुआ क्योंकि वह बहुत दिन से उस को देखने चाहता था
इस लिये कि उस के विषय में बहुत बातें सुनी थीं और
उस का कुछ आश्चर्य्य कर्म्म देखने की उस को आशा हुई।
९ उस ने उस से बहुत बातें पूछीं परन्तु उस ने उस को कुछ उत्तर
१० न दिया। और प्रधान याजकों और अध्यापकों ने खड़े हुए
११ बड़ी धुन से उस पर दोष लगाये। तब हेरोद ने अपनी सेना के
संग उसे तुच्छ जानके ठट्ठा किया और भड़कीला बस्त्र पहि-
१२ राके उसे पिलात के पास फेर भेजा। उसी दिन पिलात और
हेरोद जिन्हों के बीच में आगे से शत्रुता थी आपस में मित्र हो गये।

१३ पिलात ने प्रधान याजकों और अध्यक्षों और लोगों को
१४ एकट्ठे बुलाके उन्हों से कहा . तुम इस मनुष्य को लोगों का
बहकानेहारा कहके मेरे पास लाये हो और देखो मैं ने
तुम्हारे साम्हने बिचार किया है परन्तु जिन बातों में तुम
इस मनुष्य पर दोष लगाते हो उन बातों के विषय में मैं ने
१५ उस में कुछ दोष नहीं पाया है। न हेरोद ने पाया है क्यों-

कि मैं ने तुम्हें उस पास भेजा और देखो वध के योग्य कोई काम उस से नहीं किया गया है। सो मैं उसे कोड़े मारके छोड़ देऊंगा। पिलात को अवश्य भी था कि उस पर्ब्ब में एक मनुष्य को लोगों के लिये छोड़ देवे। तब लोग सब मिलके चिल्लाये कि इस को ले जाइये और हमारे लिये बरब्बा को छोड़ दीजिये। यही बरब्बा किसी बलवे के कारण जो नगर में हुआ था और नरहिंसा के कारण बन्दीगृह में डाला गया था। पिलात यीशु को छोड़ने की इच्छा कर लोगों से फिर बोला। परन्तु उन्हों ने पुकारा कि उसे क्रूश पर चढ़ाइये क्रूश पर चढ़ाइये। उस ने तीसरी बेर उन से कहा क्यों उस ने कौन सी बुराई किई है. मैं ने उस में बध के योग्य कोई दोष नहीं पाया है इस लिये मैं उसे कोड़े मारके छोड़ देऊंगा। परन्तु वे ऊंचे ऊंचे शब्द से यत्न करके मांगने लगे कि वह क्रूश पर चढ़ाया जाय और उन्हों के और प्रधान याजकों के शब्द प्रबल ठहरे। सो पिलात ने आज्ञा दिई कि उन की बिन्ती के अनुसार किया जाय। और उस ने उस मनुष्य को जो बलवे और नरहिंसा के कारण बन्दीगृह में डाला गया था जिसे वे मांगते थे उन के लिये छोड़ दिया और यीशु को उन की इच्छा पर सौंप दिया। जब वे उसे ले जाते थे तब उन्हों ने शिमोन नाम कुरीनी देश के एक मनुष्य को जो गांव से आता था पकड़के उस पर क्रूश धर दिया कि उसे यीशु के पीछे ले चले।

१६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६

लोगों की बड़ी भीड़ उस के पीछे हो लिई और बहुतेरी स्त्रियां भी जो उस के लिये छाती पीटतीं और बिलाप करती थीं। यीशु ने उन्हों की ओर फिरके कहा हे यिरू-शलीम की पुत्रियो मेरे लिये मत रोओ परन्तु अपने लिये और अपने बालकों के लिये रोओ। क्योंकि देखो वे दिन

२७ २८ २९

आते हैं जिन्हों में लोग कहेंगे धन्य वे स्त्रियां जो बांझ हैं और वे गर्भ जिन्हों ने लड़के न जन्माये और वे स्तन
३० जिन्हों ने दूध न पिलाया है। तब वे पर्ब्बतों से कहने लगेंगे
३१ कि हमों पर गिरो और टीलों से कि हमें ढांपो। क्योंकि जो वे हरे पेड़ से यह करते हैं तो सूखे से क्या किया
३२ जायगा। वे और दो मनुष्यों को भी जो कुकर्म्मी थे यीशु के संग घात करने को ले चले।

३३ जब वे उस स्थान पर जो खोपड़ी कहावता है पहुंचे तब उन्हों ने वहां उस को और उन कुकर्म्मियों को एक को दहिनी ओर और दूसरे को बाईं ओर क्रूशों पर चढ़ाया।
३४ तब यीशु ने कहा हे पिता उन्हें क्षमा कर क्योंकि वे नहीं जानते क्या करते हैं. और उन्हों ने चिट्ठियां डालके उस के कपड़े बांट लिये।

३५ लोग खड़े हुए देखते रहे और अध्यक्षों ने भी उन के संग ठट्ठा कर कहा उस ने औरों को बचाया जो वह ईश्वर
३६ का चुना हुआ जन ख्रीष्ट है तो अपने को बचावे। योद्धाओं ने भी उस से ठट्ठा करने को निकट आके उसे सिरका दिया.
३७ और कहा जो तू यिहूदियों का राजा है तो अपने को बचा।
३८ और उस के ऊपर में एक पत्र भी था जो यूनानीय औ रोमीय औ इब्रीय अक्षरों में लिखा हुआ था कि यह यिहूदियों का राजा है।

३९ जो कुकर्म्मी लटकाये गये थे उन में से एक ने उस की निन्दा कर कहा जो तू ख्रीष्ट है तो अपने को और हमों को
४० बचा। इस पर दूसरे ने उसे डांटके कहा क्या तू ईश्वर से कुछ डरता भी नहीं. तुझ पर तो वैसा ही दंड दिया जाता
४१ है। और हमों पर न्याय की रीति से दिया जाता क्योंकि हम अपने कर्म्मों के योग्य फल भोगते हैं परन्तु इस ने कोई

अनुचित काम नहीं किया है। तब उस ने यीशु से कहा ४२ हे प्रभु जब आप अपने राज्य में आवें तब मेरी सुध लीजिये। यीशु ने उस से कहा मैं तुझ से सच कहता हूं कि आज ही ४३ तू मेरे संग स्वर्गलोक में होगा।

जब दो पहर के निकट हुआ तब सारे देश में तीसरे ४४ पहर लों अंधकार हो गया। सूर्य्य अंधियारा हो गया और ४५ मन्दिर का परदा बीच से फट गया। और यीशु ने बड़े शब्द ४६ से पुकारके कहा हे पिता मैं अपना आत्मा तेरे हाथ में सोंपता हूं और यह कहके प्राण त्यागा। जो हुआ था ४७ सो देखके शतपति ने ईश्वर का गुणानुवाद कर कहा निश्चय यह मनुष्य धर्म्मी था। और सब लोग जो यह देखने को ४८ एकट्ठे हुए थे जो कुछ हुआ था सो देखके अपनी अपनी छाती पीटते हुए फिर गये। और यीशु के सब चिन्हार ४९ और वे स्त्रियां जो गालील से उस के संग आई थीं दूर खड़े हो यह सब देखते रहे।

और देखो यूसफ नाम यिहूदियों के अरिमथिया नगर ५० का एक मनुष्य था जो मन्त्री था और उत्तम और धर्म्मी पुरुष होके दूसरे मन्त्रियों के विचार और काम में नहीं मिला था। और वह आप भी ईश्वर के राज्य की बाट ५१ जोहता था। उस ने पिलात के पास जाके यीशु की लोथ मांग ५२ लिई। तब उस ने उसे उतारके चद्दर में लपेटा और एक कबर ५३ में रखा जो पत्थर में खोदी हुई थी जिस में कोई कभी नहीं रखा गया था। वह दिन तैयारी का दिन था और ५४ विश्रामवार समीप था। वे स्त्रियां भी जो गालील से ५५ उस के संग आई थीं पीछे हो लिईं और कबर को और उस की लोथ क्योंकर रखी गई उस को देख लिया। और उन्हों ने लौटके सुगन्ध द्रव्य और सुगन्ध तेल ५६

तैयार किया और आज्ञा के अनुसार बिस्राम के दिन में बिस्राम किया ।

२४ चौबीसवां पर्ब्ब ।

१ स्त्रियों का दूत से यीशु के जी उठने का समाचार सुनना और शिष्यों को कह देना । १३ यीशु का इम्माऊ को जाते हुए दो शिष्यों को दर्शन देना और उन से बातचीत करना । ३६ यिरूशलीम में शिष्यों को दर्शन देना और उन्हें प्रेरण करना । ५० स्वर्ग में जाना ।

१ तब अठवारे के पहिले दिन बड़ी भोर ये स्त्रियां और उन के संग कई एक और स्त्रियां वह सुगन्ध जो उन्हों ने २ तैयार किया था लेके कबर पर आईं । परन्तु उन्हों ने पत्थर ३ को कबर के साम्हने से लुढ़काया हुआ पाया . और भीतर ४ जाके प्रभु यीशु की लोथ न पाई । जब वे इस बात के विषय में दुबधा कर रहीं तब देखो दो पुरुष चमकते बस्त्र पहिने ५ हुए उन के निकट खड़े हो गये । जब वे डर गईं और धरती की ओर मुंह झुकाये रहीं तब वे उन से बोले तुम जीवते ६ को मृतकों के बीच में क्यों ढूंढ़ती हो । वह यहां नहीं है परन्तु जी उठा है . स्मरण करो कि उस ने गालील में रहते ७ हुए तुम से कहा . अवश्य है कि मनुष्य का पुत्र पापी लोगों के हाथ में पकड़वाया जाय और क्रूश पर घात किया जाय ८ और तीसरे दिन जी उठे । तब उन्हों ने उस की बातों को ९ स्मरण किया । और कबर से लौटके उन्हों ने ग्यारह शिष्यों १० को और और सभों को यह सब बातें सुनाईं । मरियम मगदलीनी और योहाना और याकूब की माता मरियम और उन के संग की और स्त्रियां थीं जिन्हों ने प्रेरितों से यह बातें ११ कहीं । परन्तु उन की बातें उन्हों के आगे कहानी सी समझ १२ पड़ीं और उन्हों ने उन की प्रतीति न किई । तब पितर उठके कबर पर दौड़ गया और झुकके केवल चद्दर पड़ी हुई देखी

और जो हुआ था उस से अपने मन में अचंभा करता हुआ चला गया।

देखो उसी दिन उन में से दो जन इम्माऊ नाम एक १३ गांव को जो यिरूशलीम से कोश चार एक पर था जाते थे। और वे इन सब बातों पर जो हुई थीं आपस में बात- १४ चीत करते थे। ज्यों वे बातचीत और बिचार कर रहे १५ त्यों यीशु आप ही निकट आके उन के संग हो लिया। परन्तु उन की दृष्टि ऐसी रोकी गई कि उन्हों ने उस को १६ नहीं चीन्हा। उस ने उन से कहा यह क्या बातें हैं जिन १७ पर तुम चलते हुए आपस में बातचीत करते और उदास होते हो। तब एक जन ने जिस का नाम क्लियोपा था १८ उत्तर देके उस से कहा क्या केवल तू ही यिरूशलीम में डेरा करके वे बातें जो उस में इन दिनों में हुई हैं नहीं जानता है। उस ने उन से कहा कौन सी बातें. उन्हों ने उस से कहा १९ यीशु नासरी के विषय में जो भविष्यद्वक्ता और ईश्वर के और सब लोगों के आगे काम में और बचन में शक्तिमान पुरुष था। क्योंकर हमारे प्रधान याजकों और अध्यक्षों २० ने उसे सौंप दिया कि उस पर बध किये जाने की आज्ञा दिई जाय और उसे क्रूश पर घात किया है। परन्तु हमें २१ आशा थी कि वही है जो इस्रायेल का उद्धार करेगा. और भी जब से यह हुआ तब से आज उस को तीसरा दिन है। और हमों में से कितनी स्त्रियों ने भी हमें बिस्मित २२ किया है कि वे भोर को कबर पर गईं. पर उस की लोथ २३ न पाके फिर आके बोलीं कि हम ने स्वर्गदूतों का दर्शन भी पाया है जो कहते हैं कि वह जीता है। तब हमारे २४ संगियों में से कितने जन कबर पर गये और जैसा स्त्रियों ने कहा तैसा ही पाया परन्तु उस को न देखा। तब यीशु ने २५

उन से कहा हे निर्बुद्धि और भविष्यद्वक्ताओं की सब बातों पर
२६ बिश्वास करने में मन्दमति लोगो. क्या अवश्य न था कि स्त्रीष्ट
२७ यह दुःख उठाके अपने ऐश्वर्य्य में प्रवेश करे। तब उस ने
मूसा से और सब भविष्यद्वक्ताओं से आरंभ कर सारे धर्म्म-
पुस्तक में अपने विषय में की बातों का अर्थ उन्हों को बताया।
२८ इतने में वे उस गांव के पास पहुंचे जहां वे जाते थे और
२९ उस ने ऐसा किया जैसा कि आगे जाता है। परन्तु उन्हों
ने यह कहके उस को रोका कि हमारे संग रहिये क्योंकि
सांझ हो चली और दिन ढल गया है. तब वह उन के
३० संग रहने को भीतर गया। जब वह उन के संग भोजन पर
बैठा तब उस ने रोटी लेके धन्यबाद किया और उसे
३१ तोड़के उन को दिया। तब उन की दृष्टि खुल गई और
उन्हों ने उस को चीन्हा और वह उन से अन्तर्द्धान हो गया।
३२ और उन्हों ने आपस में कहा जब वह मार्ग में हम से बात
करता था और धर्म्मपुस्तक का अर्थ हमें बताता था तब
३३ क्या हमारा मन हम में न तपता था। वे उसी घड़ी
उठके यिरूशलीम को लौट गये और ग्यारह शिष्यों को
और उन के संगियों को एकट्ठे हुए और यह कहते हुए
३४ पाया. कि निश्चय प्रभु जी उठा है और शिमोन को
३५ दिखाई दिया है। तब उन दोनों ने कह सुनाया कि मार्ग
में क्या हुआ था और यीशु क्योंकर रोटी तोड़ने में उन से
पहचाना गया।

३६ वे यह कहते ही थे कि यीशु आप ही उन के बीच में
३७ खड़ा हो उन से बोला तुम्हारा कल्याण होय। परन्तु वे
व्याकुल और भयमान हुए और समझा कि हम प्रेत को
३८ देखते हैं। उस ने उन से कहा क्यों व्याकुल हो और तुम्हारे
३९ मन में सन्देह क्यों उत्पन्न होता है। मेरे हाथ और मेरे

पांव देखो कि मैं आप ही हूं . मुझे टोओ और देख लो क्योंकि जैसे तुम मुझ में देखते हो तैसे प्रेत को हाड़ मांस नहीं होते हैं। यह कहके उस ने अपने हाथ पांव उन्हें ४० दिखाये। ज्यों वे मारे आनन्द के प्रतीति न करते थे और ४१ अचंभित हो रहे त्यों उस ने उन से कहा क्या तुम्हारे पास यहां कुछ भोजन है। उन्हों ने उस को कुछ भूनी मछली ४२ और मधु का छत्ता दिया। उस ने लेके उन के साम्हने खाया। ४३ और उस ने उन से कहा यही वे बातें हैं जो मैं ने तुम्हारे ४४ संग रहते हुए तुम से कहीं कि जो कुछ मेरे विषय में मूसा की व्यवस्था में और भविष्यद्वक्ताओं और गीतों के पुस्तक में लिखा है सब का पूरा होना अवश्य है। तब उस ने ४५ धर्म्मपुस्तक समझने को उन का ज्ञान खोला . और उन से ४६ कहा यूं लिखा है और इसी रीति से अवश्य था कि ख्रीष्ट दुःख उठावे और तीसरे दिन मृतकों में से जी उठे . और ४७ यिरूशलीम से आरंभ कर सब देशों के लोगों में उस के नाम से पश्चात्ताप की और पाप मोचन की कथा सुनाई जावे। तुम इन बातों के साक्षी हो। देखो मेरे पिता ने जिस की ४८ ४९ प्रतिज्ञा किई उस को मैं तुम्हों पर भेजता हूं और तुम जब लों ऊपर से शक्ति न पावो तब लों यिरूशलीम नगर में रहो।

तब वह उन्हें बैथनिया लों बाहर ले गया और अपने ५० हाथ उठाके उन्हें आशीस दिई। उन्हें आशीस देते हुए ५१ वह उन से अलग हो गया और स्वर्ग पर उठा लिया गया। और वे उस को प्रणाम कर बड़े आनन्द से यिरूशलीम को ५२ लौट गये . और नित्य मन्दिर में ईश्वर की स्तुति और ५३ धन्यवाद किया करते थे। आमीन॥

योहन रचित सुसमाचार।

१ पहिला पर्ब्ब ।

१ यीशु खीष्ट के ईश्वरत्व का वर्णन । ६ योहन का ईश्वर की ओर से भेजा जाना और यीशु का अवतार लेना । १९ उस के विषय में योहन की साक्षी। ३५ अन्द्रिय और शिमोन और एक और शिष्य का बुलाया जाना । ४३ फिलिप और नथनेल का बुलाया जाना ।

आदि में बचन था और बचन ईश्वर के संग था और
१ २ ३ बचन ईश्वर था। वह आदि में ईश्वर के संग था। सब कुछ
उस के द्वारा सृजा गया और जो सृजा गया है कुछ भी
४ उस बिना नहीं सृजा गया। उस में जीवन था और वह
५ जीवन मनुष्यों का उजियाला था। और वह उजियाला
अंधकार में चमकता है और अंधकार ने उस को ग्रहण न
किया।

६ एक मनुष्य ईश्वर की ओर से भेजा गया जिस का नाम
७ योहन था। वह साक्षी के लिये आया कि उस उजियाले
के विषय में साक्षी देवे इस लिये कि सब लोग उस के द्वारा
८ से बिश्वास करें। वह आप तो वह उजियाला न था
परन्तु उस उजियाले के बिषय में साक्षी देने को आया।
९ सच्चा उजियाला जो हर एक मनुष्य को उजियाला देता
१० है जगत में आनेवाला था। वह जगत में था और जगत
उस के द्वारा सृजा गया परन्तु जगत ने उस को नहीं जाना।
११ वह अपने निज देश में आया और उस के निज लोगों ने
१२ उसे ग्रहण न किया। परन्तु जितनों ने उसे ग्रहण किया
उन्हों को अर्थात उस के नाम पर बिश्वास करनेहारों को उस
१३ ने ईश्वर के सन्तान होने का अधिकार दिया। उन्हों का

जन्म न लोहू से न शरीर की इच्छा से न मनुष्य की इच्छा से परन्तु ईश्वर से हुआ। और वचन देहधारी हुआ और १४ हमारे बीच में डेरा किया और हम ने उस की महिमा पिता के एकलौते की सी महिमा देखी . वह अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण था। योहन ने उस के विषय में साक्षी दिई और १५ पुकारके कहा यही था जिस के विषय में मैं ने कहा कि जो मेरे पीछे आता है सो मेरे आगे हुआ है क्योंकि वह मुझ से पहिले था। उस की भरपूरी से हम सभों ने पाया है १६ हां अनुग्रह पर अनुग्रह पाया है। क्योंकि व्यवस्था मूसा के १७ द्वारा से दिई गई अनुग्रह और सच्चाई यीशु खीष्ट के द्वारा से हुए। किसी ने ईश्वर को कभी नहीं देखा है . एकलौता १८ पुत्र जो पिता की गोद में है उसी ने उसे वर्णन किया।

योहन की साक्षी यह है कि जब यिहूदियों ने यिरू- १९ शलीम से याजकों और लेवीयों को उस से यह पूछने को भेजा कि तू कौन है . तब उस ने मान लिया और नहीं मुकर २० गया पर मान लिया कि मैं खीष्ट नहीं हूं। तब उन्हों ने २१ उस से पूछा तो कौन . क्या तू एलियाह है . उस ने कहा मैं नहीं हूं . क्या तू वह भविष्यद्वक्ता है . उस ने उत्तर दिया कि नहीं। फिर उन्हों ने उस से कहा तू कौन है कि हम २२ अपने भेजनेहारों को उत्तर देवें . तू अपने विषय में क्या कहता है। उस ने कहा मैं किसी का शब्द हूं जो जंगल में २३ पुकारता है कि परमेश्वर का पन्थ सीधा करो जैसा यिशैयाह भविष्यद्वक्ता ने कहा। जो भेजे गये थे सो फरीशियों में से २४ थे। उन्हों ने उस से पूछ करके उस से कहा जो तू न खीष्ट २५ और न एलियाह और न वह भविष्यद्वक्ता है तो क्यों बपतिसमा देता है। योहन ने उन को उत्तर दिया कि मैं २६ तो जल से बपतिसमा देता हूं परन्तु तुम्हारे बीच में एक

२७ खड़ा है जिसे तुम नहीं जानते हो। वही है मेरे पीछे आनेवाला जो मेरे आगे हुआ है मैं उस की जूती का
२८ बन्ध खोलने के योग्य नहीं हूं। यह बातें यर्दन नदी के उस पार बैथाबरा गांव में हुईं जहां योहन बपतिसमा देता था।

२९ दूसरे दिन योहन ने यीशु को अपने पास आते देखा और कहा देखो ईश्वर का मेम्ना जो जगत के पाप को उठा
३० लेता है। यही है जिस के विषय में मैं ने कहा कि एक पुरुष मेरे पीछे आता है जो मेरे आगे हुआ है क्योंकि
३१ वह मुझ से पहिले था। मैं उसे नहीं चीन्हता था परन्तु जिस्तें वह इस्रायेली लोगों पर प्रगट किया जाय इसी लिये
३२ मैं जल से बपतिसमा देता हुआ आया हूं। और भी योहन ने साक्षी दिई कि मैं ने आत्मा को कपोत की नाईं
३३ स्वर्ग से उतरते देखा है और वह उस पर ठहर गया। और मैं उसे नहीं चीन्हता था परन्तु जिस ने मुझे जल से बपतिसमा देने को भेजा उसी ने मुझ से कहा जिस पर तू आत्मा को उतरते और उस पर ठहरते देखे वही तो पवित्र
३४ आत्मा से बपतिसमा देनेहारा है। और मैं ने देखके साक्षी दिई है कि यही ईश्वर का पुत्र है।

३५ दूसरे दिन फिर योहन और उस के शिष्यों में से दो जन
३६ खड़े थे। और ज्यों यीशु फिरता था त्यों वह उस पर
३७ दृष्टि करके बोला देखो ईश्वर का मेम्ना। उन दो शिष्यों
३८ ने उस को बोलते सुना और यीशु के पीछे हो लिये। यीशु ने मुंह फेरके उन को पीछे आते देखके उन से कहा तुम क्या खोजते हो. उन्हों ने उस से कहा हे रब्बी अर्थात हे गुरु
३९ आप कहां रहते हैं। उस ने उन से कहा आके देखो. उन्हों ने जाके देखा वह कहां रहता था और उस दिन उस के

संग रहे कि दो घड़ी के अटकल दिन रहा था। जो दो ४०
जन योहन की सुनके यीशु के पीछे हो लिये उन में से एक
तो शिमोन पितर का भाई अन्द्रिय था। उस ने पहिले ४१
अपने निज भाई शिमोन को पाया और उस से कहा हम
ने मसीह को अर्थात ख्रीष्ट को पाया है। तब वह उसे यीशु ४२
पास लाया और यीशु ने उस पर दृष्टि कर कहा तू यूनस
का पुत्र शिमोन है तू कैफा अर्थात पितर कहावेगा।

दूसरे दिन यीशु ने गालील देश को जाने की इच्छा किई ४३
और फिलिप को पाके उस से कहा मेरे पीछे आ। फिलिप ४४
तो अन्द्रिय और पितर के नगर बैतसैदा का था। फिलिप ४५
ने नथनेल को पाके उस से कहा जिस के विषय में मूसा ने
व्यवस्था में और भविष्यद्वक्ताओं ने लिखा है उस को हम ने
पाया है अर्थात यूसफ के पुत्र नासरत नगर के यीशु को।
नथनेल ने उस से कहा क्या कोई उत्तम बस्तु नासरत से ४६
उत्पन्न हो सकती है. फिलिप ने उस से कहा आके देखिये।
यीशु ने नथनेल को अपने पास आते देखा और उस के विषय ४७
में कहा देखो यह सचमुच इस्रायेली है जिस में कपट नहीं
है। नथनेल ने उस से कहा आप मुझे कहां से पहचानते ४८
हैं. यीशु ने उस को उत्तर दिया कि फिलिप के तुझे बुलाने
के पहिले जब तू गूलर के वृक्ष तले था तब मैं ने तुझे देखा।
नथनेल ने उस को उत्तर दिया कि हे गुरु आप ईश्वर के ४९
पुत्र हैं आप इस्रायेल के राजा हैं। यीशु ने उस को उत्तर ५०
दिया मैं ने जो तुझ से कहा कि मैं ने तुझे गूलर के वृक्ष तले
देखा क्या तू इस लिये विश्वास करता है. तू इन से बड़े
काम देखेगा। फिर उस से कहा मैं तुम से सच सच कहता ५१
हूं इस के पीछे तुम स्वर्ग को खुला और ईश्वर के दूतों को
मनुष्य के पुत्र के ऊपर से चढ़ते उतरते देखोगे।

२ दूसरा पर्ब्ब ।

१ यीशु का जल को दाख रस बनाना । १२ यिरूशलीम में मन्दिर को शुद्ध करना । १८ अपने मरने और जी उठने के विषय में भविष्यद्वाक्य कहना । २३ बिश्वास करनेहारों के हृदय को जांचना ।

१ तीसरे दिन गालील के काना नगर में एक बिवाह का
२ भोज था और यीशु की माता वहां थी । यीशु भी और
३ उस के शिष्य लोग उस बिवाह के भोज में बुलाये गये । जब
दाख रस घट गया तब यीशु की माता ने उस से कहा उन
४ के पास दाख रस नहीं है । यीशु ने उस से कहा हे नारी
आप को मुझ से क्या काम . मेरा समय अब लों नहीं पहुंचा
५ है । उस की माता ने सेवकों से कहा जो कुछ वह तुम से
६ कहे सो करो । वहां पत्थर के छः मटके यिहूदियों के शुद्ध
करने की रीति के अनुसार धरे थे जिन में डेढ़ डेढ़ अथवा
७ दो दो मन समाते थे । यीशु ने उन से कहा मटकों को जल
८ से भर देओ . सो उन्हों ने उन्हें मुंहामुंह भर दिया । तब
उस ने उन से कहा अब उंडेलो और भोज के प्रधान के पास
९ ले जाओ . वे ले गये । जब भोज के प्रधान ने वह जल जो
दाख रस बन गया था चीखा और वह नहीं जानता था
कि वह कहां से आया परन्तु जिन सेवकों ने जल उंडेला
था वे जानते थे तब भोज के प्रधान ने दूल्हे को बुलाया .
१० और उस से कहा हर एक मनुष्य पहिले अच्छा दाख रस
देता और जब लोग पीके छक जाते तब मध्यम देता है .
११ तू ने अच्छा दाख रस अब लों रखा है । यीशु ने गालील के
काना नगर में आश्चर्य्य कर्म्मों का यह आरंभ किया और
अपनी महिमा प्रगट किई और उस के शिष्यों ने उस पर
बिश्वास किया ।

१२ इस के पीछे वह और उस की माता और उस के भाई

और उस के शिष्य लोग कफर्नाहुम नगर को गये परन्तु वहां बहुत दिन न रहे। यिहूदियों का निस्तार पर्ब्ब १३ निकट था और यीशु यिरूशलीम को गया। और उस ने १४ मन्दिर में गोरूओं औ भेड़ों औ कपोतों के बेचनेहारों को और सर्राफों को बैठे हुए पाया। तब उस ने रस्सियों का १५ कोड़ा बनाके उन सभों को भेड़ों औ गोरूओं समेत मन्दिर से निकाल दिया और सर्राफों के पैसे बिथराके पीढ़ों को उलट दिया. और कपोतों के बेचनेहारों से कहा इन को १६ यहां से ले जाओ मेरे पिता का घर ब्योपार का घर मत बनाओ। तब उस के शिष्यों ने स्मरण किया कि लिखा १७ है तेरे घर के विषय में की धुन मुझे खा जाती है।

इस पर यिहूदियों ने उस से कहा तू जो यह करता है १८ तो हमें कौन सा चिन्ह दिखाता है। यीशु ने उन को उत्तर १९ दिया कि इस मन्दिर को ढा दो और मैं उसे तीन दिन में उठाऊंगा। यिहूदियों ने कहा यह मन्दिर छयालीस बरस २० में बनाया गया और तू क्या तीन दिन में इसे उठावेगा। परन्तु वह अपने देह के मन्दिर के विषय में बोला। सो जब २१ २२ वह मृतकों में से जी उठा तब उस के शिष्यों ने स्मरण किया कि उस ने उन्हों से यह बात कही थी और उन्हों ने धर्म्मपुस्तक पर और उस वचन पर जो यीशु ने कहा था विश्वास किया।

जब वह निस्तार पर्ब्ब में यिरूशलीम में था तब बहुत २३ लोगों ने उस के आश्चर्य्य कर्म्मों को जो वह करता था देखके उस के नाम पर विश्वास किया। परन्तु यीशु ने अपने को २४ उन्हों के हाथ नहीं सौंपा क्योंकि वह सभों को जानता था. और उसे प्रयोजन न था कि मनुष्य के विषय में साक्षी कोई २५ देवे क्योंकि वह आप जानता था कि मनुष्य में क्या है।

३ तीसरा पर्व्व ।

१ यीशु का निकोदीम को नये जन्म के विषय में उपदेश देना । ९ अपनी मृत्यु के और बिश्वास करने के विषय में उस का उपदेश । २२ यीशु और योहन का बपतिसमा देना । २५ यीशु के विषय में योहन की साक्षी ।

१ फरीशियों में से निकोदीम नाम एक मनुष्य था जो
२ यिहूदियों का एक प्रधान था । वह रात को यीशु पास
आया और उस से कहा हे गुरु हम जानते हैं कि आप
ईश्वर की ओर से उपदेशक आये हैं क्योंकि कोई इन आश्चर्य्य
कर्म्मों को जो आप करते हैं जो ईश्वर उस के संग न हो
३ तो नहीं कर सकता है । यीशु ने उस को उत्तर दिया कि
मैं तुझ से सच सच कहता हूं कोई यदि फिरके न जन्मे
४ तो ईश्वर का राज्य नहीं देख सकता है । निकोदीम ने
उस से कहा मनुष्य बूढ़ा होके क्योंकर जन्म ले सकता है .
क्या वह अपनी माता के गर्भ में दूसरी बेर प्रवेश करके
५ जन्म ले सकता है । यीशु ने उत्तर दिया कि मैं तुझ से
सच सच कहता हूं कोई यदि जल और आत्मा से न जन्मे
६ तो ईश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता है । जो
शरीर से जन्मा है सो शरीर है और जो आत्मा से जन्मा
७ है सो आत्मा है । अचंभा मत कर कि मैं ने तुझ से कहा
८ तुम को फिरके जन्म लेना अवश्य है । पवन जहां चाहता
है तहां बहता है और तू उस का शब्द सुनता है परन्तु
नहीं जानता है वह कहां से आता और किधर को जाता
है . जो कोई आत्मा से जन्मा है सो इसी रीति से है ।
९ निकोदीम ने उस को उत्तर दिया कि यह बातें क्योंकर
१० हो सकती हैं । यीशु ने उस को उत्तर दिया क्या तू इस्रा-
येली लोगों का उपदेशक है और यह बातें नहीं जानता ।
११ मैं तुझ से सच सच कहता हूं हम जो जानते हैं सो कहते

हैं और जो देखा है उस पर साक्षी देते हैं और तुम हमारी साक्षी ग्रहण नहीं करते हो। जो मैं ने तुम से पृथिवी पर १२ की बातें कहीं और तुम प्रतीति नहीं करते हो तो यदि मैं तुम से स्वर्ग में की बातें कहूं तुम क्योंकर प्रतीति करोगे। और कोई स्वर्ग पर नहीं चढ़ गया है केवल वह जो स्वर्ग १३ से उतरा अर्थात मनुष्य का पुत्र जो स्वर्ग में है। जिस रीति १४ से मूसा ने जंगल में सांप को ऊंचा किया उसी रीति से अवश्य है कि मनुष्य का पुत्र ऊंचा किया जाय. इस लिये कि जो १५ कोई उस पर विश्वास करे सो नाश न होय परन्तु अनन्त जीवन पावे। क्योंकि ईश्वर ने जगत को ऐसा प्यार किया १६ कि उस ने अपना एकलौता पुत्र दिया कि जो कोई उस पर विश्वास करे सो नाश न होय परन्तु अनन्त जीवन पावे। ईश्वर ने अपने पुत्र को जगत में इस लिये नहीं भेजा १७ कि जगत को दंड के योग्य ठहरावे परन्तु इस लिये कि जगत उस के द्वारा त्राण पावे। जो उस पर बिश्वास करता १८ है सो दंड के योग्य नहीं ठहराया जाता है परन्तु जो विश्वास नहीं करता सो दंड के योग्य ठहर चुका है क्यों-कि उस ने ईश्वर के एकलौते पुत्र के नाम पर बिश्वास नहीं किया है। और दंड के योग्य ठहराने का कारण यह है १९ कि उजियाला जगत में आया है और मनुष्यों ने अंधियारे को उजियाले से अधिक प्यार किया क्योंकि उन के काम बुरे थे। क्योंकि जो कोई बुराई करता है सो उजियाले से २० घिन्न करता है और उजियाले के पास नहीं आता है न हो कि उस के कामों पर उलहना दिया जाय। परन्तु जो २१ सच्चाई पर चलता है सो उजियाले के पास आता है इस लिये कि उस के काम प्रगट होवें कि ईश्वर की ओर से किये गये हैं।

२२ इस के पीछे यीशु और उस के शिष्य यिहूदिया देश में आये और उस ने वहां उन के संग रहके बपतिसमा दिलाया।
२३ योहन भी शालीम के निकट ऐनन नाम स्थान में बपतिसमा देता था क्योंकि वहां बहुत जल था और लोग आके
२४ बपतिसमा लेते थे। क्योंकि योहन अब लों बन्दीगृह में नहीं डाला गया था।
२५ योहन के शिष्यों और यिहूदियों में शुद्ध करने के बिषय
२६ में बिबाद हुआ। और उन्हों ने योहन के पास आके उस से कहा हे गुरु जो यर्दन के उस पार आप के संग था जिस पर आप ने साक्षी दिई है देखिये वह बपतिसमा दिलाता
२७ है और सब लोग उस के पास जाते हैं। योहन ने उत्तर दिया यदि स्वर्ग से उस को न दिया जाय तो मनुष्य कुछ
२८ नहीं पा सकता है। तुम आप ही मेरे साक्षी हो कि मैं ने कहा मैं ख्रीष्ट नहीं हूं पर उस के आगे भेजा गया हूं।
२९ दूल्हिन जिस की है सोई दूल्हा है परन्तु दूल्हे का मित्र जो खड़ा होके उस की सुनता है दूल्हे के शब्द से अति आनन्दित
३० होता है. मेरा यह आनन्द पूरा हुआ है। अवश्य है
३१ कि वह बढ़े और मैं घटूं। जो ऊपर से आता है सो सभों के ऊपर है. जो पृथिवी से है सो पृथिवी का है और पृथिवी की
३२ बातें कहता है. जो स्वर्ग से आता है सो सभों के ऊपर है। जो उस ने देखा और सुना है वह उस पर साक्षी देता है और कोई
३३ उस की साक्षी ग्रहण नहीं करता। जिस ने उस की साक्षी ग्रहण किई है सो इस बात पर छाप दे चुका कि ईश्वर
३४ सत्य है। इस लिये कि जिसे ईश्वर ने भेजा है सो ईश्वर की बातें कहता है क्योंकि ईश्वर उस को आत्मा नाप से
३५ नहीं देता है। पिता पुत्र को प्यार करता है और उस ने
३६ सब कुछ उस के हाथ में दिया है। जो पुत्र पर बिश्वास

करता है उस को अनन्त जीवन है पर जो पुत्र को न माने सो जीवन को नहीं देखेगा परन्तु ईश्वर का क्रोध उस पर रहता है ।

४ चौथा पर्व्व ।

१ शोमिरोनी स्त्री से यीशु की बातचीत और अमृत का दृष्टान्त और सच्ची उपासना का वर्णन । २७ नगर में उस स्त्री का यीशु के विषय में समाचार कहना । ३१ शिष्यों से यीशु की बातचीत । ३९ नगर के लोगों का उस पर विश्वास करना । ४३ उस का गालील में जाना और राजा के यहां के एक पुरुष के पुत्र को चंगा करना ।

जब प्रभु ने जाना कि फरीशियों ने सुना है कि यीशु १ योहन से अधिक शिष्य करके उन्हें बपतिसमा देता है . तौभी यीशु आप नहीं परन्तु उस के शिष्य बपतिसमा देते २ थे . तब वह यिहूदिया को छोड़के फिर गालील को गया । ३ और उस को शोमिरोन देश में से जाना अवश्य हुआ । सो ४ ५ वह शिकर नाम शोमिरोन के एक नगर पर उस भूमि के निकट पहुंचा जिसे याकूब ने अपने पुत्र यूसफ को दिया । और याकूब का कूआं वहां था सो यीशु मार्ग में चलने से ६ थकित हो उस कूए पर यूं ही बैठ गया और दो पहर के निकट था । एक शोमिरोनी स्त्री जल भरने को आई . ७ यीशु ने उस से कहा मुझे पीने को दीजिये । उस के शिष्य ८ लोग भोजन मोल लेने को नगर में गये थे । शोमिरोनी स्त्री ९ ने उस से कहा आप यिहूदी होके मुझ से जो शोमिरोनी स्त्री हूं क्योंकर पीने को मांगते हैं क्योंकि यिहूदी लोग शोमिरोनियों के संग व्यवहार नहीं करते । यीशु ने उस को १० उत्तर दिया जो तू ईश्वर के दान को जानती और वह कौन है जो तुझ से कहता है मुझे पीने को दीजिये तो तू उस से मांगती और वह तुझे अमृत जल देता । स्त्री ने ११ उस से कहा हे प्रभु जल भरने को आप के पास कुछ नहीं

है और कूआं गहिरा है तो वह अमृत जल आप को कहां
१२ से मिला है। क्या आप हमारे पिता याकूब से बड़े हैं
जिस ने यह कूआं हमें दिया और आप ही अपने सन्तान
१३ और अपने ढोर समेत उस में से पिया। यीशु ने उस को
उत्तर दिया कि जो कोई यह जल पीवे सो फिर पियासा
१४ होगा . पर जो कोई वह जल पीवे जो मैं उस को देऊंगा
सो फिर कभी पियासा न होगा परन्तु जो जल मैं उसे
देऊंगा सो उस में अनन्त जीवन लों उमंगनेहारे जल का
१५ सोता हो जायगा। स्त्री ने उस से कहा हे प्रभु यह जल
मुझे दीजिये कि मैं पियासी न होऊं और न जल भरने को
१६ यहां आऊं। यीशु ने उस से कहा जा अपने स्वामी को
१७ बुलाके यहां आ। स्त्री ने उत्तर दिया कि मेरे तईं स्वामी
नहीं है . यीशु उस से बोला तू ने अच्छा कहा कि मेरे तईं
१८ स्वामी नहीं है . क्योंकि तेरे पांच स्वामी हो चुके और
अब जो तेरे संग रहता है सो तेरा स्वामी नहीं है . यह
१९ तू ने सच कहा है। स्त्री ने उस से कहा हे प्रभु मुझे सूझ
२० पड़ता है कि आप भविष्यद्वक्ता हैं। हमारे पितरों ने इसी
पहाड़ पर भजन किया और आप लोग कहते हैं कि वह
स्थान जहां भजन करना उचित है यिरूशलीम में है।
२१ यीशु ने उस से कहा हे नारी मेरी प्रतीति कर कि वह
समय आता है जिस में तुम न इस पहाड़ पर और न
२२ यिरूशलीम में पिता का भजन करोगे। तुम लोग जिसे नहीं
जानते हो उस का भजन करते हो हम लोग जिसे जानते
हैं उस का भजन करते हैं क्योंकि त्राण यिहूदियों में से है।
२३ परन्तु वह समय आता है और अब है जिस में सच्चे भक्त
आत्मा और सच्चाई से पिता का भजन करेंगे क्योंकि पिता
२४ ऐसे भजन करनेहारों को चाहता है। ईश्वर आत्मा है और

अवश्य है कि उस का भजन करनेहारे आत्मा और सच्चाई
से भजन करें। स्त्री ने उस से कहा मैं जानती हूं कि मसीह २५
अर्थात ख्रीष्ट आता है . वह जव आवेगा तव हमें सव
कुछ वतावेगा। यीशु ने उस से कहा मैं जो तुझ से वोलता २६
हूं वही हूं।

इतने में उस के शिष्य आये और अचंभा किया कि वह २७
स्त्री से वात करता है तौभी किसी ने नहीं कहा कि आप
क्या चाहते हैं अथवा किस लिये उस से वात करते हैं।
तव स्त्री ने अपना घड़ा छोड़ा और नगर में जाके लोगों से २८
कहा . आओ एक मनुष्य को देखो जिस ने सव कुछ जो २९
मैं ने किया है मुझ से कहा है . यह क्या ख्रीष्ट है। सो वे ३०
नगर से निकलके उस पास आये।

इस वीच में शिष्यों ने यीशु से विन्ती किई कि हे गुरु ३१
खाइये। उस ने उन से कहा खाने को मेरे पास भोजन है ३२
जो तुम नहीं जानते हो। शिष्यों ने आपस में कहा क्या ३३
कोई उस पास कुछ खाने को लाया है। यीशु ने उन से कहा ३४
मेरा भोजन यह है कि अपने भेजनेहारे की इच्छा पर चलूं
और उस का काम पूरा करूं। क्या तुम नहीं कहते हो ३५
कि अव भी चार मास हैं तव कटनी आवेगी . देखो मैं
तुम से कहता हूं अपनी आंखें उठाके खेतों को देखो कि वे
कटनी के लिये पक चुके हैं। और काटनेहारा वनि पाता ३६
और अनन्त जीवन के लिये फल वटोरता है जिस्तें वोने-
हारा और काटनेहारा दोनों एक संग आनन्द करें। इस ३७
में वह वात सच्ची है कि एक वोता है और दूसरा काटता
है। जिस में तुम ने परिश्रम नहीं किया है उस को मैं ने तुम्हें ३८
काटने को भेजा . दूसरों ने परिश्रम किया है और तुम ने
उन के परिश्रम में प्रवेश किया है।

३९ उस नगर के शोमिरोनियों में से बहुतों ने उस स्त्री के बचन के कारण जिस ने साक्षी दिई कि उस ने सब कुछ जो मैं ने किया है मुझ से कहा है यीशु पर बिश्वास किया। ४० इस लिये जब शोमिरोनी लोग उस पास आये तब उस से बिन्ती किई कि हमारे यहां रहिये . और वह वहां दो ४१ दिन रहा। और उस के बचन के कारण बहुत अधिक ४२ लोगों ने बिश्वास किया . और उस स्त्री से कहा हम अब तेरे बचन के कारण बिश्वास नहीं करते हैं क्योंकि हम ने आप ही सुना है और जानते हैं कि यह सचमुच जगत का त्राणकर्त्ता ख्रीष्ट है।

४३ दो दिन के पीछे यीशु वहां से निकलके गालील को गया। ४४ उस ने तो आप ही साक्षी दिई कि भविष्यद्वक्ता अपने निज ४५ देश में आदर नहीं पाता है। जब वह गालील में आया तब गालीलियों ने उसे ग्रहण किया क्योंकि जो कुछ उस ने यिरूशलीम में पर्व्व में किया था उन्हों ने सब देखा था कि ४६ वे भी पर्व्व में गये थे। सो यीशु फिर गालील के काना नगर में आया जहां उस ने जल को दाख रस बनाया था . और राजा के यहां का एक पुरुष था जिस का पुत्र कफर्ना- ४७ हुम में रोगी था। उस ने जब सुना कि यीशु यिहूदिया से गालील में आया है तब उस पास जाके उस से बिन्ती किई कि आके मेरे पुत्र को चंगा कीजिये . क्योंकि वह ४८ लड़का मरने पर था। यीशु ने उस से कहा जो तुम चिन्ह और अद्भुत काम न देखो तो बिश्वास नहीं करोगे। ४९ राजा के यहां के पुरुष ने उस से कहा हे प्रभु मेरे बालक के ५० मरने के आगे आइये। यीशु ने उस से कहा चला जा तेरा पुत्र जीता है . उस मनुष्य ने उस बात पर जो यीशु ने उस से ५१ कही बिश्वास किया और चला गया। और वह जाता ही

था कि उस के दास उस से आ मिले और सन्देश दिया कि आप का लड़का जीता है। उस ने उन से पूछा किस ५२ घड़ी उस का जी हलका हुआ. उन्हों ने उस से कहा कल एक घड़ी दिन झुकते ज्वर ने उस को छोड़ा। सो पिता ने ५३ जाना कि उसी घड़ी में हुआ जिस घड़ी यीशु ने उस से कहा तेरा पुत्र जीता है और उस ने औ उस के सारे घराने ने विश्वास किया। यह दूसरा आश्चर्य्य कर्म्म यीशु ने ५४ यिहूदिया से गालील में आके किया।

५ पांचवां पर्व्व।

१ यीशु का विश्राम के दिन में अड़तीस बरस के रोगी मनुष्य को चंगा करना। १४ यिहूदियों का उसे मार डालने की इच्छा करना। १९ उस का अपनी महिमा को वर्णन करना। ३० अपने विषय में योहन की और ईश्वर पिता की और धर्म्म-पुस्तक की साक्षी का वर्णन करना।

इस के पीछे यिहूदियों का पर्व्व हुआ और यीशु यिरू- १ शलीम को गया। यिरूशलीम में भेड़ी फाटक के पास एक २ कुंड है जो इब्रीय भाषा में बैथेसदा कहावता है जिस के पांच ओसारे हैं। इन्हों में रोगियों अंधों लंगड़ों और सूखे ३ अंगवालों की बड़ी भीड़ पड़ी रहती थी जो जल के हिलने की बाट देखते थे। क्योंकि समय के अनुसार एक स्वर्ग- ४ दूत उस कुंड में उतरके जल को हिलाता था इस से जो कोई जल के हिलने के पीछे उस में पहिले उतरता था कोई भी रोग उस को लगा हो चंगा हो जाता था। एक मनुष्य ५ वहां था जो अड़तीस बरस से रोगी था। यीशु ने उसे पड़े ६ हुए देखके और यह जानके कि उसे अब बहुत दिन हो चुके उस से कहा क्या तू चंगा होने चाहता है। रोगी ने ७ उस को उत्तर दिया कि हे प्रभु मेरा कोई मनुष्य नहीं है कि जब जल हिलाया जाय तब मुझे कुंड में उतारे और

८ जब लों मैं जाता हूं दूसरा मुझ से आगे उतरता है। यीशु
९ ने उस से कहा उठ अपनी खाट उठाके चल। वह मनुष्य
तुरन्त चंगा हो गया और अपनी खाट उठाके चलने लगा
१० पर उसी दिन बिस्रामवार था। इस लिये यिहूदियों ने उस
चंगा किये हुए मनुष्य से कहा यह बिस्राम का दिन है
११ खाट उठाना तुझे उचित नहीं है। उस ने उन्हें उत्तर
दिया कि जिस ने मुझे चंगा किया उसी ने मुझ से कहा
१२ अपनी खाट उठाके चल। उन्हों ने उस से पूछा वह मनुष्य
कौन है जिस ने तुझ से कहा अपनी खाट उठाके चल।
१३ परन्तु वह चंगा किया हुआ मनुष्य नहीं जानता था वह
कौन है क्योंकि उस स्थान में भीड़ होने से यीशु वहां से
हट गया।

१४ इस के पीछे यीशु ने उस को मन्दिर में पाके उस से कहा
देख तू चंगा हुआ है फिर पाप मत कर न हो कि इस से बुरी
१५ कोई बिपत्ति तुझ पर आवे। उस मनुष्य ने जाके यिहूदियों
से कह दिया कि जिस ने मुझे चंगा किया सो यीशु है।
१६ इस कारण यिहूदियों ने यीशु को सताया और उसे मार
डालने चाहा कि उस ने बिस्राम के दिन में यह काम किया
१७ था। यीशु ने उन को उत्तर दिया कि मेरा पिता अब लों
१८ काम करता है मैं भी काम करता हूं। इस कारण यिहू-
दियों ने और भी उसे मार डालने चाहा कि उस ने न
केवल बिस्रामवार की विधि को लंघन किया परन्तु ईश्वर
को अपना निज पिता कहके अपने को ईश्वर के तुल्य भी
किया।

१९ इस पर यीशु ने उन्हों से कहा मैं तुम से सच सच कहता
हूं पुत्र आप से कुछ नहीं कर सकता है केवल जो कुछ वह
पिता को करते देखे क्योंकि जो कुछ वह करता है उसे

पुत्र भी वैसे ही करता है। क्योंकि पिता पुत्र को प्यार २० करता है और जो वह आप करता सो सब उस को बताता है और वह इन से बड़े काम उस को बतावेगा जिस्तें तुम अचंभा करो। क्योंकि जैसा पिता मृतकों को उठाता और २१ जिलाता है वैसा ही पुत्र भी जिन्हें चाहता है उन्हें जिलाता है। और पिता किसी का विचार भी नहीं करता है परन्तु २२ विचार करने का सब अधिकार पुत्र को दिया है इस लिये कि सब लोग जैसे पिता का आदर करते हैं वैसे पुत्र का आदर करें। जो पुत्र का आदर नहीं करता है सो पिता २३ का जिस ने उसे भेजा आदर नहीं करता है। मैं तुम से २४ सच सच कहता हूं जो मेरा बचन सुनके मेरे भेजनेहारे पर विश्वास करता है उस को अनन्त जीवन है और दंड की आज्ञा उस पर नहीं होती परन्तु वह मृत्यु से पार होके जीवन में पहुंचा है। मैं तुम से सच सच कहता हूं २५ वह समय आता है और अब है जिस में मृतक लोग ईश्वर के पुत्र का शब्द सुनेंगे और जो सुनेंगे सो जीयेंगे। क्यों- २६ कि जैसा पिता आप ही से जीता है तैसा उस ने पुत्र को भी अधिकार दिया है कि आप ही से जीवे . और उस को २७ विचार करने का भी अधिकार दिया है क्योंकि वह मनुष्य का पुत्र है। इस से अचंभा मत करो क्योंकि वह समय २८ आता है जिस में जो कबरों में हैं सो सब उस का शब्द सुनके निकलेंगे . जिस से भलाई करनेहारे जीवन के लिये २९ जी उठेंगे और बुराई करनेहारे दंड के लिये जी उठेंगे।

मैं आप से कुछ नहीं कर सकता हूं जैसा मैं सुनता हूं ३० वैसा विचार करता हूं और मेरा विचार यथार्थ है क्योंकि मैं अपनी इच्छा नहीं चाहता हूं परन्तु पिता की इच्छा जिस ने मुझे भेजा। जो मैं अपने विषय में साक्षी देता हूं तो मेरी ३१

३२ साक्षी ठीक नहीं है। दूसरा है जो मेरे विषय में साक्षी देता है और मैं जानता हूं कि जो साक्षी वह मेरे विषय में देता
३३ है सो साक्षी ठीक है। तुम ने योहन के पास भेजा और उस
३४ ने सत्य पर साक्षी दिई। मैं मनुष्य से साक्षी नहीं लेता हूं परन्तु मैं यह बातें कहता हूं इस लिये कि तुम त्राण पावो।
३५ वह तो जलता और चमकता हुआ दीपक था और तुम कितनी बेर लों उस के उजियाले में आनन्द करने को प्रसन्न
३६ थे। परन्तु योहन की साक्षी से बड़ी साक्षी मेरे पास है क्योंकि जो काम पिता ने मुझे पूरे करने को दिये हैं अर्थात ये ही काम जो मैं करता हूं मेरे विषय में साक्षी देते हैं कि पिता ने
३७ मुझे भेजा है। और पिता ने जिस ने मुझे भेजा आप ही मेरे विषय में साक्षी दिई है . तुम ने कभी उस का शब्द न सुना
३८ है और उस का रूप न देखा है। और तुम उस का बचन अपने में नहीं रखते हो कि जिसे उस ने भेजा उस का बिश्वास
३९ नहीं करते हो। धर्म्मपुस्तक में ढूंढ़ो क्योंकि तुम समझते हो कि उस में अनन्त जीवन हमें मिलता है और वही है जो
४० मेरे विषय में साक्षी देता है। परन्तु तुम जीवन पाने को मेरे
४१ पास आने नहीं चाहते हो। मैं मनुष्यों से आदर नहीं लेता
४२ हूं। परन्तु मैं तुम्हें जानता हूं कि ईश्वर का प्रेम तुम में नहीं
४३ है। मैं अपने पिता के नाम से आया हूं और तुम मुझे ग्रहण नहीं करते हो . यदि दूसरा अपने ही नाम से आवे तो उसे
४४ ग्रहण करोगे। तुम जो एक दूसरे से आदर लेते हो और वह आदर जो अद्वैत ईश्वर से है नहीं चाहते हो क्योंकर
४५ बिश्वास कर सकते हो। मत समझो कि मैं पिता के आगे तुम पर दोष लगाऊंगा . तुम पर दोष लगानेहारा तो है
४६ अर्थात मूसा जिस पर तुम भरोसा रखते हो। क्योंकि जो तुम मूसा का बिश्वास करते तो मेरा बिश्वास करते इस लिये

कि उस ने मेरे विषय में लिखा। परन्तु जो तुम उस के लिखे ४७ पर विश्वास नहीं करते हो तो मेरे कहे पर क्योंकर बिश्वास करोगे।

६ छठवां पर्व्व।

१ यीशु का पांच सहस्र मनुष्यों को थोड़े भोजन से तृप्त करना। १६ समुद्र पर चलना। २२ बहुत लोगों का उसे ढूंढ़ना और उस का अपने को जीवन की रोटी के दृष्टान्त से प्रगट करना। ४१ बिवादी यिहूदियों को उत्तर देना। ६० बहुत शिष्यों का उसे छोड़ना और प्रेरितों का उस के संग बने रहना।

इस के पीछे यीशु गालील के समुद्र अर्थात तिबरिया के १ समुद्र के उस पार गया। और बहुत लोग उस के पीछे हो २ लिये इस कारण कि उन्हों ने उस के आश्चर्य्य कर्म्मों को देखा जो वह रोगियों पर करता था। तब यीशु पर्ब्बत पर चढ़के ३ अपने शिष्यों के संग वहां बैठा। और यिहूदियों का पर्व्व ४ अर्थात निस्तार पर्व्व निकट था। यीशु ने अपनी आंखें ५ उठाके बहुत लोगों को अपने पास आते देखा और फिलिप से कहा हम कहां से रोटी मोल लेवें कि ये लोग खावें। उस ने उसे परखने को यह बात कही क्योंकि जो वह करने ६ पर था सो आप जानता था। फिलिप ने उस को उत्तर दिया ७ कि दो सौ सूकियों की रोटी उन के लिये इतनी भी न होगी कि उन में से हर एक को थोड़ी थोड़ी मिले। उस के शिष्यों ८ में से एक ने अर्थात शिमोन पितर के भाई अन्द्रिय ने उस से कहा, यहां एक छोकरा है जिस पास जव की पांच रोटी ९ और दो मछली हैं परन्तु इतने लोगों के लिये ये क्या हैं। यीशु ने कहा उन मनुष्यों को बैठाओ, उस स्थान में १० बहुत घास थी सो पुरुष जो गिन्ती में पांच सहस्र के अटकल थे बैठ गये। तब यीशु ने रोटियां ले धन्य मानके शिष्यों ११ को बांट दिईं और शिष्यों ने बैठनेहारों को और वैसे ही

१२ मछलियों में से जितनी वे चाहते थे उतनी दिईं। जब वे तृप्त हुए तब उस ने अपने शिष्यों से कहा बचे हुए टुकड़े बटोर
१३ लो कि कुछ खोया न जाय। सो उन्हों ने बटोरा और जव की पांच रोटियों के जो टुकड़े खानेहारों से बच रहे उन
१४ से बारह टोकरी भरीं। उन मनुष्यों ने यह आश्चर्य्य कर्म्म जो यीशु ने किया था देखके कहा यह सचमुच वह भविष्य-
१५ द्वक्ता है जो जगत में आनेवाला था। जब यीशु ने जाना कि वे मुझे राजा बनाने के लिये आके मुझे पकड़ेंगे तब वह फिर अकेला पर्ब्बत पर गया।

१६ जब सांझ हुई तब उस के शिष्य लोग समुद्र के तीर पर
१७ गये. और नाव पर चढ़के समुद्र के उस पार कफर्नाहूम को जाने लगे. और अंधियारा हुआ था और यीशु उन के
१८ पास नहीं आया था। बड़ी बयार के बहने से समुद्र में लहरें
१९ भी उठती थीं। जब वे डेढ़ अथवा दो कोस खे गये थे तब उन्हों ने यीशु को समुद्र पर चलते और नाव के निकट
२० आते देखा और डर गये। परन्तु उस ने उन से कहा मैं
२१ हूं डरो मत। तब वे उसे नाव पर चढ़ा लेने को प्रसन्न थे और तुरन्त नाव उस तीर पर जहां वे जाते थे लग गई।

२२ दूसरे दिन जो लोग समुद्र के उस पार खड़े थे उन्हों ने जाना कि जिस नाव पर यीशु के शिष्य चढ़े उसे छोड़के और कोई नाव यहां नहीं थी और यीशु अपने शिष्यों के संग उस नाव पर नहीं चढ़ा पर केवल उस के शिष्य चले
२३ गये। तौभी पीछे और नावें तिबरिया नगर से उस स्थान के निकट आईं थीं जहां उन्हों ने जब प्रभु ने धन्य माना
२४ था रोटी खाई। सो जब लोगों ने देखा कि यीशु यहां नहीं है और न उस के शिष्य तब वे भी नावों पर चढ़के
२५ यीशु को ढूंढ़ते हुए कफर्नाहूम को आये। और वे समुद्र के

पार उसे पाके उस से बोले हे गुरु आप यहां कब आये। यीशु ने उन्हें उत्तर दिया कि मैं तुम से सच सच कहता हूं २६ तुम मुझे इस लिये नहीं ढूंढ़ते हो कि तुम ने आश्चर्य्य कर्म्मों को देखा परन्तु इस लिये कि उन रोटियों में से खाके तृप्त हुए। नाशमान भोजन के लिये परिश्रम मत करो परन्तु उस २७ भोजन के लिये जो अनन्त जीवन लों रहता है जिसे मनुष्य का पुत्र तुम को देगा क्योंकि पिता ने अर्थात ईश्वर ने उसी पर छाप दिई है। उन्हों ने उस से कहा ईश्वर के कार्य्य २८ करने को हम क्या करें। यीशु ने उन्हें उत्तर दिया ईश्वर २९ का कार्य्य यह है कि जिसे उस ने भेजा है उस पर तुम विश्वास करो। उन्हों ने उस से कहा आप कौन सा आश्चर्य्य ३० कर्म्म करते हैं कि हम देखके आप का विश्वास करें. आप क्या करते हैं। हमारे पितरों ने जंगल में मन्ना खाया जैसा ३१ लिखा है कि उस ने उन्हें स्वर्ग की रोटी खाने को दिई। यीशु ने उन से कहा मैं तुम से सच सच कहता हूं मूसा ने ३२ तुम्हें स्वर्ग की रोटी न दिई परन्तु मेरा पिता तुम्हें सच्ची स्वर्ग की रोटी देता है। क्योंकि ईश्वर की रोटी वह है ३३ जो स्वर्ग से उतरती और जगत को जीवन देती है। उन्हों ३४ ने उस से कहा हे प्रभु यही रोटी हमें नित्य दीजिये। यीशु ने उन से कहा जीवन की रोटी मैं हूं. जो मेरे पास ३५ आवे सो कभी भूखा न होगा और जो मुझ पर विश्वास करे सो कभी पियासा न होगा। परन्तु मैं ने तुम से कहा ३६ कि तुम मुझे देख भी चुके और विश्वास नहीं करते हो। सब जो पिता मुझ को देता है मेरे पास आवेगा और जो ३७ कोई मेरे पास आवे मैं उसे किसी रीति से दूर न करूंगा। क्योंकि मैं अपनी इच्छा नहीं परन्तु अपने भेजनेहारे की ३८ इच्छा पूरी करने को स्वर्ग से उतरा हूं। और पिता की इच्छा ३९

जिस ने मुझे भेजा यह है कि जिन्हें उस ने मुझ को दिया है उन में से मैं किसी को न खोऊं परन्तु उन्हें पिछले दिन में
४० उठाऊं। मेरे भेजनेहारे की इच्छा यह है कि जो कोई पुत्र को देखे और उस पर बिश्वास करे सो अनन्त जीवन पावे और मैं उसे पिछले दिन में उठाऊंगा।

४१ तब यिहूदी लोग उस के विषय में कुड़कुड़ाने लगे इस लिये कि उस ने कहा जो रोटी स्वर्ग से उतरी सो मैं हूं।
४२ वे बोले क्या यह यूसफ का पुत्र यीशु नहीं है जिस के माता और पिता को हम जानते हैं . तो वह क्योंकर कहता है
४३ कि मैं स्वर्ग से उतरा हूं। यीशु ने उन को उत्तर दिया कि
४४ आपस में मत कुड़कुड़ाओ। यदि पिता जिस ने मुझे भेजा उसे न खींचे तो कोई मेरे पास नहीं आ सकता है और
४५ उस को मैं पिछले दिन में उठाऊंगा। भविष्यद्वक्ताओं के पुस्तक में लिखा है कि वे सब ईश्वर के सिखाये हुए होंगे सो हर एक जिस ने पिता से सुना और सीखा है मेरे पास
४६ आता है। यह नहीं कि किसी ने पिता को देखा है . केवल
४७ जो ईश्वर की ओर से है उसी ने पिता को देखा है। मैं तुम से सच सच कहता हूं जो कोई मुझ पर बिश्वास करता
४८ है उस को अनन्त जीवन है। मैं जीवन की रोटी हूं।
४९ ५० तुम्हारे पितरों ने जंगल में मन्ना खाया और मर गये। यह वह रोटी है जो स्वर्ग से उतरती है कि जो उस से खावे
५१ सो न मरे। मैं जीवती रोटी हूं जो स्वर्ग से उतरी . यदि कोई यह रोटी खाय तो सदा लों जीयेगा और जो रोटी मैं देऊंगा सो मेरा मांस है जिसे मैं जगत के जीवन के
५२ लिये देऊंगा। इस पर यिहूदी लोग आपस में बिवाद करने लगे कि यह हमें क्योंकर अपना मांस खाने को दे सकता
५३ है। यीशु ने उन से कहा मैं तुम से सच सच कहता हूं जो

तुम मनुष्य के पुत्र का मांस न खावो और उस का लोहू न पीवो तो तुम में जीवन नहीं है। जो मेरा मांस खाता और ५४ मेरा लोहू पीता है उस को अनन्त जीवन है और मैं उसे पिछले दिन में उठाऊंगा। क्योंकि मेरा मांस सच्चा भोजन ५५ है और मेरा लोहू सच्ची पीने की वस्तु है। जो मेरा मांस ५६ खाता और मेरा लोहू पीता है सो मुझ में रहता है और मैं उस में रहता हूं। जैसा जीवते पिता ने मुझे भेजा और ५७ मैं पिता से जीता हूं तैसा वह भी जो मुझे खावे मुझ से जीयेगा। यह वह रोटी है जो स्वर्ग से उतरी. जैसा ५८ तुम्हारे पितरों ने मन्ना खाया और मर गये ऐसा नहीं. जो यह रोटी खाय सो सदा लों जीयेगा। उस ने कफर्नाहुम ५९ में उपदेश करते हुए सभा के घर में यह बातें कहीं।

उस के शिष्यों में से बहुतों ने यह सुनके कहा यह बात ६० कठिन है इसे कौन सुन सकता है। यीशु ने अपने मन में ६१ जाना कि उस के शिष्य इस बात के विषय में कुड़कुड़ाते हैं इस लिये उन से कहा क्या इस बात से तुम को ठोकर लगती है। यदि मनुष्य के पुत्र को जहां वह आगे था उस स्थान ६२ पर चढ़ते देखो तो क्या कहोगे। आत्मा तो जीवनदायक ६३ है शरीर से कुछ लाभ नहीं. जो बातें मैं तुम से बोलता हूं सो आत्मा हैं और जीवन हैं। परन्तु तुम्हों में से कितने ६४ हैं जो विश्वास नहीं करते हैं. यीशु तो आरंभ से जानता था कि वे कौन हैं जो विश्वास करनेहारे नहीं हैं और वह कौन है जो मुझे पकड़वायगा। और उस ने कहा ६५ इसी लिये मैं ने तुम से कहा है कि यदि मेरे पिता की ओर से उस को न दिया जाय तो कोई मेरे पास नहीं आ सकता है। इस समय से उस के शिष्यों में से बहुतेरे पीछे ६६ हटे और उस के संग और न चले। इस लिये यीशु ने उन ६७

बारह शिष्यों से कहा क्या तुम भी जाने चाहते हो ।
६८ शिमोन पितर ने उस को उत्तर दिया कि हे प्रभु हम किस
के पास जायें . आप के पास अनन्त जीवन की बातें हैं ।
६९ और हम ने बिश्वास किया और जान लिया है कि आप
७० जीवते ईश्वर के पुत्र खीष्ट हैं। यीशु ने उन को उत्तर दिया
क्या मैं ने तुम बारहों को नहीं चुना और तुम में से एक तो
७१ शैतान है । वह शिमोन के पुत्र यिहूदा इस्करियोती के
विषय में बोला क्योंकि वही उसे पकड़वाने पर था और वह
बारह शिष्यों में से एक था ।

७ सातवां पर्ब्ब ।

१ यीशु का अपने भाइयों से बातचीत करना और तंबूवास पर्ब्ब में यिरूशलीम को जाना । १४ मन्दिर में यिहूदियों को उपदेश देना । २५ यीशु के विषय में लोगों के अनेक विचार और उस का उत्तर देना । ४५ प्यादों और फरीशियों और निकोदीम का आपस में विवाद ।

१ इस के पीछे यीशु गालील में फिरने लगा क्योंकि यिहूदी
लोग उसे मार डालने चाहते थे इस लिये वह यिहूदिया
२ में फिरने नहीं चाहता था । और यिहूदियों का पर्ब्ब
३ अर्थात तंबूबास पर्ब्ब निकट था। इस लिये उस के भाइयों
ने उस से कहा यहां से निकलके यिहूदिया में जा कि तेरे
४ शिष्य लोग भी तेरे काम जो तू करता है देखें। क्योंकि
कोई नहीं गुप्त में कुछ करता और आप ही प्रगट होने
चाहता है . जो तू यह करता है तो अपने तईं जगत को
५ दिखा । क्योंकि उस के भाई भी उस पर बिश्वास नहीं
६ करते थे । यीशु ने उन से कहा मेरा समय अब लों नहीं
७ पहुंचा है परन्तु तुम्हारा समय नित्य बना है । जगत तुम
से बैर नहीं कर सकता है परन्तु वह मुझ से बैर करता
है क्योंकि मैं उस के विषय में साक्षी देता हूं कि उस के

काम बुरे हैं। तुम इस पर्ब्ब में जाओ . मैं अभी इस पर्ब्ब ८
में नहीं जाता हूं क्योंकि मेरा समय अब लों पूरा नहीं
हुआ है। वह उन से यह बातें कहके गालील में रह गया। ९
परन्तु जब उस के भाई लोग चले गये तब वह आप भी १०
प्रगट होके नहीं पर जैसा गुप्त होके पर्ब्ब में गया। यिहूदी ११
लोग पर्ब्ब में उसे ढूंढ़ते थे और बोले वह कहां है। और १२
लोग उस के विषय में बहुत बातें आपस में फुसफुसाके कहते
थे . कितनों ने कहा वह उत्तम मनुष्य है परन्तु औरों ने
कहा सो नहीं पर वह लोगों को भरमाता है। तौभी १३
यिहूदियों के डरके मारे कोई उस के विषय में खोलके नहीं
बोला।

पर्ब्ब के बीचोबीच यीशु मन्दिर में जाके उपदेश करने १४
लगा। यिहूदियों ने अचंभा कर कहा यह बिन सीखे क्यों- १५
कर विद्या जानता है। यीशु ने उन को उत्तर दिया कि १६
मेरा उपदेश मेरा नहीं परन्तु मेरे भेजनेहारे का है। यदि १७
कोई उस की इच्छा पर चला चाहे तो इस उपदेश के विषय में
जानेगा कि वह ईश्वर की ओर से है अथवा मैं अपनी ओर से
कहता हूं। जो अपनी ओर से कहता है सो अपनी ही बड़ाई १८
चाहता है परन्तु जो अपने भेजनेहारे की बड़ाई चाहता है
सोई सत्य है और उस में अधर्म्म नहीं है। क्या मूसा ने तुम्हें १९
व्यवस्था न दिई . तौभी तुम में से कोई व्यवस्था पर नहीं चलता
है . तुम क्यों मुझे मार डालने चाहते हो। लोगों ने उत्तर दिया २०
कि तुझे भूत लगा है . कौन तुझे मार डालने चाहता है।
यीशु ने उन को उत्तर दिया कि मैं ने एक काम किया और २१
तुम सब अचंभा करते हो। मूसा ने तुम्हें खतने की आज्ञा २२
दिई . इस कारण नहीं कि वह मूसा की ओर से है परन्तु
पितरों की ओर से है . और तुम विश्राम के दिन में मनुष्य का

२३ खतना करते हो । जो बिश्राम के दिन में मनुष्य का खतना किया जाता है जिस्तें मूसा की व्यवस्था लंघन न होय तो तुम मुझ से क्यों इस लिये क्रोध करते हो कि मैं ने
२४ बिश्राम के दिन में सम्पूर्ण एक मनुष्य को चंगा किया। मुंह देखके बिचार मत करो परन्तु यथार्थ बिचार करो ।

२५ तब यिरूशलीम के निवासियों में से कितने बोले क्या
२६ यह वह नहीं है जिसे वे मार डालने चाहते हैं । और देखो वह खोलके बात करता है और वे उस से कुछ नहीं कहते . क्या प्रधानों ने निश्चय जान लिया है कि यह
२७ सचमुच ख्रीष्ट है। परन्तु इस मनुष्य को हम जानते हैं कि वह कहां से है पर ख्रीष्ट जब आवेगा तब कोई नहीं
२८ जानेगा कि वह कहां से है । यीशु ने मन्दिर में उपदेश करते हुए पुकारके कहा तुम मुझे जानते और यह भी जानते हो कि मैं कहां से हूं . मैं तो आप से नहीं आया हूं परन्तु मेरा भेजनेहारा सत्य है जिसे तुम नहीं जानते हो ।
२९ मैं उसे जानता हूं क्योंकि मैं उस की ओर से हूं और उस ने
३० मुझे भेजा है । इस पर उन्हों ने उस को पकड़ने चाहा तौभी किसी ने उस पर हाथ न बढ़ाया क्योंकि उस का समय अब
३१ लों नहीं पहुंचा था । और लोगों में से बहुतों ने उस पर बिश्वास किया और कहा ख्रीष्ट जब आवेगा तब क्या इन आश्चर्य्य कर्म्मों से जो इस ने किये हैं अधिक करेगा ।

३२ फरीशियों ने लोगों को उस के विषय में यह बातें फुस-फुसाके कहते सुना और फरीशियों और प्रधान याजकों
३३ ने प्यादों को उसे पकड़ने को भेजा । इस पर यीशु ने कहा मैं अब थोड़ी बेर तुम्हारे साथ रहता हूं तब अपने भेजने-
३४ हारे के पास जाता हूं। तुम मुझे ढूंढ़ोगे और न पाओगे और
३५ जहां मैं रहूंगा तहां तुम नहीं आ सकोगे । यिहूदियों ने

आपस में कहा यह कहां जायगा कि हम उसे नहीं पावेंगे . क्या वह यूनानियों में के तितर बितर लोगों के पास जायगा और यूनानियों को उपदेश देगा। यह क्या ३६ बात है जो उस ने कही कि तुम मुझे ढूंढ़ोगे और न पाओगे और जहां मैं रहूंगा तहां तुम नहीं आ सकोगे।

पिछले दिन पर्ब्ब के बड़े दिन में यीशु ने खड़ा हो पुकारके ३७ कहा यदि कोई पियासा होवे तो मेरे पास आके पीवे। जो मुझ पर विश्वास करे जैसा धर्म्मपुस्तक ने कहा तैसा ३८ उस के अन्तर से अमृत जल की नदियां बहेंगीं। उस ने यह ३९ बचन आत्मा के विषय में कहा जिसे उस पर बिश्वास करने-हारे पाने पर थे क्योंकि पवित्र आत्मा अब लों नहीं दिया गया था इस लिये कि यीशु की महिमा अब लों प्रगट न हुई थी। लोगों में से बहुतों ने यह बचन सुनके कहा यह ४० सचमुच वह भविष्यद्वक्ता है। औरों ने कहा यह ख्रीष्ट है ४१ परन्तु औरों ने कहा क्या ख्रीष्ट गालील में से आवेगा। क्या ४२ धर्म्मपुस्तक ने नहीं कहा कि ख्रीष्ट दाऊद के वंश से और बैतलहम नगर से जहां दाऊद रहता था आवेगा। सो ४३ उस के कारण लोगों में विभेद हुआ। उन में से कितने उस को ४४ पकड़ने चाहते थे परन्तु किसी ने उस पर हाथ न बढ़ाये।

तब प्यादे लोग प्रधान याजकों और फरीशियों के पास ४५ आये और उन्हों ने उन से कहा तुम उसे क्यों नहीं लाये हो। प्यादों ने उत्तर दिया कि किसी मनुष्य ने कभी इस मनुष्य की ४६ नाईं बात न किई। फरीशियों ने उन को उत्तर दिया क्या ४७ तुम भी भरमाये गये हो। क्या प्रधानों अथवा फरीशियों में से ४८ किसी ने उस पर विश्वास किया है। परन्तु ये लोग जो ४९ व्यवस्था को नहीं जानते हैं स्रापित हैं। निकोदीम जो रात ५० को यीशु पास आया और आप उन में से एक था उन से बोला.

५१ हमारी व्यवस्था जब लों मनुष्य की न सुने और न जाने कि वह क्या करता है तब लों क्या उस को दोषी ठहराती है ।
५२ उन्हों ने उसे उत्तर दिया क्या आप भी गालील के हैं . ढूंढ़के
५३ देखिये कि गालील में से भविष्यद्वक्ता प्रगट नहीं होता । तब सब कोई अपने अपने घर को गये ।

८ आठवां पर्ब्ब ।

१ यीशु का एक व्यभिचारिणी को छुड़ाना । १२ उस के उपदेश की सच्चाई का प्रमाण । २१ उस का यिहूदियों को चिताना । ३३ इब्राहीम के सुभाव के दृष्टान्त से उन्हों की कुचाल पर उलहना देना । ४८ अपनी महिमा का बखान करना ।

१
२ परन्तु यीशु जैतून पर्ब्बत पर गया . और भोर को फिर मन्दिर में आया और सब लोग उस पास आये और वह
३ बैठके उन्हें उपदेश देने लगा । तब अध्यापकों और फरीशियों ने एक स्त्री को जो व्यभिचार में पकड़ी गई थी उस
४ पास लाके बीच में खड़ी किई . और उस से कहा हे गुरु
५ यह स्त्री व्यभिचार कर्म्म करते ही पकड़ी गई । व्यवस्था में मूसा ने हमें आज्ञा दिई कि ऐसी स्त्रियां पत्थरवाह किई
६ जावें सो आप क्या कहते हैं । उन्हों ने उस की परीक्षा करने को यह बात कही कि उस पर दोष लगाने का गौं मिले परन्तु यीशु नीचे झुकके उंगली से भूमि पर लिखने
७ लगा । जब वे उस से पूछते रहे तब उस ने उठके उन से कहा तुम्हों में से जो निष्पापी होय सो पहिले उस पर पत्थर
८ फेंके । और वह फिर नीचे झुकके भूमि पर लिखने लगा ।
९ पर वे यह सुनके और अपने अपने मन से दोषी ठहरके बड़ों से लेके छोटों तक एक एक करके निकल गये और केवल यीशु रह गया और वह स्त्री बीच में खड़ी रही ।
१० यीशु ने उठके स्त्री को छोड़ और किसी को न देखके उस से कहा हे नारी वे तेरे दोषदायक कहां हैं . क्या किसी ने

तुझ पर दंड की आज्ञा न दिई। उस ने कहा हे प्रभु किसी ने ११
नहीं . यीशु ने उस से कहा मैं भी तुझ पर दंड की आज्ञा
नहीं देता हूं जा और फिर पाप मत कर।

तब यीशु ने फिर लोगों से कहा मैं जगत का प्रकाश हूं . १२
जो मेरे पीछे आवे सो अंधकार में नहीं चलेगा परन्तु
जीवन का उजियाला पावेगा। फरीशियों ने उस से कहा १३
तू अपने ही विषय में साक्षी देता है तेरी साक्षी ठीक नहीं
है। यीशु ने उन को उत्तर दिया कि जो मैं अपने विषय १४
में साक्षी देता हूं तौभी मेरी साक्षी ठीक है क्योंकि मैं
जानता हूं कि मैं कहां से आया हूं और कहां जाता हूं
परन्तु तुम नहीं जानते हो कि मैं कहां से आता हूं और
कहां जाता हूं। तुम शरीर को देखके विचार करते हो १५
मैं किसी का विचार नहीं करता हूं। और जो मैं विचार १६
करता हूं भी तो मेरा विचार ठीक है क्योंकि मैं अकेला
नहीं हूं परन्तु मैं हूं और पिता है जिस ने मुझे भेजा।
तुम्हारी व्यवस्था में लिखा है कि दो जनों की साक्षी ठीक १७
होती है। एक मैं हूं जो अपने विषय में साक्षी देता हूं १८
और पिता जिस ने मुझे भेजा मेरे विषय में साक्षी देता है।
तब उन्हों ने उस से कहा तेरा पिता कहां है . यीशु ने १९
उत्तर दिया कि तुम न मुझे न मेरे पिता को जानते हो .
जो मुझे जानते तो मेरे पिता को भी जानते। यह बातें यीशु २०
ने मन्दिर में उपदेश करते हुए भंडार घर में कहीं और
किसी ने उस को न पकड़ा क्योंकि उस का समय अब लों
नहीं पहुंचा था।

तब यीशु ने उन से फिर कहा मैं जाता हूं और तुम २१
मुझे ढूंढ़ोगे और अपने पाप में मरोगे . जहां मैं जाता हूं
तहां तुम नहीं आ सकते हो। इस पर यिहूदियों ने कहा २२

क्या वह अपने को मार डालेगा कि वह कहता है जहां
२३ मैं जाता हूं तहां तुम नहीं आ सकते हो। उस ने उन से
कहा तुम नीचे के हो मैं ऊपर का हूं . तुम इस जगत के हो
२४ मैं इस जगत का नहीं हूं। इस लिये मैं ने तुम से कहा कि
तुम अपने पापों में मरोगे क्योंकि जो तुम बिश्वास न करो
२५ कि मैं वही हूं तो अपने पापों में मरोगे। उन्हों ने उस से
कहा तू कौन है . यीशु ने उन से कहा पहिले जो मैं तुम से
२६ कहता हूं वह भी सुनो। तुम्हारे विषय में मुझे बहुत कुछ
कहना और बिचार करना है परन्तु मेरा भेजनेहारा
सत्य है और जो मैं ने उस से सुना है सोई जगत से कहता
२७ हूं। वे नहीं जानते थे कि वह उन से पिता के विषय में
२८ बोलता था। तब यीशु ने उन से कहा जब तुम मनुष्य के
पुत्र को ऊंचा करोगे तब जानोगे कि मैं वही हूं और कि
मैं आप से कुछ नहीं करता हूं परन्तु जैसे मेरे पिता ने
२९ मुझे सिखाया तैसे मैं यह बातें बोलता हूं। और मेरा
भेजनेहारा मेरे संग है . पिता ने मुझे अकेला नहीं छोड़ा
है क्योंकि मैं सदा वही करता हूं जिस से वह प्रसन्न होता
३० है। उस के यह बातें बोलते ही बहुत लोगों ने उस पर
३१ बिश्वास किया। तब यीशु ने उन यिहूदियों से जिन्हों ने
उस पर बिश्वास किया कहा जो तुम मेरे बचन में बने
३२ रहो तो सचमुच मेरे शिष्य हो। और तुम सत्य को जानोगे
और सत्य के द्वारा से तुम्हारा उद्धार होगा।

३३ उन्हों ने उस को उत्तर दिया कि हम तो इब्राहीम के
बंश हैं और कभी किसी के दास नहीं हुए हैं . तू क्योंकर
३४ कहता है कि तुम्हारा उद्धार होगा। यीशु ने उन को उत्तर
दिया मैं तुम से सच सच कहता हूं कि जो कोई पाप
३५ करता है सो पाप का दास है। दास सदा घर में नहीं

रहता है . पुत्र सदा रहता है । सो यदि पुत्र तुम्हारा ३६
उद्धार करे तो निश्चय तुम्हारा उद्धार होगा । मैं जानता ३७
हूं कि तुम इब्राहीम के वंश हो परन्तु मेरा वचन तुम में
नहीं समाता है इस लिये तुम मुझे मार डालने चाहते
हो । मैं ने अपने पिता के पास जो देखा है सो कहता हूं ३८
और तुम ने अपने पिता के पास जो देखा है सो करते
हो । उन्हों ने उस को उत्तर दिया कि हमारा पिता इब्रा- ३९
हीम है . यीशु ने उन से कहा जो तुम इब्राहीम के सन्तान
होते तो इब्राहीम के कर्म्म करते । परन्तु अव तुम मुझे ४०
अर्थात एक मनुष्य को जिस ने वह सत्य वचन जो मैं ने
ईश्वर से सुना तुम से कहा है मार डालने चाहते हो . यह
तो इब्राहीम ने नहीं किया । तुम अपने पिता के कर्म्म ४१
करते हो . उन्हों ने उस से कहा हम व्यभिचार से नहीं
जन्मे हैं हमारा एक पिता है अर्थात ईश्वर । यीशु ने उन ४२
से कहा यदि ईश्वर तुम्हारा पिता होता तो तुम मुझे प्यार
करते क्योंकि मैं ईश्वर की ओर से निकलके आया हूं . मैं
आप से नहीं आया हूं परन्तु उस ने मुझे भेजा । तुम मेरी ४३
वात क्यों नहीं बूझते हो . इसी लिये कि मेरा वचन नहीं
सुन सकते हो । तुम अपने पिता शैतान से हो और अपने ४४
पिता के अभिलाषों पर चला चाहते हो . वह आरंभ से
मनुष्यघाती था और सच्चाई में स्थिर नहीं रहता क्योंकि
सच्चाई उस में नहीं है . जव वह झूठ वोलता तव अपने
स्वभाव ही से वोलता है क्योंकि वह झूठा और झूठ का
पिता है । परन्तु मैं सत्य कहता हूं इसी लिये तुम मेरी ४५
प्रतीति नहीं करते हो । तुम में से कौन मुझे पापी ठहराता ४६
है . और जो मैं सत्य कहता हूं तो तुम क्यों मेरी
प्रतीति नहीं करते हो । जो ईश्वर से है सो ईश्वर की ४७

बातें सुनता है . तुम ईश्वर से नहीं हो इस कारण नहीं सुनते हो ।

४८ तब यिहूदियों ने उस को उत्तर दिया क्या हम अच्छा नहीं कहते हैं कि तू शोमिरोनी है और भूत तुझे लगा
४९ है । यीशु ने उत्तर दिया कि मुझे भूत नहीं लगा है परन्तु मैं अपने पिता का सन्मान करता हूं और तुम मेरा अपमान
५० करते हो । पर मैं अपनी बड़ाई नहीं चाहता हूं . एक
५१ है जो चाहता और बिचार करता है । मैं तुम से सच सच कहता हूं यदि कोई मेरी बात को पालन करे तो वह
५२ कभी मृत्यु को न देखेगा । तब यिहूदियों ने उस से कहा अब हम जानते हैं कि भूत तुझे लगा है . इब्राहीम और भविष्यद्वक्ता लोग मर गये हैं और तू कहता है कि यदि कोई मेरी बात को पालन करे तो वह कभी मृत्यु का स्वाद
५३ न चीखेगा । क्या तू हमारे पिता इब्राहीम से जो मर गया है बड़ा है . भविष्यद्वक्ता लोग भी मर गये हैं . तू अपने
५४ तईं क्या बनाता है । यीशु ने उत्तर दिया कि जो मैं अपनी बड़ाई करूं तो मेरी बड़ाई कुछ नहीं है . मेरी बड़ाई करनेहारा मेरा पिता है जिसे तुम कहते हो कि वह
५५ हमारा ईश्वर है । तौभी तुम उसे नहीं जानते हो परन्तु मैं उसे जानता हूं और जो मैं कहूं कि मैं उसे नहीं जानता हूं तो मैं तुम्हारे समान झूठा होंगा परन्तु मैं उसे
५६ जानता और उस के बचन को पालन करता हूं । तुम्हारा पिता इब्राहीम मेरा दिन देखने को हर्षित होता था और
५७ उस ने देखा और आनन्द किया । यिहूदियों ने उस से कहा तू अब लों पचास बरस का नहीं है और क्या तू ने इब्राहीम
५८ को देखा है । यीशु ने उन से कहा मैं तुम से सच सच कहता
५९ हूं कि इब्राहीम के होने के पहिले से मैं हूं । तब उन्हों ने

पत्थर उठाये कि उस पर फेंकें परन्तु यीशु छिप गया और उन्हों के बीच में से होके मन्दिर से निकला और यूं हीं चला गया।

९ नवां पर्ब्ब।

१ यीशु का एक अन्धे को चंगा करना। ८ पड़ोसियों और फरीशियों का उस चंगा किये हुए मनुष्य से प्रश्न करना। १८ यिहूदियों का उस के माता पिता से प्रश्न करना। २४ फरीशियों के आगे उस का यीशु को मान लेना। ३५ यीशु का अपने को उस पर प्रगट करना।

१ जाते हुए यीशु ने एक मनुष्य को देखा जो जन्म का अंधा था। २ और उस के शिष्यों ने उस से पूछा हे गुरु किस ने पाप किया इस मनुष्य ने अथवा उस के माता पिता ने जो वह अंधा जन्मा। ३ यीशु ने उत्तर दिया कि न तो इस ने न इस के माता पिता ने पाप किया परन्तु यह इस लिये हुआ कि ईश्वर के काम उस में प्रगट किये जायें। ४ मुझे दिन रहते अपने भेजनेहारे के कामों को करना अवश्य है. रात आती है जिस में कोई नहीं काम कर सकता है। ५ जब लों मैं जगत में हूं तब लों जगत का प्रकाश हूं। ६ यह कहके उस ने भूमि पर थूका और उस थूक से मिट्टी गीली करके वह गीली मिट्टी अंधे की आंखों पर लगाई. ७ और उस से कहा जाके शीलोह के कुंड में धो जिस का अर्थ यह है भेजा हुआ. सो उस ने जाके धोया और देखते हुए आया।

८ तब पड़ोसियों ने और जिन्हों ने आगे उसे अंधा देखा था उन्हों ने कहा क्या यह वह नहीं है जो बैठा भीख मांगता था। ९ कितनों ने कहा यह वही है औरों ने कहा यह उस की नाईं है वह आप बोला मैं वही हूं। १० तब उन्हों ने उस से कहा तेरी आंखें क्योंकर खुलीं। ११ उस ने

उत्तर दिया कि यीशु नाम एक मनुष्य ने मिट्टी गीली करके मेरी आंखों पर लगाई और मुझ से कहा शीलोह के कुंड को जा और धो सो मैं ने जाके धोया औ दृष्टि पाई।
१२ उन्हों ने उस से कहा वह मनुष्य कहां है . उस ने कहा मैं नहीं जानता हूं ।
१३ वे उस को जो आगे अंधा था फरीशियों के पास लाये।
१४ जब यीशु ने मिट्टी गीली करके उस की आंखें खोली थीं
१५ तब बिस्राम का दिन था। सो फरीशियों ने भी फिर उस से पूछा तू ने किस रीति से दृष्टि पाई . वह उन से बोला उस ने गीली मिट्टी मेरी आंखों पर लगाई और मैं ने धोया
१६ और देखता हूं। फरीशियों में से कितनों ने कहा यह मनुष्य ईश्वर की ओर से नहीं है क्योंकि वह बिस्राम का दिन नहीं मानता है . औरों ने कहा पापी मनुष्य क्योंकर ऐसे आश्चर्य्य कर्म्म कर सकता है . और उन्हों में बिभेद हुआ ।
१७ वे उस अंधे से फिर बोले उस ने जो तेरी आंखें खोलीं तो तू उस के विषय में क्या कहता है . उस ने कहा वह भविष्यद्वक्ता है ।
१८ परन्तु यिहूदियों ने जब लों उस दृष्टि पाये हुए मनुष्य के माता पिता को नहीं बुलाया तब लों उस के विषय में प्रतीति
१९ न किई कि वह अंधा था औ दृष्टि पाई । और उन्हों ने उन से पूछा क्या यह तुम्हारा पुत्र है जिसे तुम कहते हो कि वह अंधा जन्मा . तो वह अब क्योंकर देखता है ।
२० उस के माता पिता ने उन को उत्तर दिया हम जानते हैं
२१ कि यह हमारा पुत्र है और कि वह अंधा जन्मा । परन्तु वह अब क्योंकर देखता है सो हम नहीं जानते अथवा किस ने उस की आंखें खोलीं हम नहीं जानते हैं . वह सयाना है उसी से पूछिये वह अपने विषय में आप कहेगा।

यह बातें उस के माता पिता ने इस लिये कहीं कि वे यिहूदियों से डरते थे क्योंकि यिहूदी लोग आपस में ठहरा चुके थे कि यदि कोई यीशु को ख्रीष्ट करके मान लेवे तो सभा में से निकाला जायगा। इस कारण उस के माता पिता ने कहा वह सयाना है उसी से पूछिये। २२ २३

तब उन्हों ने उस मनुष्य को जो अंधा था दूसरी बेर बुलाके उस से कहा ईश्वर का गुणानुवाद कर. हम जानते हैं कि यह मनुष्य पापी है। उस ने उत्तर दिया वह पापी है कि नहीं सो मैं नहीं जानता हूं एक बात मैं जानता हूं कि मैं जो अंधा था अब देखता हूं। उन्हों ने उस से फिर कहा उस ने तुझ से क्या किया. तेरी आंखें किस रीति से खोलीं। उस ने उन को उत्तर दिया कि मैं आप लोगों से कह चुका हूं और आप लोगों ने नहीं सुना. किस लिये फिर सुना चाहते हैं. क्या आप लोग भी उस के शिष्य हुआ चाहते हैं। तब उन्हों ने उस की निन्दा कर कहा तू उस का शिष्य है पर हम मूसा के शिष्य हैं। हम जानते हैं कि ईश्वर ने मूसा से बातें किईं परन्तु इस को हम नहीं जानते कि कहां से है। उस मनुष्य ने उन को उत्तर दिया इस में अचंभा है कि आप लोग नहीं जानते वह कहां से है और उस ने मेरी आंखें खोली हैं। हम जानते हैं कि ईश्वर पापियों की नहीं सुनता है परन्तु यदि कोई ईश्वर का उपासक होय और उस की इच्छा पर चले तो वह उस की सुनता है। यह कभी सुनने में नहीं आया कि किसी ने जन्म के अंधे की आंखें खोली हों। जो यह ईश्वर की ओर से न होता तो कुछ नहीं कर सकता। उन्हों ने उस को उत्तर दिया कि तू तो सम्पूर्ण पापों में जन्मा और क्या तू हमें सिखाता है. और उन्हों ने उसे बाहर निकाल दिया। २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४

३५ यीशु ने सुना कि उन्हों ने उसे बाहर निकाल दिया था और उस को पा करके उस से कहा क्या तू ईश्वर के पुत्र पर ३६ बिश्वास करता है। उस ने उत्तर दिया कि हे प्रभु वह ३७ कौन है कि मैं उस पर बिश्वास करूं। यीशु ने उस से कहा तू ने उसे देखा भी है और जो तेरे संग बात करता है ३८ वही है। उस ने कहा हे प्रभु मैं बिश्वास करता हूं और ३९ उस को प्रणाम किया। तब यीशु ने कहा मैं इस जगत में बिचार के लिये आया हूं कि जो नहीं देखते हैं सो देखें ४० और जो देखते हैं सो अंधे हो जावें। फरीशियों में से जो जन उस के संग थे सो यह सुनके उस से बोले क्या हम भी अंधे ४१ हैं। यीशु ने उन से कहा जो तुम अंधे होते तो तुम्हें पाप न होता परन्तु अब तुम कहते हो कि हम देखते हैं इस लिये तुम्हारा पाप बना रहा।

१० दसवां पर्ब्ब ।

१ यीशु का अपने को गड़ेरिये और द्वार के दृष्टान्तों से प्रगट करना। १९ उस के विषय में यिहूदियों का बिबाद। २२ उस का अपनी भेड़ों को प्रतिज्ञा और अपनी सच्चाई का प्रमाण देना। ३९ यर्दन के उस पार जाना।

१ मैं तुम से सच सच कहता हूं कि जो द्वार से भेड़शाला में नहीं पैठता परन्तु दूसरी ओर से चढ़ जाता है सो २ चोर औ डाकू है। जो द्वार से पैठता है सो भेड़ों का रख- ३ वाला है। उस के लिये द्वारपाल खोल देता है और भेड़ें उस का शब्द सुनती हैं और वह अपनी भेड़ों को नाम ले ४ ले बुलाता है और उन्हें बाहर ले जाता है। और जब वह अपनी भेड़ें बाहर ले जाता है तब उन के आगे चलता है और भेड़ें उस के पीछे हो लेती हैं क्योंकि वे ५ उस का शब्द जानती हैं। परन्तु वे पराये के पीछे नहीं जायेंगीं पर उस से भागेंगीं क्योंकि वे परायों का शब्द नहीं

जानती हैं। यीशु ने उन से यह दृष्टान्त कहा परन्तु उन्हों ने ६
न बूझा कि यह क्या बातें हैं जो वह हम से बोलता है।
तब यीशु ने फिर उन से कहा मैं तुम से सच सच कहता ७
हूं कि मैं भेड़ों का द्वार हूं। जितने मेरे आगे आये सो ८
सब चोर औ डाकू हैं परन्तु भेड़ों ने उन की न सुनी। द्वार ९
मैं हूं. यदि मुझ में से कोई प्रवेश करे तो त्राण पावेगा
और भीतर बाहर आया जाया करेगा और चराई पावेगा।
चोर किसी और काम को नहीं केवल चोरी औ घात औ १०
नाश करने को आता है. मैं आया हूं कि भेड़ें जीवन पावें
और अधिकाई से पावें। मैं अच्छा गड़ेरिया हूं. अच्छा ११
गड़ेरिया भेड़ों के लिये अपना प्राण देता है। परन्तु मजूर १२
जो गड़ेरिया नहीं है और भेड़ें उस के निज की नहीं हैं
हुंड़ार को आते देखके भेड़ों को छोड़ देता और भाग जाता
है और हुंड़ार भेड़ें पकड़के उन्हें तितर बितर करता है।
मजूर भागता है क्योंकि वह मजूर है और भेड़ों की कुछ १३
चिन्ता नहीं करता है। मैं अच्छा गड़ेरिया हूं और जैसा १४
पिता मुझे जानता है और मैं पिता को जानता हूं वैसा
मैं अपनी भेड़ों को जानता हूं और अपनी भेड़ों से जाना
जाता हूं। और मैं भेड़ों के लिये अपना प्राण देता हूं। १५
मेरी और भेड़ें हैं जो इस भेड़शाला की नहीं हैं. मुझे उन १६
को भी लाना होगा और वे मेरा शब्द सुनेंगी और एक
झुंड और एक रखवाला होगा। पिता इस कारण से मुझे १७
प्यार करता है कि मैं अपना प्राण देता हूं जिस्तें उसे
फिर लेऊं। कोई उस को मुझ से नहीं लेता है परन्तु मैं १८
आप से उसे देता हूं. उसे देने का मुझे अधिकार है और
उसे फिर लेने का मुझे अधिकार है. यह आज्ञा मैं ने
अपने पिता से पाई।

१९ तब यिहूदियों में इन बातों के कारण फिर बिभेद हुआ।
२० उन में से बहुतों ने कहा उस को भूत लगा है वह बौरहा
२१ है तुम उस की क्यों सुनते हो। औरों ने कहा यह
बातें भूतग्रस्त की नहीं हैं . भूत क्या अन्धों की आंखें खोल
सकता है।

२२ यिरूशलीम में स्थापन पर्ब्ब हुआ और जाड़े का समय
२३ था। और यीशु मन्दिर में सुलेमान के ओसारे में फिरता
२४ था। तब यिहूदियों ने उसे घेरके उस से कहा तू हमारे
मन को कब लों दुबधा में रखेगा . जो तू ख्रीष्ट है तो हम
२५ से खोलके कह। यीशु ने उन्हें उत्तर दिया कि मैं ने तुम
से कहा और तुम बिश्वास नहीं करते हो . जो काम मैं
अपने पिता के नाम से करता हूं वे ही मेरे विषय में साक्षी
२६ देते हैं। परन्तु तुम बिश्वास नहीं करते हो क्योंकि तुम
२७ मेरी भेड़ों में से नहीं हो जैसा मैं ने तुम से कहा। मेरी भेड़ें
मेरा शब्द सुनती हैं और मैं उन्हें जानता हूं और वे मेरे
२८ पीछे हो लेती हैं। और मैं उन्हें अनन्त जीवन देता हूं
और वे कभी नाश न होंगीं और कोई उन्हें मेरे हाथ से
२९ छीन न लेगा। मेरा पिता जिस ने उन्हें मुझ को दिया है
सभों से बड़ा है और कोई मेरे पिता के हाथ से छीन नहीं
३० सकता है। मैं और पिता एक हैं। ३१ तब यिहूदियों ने फिर
३२ उसे पत्थरवाह करने को पत्थर उठाये। यीशु ने उन को
उत्तर दिया कि मैं ने अपने पिता की ओर से बहुत से भले काम
तुम्हें दिखाये हैं उन में से किस काम के लिये मुझे पत्थर-
३३ वाह करते हो। यिहूदियों ने उस को उत्तर दिया कि भले
काम के लिये हम तुझे पत्थरवाह नहीं करते हैं परन्तु
ईश्वर की निन्दा के लिये और इस लिये कि तू मनुष्य होके
३४ अपने को ईश्वर बनाता है। यीशु ने उन्हें उत्तर दिया

क्या तुम्हारी व्यवस्था में नहीं लिखा है कि मैं ने कहा तुम ईश्वरगण हो। यदि उस ने उन को ईश्वरगण कहा जिन ३५ के पास ईश्वर का वचन पहुंचा और धर्म्मपुस्तक की बात लोप नहीं हो सकती है. तो जिसे पिता ने पवित्र करके ३६ जगत में भेजा है उस से क्या तुम कहते हो कि तू ईश्वर की निन्दा करता है इस लिये कि मैं ने कहा मैं ईश्वर का पुत्र हूं। जो मैं अपने पिता के कार्य्य नहीं करता हूं तो मेरी प्रतीति ३७ मत करो। परन्तु जो मैं करता हूं तो यदि मेरी प्रतीति ३८ न करो तौभी उन कार्य्यों की प्रतीति करो इस लिये कि तुम जानो और विश्वास करो कि पिता मुझ में है और मैं उस में हूं।

तब उन्हों ने फिर उसे पकड़ने चाहा परन्तु वह उन के ३९ हाथ से निकल गया. और फिर यर्दन के उस पार उस स्थान ४० पर गया जहां योहन पहिले बपतिसमा देता था और वहां रहा। और बहुत लोग उस पास आये और बोले योहन ने तो ४१ कोई आश्चर्य्य कर्म्म नहीं किया परन्तु जो कुछ योहन ने इस के विषय में कहा सो सब सच था। और वहां ४२ बहुतों ने उस पर विश्वास किया।

११ एग्यारहवां पर्व्व।

१ इलियाजर का रोगी होना। ६ यीशु का अपने शिष्यों के संग बात करना और इलियाजर के पास जाना। १८ इलियाजर की बहिनों के संग यीशु की बातचीत। ४१ प्रार्थना करने के पीछे इलियाजर को जिलाना। ४५ इस आश्चर्य्य कर्म्म के विषय में यिहूदियों का विचार और कियाफा की भविष्यद्वाणी।

इलियाजर नाम बैथनिया का अर्थात मरियम और १ उस की बहिन मर्था के गांव का एक मनुष्य रोगी था। मरियम वही थी जिस ने प्रभु पर सुगन्ध तेल लगाया और २ उस के चरणों को अपने बालों से पोंछा और उस का भाई

३ इलियाजर था जो रोगी था। सो दोनों बहिनों ने यीशु को कहला भेजा कि हे प्रभु देखिये जिसे आप प्यार करते हैं
४ सो रोगी है। यह सुनके यीशु ने कहा यह रोग मृत्यु के लिये नहीं परन्तु ईश्वर की महिमा के लिये है कि ईश्वर
५ के पुत्र की महिमा उस के द्वारा से प्रगट किई जाय। यीशु मर्था को और उस की बहिन को और इलियाजर को प्यार करता था।

६ जब उस ने सुना कि इलियाजर रोगी है तब जिस
७ स्थान में वह था उस स्थान में दो दिन और रहा। तब इस के पीछे उस ने शिष्यों से कहा कि आओ हम फिर
८ यिहूदिया को चलें। शिष्यों ने उस से कहा हे गुरु यिहूदी लोग अभी आप को पत्थरवाह किया चाहते थे और आप
९ क्या फिर वहां जाते हैं। यीशु ने उत्तर दिया क्या दिन की बारह घड़ी नहीं हैं. यदि कोई दिन को चले तो ठोकर नहीं खाता है क्योंकि वह इस जगत का उजियाला देखता
१० है। परन्तु यदि कोई रात को चले तो ठोकर खाता है
११ क्योंकि उजियाला उस में नहीं है। उस ने यह बातें कहीं और इस के पीछे उन से बोला हमारा मित्र इलियाजर सो
१२ गया है परन्तु मैं उसे जगाने को जाता हूं। उस के शिष्यों ने कहा हे प्रभु जो वह सो गया है तो चंगा हो जायगा।
१३ यीशु ने उस की मृत्यु के विषय में कहा परन्तु उन्हों ने समझा
१४ कि उस ने नींद में सो जाने के विषय में कहा। तब यीशु ने
१५ उन से खोलके कहा इलियाजर मर गया है। और तुम्हारे लिये मैं आनन्द करता हूं कि मैं वहां नहीं था जिस्तें तुम बिश्वास करो. परन्तु आओ हम उस पास चलें।
१६ तब थोमा ने जो दिदुम कहावता है अपने संगी शिष्यों से
१७ कहा कि आओ हम भी उस के संग मरने को जायें। सो

जब यीशु आया तब उस ने यही पाया कि इलियाजर को कबर में चार दिन हो चुके ।

बैथनिया यिरूशलीम के निकट अर्थात कोश एक दूर १८ था । और बहुत से यिहूदी लोग मर्था और मरियम के पास १९ आये थे कि उन के भाई के विषय में उन को शांति देवें । सो मर्था ने जब सुना कि यीशु आता है तब जाके उस से २० भेंट किई परन्तु मरियम घर में बैठी रही । मर्था ने यीशु २१ से कहा हे प्रभु जो आप यहां होते तो मेरा भाई नहीं मरता । परन्तु मैं जानती हूं कि अब भी जो कुछ आप २२ ईश्वर से मांगें ईश्वर आप को देगा । यीशु ने उस से कहा २३ तेरा भाई जी उठेगा । मर्था ने उस से कहा मैं जानती हूं २४ कि पिछले दिन पुनरुत्थान में वह जी उठेगा । यीशु ने उस २५ से कहा मैं ही पुनरुत्थान और जीवन हूं . जो मुझ पर विश्वास करे सो यदि मर जाय तौभी जीयेगा । और जो २६ कोई जीवता हो और मुझ पर विश्वास करे सो कभी नहीं मरेगा . क्या तू इस बात का विश्वास करती है । वह २७ उस से बोली हां प्रभु मैं ने विश्वास किया है कि ईश्वर का पुत्र ख्रीष्ट जो जगत में आनेवाला था सो आप ही हैं । यह कहके वह चली गई और अपनी बहिन मरियम को २८ चुपके से बुलाके कहा गुरु आये हैं और तुझे बुलाते हैं । मरियम जब उस ने सुना तब शीघ्र उठके यीशु पास आई । २९ यीशु अब लों गांव में नहीं आया था परन्तु उसी स्थान में ३० था जहां मर्था ने उस से भेंट किई । जो यिहूदी लोग ३१ मरियम के संग घर में थे और उस को शांति देते थे सो जब उसे देखा कि वह शीघ्र उठके बाहर गई तब यह कहके उस के पीछे हो लिये कि वह कबर पर जाती है कि वहां रोवे । जब मरियम वहां पहुंची जहां यीशु था तब उसे ३२

देखके उस के पांवों पड़ी और उस से बोली हे प्रभु जो आप
३३ यहां होते तो मेरा भाई नहीं मरता । जब यीशु ने उसे
रोते हुए और जो यिहूदी लोग उस के संग आये उन्हें भी
रोते हुए देखा तब आत्मा में बिकल हुआ और घबराया .
३४ और कहा तुम ने उसे कहां रखा है . वे उस से बोले हे प्रभु
३५ ३६ आके देखिये । यीशु रोया । तब यिहूदियों ने कहा देखो
३७ वह उसे कैसा प्यार करता था । परन्तु उन में से कितनों
ने कहा क्या यह जिस ने अंधे की आंखें खोलीं यह भी न
३८ कर सकता कि यह मनुष्य नहीं मरता । यीशु अपने में
फिर बिकल होके कबर पर आया . वह गुफा थी और
३९ एक पत्थर उस पर धरा था । यीशु ने कहा पत्थर को सर-
काओ . उस मरे हुए की बहिन मर्था उस से बोली हे प्रभु
वह तो अब बसाता है क्योंकि उस को चार दिन हुए हैं ।
४० यीशु ने उस से कहा क्या मैं ने तुझ से न कहा कि जो तू
बिश्वास करे तो ईश्वर की महिमा को देखेगी ।

४१ तब जहां वह मृतक पड़ा था वहां से उन्हों ने पत्थर
को सरकाया और यीशु ने ऊपर दृष्टि कर कहा हे पिता
४२ मैं तेरा धन्य मानता हूं कि तू ने मेरी सुनी है । और मैं
जानता था कि तू सदा मेरी सुनता है परन्तु जो बहुत
लोग आसपास खड़े हैं उन के कारण मैं ने यह कहा कि
४३ वे बिश्वास करें कि तू ने मुझे भेजा । यह बातें कहके उस
४४ ने बड़े शब्द से पुकारा कि हे इलियाजर बाहर आ । तब
वह मृतक चद्दर से हाथ पांव बांधे हुए बाहर आया और
उस का मुंह अंगोछे में लपेटा हुआ था . यीशु ने उन से कहा
उसे खोलो और जाने दो ।

४५ तब बहुत से यिहूदी लोगों ने जो मरियम के पास आये
थे यह जो यीशु ने किया था देखके उस पर बिश्वास किया ।

परन्तु उन में से कितनों ने फरीशियों के पास जाके जो यीशु ४६ ने किया था सो उन्हों से कह दिया । इस पर प्रधान याजकों ४७ और फरीशियों ने सभा एकट्ठी करके कहा हम क्या करते हैं . यह मनुष्य तो बहुत आश्चर्य्य कर्म्म करता है । जो ४८ हम उसे यूं छोड़ देवें तो सब लोग उस पर विश्वास करेंगे और रोमी लोग आके हमारे स्थान और लोग को भी उठा देंगे । तब उन में से कियाफा नाम एक जन जो ४९ उस बरस का महायाजक था उन से बोला तुम लोग कुछ नहीं जानते हो . और यह विचार भी नहीं करते ५० हो कि हमारे लिये अच्छा है कि लोगों के लिये एक मनुष्य मरे और यह सम्पूर्ण लोग नाश न होवें । यह बात वह ५१ आप से नहीं बोला परन्तु उस बरस का महायाजक होके भविष्यद्वाक्य से कहा कि यीशु उन लोगों के लिये मरने पर था . और केवल उन लोगों के लिये नहीं परन्तु इस लिये ५२ भी कि ईश्वर के सन्तानों को जो तितर बितर हुए हैं एक में एकट्ठे करे । सो उसी दिन से उन्हों ने उसे घात करने ५३ को आपस में विचार किया । इस लिये यीशु प्रगट होके ५४ यिहूदियों के बीच में और नहीं फिरा परन्तु वहां से जंगल के निकट के देश में इफ्राईम नाम एक नगर को गया और अपने शिष्यों के संग वहां रहा । यिहूदियों का निस्तार ५५ पर्व्व निकट था और बहुत लोग अपने तईं शुद्ध करने को निस्तार पर्व्व के आगे देश में से यिरूशलीम को गये । उन्हों ५६ ने यीशु को ढूंढ़ा और मन्दिर में खड़े हुए आपस में कहा तुम क्या समझते हो क्या वह पर्व्व में नहीं आवेगा । और ५७ प्रधान याजकों और फरीशियों ने भी आज्ञा दिई थी कि यदि कोई जाने कि यीशु कहां है तो बतावे इस लिये कि वे उसे पकड़ें ।

१२ बारहवां पर्ब्ब ।

१ मरियम का यीशु के चरणों पर सुगन्ध तेल लगाना । ९ बहुत लोगों का इलियाजर को देखने के लिये आना । १२ यीशु का यिरूशलीम में जाना । २० अन्यदेशियों का उस पास आना और उस का अपनी मृत्यु का भविष्यद्वाक्य कहना । ३७ थोड़े लोगों का बिश्वास करना । ४४ यीशु का उपदेश ।

१ निस्तार पर्ब्ब के छः दिन आगे यीशु बैथनिया में आया जहां इलियाजर था जो मर गया था जिसे उस ने मृतकों २ में से उठाया था । वहां उन्हों ने उस के लिये बियारी बनाई और मर्था ने सेवा किई और इलियाजर यीशु के ३ संग बैठनेहारों में से एक था । तब मरियम ने आध सेर जटामांसी का बहुमूल्य सुगन्ध तेल लेके यीशु के चरणों पर लगाया और उस के चरणों को अपने बालों से पोंछा और ४ तेल के सुगन्ध से घर भर गया । इस पर उस के शिष्यों में से शिमोन का पुत्र यिहूदा इस्करियोती नाम एक शिष्य जो ५ उसे पकड़वाने पर था बोला . यह सुगन्ध तेल क्यों नहीं तीन सौ सूकियों पर बेचा गया और कंगालों को दिया ६ गया । वह यह बात इस लिये नहीं बोला कि वह कंगालों की चिन्ता करता था परन्तु इस लिये कि वह चोर था और थैली रखता था और जो उस में डाला जाता सो ७ उठा लेता था । यीशु ने कहा स्त्री को रहने दे . उस ने ८ मेरे गाड़े जाने के दिन के लिये यह रखा है । कंगाल लोग तुम्हारे संग सदा रहते हैं परन्तु मैं तुम्हारे संग सदा नहीं रहूंगा ।

९ यिहूदियों में से बहुत लोगों ने जाना कि यीशु वहां है और वे केवल यीशु के कारण नहीं परन्तु इलियाजर को देखने के लिये भी आये जिसे उस ने मृतकों में से उठाया १० था । तब प्रधान याजकों ने इलियाजर को भी मार डालने

का विचार किया। क्योंकि बहुत यिहूदियों ने उस के ११ कारण जाके यीशु पर विश्वास किया।

दूसरे दिन बहुत लोग जो पर्ब्ब में आये थे जब उन्हों १२ ने सुना कि यीशु यिरूशलीम में आता है. तब खजूरों के १३ पत्ते लेके उस से मिलने को निकले और पुकारने लगे कि जय जय धन्य इस्रायेल का राजा जो परमेश्वर के नाम से आता है। यीशु एक गदही के बच्चे को पाके उस पर बैठा. १४ जैसा लिखा है कि हे सियोन की पुत्री मत डर देख तेरा १५ राजा गदही के बच्चे पर बैठा हुआ आता है। यह बातें १६ उस के शिष्यों ने पहिले नहीं समझीं परन्तु जब यीशु की महिमा प्रगट हुई तब उन्हों ने स्मरण किया कि यह बातें उस के विषय में लिखी हुई थीं और कि उन्हों ने उस से यह किया था। जो लोग उस के संग थे उन्हों ने साक्षी दिई १७ कि उस ने इलियाजर को कबर में से बुलाया और उस को मृतकों में से उठाया। लोग इसी कारण उस से आ मिले १८ भी कि उन्हों ने सुना कि उस ने यह आश्चर्य्य कर्म्म किया था। तब फरीशियों ने आपस में कहा क्या तुम देखते हो १९ कि तुम से कुछ बन नहीं पड़ता. देखो संसार उस के पीछे गया है।

जो लोग पर्ब्ब में भजन करने को आये उन्हों में से कितने २० यूनानी लोग थे। उन्हों ने गालील के बैतसैदा नगर के २१ रहनेहारे फिलिप के पास आके उस से बिन्ती किई कि हे प्रभु हम यीशु को देखने चाहते हैं। फिलिप ने आके २२ अन्द्रिय से कहा और फिर अन्द्रिय और फिलिप ने यीशु से कहा। यीशु ने उन को उत्तर दिया कि मनुष्य के पुत्र की २३ महिमा के प्रगट होने की घड़ी आ पहुंची है। मैं तुम से २४ सच सच कहता हूं यदि गेहूं का दाना भूमि में पड़के मर

न जाय तो वह अकेला रहता है परन्तु जो मर जाय तो
२५ बहुत फल फलता है। जो अपने प्राण को प्यार करे सो
उसे खोवेगा और जो इस जगत में अपने प्राण को अप्रिय
२६ जाने सो अनन्त जीवन लों उस की रक्षा करेगा। यदि
कोई मेरी सेवा करे तो मेरे पीछे हो लेवे और जहां मैं
रहूंगा तहां मेरा सेवक भी रहेगा. यदि कोई मेरी सेवा
२७ करे तो पिता उस का आदर करेगा। अब मेरा मन ब्याकुल
हुआ है और मैं क्या कहूं. हे पिता मुझे इस घड़ी से
२८ बचा. परन्तु मैं इसी लिये इस घड़ी लों आया हूं। हे
पिता अपने नाम की महिमा प्रगट कर. तब यह आकाश-
बाणी हुई कि मैं ने उस की महिमा प्रगट किई है और
२९ फिर प्रगट करूंगा। तब जो लोग खड़े हुए सुनते थे
उन्हों ने कहा कि मेघ गर्जा. औरों ने कहा कोई स्वर्ग
३० दूत उस से बोला। इस पर यीशु ने कहा यह शब्द मेरे
३१ लिये नहीं परन्तु तुम्हारे लिये हुआ। अब इस जगत का
बिचार होता है. अब इस जगत का अध्यक्ष बाहर निकाला
३२ जायगा। और मैं यदि पृथिवी पर से ऊंचा किया जाऊं
३३ तो सभों को अपनी ओर खींचूंगा। यह कहने में उस ने
३४ पता दिया कि वह कैसी मृत्यु से मरने पर था। लोगों ने
उस को उत्तर दिया कि हम ने ब्यवस्था में से सुना है कि
ख्रीष्ट सदा लों रहेगा. तू क्योंकर कहता है कि मनुष्य के
पुत्र को ऊंचा किया जाना होगा. यह मनुष्य का पुत्र कौन
३५ है। यीशु ने उन से कहा उजियाला अब थोड़ी बेर तुम्हारे
साथ है. जब लों उजियाला मिलता है तब लों चलो न
हो कि अंधकार तुम्हें घेरे. जो अंधकार में चलता है सो
३६ नहीं जानता मैं कहां जाता हूं। जब लों उजियाला
मिलता है उजियाले पर बिश्वास करो कि तुम ज्योति के

सन्तान होश्रो . यह बातें कहके यीशु चला गया श्री
उन से छिपा रहा।

परन्तु यद्यपि उस ने उन के साम्ने इतने आश्चर्य्य क
किये थे तौभी उन्हों ने उस पर बिश्वास न किया .
यिशैयाह भविष्यद्वक्ता का वचन पूरा होवे जो उस ने क
कि हे परमेश्वर किस ने हमारे समाचार का बिश्वास कि
है और परमेश्वर की भुजा किस पर प्रगट किई गई है
इस कारण वे विश्वास न कर सके क्योंकि यिशैयाह
फिर कहा . उस ने उन के नेत्र अंधे और उन का मन कठ
किया है ऐसा न हो कि वे नेत्रों से देखें और मन से बू
और फिर जावें और मैं उन्हें चंगा करूं। जब यिशैयाह
उस का ऐश्वर्य्य देखा और उस के विषय में बोला तब
ने यह बातें कहीं। पर तौभी प्रधानों में से भी बहुतों
उस पर विश्वास किया परन्तु फरीशियों के कारण न
मान लिया न हो कि वे सभा में से निकाले जाये
क्योंकि मनुष्यों की प्रशंसा उन को ईश्वर की प्रशंसा
अधिक प्रिय लगती थी।

यीशु ने पुकारके कहा जो मुझ पर बिश्वास करता
सो मुझ पर नहीं परन्तु मेरे भेजनेहारे पर विश्वास कर
है। और जो मुझे देखता है सो मेरे भेजनेहारे को देख
है। मैं जगत में ज्योति सा आया हूं कि जो कोई मुझ
विश्वास करे सो अंधकार में न रहे। और यदि कोई म
बातें सुनके विश्वास न करे तो मैं उसे दंड के योग्य न
ठहराता हूं क्योंकि मैं जगत को दंड के योग्य ठहराने
नहीं परन्तु जगत का त्राण करने को आया हूं। जो
तुच्छ जाने और मेरी बातें ग्रहण न करे एक उस को
के योग्य ठहरानेहारा है . जो वचन मैं ने कहा है व

४९ पिछले दिन में उसे दंड के योग्य ठहरावेगा। क्योंकि मैं ने अपनी ओर से बात नहीं किई है परन्तु पिता ने जिस ने मुझे भेजा आप ही मुझे आज्ञा दिई है कि मैं क्या कहूं
५० और क्या बोलूं। और मैं जानता हूं कि उस की आज्ञा अनन्त जीवन है इस लिये मैं जो बोलता हूं सो जैसा पिता ने मुझ से कहा है वैसा ही बोलता हूं।

१३ तेरहवां पर्ब्ब।

१ यीशु का अपने शिष्यों के पांवों को धोना। १२ पांव धोने का तात्पर्य्य। २१ यिहूदा के विषय में यीशु का भविष्यद्वाक्य कहना। ३१ शिष्यों को उपदेश देना। ३६ पितर के उस से मुकर जाने की भविष्यद्वाणी।

१ निस्तार पर्ब्ब के आगे यीशु ने जाना कि मेरी घड़ी आ पहुंची है कि मैं इस जगत में से पिता के पास जाऊं और उस ने अपने निज लोगों को जो जगत में थे प्यार करके
२ उन्हें अन्त लों प्यार किया। और बियारी के समय में जब शैतान शिमोन के पुत्र यिहूदा इस्करियोती के मन में उसे
३ पकड़वाने का मत डाल चुका था. तब यीशु यह जानके कि पिता ने सब कुछ मेरे हाथों में दिया है और कि मैं ईश्वर की ओर से निकल आया और ईश्वर के पास जाता
४ हूं. बियारी से उठा और अपने कपड़े रख दिये और
५ अंगोछा लेके अपनी कमर बांधी। तब पात्र में जल डालके वह शिष्यों के पांव धोने लगा और जिस अंगोछे से उस की
६ कमर बंधी थी उस से पोंछने लगा। तब वह शिमोन पितर के पास आया. उस ने उस से कहा हे प्रभु क्या आप
७ मेरे पांव धोते हैं। यीशु ने उस को उत्तर दिया कि जो मैं करता हूं सो तू अब नहीं जानता है परन्तु इस के पीछे
८ जानेगा। पितर ने उस से कहा आप मेरे पांव कभी न धोइयेगा. यीशु ने उस को उत्तर दिया कि जो मैं तुझे न

धोऊं तो मेरे संग तेरा कुछ अंश नहीं है। शिमोन पितर ९ ने उस से कहा हे प्रभु केवल मेरे पांव नहीं परन्तु मेरे हाथ और सिर भी धोइये। यीशु ने उस से कहा जो नहाया १० है उस को पांव धोने विना और कुछ आवश्यक नहीं है परन्तु वह सम्पूर्ण शुद्ध है और तुम लोग शुद्ध हो परन्तु सब नहीं। वह तो अपने पकड़वानेहारे को जानता था ११ इस लिये उस ने कहा तुम सब शुद्ध नहीं हो।

जब उस ने उन के पांव धोके अपने कपड़े ले लिये थे १२ तब फिर बैठके उन्हों से कहा क्या तुम जानते हो कि मैं ने तुम से क्या किया है। तुम मुझे हे गुरु और हे प्रभु १३ पुकारते हो और तुम अच्छा कहते हो क्योंकि मैं वही हूं। सो यदि मैं ने प्रभु और गुरु होके तुम्हारे पांव धोये हैं १४ तो तुम्हें भी एक दूसरे के पांव धोना उचित है। क्योंकि १५ मैं ने तुम को नमूना दिया है कि जैसा मैं ने तुम से किया है तुम भी वैसा करो। मैं तुम से सच सच कहता हूं दास १६ अपने स्वामी से बड़ा नहीं और न प्रेरित अपने भेजनेहारे से बड़ा है। जो तुम यह बातें जानते हो यदि उन पर १७ चलो तो धन्य हो। मैं तुम सभों के विषय में नहीं कहता १८ हूं. जिन्हें मैं ने चुना है उन्हें मैं जानता हूं. परन्तु यह इस लिये है कि धर्म्मपुस्तक का वचन पूरा होवे कि जो मेरे संग रोटी खाता है उस ने मेरे विरुद्ध अपनी लात उठाई है। मैं अब से इस के होने के आगे तुम से कहता हूं कि १९ जब वह हो जाय तब तुम विश्वास करो कि मैं वही हूं। मैं तुम से सच सच कहता हूं कि जिस किसी को मैं २० भेजूं उस को जो ग्रहण करता है सो मुझे ग्रहण करता है और जो मुझे ग्रहण करता है सो मेरे भेजनेहारे को ग्रहण करता है।

२१ यह बातें कहके यीशु आत्मा में व्याकुल हुआ और साक्षी देके बोला मैं तुम से सच सच कहता हूं कि तुम में
२२ से एक मुझे पकड़वायगा। इस पर शिष्य लोग यह सन्देह करते हुए कि वह किस के विषय में बोलता है एक दूसरे
२३ की ओर ताकने लगे। परन्तु यीशु के शिष्यों में से एक जिसे
२४ यीशु प्यार करता था उस की गोद में बैठा हुआ था। सो शिमोन पितर ने उस को सैन किया कि पूछिये कौन है
२५ जिस के विषय में आप बोलते हैं। तब उस ने यीशु की
२६ छाती पर उठंगके उस से कहा हे प्रभु कौन है। यीशु ने उत्तर दिया वही है जिस को मैं यह रोटी का टुकड़ा डुबोके देऊंगा. और उस ने टुकड़ा डुबोके शिमोन के पुत्र यिहूदा
२७ इस्करियोती को दिया। उसी समय में टुकड़ा लेने के पीछे शैतान उस में पैठ गया. तब यीशु ने उस से कहा जो तू
२८ करता है सो बहुत शीघ्र कर। परन्तु बैठनेहारों में से किसी ने न जाना कि उस ने किस कारण यह बात उस से कही।
२९ क्योंकि यिहूदा थैली जो रखता था इस लिये कितनों ने समझा कि यीशु ने उस से कहा पर्ब्ब के लिये जो हमें आवश्यक
३० है सो मोल ले अथवा कंगालों को कुछ दे। सो टुकड़ा लेने के पीछे वह तुरन्त बाहर गया. उस समय रात थी।
३१ जब वह बाहर गया था तब यीशु ने कहा अब मनुष्य के पुत्र की महिमा प्रगट होती है और ईश्वर की महिमा
३२ उस के द्वारा प्रगट होती है। जो ईश्वर की महिमा उस के द्वारा प्रगट होती है तो ईश्वर भी अपनी ओर से उस की
३३ महिमा प्रगट करेगा और तुरन्त उसे प्रगट करेगा। हे बालको मैं अब थोड़ी बेर तुम्हारे साथ हूं. तुम मुझे ढूंढ़ोगे और जैसा मैं ने यिहूदियों से कहा कि जहां मैं जाता हूं तहां तुम नहीं आ सकते हो तैसा मैं अब तुम से भी

कहता हूं। मैं तुम्हें एक नई आज्ञा देता हूं कि एक ३४ दूसरे को प्यार करो. जैसा मैं ने तुम्हें प्यार किया है तैसा तुम भी एक दूसरे को प्यार करो। जो तुम आपस में ३५ प्यार करो तो इसी से सब लोग जानेंगे कि तुम मेरे शिष्य हो।

शिमोन पितर ने उस से कहा हे प्रभु आप कहां जाते ३६ हैं. यीशु ने उस को उत्तर दिया कि जहां मैं जाता हूं तहां तू अब मेरे पीछे नहीं आ सकता है परन्तु इस के उपरान्त तू मेरे पीछे आवेगा। पितर ने उस से कहा हे ३७ प्रभु मैं क्यों नहीं अब आप के पीछे आ सकता हूं. मैं आप के लिये अपना प्राण देऊंगा। यीशु ने उस को उत्तर ३८ दिया क्या तू मेरे लिये अपना प्राण देगा. मैं तुझ से सच सच कहता हूं कि जब लों तू तीन बार मुझ से न मुकरे तब लों मुर्ग न बोलेगा।

१४ चौदहवां पर्ब्ब।

१ यीशु का अपने शिष्यों को शांति देना। ५ थोमा को सत्य मार्ग के विषय में उत्तर देना। ८ फिलिप को ईश्वर पिता को देखने के विषय में उत्तर देना। १५ शांतिदाता को भेजने और शिष्यों को ज्ञान और शांति देने की प्रतिज्ञा।

तुम्हारा मन व्याकुल न होवे. ईश्वर पर बिश्वास १ करो और मुझ पर विश्वास करो। मेरे पिता के घर में बहुत २ से रहने के स्थान हैं नहीं तो मैं तुम से कहता. मैं तुम्हारे लिये स्थान तैयार करने जाता हूं। और जो मैं जाके ३ तुम्हारे लिये स्थान तैयार करूं तो फिर आके तुम्हें अपने यहां ले जाऊंगा कि जहां मैं रहूं तहां तुम भी रहो। और मैं कहां जाता हूं सो तुम जानते हो और मार्ग को ४ जानते हो।

थोमा ने उस से कहा हे प्रभु आप कहां जाते हैं सो हम ५

नहीं जानते हैं और मार्ग को हम क्योंकर जान सकें।
६ यीशु ने उस से कहा मैं ही मार्ग औ सत्य औ जीवन हूं.
७ बिना मेरे द्वारा से कोई पिता पास नहीं पहुंचता है। जो तुम मुझे जानते तो मेरे पिता को भी जानते और अब से तुम उस को जानते हो और उस को देखा है।

८ फिलिप ने उस से कहा हे प्रभु पिता को हमें दिखाइये
९ तो हमारे लिये यही बहुत है। यीशु ने उस से कहा हे फिलिप मैं इतने दिन से तुम्हारे संग हूं और क्या तू ने मुझे नहीं जाना है. जिस ने मुझे देखा है उस ने पिता को देखा है और तू क्योंकर कहता है कि पिता को हमें
१० दिखाइये। क्या तू प्रतीति नहीं करता है कि मैं पिता में हूं और पिता मुझ में है. जो बातें मैं तुम से कहता हूं सो अपनी ओर से नहीं कहता हूं परन्तु पिता जो मुझ में
११ रहता है वही इन कामों को करता है। मेरी ही प्रतीति करो कि मैं पिता में हूं और पिता मुझ में है नहीं तो
१२ कामों ही के कारण मेरी प्रतीति करो। मैं तुम से सच सच कहता हूं कि जो मुझ पर बिश्वास करे जो काम मैं करता हूं उन्हें वह भी करेगा और इन से बड़े काम करेगा क्यों-
१३ कि मैं अपने पिता के पास जाता हूं। और जो कुछ तुम मेरे नाम से मांगोगे सोई मैं करूंगा इस लिये कि पुत्र के
१४ द्वारा पिता की महिमा प्रगट होय। जो तुम मेरे नाम से कुछ मांगो तो मैं उसे करूंगा।

१५ जो तुम मुझे प्यार करते हो तो मेरी आज्ञाओं को
१६ पालन करो। और मैं पिता से मांगूंगा और वह तुम्हें दूसरा
१७ शांतिदाता देगा कि वह सदा तुम्हारे संग रहे. अर्थात सत्यता का आत्मा जिसे संसार ग्रहण नहीं कर सकता है क्योंकि वह उसे नहीं देखता है और न उसे जानता है.

परन्तु तुम उसे जानते हो क्योंकि वह तुम्हारे संग रहता है और तुम्हों में होगा। मैं तुम्हें अनाथ नहीं छोड़ूंगा मैं १८ तुम्हारे पास आऊंगा। अब थोड़ी बेर में संसार मुझे १९ फिर नहीं देखेगा परन्तु तुम मुझे देखोगे क्योंकि मैं जीता हूं तुम भी जीओगे. उस दिन तुम जानोगे कि २० मैं अपने पिता में हूं और तुम मुझ में हो और मैं तुम में हूं। जो मेरी आज्ञाओं को पाके उन्हें पालन करता है २१ वही है जो मुझे प्यार करता है और जो मुझे प्यार करता है सो मेरे पिता का प्यारा होगा और मैं उसे प्यार करूंगा और अपने तईं उस पर प्रगट करूंगा।

तब इस्करियोती नहीं परन्तु दूसरे यिहूदा ने उस से २२ कहा हे प्रभु आप किस लिये अपने तईं हमों पर प्रगट करेंगे और संसार पर नहीं। यीशु ने उस को उत्तर दिया २३ यदि कोई मुझे प्यार करे तो मेरी बात को पालन करेगा और मेरा पिता उसे प्यार करेगा और हम उस पास आवेंगे और उस के संग वास करेंगे। जो मुझे प्यार नहीं २४ करता है सो मेरी बातें पालन नहीं करता है और जो बात तुम सुनते हो सो मेरी नहीं परन्तु पिता की है जिस ने मुझे भेजा। यह बातें मैं ने तुम्हारे संग रहते हुए तुम से २५ कही हैं। परन्तु शांतिदाता अर्थात पवित्र आत्मा जिसे २६ पिता मेरे नाम से भेजेगा वह तुम्हें सब कुछ सिखावेगा और सब कुछ जो मैं ने तुम से कहा है तुम्हें स्मरण करावेगा। मैं तुम्हें शांति दे जाता हूं मैं अपनी शांति तुम्हें २७ देता हूं. जैसा जगत देता है तैसा मैं तुम्हें नहीं देता हूं. तुम्हारा मन व्याकुल न होय और डर न जाय। तुम ने सुना कि मैं ने तुम से कहा मैं जाता हूं और २८ तुम्हारे पास फिर आऊंगा. जो तुम मुझे प्यार करते तो

मैं ने जो कहा कि मैं पिता पास जाता हूं इस से तुम
२९ आनन्द करते क्योंकि मेरा पिता मुझ से बड़ा है । और
मैं ने अब इस के होने के आगे तुम से कहा है कि जब वह
३० हो जाय तब तुम बिश्वास करो । मैं तुम्हारे संग और
बहुत बातें न कहूंगा क्योंकि इस जगत का अध्यक्ष
३१ आता है और मुझ में उस का कुछ नहीं है । परन्तु यह
इस लिये है कि जगत जाने कि मैं पिता को प्यार करता
हूं और जैसा पिता ने मुझे आज्ञा दिई तैसा ही करता हूं .
उठो हम यहां से चलें ।

१५ पन्द्रहवां पर्ब्ब ।

१ दाख लता और उस की डालियों का दृष्टान्त । ९ शिष्यों से यीशु का बड़ा प्रेम । १७ शिष्यों के सताये जाने की भविष्यद्वाणी । २२ जगत के लोगों के दोष का प्रमाण ।

१ मैं सच्ची दाख लता हूं और मेरा पिता किसान है ।
२ मुझ में जो जो डाल नहीं फलती है वह उसे दूर करता है
और जो जो डाल फलती है वह उसे शुद्ध करता है कि
३ वह अधिक फल फले । तुम तो उस बचन के गुण से जो मैं ने
४ तुम से कहा है शुद्ध हो चुके । तुम मुझ में रहो और मैं
तुम में . जैसे डाल जो वह दाख लता में न रहे तो आप से
फल नहीं फल सकती है तैसे तुम भी जो मुझ में न रहो
५ तो नहीं फल सकते हो । मैं दाख लता हूं तुम लोग डालें
हो . जो मुझ में रहता है और मैं उस में सो बहुत फल
फलता है क्योंकि मुझ से अलग तुम कुछ नहीं कर सकते
६ हो । यदि कोई मुझ में न रहे तो वह ऐसा फेंका जाता
जैसे डाल फेंकी जाती और सूख जाती और लोग ऐसी
७ डालें बटोरके आग में डालते हैं और वे जल जाती हैं । जो
तुम मुझ में रहो और मेरी बातें तुम में रहें तो जो कुछ
तुम्हारी इच्छा होय सो मांगो और वह तुम्हारे लिये हो

जायगा। तुम्हारे बहुत फल फलने में मेरे पिता की महिमा ८
प्रगट होती है और तुम मेरे शिष्य होओगे।

जैसा पिता ने मुझ से प्रेम किया है तैसा मैं ने तुम से ९
प्रेम किया है. मेरे प्रेम में रहो। जैसे मैं ने अपने पिता १०
की आज्ञाओं को पालन किया है और उस के प्रेम में रहता
हूं तैसे तुम जो मेरी आज्ञाओं को पालन करो तो मेरे
प्रेम में रहोगे। मैं ने यह बातें तुम से इस लिये कही हैं कि ११
मेरा आनन्द तुम्हों में रहे और तुम्हारा आनन्द सम्पूर्ण
हो जाय। यह मेरी आज्ञा है कि जैसा मैं ने तुम्हें प्यार १२
किया है तैसा तुम एक दूसरे को प्यार करो। इस से बड़ा १३
प्रेम किसी का नहीं है कि कोई अपने मित्रों के लिये अपना
प्राण देवे। तुम यदि सब काम करो जो मैं तुम्हें आज्ञा १४
देता हूं तो मेरे मित्र हो। मैं आगे को तुम्हें दास नहीं १५
कहता हूं क्योंकि दास नहीं जानता कि उस का स्वामी
क्या करता है परन्तु मैं ने तुम्हें मित्र कहा है क्योंकि मैं ने
जो अपने पिता से सुना है सो सब तुम्हें जनाया है। तुम १६
ने मुझे नहीं चुना परन्तु मैं ने तुम्हें चुना और तुम्हें ठह-
राया कि तुम जाके फल फलो और तुम्हारा फल रहे और
कि तुम मेरे नाम से जो कुछ पिता से मांगो वह तुम को देवे।

मैं तुम्हें इन बातों की आज्ञा देता हूं इस लिये कि तुम १७
एक दूसरे को प्यार करो। यदि संसार तुम से वैर करता १८
है तुम जानते हो कि उन्हों ने तुम से पहिले मुझ से वैर
किया। जो तुम संसार के होते तो संसार अपनों को प्यार १९
करता परन्तु तुम संसार के नहीं हो पर मैं ने तुम्हें संसार
में से चुना है इसी लिये संसार तुम से वैर करता है। जो २०
वचन मैं ने तुम से कहा कि दास अपने स्वामी से बड़ा नहीं
है सो स्मरण करो. जो उन्हों ने मुझे सताया है तो

तुम्हें भी सतावेंगे जो मेरी बात को पालन किया है तो
२१ तुम्हारी भी पालन करेंगे। परन्तु वे मेरे नाम के कारण तुम से
यह सब करेंगे क्योंकि वे मेरे भेजनेहारे को नहीं जानते हैं।
२२ जो मैं न आता और उन से बात न करता तो उन्हें
पाप न होता परन्तु अब उन्हें उन के पाप के लिये कोई
२३ बहाना नहीं है। जो मुझ से बैर करता है सो मेरे पिता
२४ से भी बैर करता है। जो मैं उन कामों को जो
और किसी ने नहीं किये हैं उन्हों में न किये होता तो
उन्हें पाप न होता परन्तु अब उन्हों ने देखके भी मुझ से
२५ और मेरे पिता से भी बैर किया है। पर यह इस लिये है
कि जो बचन उन्हों की व्यवस्था में लिखा है कि उन्हों ने
२६ मुझ से अकारण बैर किया सो पूरा होवे। परन्तु शांति-
दाता जिसे मैं पिता की ओर से तुम्हारे पास भेजूंगा अर्थात
सत्यता का आत्मा जो पिता की ओर से निकलता है जब
२७ आवेगा तब वह मेरे विषय में साक्षी देगा। और तुम भी
साक्षी देओगे क्योंकि तुम आरंभ से मेरे संग रहे हो।

१६ सोलहवां पर्ब्ब ।

१ शिष्यों के सताये जाने का भविष्यद्वाक्य। ५ यीशु के जाने से शांतिदाता का आना। ८ शांतिदाता के आने का प्रयोजन। १६ यीशु का अपने जाने के विषय में शिष्यों को समझाना और शांति देना।

१ मैं ने तुम से यह बातें कही हैं कि तुम ठोकर न खावो।
२ वे तुम्हें सभा में से निकालेंगे हां वह समय आता है जिस
में जो कोई तुम्हें मार डालेगा सो समझेगा कि मैं ईश्वर
३ की सेवा करता हूं। और वे तुम से इस लिये यह करेंगे
४ कि उन्हों ने न पिता को न मुझ को जाना है। परन्तु मैं ने
तुम से यह बातें कही हैं कि जब वह समय आवे तब
तुम उन्हें स्मरण करो कि मैं ने तुम से कह दिया. और

मैं तुम से यह बातें आरंभ से न बोला क्योंकि मैं तुम्हारे संग था।

पर अब मैं अपने भेजनेहारे के पास जाता हूं और ५ तुम में से कोई नहीं मुझ से पूछता है कि आप कहां जाते हैं। परन्तु मैं ने जो यह बातें तुम से कही हैं इस लिये ६ तुम्हारे मन शोक से भर गये हैं। तौभी मैं तुम से सच ७ बात कहता हूं तुम्हारे लिये अच्छा है कि मैं जाऊं क्योंकि जो मैं न जाऊं तो शांतिदाता तुम्हारे पास नहीं आवेगा परन्तु जो मैं जाऊं तो उसे तुम्हारे पास भेजूंगा।

और वह आके जगत को पाप के विषय में और धर्म्म के ८ विषय में और बिचार के विषय में समझावेगा। पाप के ९ विषय में यह कि वे मुझ पर विश्वास नहीं करते हैं। धर्म्म के विषय में यह कि मैं अपने पिता पास जाता हूं १० और तुम मुझे फिर नहीं देखोगे। बिचार के विषय में ११ यह कि इस जगत के अध्यक्ष का विचार किया गया है। मुझे और भी बहुत कुछ तुम से कहना है परन्तु तुम अब १२ नहीं सह सकते हो। पर वह जब आवेगा अर्थात सत्यता १३ का आत्मा तब तुम्हें सारी सच्चाई लों मार्ग बतावेगा क्योंकि वह अपनी ओर से नहीं कहेगा परन्तु जो कुछ सुनेगा सो कहेगा और वह आनेवाली बातें तुम से कह देगा। वह १४ मेरी महिमा प्रगट करेगा क्योंकि वह मेरी बात में से लेके तुम से कह देगा। जो कुछ पिता का है सो सब मेरा है १५ इस लिये मैं ने कहा कि वह मेरी बात में से लेके तुम से कह देगा।

थोड़ी बेर में तुम मुझे नहीं देखोगे और फिर थोड़ी १६ बेर में मुझे देखोगे क्योंकि मैं पिता के पास जाता हूं। तब १७ उस के शिष्यों में से कोई कोई आपस में बोले यह क्या है

जो वह हम से कहता है कि थोड़ी बेर में तुम मुझे नहीं देखोगे और फिर थोड़ी बेर में मुझे देखोगे . और यह कि
१८ मैं पिता के पास जाता हूं। सो उन्हों ने कहा यह थोड़ी बेर की बात जो वह कहता है क्या है . हम नहीं जानते
१९ वह क्या कहता है। यीशु ने जाना कि वे मुझ से पूछा चाहते हैं और उन से कहा मैं जो बोला कि थोड़ी बेर में तुम मुझे नहीं देखोगे और फिर थोड़ी बेर में मुझे देखोगे
२० क्या तुम इस के विषय में आपस में बिचार करते हो। मैं तुम से सच सच कहता हूं कि तुम रोओगे और बिलाप करोगे परन्तु संसार आनन्दित होगा . तुम्हें शोक होगा
२१ परन्तु तुम्हारा शोक आनन्द हो जायगा। स्त्री को जनने में शोक होता है क्योंकि उस का समय आ पहुंचा है परन्तु जब वह बालक जन चुकी तब जगत में एक मनुष्य के उत्पन्न होने के आनन्द के कारण अपने क्लेश को फिर स्मरण
२२ नहीं करती है। और तुम्हें तो अभी शोक होता है परन्तु मैं तुम्हें फिर देखूंगा और तुम्हारा मन आनन्दित होगा
२३ और तुम्हारा आनन्द कोई तुम से छीन न लेगा। और उस दिन तुम मुझ से कुछ नहीं पूछोगे . मैं तुम से सच सच कहता हूं जो कुछ तुम मेरे नाम से पिता से मांगोगे
२४ वह तुम को देगा। अब लों तुम ने मेरे नाम से कुछ नहीं मांगा है . मांगो तो पाओगे कि तुम्हारा आनन्द सम्पूर्ण
२५ होय। मैं ने यह बातें तुम से दृष्टान्तों में कही हैं परन्तु समय आता है जिस में मैं तुम से दृष्टान्तों में और नहीं कहूंगा परन्तु खोलके तुम्हें पिता के विषय में बताऊंगा।
२६ उस दिन तुम मेरे नाम से मांगोगे और मैं तुम से नहीं कहता हूं कि मैं तुम्हारे लिये पिता से प्रार्थना करूंगा।
२७ क्योंकि पिता आप ही तुम्हें प्यार करता है इस लिये कि

तुम ने मुझे प्यार किया है और यह विश्वास किया है कि मैं ईश्वर की ओर से निकल आया। मैं पिता की ओर से २८ निकलके जगत में आया हूं. फिर जगत को छोड़के पिता पास जाता हूं। उस के शिष्यों ने उस से कहा देखिये अब २९ तो आप खोलके कहते हैं और कुछ दृष्टान्त नहीं कहते हैं। अब हमें ज्ञान हुआ कि आप सब कुछ जानते हैं ३० और आप को प्रयोजन नहीं कि कोई आप से पूछे. इस से हम विश्वास करते हैं कि आप ईश्वर की ओर से निकल आये। यीशु ने उन को उत्तर दिया क्या तुम अब विश्वास ३१ करते हो। देखो समय आता है और अभी आया है ३२ जिस में तुम सब तितर बितर होके अपने अपने स्थान को जाओगे और मुझे अकेला छोड़ोगे. तौभी मैं अकेला नहीं हूं क्योंकि पिता मेरे संग है। मैं ने यह बातें तुम से कही ३३ हैं इस लिये कि मुझ में तुम को शांति होय. जगत में तुम्हें क्लेश होगा परन्तु ढाढ़स बांधो मैं ने जगत को जीता है।

१७ सत्रहवां पर्व्व।

१ यीशु का अपने लिये और प्रेरितों और सब शिष्यों के लिये पिता से प्रार्थना करना।

यह बातें कहके यीशु ने अपनी आंखें स्वर्ग की ओर १ उठाईं और कहा हे पिता घड़ी आ पहुंची है. अपने पुत्र की महिमा प्रगट कर कि तेरा पुत्र भी तेरी महिमा प्रगट करे। क्योंकि तू ने उस को सब प्राणियों पर अधि- २ कार दिया कि जिन्हें तू ने उस को दिया है उन सभों को वह अनन्त जीवन देवे। और अनन्त जीवन यह है ३ कि वे तुझ को जो अद्वैत सत्य ईश्वर है और यीशु खीष्ट को जिसे तू ने भेजा है पहचानें। मैं ने पृथिवी पर तेरी ४ महिमा प्रगट किई है. जो काम तू ने मुझे करने को दिया सो मैं ने पूरा किया है। और अभी हे पिता तेरे संग जगत के ५

होने के आगे जो मेरी महिमा थी उस महिमा से तू अपने संग मेरी महिमा प्रगट कर ।

६ जिन मनुष्यों को तू ने जगत में से मुझ को दिया है उन्हीं पर मैं ने तेरा नाम प्रगट किया है . वे तेरे थे और तू ने उन्हें मुझ को दिया और उन्हों ने तेरे बचन को पालन किया
७ है । अब उन्हों ने जान लिया है कि सब कुछ जो तू ने
८ मुझ को दिया है तेरी ओर से है । क्योंकि वह बातें जो तू ने मुझ को दिई हैं मैं ने उन्हों को दिई हैं और उन्हों ने उन को ग्रहण किया है और निश्चय जान लिया है कि मैं तेरी ओर से निकल आया और बिश्वास किया है कि
९ तू ने मुझे भेजा । मैं उन्हों के लिये प्रार्थना करता हूं . मैं संसार के लिये नहीं परन्तु जिन्हें तू ने मुझ को दिया है
१० उन्हीं के लिये प्रार्थना करता हूं क्योंकि वे तेरे हैं । और जो कुछ मेरा है सो सब तेरा है और जो तेरा है सो
११ मेरा है और मेरी महिमा उस में प्रगट हुई है । मैं अब जगत में नहीं रहूंगा परन्तु ये जगत में रहेंगे और मैं तेरे पास आता हूं . हे पवित्र पिता जिन्हें तू ने मुझ को दिया है उन को अपने नाम में रक्षा कर कि जैसे हम एक हैं
१२ तैसे वे एक होवें । जब मैं उन के संग जगत में था तब मैं ने तेरे नाम में उन की रक्षा किई . जिन्हें तू ने मुझ को दिया है उन की मैं ने रक्षा किई और उन में से कोई नाश नहीं हुआ केवल बिनाश का पुत्र जिस्तें धर्म्मपुस्तक का बचन
१३ पूरा होवे । अब मैं तेरे पास आता हूं और मैं जगत में यह बातें कहता हूं कि वे मेरा आनन्द अपने में सम्पूर्ण
१४ पावें । मैं ने तेरा बचन उन्हों को दिया है और संसार ने उन से बैर किया है क्योंकि जैसा मैं संसार का नहीं हूं
१५ तैसे वे संसार के नहीं हैं । मैं यह प्रार्थना नहीं करता हूं

कि तू उन्हें जगत में से ले जा परन्तु यह कि तू उन्हें उस
दुष्ट से बचा रख। जैसा मैं संसार का नहीं हूं तैसे वे संसार १६
के नहीं हैं। अपनी सच्चाई से उन्हें पवित्र कर . तेरा १७
वचन सच्चाई है। जैसे तू ने मुझे जगत में भेजा तैसे मैं ने १८
उन्हें भी जगत में भेजा है। और उन के लिये मैं अपने को १९
पवित्र करता हूं कि वे भी सच्चाई से पवित्र किये जावें।

और मैं केवल इन के लिये नहीं परन्तु उन के लिये भी २०
जो इन के वचन के द्वारा से मुझ पर विश्वास करेंगे प्रार्थना
करता हूं कि वे सब एक होवें . जैसा तू हे पिता मुझ में २१
है और मैं तुझ में हूं तैसे वे भी हम में एक होवें इस लिये कि
जगत विश्वास करे कि तू ने मुझे भेजा। और वह महिमा २२
जो तू ने मुझ को दिई है मैं ने उन को दिई है कि जैसे हम
एक हैं तैसे वे एक होवें . मैं उन में और तू मुझ में कि २३
वे एक में सिद्ध होवें और कि जगत जाने कि तू ने मुझे
भेजा और जैसा मुझे प्यार किया तैसा उन्हें प्यार किया
है। हे पिता मैं चाहता हूं कि जहां मैं रहूं तहां वे भी २४
जिन्हें तू ने मुझ को दिया है मेरे संग रहें कि वे मेरी
महिमा को देखें जो तू ने मुझ को दिई क्योंकि तू ने जगत
की उत्पत्ति के आगे मुझे प्यार किया। हे धर्म्मी पिता २५
संसार तुझे नहीं जानता है परन्तु मैं तुझे जानता हूं
और ये लोग जानते हैं कि तू ने मुझे भेजा। और मैं ने २६
तेरा नाम उन को जनाया है और जनाऊंगा कि वह प्यार
जिस से तू ने मुझे प्यार किया उन में रहे और मैं उन में रहूं।

१८ अठारहवां पर्व्व।

१ यिहूदा का यीशु को पकड़वाना। १२ प्यादों का उसे ले जाना। १५ पितर और योहन का उस के पीछे हो लेना। १९ महायाजक के आगे उस का विचार होना। २५ पितर का उस से मुकर जाना। २८ उस का पिलात के हाथ सौंपा जाना। ३३ पिलात का उसे विचार करना और छोड़ने की इच्छा करना।

१ यीशु यह बातें कहके अपने शिष्यों के संग किद्रोन नाले के उस पार निकल गया जहां एक बारी थी जिस में
२ वह और उस के शिष्य गये । उस का पकड़वानेहारा यिहूदा भी वह स्थान जानता था क्योंकि यीशु बारंबार वहां
३ अपने शिष्यों के संग एकट्ठा हुआ था । तब यिहूदा पलटन को और प्रधान याजकों औ फरीशियों की ओर से प्यादों को लेके दीपकों और मशालों और हथियारों को लिये
४ हुए वहां आया । सो यीशु सब बातें जो उस पर आनेवाली थीं जानके निकला और उन से कहा तुम किस को
५ ढूंढ़ते हो । उन्हों ने उस को उत्तर दिया कि यीशु नासरी को . यीशु ने उन से कहा मैं हूं . और उस का पकड़वाने-
६ हारा यिहूदा भी उन के संग खड़ा था । ज्यों ही उस ने उन से
७ कहा मैं हूं त्यों ही वे पीछे हटके भूमि पर गिर पड़े । तब उस ने फिर उन से पूछा तुम किस को ढूंढ़ते हो . वे बोले
८ यीशु नासरी को । यीशु ने उत्तर दिया मैं ने तुम से कहा कि मैं हूं सो जो तुम मुझे ढूंढ़ते हो तो इन्हों को जाने देओ ।
९ यह इस लिये हुआ कि जो बचन उस ने कहा था कि जिन्हें तू ने मुझ को दिया है उन में से मैं ने किसी को न खोया
१० सो पूरा होवे । शिमोन पितर के पास खड्ग था सो उस ने उसे खींचके महायाजक के दास को मारा और उस का दहिना कान काट डाला . उस दास का नाम मलक था ।
११ तब यीशु ने पितर से कहा अपना खड्ग काठी में रख . जो कटोरा पिता ने मुझ को दिया है क्या मैं उसे न पीऊं ।

१२ तब उस पलटन ने और सहस्रपति ने और यिहूदियों के
१३ प्यादों ने यीशु को पकड़के बांधा . और पहिले उसे हन्नस के पास ले गये क्योंकि कियाफा जो उस बरस का महा-
१४ याजक था उस का वह ससुर था । कियाफा वह था जिस

ने यिहूदियों को परामर्श दिया कि एक मनुष्य का हमारे लोग के लिये मरना अच्छा है।

शिमोन पितर और दूसरा शिष्य यीशु के पीछे हो लिये . १५ वह शिष्य महायाजक का जान पहचान था और यीशु के संग महायाजक के अंगने के भीतर गया। परन्तु पितर बाहर १६ द्वार पर खड़ा रहा सो दूसरा शिष्य जो महायाजक का जान पहचान था बाहर गया और द्वारपालिन से कहके पितर को भीतर ले आया। वह दासी अर्थात द्वारपालिन १७ पितर से बोली क्या तू भी इस मनुष्य के शिष्यों में से एक है. उस ने कहा मैं नहीं हूं। दास और प्यादे लोग जाड़े के १८ कारण कोयले की आग सुलगाके खड़े हुए तापते थे और पितर उन के संग खड़ा हो तापने लगा।

तब महायाजक ने यीशु से उस के शिष्यों के विषय में और १९ उस के उपदेश के विषय में पूछा। यीशु ने उस को उत्तर दिया २० कि मैं ने जगत से खोलके बातें किईं मैं ने सभा के घर में और मन्दिर में जहां यिहूदी लोग नित्य एकट्ठे होते हैं सदा उपदेश किया और गुप्त में कुछ नहीं कहा। तू मुझ से क्यों २१ पूछता है . जिन्हों ने सुना उन्हों से पूछ ले कि मैं ने उन से क्या कहा . देख वे जानते हैं कि मैं ने क्या कहा। जब २२ यीशु ने यह कहा तब प्यादों में से एक जो निकट खड़ा था उस को थपेड़ा मारके बोला क्या तू महायाजक को इस रीति से उत्तर देता है। यीशु ने उसे उत्तर दिया यदि २३ मैं ने बुरा कहा तो उस बुराई की साक्षी दे परन्तु यदि भला कहा तो मुझे क्यों मारता है। हन्नस ने यीशु को बंधे २४ हुए कियाफा महायाजक के पास भेजा।

शिमोन पितर खड़ा हुआ आग तापता था . तब २५ उन्हों ने उस से कहा क्या तू भी उस के शिष्यों में से एक है.

२६ उस ने मुकरके कहा मैं नहीं हूं। महायाजक के दासों में से एक दास जो उस मनुष्य का कुटुंब था जिस का कान पितर ने काट डाला बोला क्या मैं ने तुझे बारी में उस के संग
२७ न देखा। पितर फिर मुकर गया और तुरन्त मुर्ग बोला।
२८ तब भोर हुआ और वे यीशु को कियाफा के पास से अध्यक्षभवन पर ले गये परन्तु वे आप अध्यक्षभवन के भीतर नहीं गये इस लिये कि अशुद्ध न होवें परन्तु निस्तार
२९ पर्ब्ब का भोजन खावें। सो पिलात उन पास निकल आया
३० और कहा तुम इस मनुष्य पर क्या दोष लगाते हो। उन्हों ने उस को उत्तर दिया कि जो यह कुकर्म्मी न होता तो
३१ हम उसे आप के हाथ न सौंपते। पिलात ने उन से कहा तुम उस को लेओ और अपनी व्यवस्था के अनुसार उस का बिचार करो. यिहूदियों ने उस से कहा किसी को बध
३२ करने का हमें अधिकार नहीं है। यह इस लिये हुआ कि यीशु का बचन जिसे कहने में उस ने पता दिया कि वह कैसी मृत्यु से मरने पर था पूरा होवे।
३३ तब पिलात फिर अध्यक्षभवन के भीतर गया और यीशु को बुलाके उस से कहा क्या तू यिहूदियों का राजा
३४ है। यीशु ने उस को उत्तर दिया क्या आप अपनी ओर से यह बात कहते हैं अथवा औरों ने मेरे विषय में आप से
३५ कही। पिलात ने उत्तर दिया क्या मैं यिहूदी हूं. तेरे ही लोगों ने और प्रधान याजकों ने तुझे मेरे हाथ में सौंपा.
३६ तू ने क्या किया है। यीशु ने उत्तर दिया कि मेरा राज्य इस जगत का नहीं है. जो मेरा राज्य इस जगत का होता तो मेरे सेवक लड़ते जिस्तें मैं यिहूदियों के हाथ में न सौंपा जाता. परन्तु अब मेरा राज्य यहां का नहीं है।
३७ पिलात ने उस से कहा फिर भी तू राजा है. यीशु ने उत्तर

दिया कि आप ठीक कहते हैं क्योंकि मैं राजा हूं . मैं ने
इस लिये जन्म लिया है और इस लिये जगत में आया हूं कि
सत्य पर साक्षी देऊं . जो कोई सत्य की ओर है सो मेरा
शब्द सुनता है। पिलात ने उस से कहा सत्य क्या है और ३८
यह कहके फिर यिहूदियों के पास निकल गया और उन
से कहा मैं उस में कुछ दोष नहीं पाता हूं। परन्तु तुम्हारी ३९
यह रीति है कि मैं निस्तार पर्ब्ब में तुम्हारे लिये एक जन
को छोड़ देऊं सो क्या तुम चाहते हो कि मैं तुम्हारे लिये
यिहूदियों के राजा को छोड़ देऊं। तब सभों ने फिर पुकारा ४०
कि इस को नहीं परन्तु बरब्बा को . और बरब्बा डाकू था।

१९ उनीसवां पर्ब्ब।

१ योद्धाओं का यीशु को अपमान करना। ४ पिलात का उसे छोड़ने की युक्ति करने
के पीछे घातकों के हाथ सौंपना। १७ उस का क्रूश पर चढ़ाया जाना। २३ उस के
वस्त्र का बांटा जाना। २५ उस का अपनी माता के लिये चिन्ता करना।
२८ उस का सिरका पीना और प्राण त्यागना। ३१ योद्धा का उस के पंजर में बर्छा
मारना। ३८ यूसफ का उसे कबर में रखना।

तब पिलात ने यीशु को लेके उसे कोड़े मारे। और १ २
योद्धाओं ने कांटों का मुकुट गून्थके उस के सिर पर रखा और
उसे बैंजनी वस्त्र पहिराया . और कहा हे यिहूदियों के ३
राजा प्रणाम और उसे थपेड़े मारे।

तब पिलात ने फिर बाहर निकलके लोगों से कहा देखो ४
मैं उसे तुम्हारे पास बाहर लाता हूं कि तुम जानो कि
मैं उस में कुछ दोष नहीं पाता हूं। सो यीशु कांटों का मुकुट ५
और बैंजनी वस्त्र पहिने हुए बाहर निकला और उस ने
उन्हों से कहा देखो यही मनुष्य है। जब प्रधान याजकों ६
और प्यादों ने उसे देखा तब उन्हों ने पुकारा कि उसे क्रूश
पर चढ़ाइये क्रूश पर चढ़ाइये . पिलात ने उन से कहा तुम
उसे लेके क्रूश पर चढ़ाओ क्योंकि मैं उस में दोष नहीं

७ पाता हूं । यिहूदियों ने उस को उत्तर दिया कि हमारी भी व्यवस्था है और हमारी व्यवस्था के अनुसार वह बध होने के योग्य है क्योंकि उस ने अपने को ईश्वर का पुत्र कहा।
८ जब पिलात ने यह बात सुनी तब और भी डर गया .
९ और फिर अध्यक्षभवन के भीतर गया और यीशु से बोला तू कहां से है . परन्तु यीशु ने उस को उत्तर न दिया।
१० पिलात ने उस से कहा क्या तू मुझ से नहीं बोलता क्या तू नहीं जानता है कि तुझे क्रूश पर चढ़ाने का मुझ को अधिकार है और तुझे छोड़ देने का मुझ को अधिकार है।
११ यीशु ने उत्तर दिया जो आप को ऊपर से न दिया जाता तो आप को मुझ पर कुछ अधिकार न होता इस लिये जो मुझे आप के हाथ में पकड़वाता है उस को अधिक पाप है।
१२ इस से पिलात ने उस को छोड़ देने चाहा परन्तु यिहूदियों ने पुकारके कहा जो आप इस को छोड़ देवें तो आप कैसर के मित्र नहीं हैं. जो कोई अपने को राजा कहता है सो
१३ कैसर के बिरुद्ध बोलता है। यह बात सुनके पिलात यीशु को बाहर लाया और जो स्थान चबूतरा परन्तु इब्रीय भाषा में गबथा कहावता है उस स्थान में बिचार आसन
१४ पर बैठा। निस्तार पर्ब्ब की तैयारी का दिन और दो पहर के निकट था . तब उस ने यिहूदियों से कहा देखो तुम्हारा
१५ राजा। परन्तु उन्हों ने पुकारा कि ले जाओ ले जाओ उसे क्रूश पर चढ़ाओ . पिलात ने उन से कहा क्या मैं तुम्हारे राजा को क्रूश पर चढ़ाऊंगा . प्रधान याजकों ने उत्तर दिया
१६ कि कैसर को छोड़ हमारा कोई राजा नहीं है। तब उस ने यीशु को क्रूश पर चढ़ाये जाने को उन्हों के हाथ सौंपा . तब वे उसे पकड़के ले गये।

१७ और यीशु अपना क्रूश उठाये हुए उस स्थान को जो

खोपड़ी का स्थान कहावता और इब्रीय भाषा में गलगथा कहावता है निकल गया। वहां उन्हों ने उस को और उस १८ के संग दो और मनुष्यों को क्रूशों पर चढ़ाया एक को इधर और एक को उधर और बीच में यीशु को। और पिलात ने १९ दोषपत्र लिखके क्रूश पर लगाया और लिखी हुई बात यह थी यीशु नासरी यिहूदियों का राजा। यह दोषपत्र बहुत २० यिहूदियों ने पढ़ा क्योंकि वह स्थान जहां यीशु क्रूश पर चढ़ाया गया नगर के निकट था और पत्र इब्रीय औ यूनानीय औ रोमीय भाषा में लिखा हुआ था। तब यिहू- २१ दियों के प्रधान याजकों ने पिलात से कहा यिहूदियों का राजा मत लिखिये परन्तु यह कि उस ने कहा मैं यिहू- दियों का राजा हूं। पिलात ने उत्तर दिया कि मैं ने जो २२ लिखा है सो लिखा है।

जब योद्धाओं ने यीशु को क्रूश पर चढ़ाया था तब उस २३ के कपड़े लेके चार भाग किये हर एक योद्धा के लिये एक भाग, और अंगा भी लिया परन्तु अंगा बिन सीअन ऊपर से नीचे लों बिना हुआ था। इस लिये उन्हों ने आपस २४ में कहा हम इस को न फाड़ें परन्तु उस पर चिट्ठियां डालें कि वह किस का होगा, जिस्तें धर्म्मपुस्तक का वचन पूरा होवे कि उन्हों ने मेरे कपड़े आपस में बांट लिये और मेरे वस्त्र पर चिट्ठियां डालीं, सो योद्धाओं ने यह किया।

परन्तु यीशु की माता और उस की माता की बहिन २५ मरियम जो क्लियोपा की स्त्री थी और मरियम मगदलीनी उस के क्रूश के निकट खड़ी थीं। सो यीशु ने अपनी माता २६ को और उस शिष्य को जिसे वह प्यार करता था उस के निकट खड़े हुए देखके अपनी माता से कहा हे नारी देखिये आप का पुत्र। तब उस ने उस शिष्य से कहा देख २७

तेरी माता . और उस समय से उस शिष्य ने उस को अपने घर में ले लिया ।

२८ इस के पीछे यीशु ने यह जानके कि अब सब कुछ हो चुका जिस्तें धर्म्मपुस्तक का बचन पूरा हो जाय इस लिये
२९ कहा मैं पियासा हूं । सिरके से भरा हुआ एक बर्त्तन धरा था सो उन्हों ने इस्पंज को सिरके में भिंगाके एसोब के
३० नल पर रखके उस के मुंह में लगाया । जब यीशु ने सिरका लिया था तब कहा पूरा हुआ है और सिर झुकाके प्राण त्यागा ।

३१ वह दिन तैयारी का दिन था और वह बिश्रामबार बड़ा दिन था इस कारण जिस्तें लोथें बिश्राम के दिन क्रूश पर न रहें यिहूदियों ने पिलात से बिन्ती किई कि उन
३२ की टांगें तोड़ी जायें और वे उतारे जायें । सो योद्धाओं ने आके पहिले की टांगें तोड़ीं तब दूसरे की भी जो यीशु के
३३ संग क्रूश पर चढ़ाये गये थे । परन्तु यीशु पास आके जब उन्हों ने देखा कि वह मर चुका है तब उस की टांगें न
३४ तोड़ीं । परन्तु योद्धाओं में से एक ने बर्छे से उस का पंजर
३५ बेधा और तुरन्त लोहू और पानी निकला । इस के देखने-हारे ने साक्षी दिई है और उस की साक्षी सत्य है और वह जानता है कि सत्य कहता है इस लिये कि तुम
३६ बिश्वास करो । क्योंकि यह बातें इस लिये हुईं कि धर्म्मपुस्तक का बचन पूरा होवे कि उस की कोई हड्डी
३७ नहीं तोड़ी जायगी । और फिर धर्म्मपुस्तक का दूसरा एक बचन है कि जिसे उन्हों ने बेधा उस पर वे दृष्टि करेंगे ।

३८ इस के पीछे अरिमथिया नगर के यूसफ ने जो यीशु का शिष्य था परन्तु यिहूदियों के डर से इस को छिपाये रहता

था पिलात से विन्ती किई कि मैं यीशु की लोथ को ले जाऊं और पिलात ने आज्ञा दिई सो वह आके यीशु की लोथ ले गया। निकोदीम भी जो पहिले रात को यीशु पास ३९ आया था पचास सेर के अटकल मिलाये हुए गन्धरस और एलवा लेके आया। तब उन्हों ने यीशु की लोथ को लिया ४० और यिहूदियों के गाड़ने की रीति के अनुसार उसे सुगन्ध के संग चद्दर में लपेटा। उस स्थान पर जहां यीशु क्रूश पर ४१ चढ़ाया गया एक बारी थी और उस बारी में एक नई कबर जिस में कोई कभी नहीं रखा गया था। सो यिहू- ४२ दियों की तैयारी के दिन के कारण उन्हों ने यीशु को वहां रखा क्योंकि वह कबर निकट थी।

२० बीसवां पर्ब्ब।

१ यीशु के जी उठने का शिष्यों पर प्रगट होना। १० उस का मरियम मगदलीनी को दर्शन देना। १९ शिष्यों को दर्शन देना और उन्हें प्रेरण करना। २४ थोमा को अपने जी उठने का प्रमाण देना। ३० सुसमाचार लिखने का अभिप्राय।

अठवारे के पहिले दिन मरियम मगदलीनी भोर को १ अंधियारा रहते ही कबर पर आई और पत्थर को कबर से सरकाया हुआ देखा। तब वह दौड़ी और शिमोन पितर २ और उस दूसरे शिष्य के पास जिसे यीशु प्यार करता था आके उन से बोली वे प्रभु को कबर में से ले गये हैं और हम नहीं जानतीं कि उसे कहां रखा है। तब पितर ३ और वह दूसरा शिष्य निकलके कबर पर आये। वे दोनों ४ एक संग दौड़े और दूसरा शिष्य पितर से शीघ्र दौड़के आगे बढ़ा और कबर पर पहिले पहुंचा। और उस ने झुकके ५ चद्दर पड़ी हुई देखी तौभी वह भीतर नहीं गया। तब ६ शिमोन पितर उस के पीछे से आ पहुंचा और कबर के भीतर गया और चद्दर पड़ी हुई देखी। और वह अंगोछा जो ७

उस के सिर पर था चद्दर के संग पड़ा हुआ नहीं परन्तु ८ अलग एक स्थान में लपेटा हुआ देखा। तब दूसरा शिष्य भी जो कबर पर पहिले पहुंचा भीतर गया और देखके ९ विश्वास किया। वे तो अब लों धर्म्मपुस्तक का बचन नहीं समझते थे कि उस को मृतकों में से जी उठना होगा।

१० ११ तब दोनों शिष्य फिर अपने घर चले गये। परन्तु मरियम रोती हुई कबर के पास बाहर खड़ी रही और १२ रोते रोते कबर की ओर झुकी. और दो दूतों को उजला वस्त्र पहिने हुए देखा कि जहां यीशु की लोथ पड़ी थी १३ तहां एक सिरहाने और दूसरा पैताने बैठा था। उन्हों ने उस से कहा हे नारी तू क्यों रोती है. वह उन से बोली वे मेरे प्रभु को ले गये हैं और मैं नहीं जानती कि उसे १४ कहां रखा है। यह कहके उस ने पीछे फिरके यीशु को खड़े १५ देखा और नहीं जानती थी कि यीशु है। यीशु ने उस से कहा हे नारी तू क्यों रोती है किस को ढूंढ़ती है. उस ने यह समझके कि माली है उस से कहा हे प्रभु जो आप ने उस को उठा लिया है तो मुझ से कहिये कि उसे कहां १६ रखा है और मैं उसे ले जाऊंगी। यीशु ने उस से कहा हे मरियम. वह पीछे फिरके उस से बोली हे रब्बूनी अर्थात १७ हे गुरु। यीशु ने उस से कहा मुझे मत छू क्योंकि मैं अब लों अपने पिता के पास नहीं चढ़ गया हूं परन्तु मेरे भाइयों के पास जाके उन से कह दे कि मैं अपने पिता औ तुम्हारे पिता और अपने ईश्वर औ तुम्हारे ईश्वर पास १८ चढ़ जाता हूं। मरियम मगदलीनी ने जाके शिष्यों को सन्देश दिया कि मैं ने प्रभु को देखा है और उस ने मुझ से यह बातें कहीं।

अठवारे के उस पहिले दिन को सांझ होते हुए और १९
जहां शिष्य लोग एकट्ठे हुए थे तहां द्वार यिहूदियों के
डर के मारे बन्द होते हुए यीशु आया और बीच में खड़ा
होके उन से कहा तुम्हारा कल्याण होय। और यह कहके २०
उस ने अपने हाथ और अपना पंजर उन को दिखाये . तब
शिष्य लोग प्रभु को देखके आनन्दित हुए। यीशु ने फिर २१
उन से कहा तुम्हारा कल्याण होय . जैसे पिता ने मुझे
भेजा है तैसे मैं भी तुम्हें भेजता हूं। यह कहके उस ने २२
फूंक दिया और उन से कहा पवित्र आत्मा लेओ। जिन्हों २३
के पाप तुम क्षमा करो वे उन के लिये क्षमा किये जाते
हैं . जिन्हों के तुम रखो वे रखे हुए हैं।

परन्तु बारहों में से एक जन अर्थात थोमा जो दिदुम २४
कहावता है जब यीशु आया तब उन के संग नहीं था।
सो दूसरे शिष्यों ने उस से कहा हम ने प्रभु को देखा है . २५
उस ने उन से कहा जो मैं उस के हाथों में कीलों का चिन्ह
न देखूं और कीलों के चिन्ह में अपनी उंगली न डालूं और
उस के पंजर में अपना हाथ न डालूं तो मैं बिश्वास न
करूंगा। आठ दिन के पीछे उस के शिष्य लोग फिर घर के २६
भीतर थे और थोमा उन के संग था . तब द्वार बन्द होते
हुए यीशु आया और बीच में खड़ा होके कहा तुम्हारा
कल्याण होय। तब उस ने थोमा से कहा अपनी उंगली २७
यहां लाके मेरे हाथों को देख और अपना हाथ लाके मेरे
पंजर में डाल और अविश्वासी नहीं परन्तु विश्वासी हो।
थोमा ने उस को उत्तर दिया कि हे मेरे प्रभु और मेरे २८
ईश्वर। यीशु ने उस से कहा हे थोमा तू ने मुझे देखा है २९
इस लिये विश्वास किया है . धन्य वे हैं जो बिन देखे
विश्वास करें।

३० यीशु ने अपने शिष्यों के आगे बहुत और आश्चर्य्य
३१ कर्म्म भी किये जो इस पुस्तक में नहीं लिखे हैं । परन्तु ये लिखे गये हैं इस लिये कि तुम बिश्वास करो कि यीशु जो है सो ईश्वर का पुत्र ख्रीष्ट है और कि बिश्वास करने से तुम को उस के नाम से जीवन होय ।

२१ इकईसवां पर्व्व ।

१ यीशु का तिबरिया के समुद्र के तीर पर शिष्यों को दर्शन देना । १५ पितर के संग उस की बातचीत । २० योहन के विषय में की कथा । २४ सुसमाचार की समाप्ति ।

१ इस के पीछे यीशु ने फिर अपने तईं तिबरिया के समुद्र के तीर पर शिष्यों को दिखाया और इस रीति से दिखाया ।
२ शिमोन पितर और थोमा जो दिदुम कहावता है और गालील के काना नगर का नथनेल और जबदी के दोनों पुत्र और उस के शिष्यों में से दो और जन एक संग थे ।
३ शिमोन पितर ने उन से कहा मैं मछली पकड़ने को जाता हूं . वे उस से बोले हम भी तेरे संग जायेंगे . सो वे निकलके तुरन्त नाव पर चढ़े और उस रात कुछ नहीं
४ पकड़ा । जब भोर हुआ तब यीशु तीर पर खड़ा हुआ
५ तौभी शिष्य लोग नहीं जानते थे कि यीशु है । तब यीशु ने उन से कहा हे लड़को क्या तुम्हारे पास कुछ खाने को
६ है . उन्हों ने उस को उत्तर दिया कि नहीं । उस ने उन से कहा नाव की दहिनी ओर जाल डालो तो पाओगे . सो उन्हों ने डाला और अब मछलियों के झुंड के कारण वे उसे
७ खींच न सके । इस लिये वह शिष्य जिसे यीशु प्यार करता था पितर से बोला यह तो प्रभु है . शिमोन पितर ने जब सुना कि प्रभु है तब कमर में अंगरखा कस लिया क्योंकि
८ वह नंगा था और समुद्र में कूद पड़ा । परन्तु दूसरे शिष्य लोग नाव पर मछलियों का जाल घसीटते हुए चले आये

क्योंकि वे तीर से दूर नहीं प्राय दो सौ हाथ पर थे। जब ९
वे तीर पर उतरे तब उन्हों ने कोयले की आग धरी हुई
और मछली उस पर रखी हुई और रोटी देखी। यीशु ने १०
उन से कहा जो मछलियां तुम ने अभी पकड़ी हैं उन में से
ले आओ। शिमोन पितर ने जाके जाल को जो एक सौ ११
तिर्पन बड़ी मछलियों से भरा था तीर पर खींच लिया
और इतनी होने से भी जाल नहीं फटा। यीशु ने उन से १२
कहा कि आओ भोजन करो. परन्तु शिष्यों में से किसी
को साहस न हुआ कि उस से पूछे आप कौन हैं क्योंकि
वे जानते थे कि प्रभु है। तब यीशु ने आके रोटी लेके १३
उन को दिई और वैसे ही मछली भी। यह अब तीसरी १४
बेर हुआ कि यीशु ने मृतकों में से उठके अपने शिष्यों को
दर्शन दिया।

तब भोजन करने के पीछे यीशु ने शिमोन पितर से कहा १५
हे यूनस के पुत्र शिमोन क्या तू मुझे इन्हों से अधिक प्यार
करता है. वह उस से बोला हां प्रभु आप जानते हैं कि
मैं आप को प्यार करता हूं. उस ने उस से कहा मेरे मेम्नों
को चरा। उस ने फिर दूसरी बेर उस से कहा हे यूनस के १६
पुत्र शिमोन क्या तू मुझे प्यार करता है. वह उस से
बोला हां प्रभु आप जानते हैं कि मैं आप को प्यार
करता हूं. उस ने उस से कहा मेरी भेड़ों की रखवाली
कर। उस ने तीसरी बेर उस से कहा हे यूनस के पुत्र १७
शिमोन क्या तू मुझे प्यार करता है. पितर उदास हुआ
कि यीशु ने उस से तीसरी बेर कहा क्या तू मुझे प्यार
करता है और उस से बोला हे प्रभु आप सब कुछ जानते
हैं आप जानते हैं कि मैं आप को प्यार करता हूं. यीशु
ने उस से कहा मेरी भेड़ों को चरा। मैं तुझ से सच सच १८

कहता हूं जब तू जवान था तब अपनी कमर बांधके जहां चाहता था वहां चलता था परन्तु जब तू बूढ़ा होगा तब अपने हाथ फैलावेगा और दूसरा तेरी कमर
१९ बांधके जहां तू न चाहे वहां तुझे ले जायगा। यह कहने में उस ने पता दिया कि पितर कैसी मृत्यु से ईश्वर की महिमा प्रगट करेगा और यह कहके उस से बोला मेरे पीछे हो ले।

२० पितर ने मुंह फेरके उस शिष्य को जिसे यीशु प्यार करता था और जिस ने बियारी में उस की छाती पर उठंग के कहा हे प्रभु आप का पकड़वानेहारा कौन है पीछे से
२१ आते देखा। उस को देखके पितर ने यीशु से कहा हे प्रभु
२२ इस का क्या होगा। यीशु ने उस से कहा जो मैं चाहूं कि वह मेरे आने लों रहे तो तुझे क्या. तू मेरे पीछे हो ले।
२३ इस लिये भाइयों में यह बात फैल गई कि वह शिष्य नहीं मरेगा. तौभी यीशु ने यह नहीं कहा कि वह नहीं मरेगा परन्तु यह कि जो मैं चाहूं कि वह मेरे आने लों रहे तो तुझे क्या।

२४ यह तो वह शिष्य है जो इन बातों के विषय में साक्षी देता है और जिस ने यह बातें लिखीं और हम जानते
२५ हैं कि उस की साक्षी सत्य है। और बहुत और काम भी हैं जो यीशु ने किये. जो वे एक एक करके लिखे जाते तो मुझे बूझ पड़ता है कि पुस्तक जो लिखे जाते जगत में भी न समाते। आमीन॥

प्रेरितों की क्रियाओं का वृत्तान्त।

१ पहिला पर्व्व।

१ यीशु का शिष्यों को आज्ञा देना और स्वर्ग में जाना। १२ शिष्यों का एकट्ठे रहके प्रार्थना करना। १५ यिहूदा की सन्ती मत्तथियाह को प्रेरित के काम पर ठहराना।

१ हे थियोफिल वह पहिला वृत्तान्त मैं ने सब बातों के विषय में रचा जो यीशु उस दिन लों करने और सिखाने का आरंभ किये था. २ जिस दिन वह पवित्र आत्मा के द्वारा से जिन प्रेरितों को उस ने चुना था उन्हें आज्ञा दे करके उठा लिया गया। ३ और उस ने उन्हें बहुतेरे अचल प्रमाणों से अपने तईं दुःख भोगने के पीछे जीवता दिखाया कि चालीस दिन लों वे उसे देखा करते थे और वह ईश्वर के राज्य के विषय में उन से बातें करता था। ४ और जब वह उन के संग एकट्ठा हुआ तब उन्हें आज्ञा दिई कि यिरूशलीम को मत छोड़ जाओ परन्तु पिता की जो प्रतिज्ञा तुम ने मुझ से सुनी है उस की बाट जोहते रहो। ५ क्योंकि योहन ने तो जल से बपतिसमा दिया परन्तु थोड़े दिनों के पीछे तुम्हें पवित्र आत्मा से बपतिसमा दिया जायगा। ६ सो उन्हों ने एकट्ठे होके उस से पूछा कि हे प्रभु क्या आप इसी समय में इस्रायेली लोगों को राज्य फेर देते हैं। ७ उस ने उन से कहा जिन कालों अथवा समयों को पिता ने अपने ही वश में रखा है उन्हें जानने का अधिकार तुम्हें नहीं है। ८ परन्तु तुम पर पवित्र आत्मा के आने से तुम सामर्थ्य पाओगे और यिरूशलीम में और सारे यिहूदिया और शोमिरोन देशों में और पृथिवी के अन्त लों मेरे साक्षी होओगे। ९ यह कहके वह उन के देखते हुए ऊपर उठाया

१० गया और मेघ ने उसे उन की दृष्टि से छिपा लिया । ज्यों ही वे उस के जाते हुए स्वर्ग की ओर तकते रहे त्यों ही देखो दो पुरुष उजला बस्त्र पहिने हुए उन के निकट खड़े हो
११ गये . और कहा हे गालीली लोगो तुम क्यों स्वर्ग की ओर देखते हुए खड़े हो . यही यीशु जो तुम्हारे पास से स्वर्ग पर उठा लिया गया है जिस रीति से तुम ने उसे स्वर्ग को जाते देखा है उसी रीति से आवेगा ।

१२ तब वे जैतून नाम पर्ब्बत से जो यिरूशलीम के निकट अर्थात एक बिश्रामवार की बाट भर दूर है यिरूशलीम
१३ को लौटे । और जब वे पहुंचे तब उपरौठी कोठरी में गये जहां वे अर्थात पितर औ याकूब औ योहन औ अन्द्रिय और फिलिप औ थोमा और बर्थलमई औ मत्ती और अलफई का पुत्र याकूब औ शिमोन उद्योगी और याकूब
१४ का भाई यिहूदा रहते थे । ये सब एक चित्त होके स्त्रियों के और यीशु की माता मरियम के संग और उस के भाइयों के संग प्रार्थना और बिन्ती में लगे रहते थे ।

१५ उन दिनों में पितर शिष्यों के बीच में खड़ा हुआ . एक
१६ सौ बीस जन के अटकल एकट्ठे थे . और कहा हे भाइयो अवश्य था कि धर्म्मपुस्तक का यह बचन पूरा होय जो पवित्र आत्मा ने दाऊद के मुख से यिहूदा के विषय में जो यीशु के पकड़नेहारों का अगुवा था आगे से कह दिया ।
१७ क्योंकि वह हमारे संग गिना गया था और इस सेवकाई
१८ का अधिकार पाया था । उस ने तो अधर्म्म की मजूरी से एक खेत मोल लिया और औंधे मुंह गिरके बीच से फट
१९ गया और उस की सब अन्तड़ियां निकल पड़ीं । यह बात यिरूशलीम के सब निवासियों को जान पड़ी इस लिये वह खेत उन की भाषा में हकलदामा अर्थात लोहू का खेत

कहलाया। गीतों के पुस्तक में लिखा है कि उस का घर २०
उजाड़ होय और उस में कोई न बसे और कि उस का
रखवाली का काम दूसरा लेवे। इस लिये प्रभु यीशु योहन २१
के बपतिसमा के समय से लेके उस दिन लों कि वह हमारे
पास से उठा लिया गया जितने दिन हमारे बीच में आया
जाया किया . जो मनुष्य सब दिन हमारे संग रहे हैं २२
उन्हों में से उचित है कि एक जन हमारे संग यीशु के जी
उठने का साक्षी होय। तब उन्हों ने दो को अर्थात यूसफ २३
को जो बर्णबा कहावता है जिस का उपनाम युस्त था
और मत्तथियाह को खड़ा किया . और प्रार्थना करके २४
कहा हे प्रभु सभों के अन्तर्यामी इन दोनों में से एक को जिसे
तू ने चुना है ठहरा दे . कि वह इस सेवकाई और प्रेरि- २५
ताई का अधिकार पावे जिस से यिहूदा पतित हुआ कि
अपने निज स्थान को जाय। तब उन्हों ने चिट्ठियां डालीं २६
और चिट्ठी मत्तथियाह के नाम पर निकली और वह
एग्यारह प्रेरितों के संग गिना गया।

२ दूसरा पर्ब्ब।

१ पवित्र आत्मा का दिया जाना और शिष्यों का अनेक बोलियां बोलना। ५ लोगों का अचंभा करना। १४ पितर का उपदेश। ३७ बहुत लोगों का इस उपदेश को ग्रहण करना। ४१ उन के बपतिसमा लेने और सुचाल चलने का बर्णन।

जब पेंतिकोष्ट पर्ब्ब का दिन आ पहुंचा तब वे सब एक १
चित्त होकर एकट्ठे हुए थे। और अचांचक प्रबल बयार के २
चलने का सा स्वर्ग से एक शब्द हुआ जिस से सारा घर जहां
वे बैठे थे भर गया। और आग की सी जीभें अलग अलग ३
होती हुईं उन्हें दिखाई दिईं और वह हर एक जन पर ठहर
गई। तब वे सब पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हुए और जैसे ४
आत्मा ने उन्हें बुलवाया तैसे आन आन बोलियां बोलने लगे।

५ यिरूशलीम में कितने भक्त यिहूदी लोग बास करते
६ थे जो स्वर्ग के नीचे के हर एक देश से आये थे । इस शब्द
के होने पर बहुत लोग एकट्ठे हुए और घबरा गये क्योंकि
उन्हों ने उन को हर एक अपनी ही भाषा में बोलते हुए
७ सुना । और वे सब बिस्मित और अचंभित हो आपस में
कहने लगे देखो ये सब जो बोलते हैं क्या गालीली लोग
८ नहीं हैं । फिर हम लोग क्योंकर हर एक अपने अपने
९ जन्म देश की भाषा में सुनते हैं । हम जो पर्थी और मादी
और एलमी लोग और मिसपतामिया और यिहूदिया औ
१० कपदोकिया और पन्त औ आशिया . और फ्रूगिया औ
पंफुलिया और मिसर औ कुरीनी के आसपास का लूबिया
देश इन सब देशों के निवासी और रोम नगर से आये
११ हुए लोग क्या यिहूदी क्या यिहूदीय मतावलंबी . क्रीतीय
भी औ अरब लोग हैं उन्हें अपनी अपनी बोलियों में ईश्वर
१२ के महाकार्य्यों की बात बोलते हुए सुनते हैं । सो वे सब
बिस्मित हो दुबधा में पड़े और एक दूसरे से कहने लगा
१३ इस का अर्थ क्या है । परन्तु और लोग ठट्ठे में कहने
लगे वे नई मदिरा से छकाछक हुए हैं ।

१४ तब पितर ने एग्यारह शिष्यों के संग खड़ा होके ऊंचे
शब्द से उन्हें कहा हे यिहूदियो और यिरूशलीम के सब
निवासियो इस बात को बूझ लो और मेरी बातों पर कान
१५ लगाओ । ये तो मतवाले नहीं हैं जैसा तुम समझते हो
१६ क्योंकि पहर ही दिन चढ़ा है । परन्तु यह वह बात है
१७ जो योएल भविष्यद्वक्ता से कही गई . कि ईश्वर कहता
है पिछले दिनों में ऐसा होगा कि मैं सब मनुष्यों पर अपना
आत्मा उंडेलूंगा और तुम्हारे पुत्र और तुम्हारी पुत्रियां
भविष्यद्वाक्य कहेंगे और तुम्हारे जवान लोग दर्शन देखेंगे

और तुम्हारे वृद्ध लोग स्वप्न देखेंगे। और भी मैं अपने १८ दासों और अपनी दासियों पर उन दिनों में अपना आत्मा उंडेलूंगा और वे भविष्यद्वाक्य कहेंगे। और मैं ऊपर १९ आकाश में अद्भुत काम और नीचे पृथिवी पर चिन्ह अर्थात लोहू और आग और धूंए की भाफ दिखाऊंगा। परमेश्वर २० के बड़े और प्रसिद्ध दिन के आने के पहिले सूर्य्य अंधियारा और चांद लोहू सा हो जायगा। और जो कोई परमेश्वर २१ के नाम की प्रार्थना करेगा सो त्राण पावेगा।

हे इस्रायेली लोगो यह बातें सुनो. यीशु नासरी २२ एक मनुष्य जिस का प्रमाण ईश्वर से आश्चर्य्य कर्म्मों और अद्भुत कामों और चिन्हों से तुम्हें दिया गया है जो ईश्वर ने तुम्हारे बीच में जैसा तुम आप भी जानते हो उस के द्वारा से किये. उसी को जब वह ईश्वर के स्थिर मत २३ और भविष्यत ज्ञान के अनुसार सौंपा गया तुम ने लिया और अधर्म्मियों के हाथों के द्वारा क्रूश पर ठोंकके मार डाला। उसी को ईश्वर ने मृत्यु के बंधन खोलके जिला २४ उठाया क्योंकि अन्होना था कि वह मृत्यु के वश में रहे। क्योंकि दाऊद ने उस के विषय में कहा मैं ने परमेश्वर को २५ सदा अपने साम्हने देखा कि वह मेरी दहिनी ओर है जिस्तें मैं डिग न जाऊं। इस कारण मेरा मन आनन्दित २६ हुआ और मेरी जीभ हर्षित हुई हां मेरा शरीर भी आशा में विश्राम करेगा। क्योंकि तू मेरे प्राण को परलोक में न २७ छोड़ेगा और न अपने पवित्र जन को सड़ने देगा। तू ने २८ मुझे जीवन का मार्ग बताया है तू मुझे अपने सन्मुख आनन्द से परिपूर्ण करेगा।

हे भाइयो उस कुलपति दाऊद के विषय में मैं तुम से २९ खोलके कहूं. वह तो मरा और गाड़ा भी गया और

३० उस की कबर आज लों हमारे बीच में है। सो भविष्यद्वक्ता होके और यह जानके कि ईश्वर ने मुझ से किरिया खाई है कि मैं शरीर के भाव से ख्रीष्ट को तेरे बंश में से उत्पन्न
३१ करूंगा कि वह तेरे सिंहासन पर बैठे . उस ने होन्हार को आगे से देखके ख्रीष्ट के जी उठने के विषय में कहा कि उस का प्राण परलोक में नहीं छोड़ा गया और न उस का
३२ देह सड़ गया। इसी यीशु को ईश्वर ने जिला उठाया और
३३ इस बात के हम सब साक्षी हैं। सो ईश्वर के दहिने हाथ ऊंच पद प्राप्त करके और पवित्र आत्मा के विषय में जो कुछ प्रतिज्ञा किया गया सोई पिता से पाके उस ने यह जो
३४ तुम अब देखते और सुनते हो उंडेल दिया है। क्योंकि दाऊद स्वर्ग पर नहीं चढ़ गया परन्तु उस ने कहा कि
३५ परमेश्वर ने मेरे प्रभु से कहा . जब लों मैं तेरे शत्रुओं को तेरे चरणों की पीढ़ी न बनाऊं तब लों तू मेरी दहिनी
३६ ओर बैठ। सो इस्रायेल का सारा घराना निश्चय जाने कि यह यीशु जिसे तुम ने क्रूश पर घात किया इसी को ईश्वर ने प्रभु और ख्रीष्ट ठहराया है।

३७ तब सुननेहारों के मन छिद गये और वे पितर से और
३८ दूसरे प्रेरितों से बोले हे भाइयो हम क्या करें। पितर ने उन से कहा पश्चात्ताप करो और हर एक जन यीशु ख्रीष्ट के नाम से बपतिसमा लेओ कि तुम्हारा पापमोचन होय
३९ और तुम पवित्र आत्मा दान पाओगे। क्योंकि वह प्रतिज्ञा तुम्हीं के लिये और तुम्हारे सन्तानों के लिये और दूर दूर के सब लोगों के लिये है जितनों को परमेश्वर हमारा
४० ईश्वर अपने पास बुलावे। बहुत और बातों से भी उस ने साक्षी और उपदेश दिया कि इस समय के टेढ़े लोगों से बच जाओ।

तब जिन्हों ने उस का वचन आनन्द से ग्रहण किया ४१
उन्हों ने बपतिसमा लिया और उस दिन तीन सहस्र जन
के अटकल शिष्यों में मिल गये। और वे प्रेरितों के उप- ४२
देश में और संगति में और रोटी तोड़ने में और प्रार्थना में
लगे रहते थे। और सब मनुष्यों को भय हुआ और बहुतेरे ४३
अद्भुत काम और चिन्ह प्रेरितों के द्वारा प्रगट होते थे।
और सब विश्वास करनेहारे एकट्ठे थे और उन्हों की सब ४४
सम्पत्ति साझे की थी। और वे धन सम्पत्ति को बेचके जैसा ४५
जिस को प्रयोजन होता था तैसा सभों में बांट लेते थे।
और वे प्रतिदिन मन्दिर में एक चित्त होके लगे रहते थे ४६
और घर घर रोटी तोड़ते हुए आनन्द और मन की
सुधाई से भोजन करते थे. और ईश्वर की स्तुति करते ४७
थे और सब लोगों का उन पर अनुग्रह था. और प्रभु त्राण
पानेहारों को प्रतिदिन मंडली में मिलाता था।

३ तीसरा पर्ब्ब।

१ पितर से एक लंगड़े का चंगा होना। ९ लोगों का एकट्ठे होना। १२ पितर का उन से बातें करना।

तीसरे पहर प्रार्थना के समय में पितर और योहन एक १
संग मन्दिर को जाते थे। और लोग किसी मनुष्य को जो २
अपनी माता के गर्भ ही से लंगड़ा था लिये जाते थे जिस
को वे प्रतिदिन मन्दिर के उस द्वार पर जो सुन्दर कहावता
है रख देते थे कि वह मन्दिर में जानेहारों से भीख मांगे।
उस ने पितर और योहन को देखके कि मन्दिर में जाने पर ३
हैं उन से भीख मांगी। पितर ने योहन के संग उस की ओर ४
दृष्टि कर कहा हमारी ओर देख। सो वह उन से कुछ ५
पाने की आशा करते हुए उन की ओर ताकने लगा।
परन्तु पितर ने कहा चांदी और सोना मेरे पास नहीं है ६

परन्तु यह जो मेरे पास है मैं तुझे देता हूं यीशु ख्रीष्ट
७ नासरी के नाम से उठ और चल। तब उस ने उस का दहिना
हाथ पकड़के उसे उठाया और तुरन्त उस के पांवों और
८ घुट्टियों में बल हुआ। और वह उछलके खड़ा हुआ और
फिरने लगा और फिरता और कूदता और ईश्वर की
स्तुति करता हुआ उन के संग मन्दिर में प्रवेश किया।
९ सब लोगों ने उसे फिरते और ईश्वर की स्तुति करते
१० हुए देखा. और उस को चीन्हा कि वही है जो मन्दिर
के सुन्दर फाटक पर भीख के लिये बैठा रहता था और
जो उस को हुआ था उस से वे अति अचंभित और बिस्मित
११ हुए। जिस समय वह लंगड़ा जो चंगा हुआ था पितर
और योहन को पकड़े रहा सब लोग बहुत अचंभा करते
हुए उस ओसारे में जो सुलेमान का कहावता है उन के पास
दौड़े आये।
१२ यह देखके पितर ने लोगों से कहा हे इस्रायेली लोगो
तुम इस मनुष्य से क्यों अचंभा करते हो अथवा हमारी
और क्यों ऐसा ताकते हो कि जैसा हम ने अपनी ही शक्ति
अथवा भक्ति से इस को चलने का सामर्थ्य दिया होता।
१३ इब्राहीम और इसहाक और याकूब के ईश्वर ने हमारे
पितरों के ईश्वर ने अपने सेवक यीशु की महिमा प्रगट किई
जिसे तुम ने पकड़वाया और उस को पिलात के सन्मुख
नकारा जब कि उस ने उसे छोड़ देने को ठहराया था।
१४ परन्तु तुम ने उस पवित्र और धर्म्मी को नकारा और मांगा
१५ कि एक हत्यारा तुम्हें दिया जाय। और तुम ने जीवन के
कर्त्ता को घात किया परन्तु ईश्वर ने उसे मृतकों में से उठाया
१६ और इस बात के हम साक्षी हैं। और उस के नाम के
बिश्वास से उस के नाम ही ने इस मनुष्य को जिसे तुम देखते

श्रो जानते हो सामर्थ्य दिया है हां जो विश्वास उस के द्वारा से है उसी से यह संपूर्ण आरोग्य तुम सभों के साम्ने इस को मिला है।

१७ और अब हे भाइयो मैं जानता हूं कि तुम्हों ने वह काम अज्ञानता से किया और वैसे तुम्हारे प्रधानों ने भी किया। १८ परन्तु ईश्वर ने जो वात उस ने अपने सब भविष्यद्वक्ताओं के मुख से आगे बताई थी कि ख्रीष्ट दुःख भोगेगा वह वात इस रीति से पूरी किई। १९ इस लिये पश्चात्ताप करके फिर जाओ कि तुम्हारे पाप मिटाये जायें जिस्तें जीव का ठंढा होने का समय परमेश्वर की ओर से आवे. २० और वह यीशु ख्रीष्ट को भेजे जिस का समाचार तुम्हें आगे से कहा गया है. २१ जिसे अवश्य है कि स्वर्ग सब बातों के सुधारे जाने के उस समय लों ग्रहण करे जिस की कथा ईश्वर ने आदि से अपने पवित्र भविष्यद्वक्ताओं के मुख से कही है।

२२ मूसा ने पितरों से कहा परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर तुम्हारे भाइयों में से मेरे समान एक भविष्यद्वक्ता को तुम्हारे लिये उठावेगा जो जो बातें वह तुम से कहे उन सब बातों में तुम उस की सुनो। २३ परन्तु हर एक मनुष्य जो उस भविष्यद्वक्ता की न सुने लोगों में से नाश किया जायगा। २४ और सब भविष्यद्वक्ताओं ने भी शमुएल से और उस के पीछे के भविष्यद्वक्ताओं से लेके जितनों ने बातें किईं इन दिनों का भी आगे से सन्देश दिया है। २५ तुम भविष्यद्वक्ताओं के और उस नियम के सन्तान हो जो ईश्वर ने हमारे पितरों के संग बांधा कि उस ने इब्राहीम से कहा पृथिवी के सारे घराने तेरे वंश के द्वारा से आशीस पावेंगे। २६ तुम्हारे पास ईश्वर ने अपने सेवक यीशु को उठाके पहिले भेजा जो तुम में

से हर एक को तुम्हारे कुकर्म्मों से फिराने में तुम्हें आशीस देता था ।

४ चौथा पर्ब्ब ।

१ पितर और योहन का बन्दीगृह में डाला जाना । ५ पितर का महायाजक के आगे उत्तर देना । १३ न्याइयों का आपस में बिचार करना और पितर औ योहन को धमकाना और छोड़ देना । २३ उन दोनों का शिष्यों के संग मिलके प्रार्थना करना । ३२ शिष्यों का अपने धन को आपस में बांट लेना और बर्णबा की कथा।

१ जिस समय वे लोगों से कह रहे याजक लोग और मन्दिर के पहरुओं का अध्यक्ष और सदूकी लोग उन पर २ चढ़ आये . कि वे अप्रसन्न होते थे इस लिये कि वे लोगों को सिखाते थे और मृतकों में से जी उठने की बात यीशु के ३ प्रमाण से प्रचार करते थे । और उन्हों ने उन्हें पकड़के ४ बिहान लों बन्दीगृह में रखा क्योंकि सांझ हुई थी । परन्तु बचन के सुननेहारों में से बहुतों ने बिश्वास किया और उन मनुष्यों की गिन्ती पांच सहस्र के अटकल हुई ।

५ बिहान हुए लोगों के प्रधान और प्राचीन और अध्या- ६ पक लोग . और हन्नस महायाजक और कियाफा और योहन और सिकन्दर और महायाजक के घराने के जितने ७ लोग थे ये सब यिरूशलीम में एकट्ठे हुए । और उन्हों ने पितर और योहन को बीच में खड़ा करके पूछा तुम ने यह ८ काम किस सामर्थ्य से अथवा किस नाम से किया । तब पितर ने पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो उन से कहा हे लोगों ९ के प्रधानो और इस्रायेल के प्राचीनो . इस दुर्ब्बल मनुष्य पर जो भलाई किई गई है यदि उस के विषय में आज हम से पूछा जाता है कि वह किस नाम से चंगा किया १० गया है . तो आप लोग सब जानिये और समस्त इस्रा- येली लोग जानें कि यीशु ख्रीष्ट नासरी के नाम से जिसे

आप लोगों ने क्रूश पर घात किया जिसे ईश्वर ने मृतकों में से उठाया उसी से यह मनुष्य आप लोगों के आगे चंगा खड़ा है। यही वह पत्थर है जिसे आप थवइयों ने तुच्छ ११ जाना जो कोने का सिरा हुआ है। और किसी दूसरे से १२ त्राण नहीं है क्योंकि स्वर्ग के नीचे दूसरा नाम नहीं है जो मनुष्यों के बीच में दिया गया है जिस से हमें त्राण पाना होगा।

तब उन्हों ने पितर और योहन का साहस देखके और १३ यह जानके कि वे विद्याहीन और अज्ञान मनुष्य हैं अचंभा किया और उन को चीन्हा कि वे यीशु के संग थे। और १४ उस चंगा किये हुए मनुष्य को उन के संग खड़े देखके वे कोई बात विरोध में न कह सके। परन्तु उन को सभा के १५ बाहर जाने की आज्ञा देके उन्हों ने आपस में विचार किया. कि हम इन मनुष्यों से क्या करें क्योंकि एक प्रसिद्ध आश्चर्य्य १६ कर्म्म उन्हों से हुआ है यह बात यिरूशलीम के सब निवासियों पर प्रगट है और हम नहीं मुकर सकते हैं। परन्तु १७ जिस्तें लोगों में अधिक फैल न जावे आओ हम उन्हें बहुत धमकावें कि वे इस नाम से फिर किसी मनुष्य से बात न करें। और उन्हों ने उन्हें बुलाके आज्ञा दिई कि यीशु के १८ नाम से कुछ भी मत बोलो और मत सिखाओ। परन्तु १९ पितर और योहन ने उन को उत्तर दिया कि ईश्वर से अधिक आप लोगों को मानना क्या ईश्वर के आगे उचित है सो आप लोग बिचार कीजिये। क्योंकि जो हम ने २० देखा और सुना है उस को न कहना हम से नहीं हो सकता है। तब उन्हों ने और धमकी देके उन्हें छोड़ दिया कि २१ उन्हें दंड देने का लोगों के कारण कोई उपाय नहीं मिलता था क्योंकि जो हुआ था उस के लिये सब लोग ईश्वर का

२२ गुणानुबाद करते थे । क्योंकि वह मनुष्य जिस पर यह चंगा करने का आश्चर्य्य कर्म्म किया गया था चालीस बरस के ऊपर का था ।

२३ वे छूटके अपने संगियों के पास आये और जो कुछ प्रधान याजकों औ प्राचीनों ने उन से कहा था सो सुना
२४ दिया । वे सुनके एक चित्त होकर ऊंचा शब्द करके ईश्वर से बोले हे प्रभु तू ईश्वर है जिस ने स्वर्ग औ पृथिवी औ
२५ समुद्र और सब कुछ जो उन में है बनाया . जिस ने अपने सेवक दाऊद के मुख से कहा अन्यदेशियों ने क्यों कोप किया
२६ और लोगों ने क्यों व्यर्थ चिन्ता किई । परमेश्वर के और उस के अभिषिक्त जन के बिरुद्ध पृथिवी के राजा लोग खड़े
२७ हुए और अध्यक्ष लोग एक संग एकट्ठे हुए । क्योंकि सचमुच तेरे पवित्र सेवक यीशु के बिरुद्ध जिसे तू ने अभिषेक किया हेरोद और पन्तिय पिलात भी अन्यदेशियों और
२८ इस्रायेली लोगों के संग एकट्ठे हुए . कि जो कुछ तेरे हाथ और तेरे मत ने आगे से ठहराया था कि हो जाय सोई
२९ ३० करें । और अब हे प्रभु उन की धमकियों को देख . और चंगा करने के लिये और चिन्हों और अद्भुत कामों के तेरे पवित्र सेवक यीशु के नाम से किये जाने के लिये अपना हाथ बढ़ाने से अपने दासों को यह दीजिये कि तेरा बचन
३१ बड़े साहस से बोलें । जब उन्हों ने प्रार्थना किई थी तब वह स्थान जिस में वे एकट्ठे हुए थे हिल गया और वे सब पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हुए और ईश्वर का बचन साहस से बोलने लगे ।

३२ बिश्वासियों की मंडली का एक मन और एक जीव था और न कोई अपनी सम्पत्ति में से कोई बस्तु अपनी कहता था परन्तु उन्हों की सब सम्पत्ति साझे की थी ।

और प्रेरित लोग बड़े सामर्थ्य से प्रभु यीशु के जी उठने की ३३ साक्षी देते थे और उन सभों पर बड़ा अनुग्रह था। और ३४ न उन में से कोई दरिद्र था क्योंकि जो जो लोग भूमि अथवा घरों के अधिकारी थे सो उन्हें बेचते थे. और ३५ बेची हुई वस्तुओं का दाम लाके प्रेरितों के पांवों पर रखते थे और जैसा जिस को प्रयोजन होता था तैसा हर एक को बांटा जाता था। और योशी नाम कुप्रस टापू का ३६ एक लेवीय जिसे प्रेरितों ने बर्णबा अर्थात शांति का पुत्र कहा उस की कुछ भूमि थी। सो वह उसे बेचके रुपैयों को ३७ लाया और प्रेरितों के पांवों पर रखा।

५ पांचवां पर्ब्ब।

१ अननियाह और सफीरा का कपट करना और मर जाना। १२ प्रेरितों के अनेक आश्चर्य कर्म्म। १७ प्रेरितों का बन्दीगृह में रखा जाना और स्वर्गदूत का उन्हें छुड़ाना। २१ पितर का महायाजक को उत्तर देना। ३३ गमलियेल का परामर्श। ४० प्रेरितों का मार खाके छूट जाना और सताये जाने में आनन्द करना।

परन्तु अननियाह नाम एक मनुष्य ने अपनी स्त्री १ सफीरा के संग में कुछ भूमि बेची. और दाम में से कुछ रख २ छोड़ा जो उस की स्त्री भी जानती थी और कुछ लाके प्रेरितों के पांवों पर रखा। परन्तु पितर ने कहा हे अननि- ३ याह शैतान ने क्यों तेरे मन में यह मत दिया है कि तू पवित्र आत्मा से झूठ बोले और भूमि के दाम में से कुछ रख छोड़े। जब लों वह रही क्या तेरी न रही और जब बिक ४ गई क्या तेरे बश में न थी. यह क्या है कि तू ने यह बात अपने मन में रखी है. तू मनुष्यों से नहीं परन्तु ईश्वर से झूठ बोला है। अननियाह यह बातें सुनते ही गिर पड़ा ५ औ प्राण छोड़ दिया और इन बातों के सब सुननेहारों को बड़ा भय हुआ। और जवानों ने उठके उसे लपेटा और ६

७ बाहर ले जाके गाड़ा। पहर एक के पीछे उस की स्त्री यह
८ जो हुआ था न जानके भीतर आई। इस पर पितर ने उस से
कहा मुझ से कह दे क्या तुम ने वह भूमि इतने ही में बेची.
९ वह बोली हां इतने में। तब पितर ने उस से कहा यह
क्या है कि तुम दोनों ने परमेश्वर के आत्मा की परीक्षा
करने को एक संग युक्ति बांधी है. देख तेरे स्वामी के
गाड़नेहारों के पांव द्वार पर हैं और वे तुझे बाहर ले जायेंगे।
१० तब वह तुरन्त उस के पांवों के पास गिर पड़ी औ प्राण
छोड़ दिया और जवानों ने भीतर आके उसे मरी हुई
पाया और बाहर ले जाके उस के स्वामी के पास गाड़ा।
११ और सारी मंडली को और इन बातों के सब सुननेहारों
को बड़ा भय हुआ।
१२ प्रेरितों के हाथों से बहुत चिन्ह और अद्भुत काम लोगों
के बीच में किये जाते थे और वे सब एक चित्त होके
१३ सुलेमान के ओसारे में थे। औरों में से किसी को उन के संग
मिलने का साहस नहीं था परन्तु लोग उन की बड़ाई करते
१४ थे। और और भी बहुत लोग पुरुष और स्त्रियां भी
१५ बिश्वास करके प्रभु से मिल जाते थे। इस से लोग रोगि-
यों को बाहर सड़कों में लाके खाटों और खटोलों पर रखते
थे कि जब पितर आवे तब उस की परछाईं भी उन में से
१६ किसी पर पड़े। आसपास के नगरों के लोग भी रोगियों को
और अशुद्ध भूतों से सताये हुए लोगों को लिये हुए यिरू-
शलीम में एकट्ठे होते थे और वे सब चंगे किये जाते थे।
१७ तब महायाजक उठा और उस के सब संगी जो सदू-
१८ कियों का पंथ है और डाह से भर गये. और प्रेरितों को
१९ पकड़के उन्हें सामान्य बन्दीगृह में रखा। परन्तु परमेश्वर के
एक दूत ने रात को बन्दीगृह के द्वार खोलके उन्हें बाहर

लाके कहा. जाओ और मन्दिर में खड़े होके इस जीवन २० की सारी बातें लोगों से कहो। यह सुनके उन्हों ने भोर २१ को मन्दिर में प्रवेश किया और उपदेश करने लगे. तब महायाजक और उस के संगी लोग आये और न्याइयों की सभा को और इस्रायेल के सन्तानों के सारे प्राचीनों को एकट्ठे बुलाया और प्यादों को बन्दीगृह में भेजा कि उन्हें लावें। प्यादों ने जब पहुंचे तब उन्हें बन्दीगृह में न पाया परन्तु २२ लौटके सन्देश दिया. कि हम ने बन्दीगृह को बड़ी दृढ़ता २३ से बन्द किये हुए और पहरुओं को बाहर द्वारों के साम्ने खड़े हुए पाया परन्तु जब खोला तब भीतर किसी को न पाया। जब महायाजक और मन्दिर के पहरुओं के अध्यक्ष २४ और प्रधान याजकों ने यह बातें सुनीं तब वे उन्हों के विषय में दुबधा में पड़े कि यह क्या हुआ चाहता है। तब २५ किसी ने आके उन्हें सन्देश दिया कि देखिये वे मनुष्य जिन को आप लोगों ने बन्दीगृह में रखा मन्दिर में खड़े हुए लोगों को उपदेश देते हैं। तब पहरुओं का अध्यक्ष प्यादों के २६ संग जाके उन्हें ले आया परन्तु बरियाई से नहीं क्योंकि वे लोगों से डरते थे ऐसा न हो कि पत्थरवाह किये जायें।

उन्हों ने उन्हें लाके न्याइयों की सभा में खड़ा किया और २७ महायाजक ने उन से पूछा. क्या हम ने तुम्हें दृढ़ आज्ञा २८ न दिई कि इस नाम से उपदेश मत करो. तौभी देखो तुम ने यिरूशलीम को अपने उपदेश से भर दिया है और इस मनुष्य का लोहू हमों पर लाने चाहते हो। तब पितर ने २९ और प्रेरितों ने उत्तर दिया कि मनुष्यों की आज्ञा से अधिक ईश्वर की आज्ञा को मानना उचित है। हमारे पितरों के ३० ईश्वर ने यीशु को जिसे आप लोगों ने काठ पर लटकाके घात किया जिला उठाया। उस को ईश्वर ने कर्त्ता औ ३१

त्राता का ऊंच पद अपने दहिने हाथ दिया है कि वह
इस्रायेली लोगों से पश्चात्ताप करवाके उन्हें पापमोचन
३२ देवे । और इन बातों में हम उस के साक्षी हैं और पवित्र
आत्मा भी जिसे ईश्वर ने अपने आज्ञाकारियों को दिया
है साक्षी है ।

३३　यह सुनने से उन को तीर सा लग गया और वे उन्हें
३४ मार डालने का बिचार करने लगे । परन्तु न्याइयों की
सभा में गमलियेल नाम एक फरीशी जो व्यवस्थापक और
सब लोगों में मर्य्यादिक था खड़ा हुआ और प्रेरितों को
३५ थोड़ी बेर बाहर करने की आज्ञा किई . और उन से कहा
हे इस्रायेली मनुष्यो अपने विषय में सचेत रहो कि तुम
३६ इन मनुष्यों से क्या किया चाहते हो । क्योंकि इन दिनों
के आगे थूदा यह कहता हुआ उठा कि मैं भी कोई हूं
और लोग गिन्ती में चार सौ के अटकल उस के साथ लग
गये परन्तु वह मारा गया और जितने लोग उस को
३७ मानते थे सब तितर बितर हुए और बिला गये । उस
के पीछे नाम लिखाने के दिनों में यिहूदा गालीली उठा
और बहुत लोगों को अपने पीछे बहका लिया . वह भी
नष्ट हुआ और जितने लोग उस को मानते थे सब तितर
३८ बितर हुए । और अब मैं तुम्हों से कहता हूं इन मनुष्यों
से हाथ उठाओ और उन्हें जाने दो क्योंकि यह बिचार
अथवा यह काम यदि मनुष्यों की ओर से होय तो लोप
३९ हो जायगा । परन्तु यदि ईश्वर से है तो तुम उसे लोप
नहीं कर सकते हो . ऐसा न हो कि तुम ईश्वर से भी
लड़नेहारे ठहरो ।

४०　तब उन्हों ने उस की मान लिई और प्रेरितों को बुलाके
उन्हें कोड़े मारके आज्ञा दिई कि यीशु के नाम से बात मत

करो . तब उन्हें छोड़ दिया। सो वे इस बात से कि हम ४१
उन के नाम के लिये निन्दित होने के योग्य गिने गये आनन्द
करते हुए न्याइयों की सभा के साम्हने से चले गये . और ४२
प्रतिदिन मन्दिर में और घर घर उपदेश करने और यीशु
खीष्ट का सुसमाचार सुनाने से नहीं थंभे।

६ छठवां पर्व्व ।

१ कंगालों की सेवा के लिये सात सेवकों का ठहराया जाना। ८ स्तिफान का उपदेश करना। ११ विवादियों का उस पर झूठा दोष लगाना।

उन दिनों में जब शिष्य बहुत होने लगे तब यूनानीय १
भाषा बोलनेहारे इब्रियों पर कुड़कुड़ाने लगे कि प्रतिदिन
की सेवकाई में हमारी विधवाओं की सुध नहीं लिई जाती।
तब बारह प्रेरितों ने शिष्यों की मंडली को अपने पास २
बुलाके कहा यह अच्छा नहीं लगता है कि हम लोग
ईश्वर का वचन छोड़के खिलाने पिलाने की सेवकाई में रहें।
इस लिये हे भाइयो अपने में से सात सुख्यात मनुष्यों को जो ३
पवित्र आत्मा से और बुद्धि से परिपूर्ण हों चुन लो कि हम
उन को इस काम पर नियुक्त करें। परन्तु हम तो प्रार्थना ४
में और वचन की सेवकाई में लगे रहेंगे। यह बात सारी ५
मंडली को अच्छी लगी और उन्हों ने स्तिफान एक मनुष्य
को जो विश्वास से और पवित्र आत्मा से परिपूर्ण था और
फिलिप औ प्रखर औ निकानर औ तीमोन औ पर्मिना
और अन्तैखिया नगर के यिहूदीय मतावलंबी निकोलाव
को चुन लिया . और उन्हें प्रेरितों के आगे खड़ा किया ६
और उन्हों ने प्रार्थना करके उन पर हाथ रखे। और ईश्वर ७
का वचन फैलता गया और यिरूशलीम में शिष्य लोग गिन्ती
में बहुत बढ़ते गये और बहुतेरे याजक लोग विश्वास के
अधीन हुए।

८ स्तिफान बिश्वास और सामर्थ्य से पूर्ण होके बड़े बड़े अद्भुत और आश्चर्य्य कर्म्म लोगों के बीच में करता था ।
९ तब उस सभा में से जो लिबर्त्तिनियों की कहावती है और कुरीनीय औ सिकन्दरीय लोगों में से और किलकिया औ आशिया देशों के लोगों में से कितने उठके स्तिफान से बिबाद
१० करने लगे . परन्तु उस ज्ञान का और उस आत्मा का जिन करके वह बात करता था साम्हना नहीं कर सकते थे ।
११ तब उन्हों ने लोगों को उभाड़ा जो बोले हम ने उस को मूसा के और ईश्वर के बिरोध में निन्दा की बातें बोलते
१२ सुना है । और लोगों औ प्राचीनों औ अध्यापकों को उसकाके वे चढ़ आये और उसे पकड़के न्याइयों की सभा
१३ में लाये . और झूठे साक्षियों को खड़ा किया जो बोले यह मनुष्य इस पवित्र स्थान के और व्यवस्था के बिरोध में निन्दा
१४ की बातें बोलने से नहीं थंभता है । क्योंकि हम ने उसे कहते सुना है कि यह यीशु नासरी इस स्थान को ढायगा और जो व्यवहार मूसा ने हमें सौंप दिये उन्हें बदल
१५ डालेगा । तब सब लोगों ने जो सभा में बैठे थे उस को ओर ताकके उस का मुंह स्वर्गदूत के मुंह के ऐसा देखा ।

७ सातवां पर्ब्ब ।

१ स्तिफान का महायाजक को उत्तर देना . इब्राहीम इत्यादि का बर्णन । १७ मूसा की कथा । ४१ यिहूदियों की मूर्त्तिपूजा का वृत्तान्त । ४४ ईश्वर की सेवा के तम्बूओं का ब्योरा । ५१ यिहूदियों पर उलहना । ५८ यिहूदियों का स्तिफान को पत्थरों से मारना ।

१ तब महायाजक ने कहा क्या यह बातें यूं हीं हैं । स्ति-
२ फान ने कहा हे भाइयो और पितरो सुनो . हमारा पिता इब्राहीम हारान नगर में बसने के पहिले जब मिसपता-मिया देश में था तब तेजोमय ईश्वर ने उस को दर्शन

दिया. और उस से कहा तू अपने देश और अपने कुटुंबों ३
में से निकलके जो देश मैं तुझे दिखाऊं उसी में आ। तब ४
उस ने कलदियों के देश से निकलके हारान में बास किया
और वहां से उस के पिता के मरने के पीछे ईश्वर ने उस को
इस देश में लाके बसाया जिस में आप लोग अब बसते हैं।
और उस ने इस देश में उस को कुछ अधिकार न दिया पैर ५
रखने भर भूमि भी नहीं परन्तु उस को पुत्र न रहते ही
उस को प्रतिज्ञा दिई कि मैं यह देश तुझ को और तेरे
पीछे तेरे वंश को अधिकार के लिये देऊंगा। और ईश्वर ने ६
यूं कहा कि तेरे सन्तान पराये देश में विदेशी होंगे और
वे लोग उन्हें दास बनावेंगे और चार सौ बरस उन्हें दुःख
देंगे। और जिन लोगों के वे दास होंगे उन लोगों का ७
(ईश्वर ने कहा) मैं विचार करूंगा और इस के पीछे वे
निकल आवेंगे और इसी स्थान में मेरी सेवा करेंगे। और ८
उस ने उस को खतने का नियम दिया और इस रीति से
इसहाक उस से उत्पन्न हुआ और उस ने आठवें दिन उस
का खतना किया और इसहाक ने याकूब का और याकूब
ने बारह कुलपतियों का। और कुलपतियों ने यूसफ से डाह ९
करके उसे मिसर देश जानेहारों के हाथ बेचा परन्तु ईश्वर
उस के संग था. और उसे उस के सब क्लेशों से छुड़ाके १०
मिसर के राजा फिरऊन के आगे अनुग्रह के योग्य और बुद्धि-
मान किया और उस ने उसे मिसर देश पर और अपने
सारे घर पर प्रधान ठहराया। तब मिसर और कनान के ११
सारे देश में अकाल और बड़ा क्लेश पड़ा और हमारे
पितरों को अन्न नहीं मिलता था। परन्तु याकूब ने यह १२
सुनके कि मिसर में अनाज है हमारे पितरों को पहिली बेर
भेजा। और दूसरी बेर में यूसफ अपने भाइयों से पहचाना १३

१४ गया और यूसफ का घराना फिरऊन पर प्रगट हुआ। तब यूसफ ने अपने पिता याकूब को और अपने सब कुटुंबों को
१५ जो पछत्तर जन थे बुलवा भेजा। सो याकूब मिसर को
१६ गया और वह आप मरा और हमारे पितर लोग. और वे शिखिम नगर में पहुंचाये गये और उस क़बर में रखे गये जिसे इब्राहीम ने चांदी देके शिखिम के पिता हमोर के सन्तानों से मोल लिया।

१७ परन्तु जो प्रतिज्ञा ईश्वर ने किरिया खाके इब्राहीम से किई थी उस का समय ज्यों ही निकट आया त्यों ही वे
१८ लोग मिसर में बढ़े और बहुत हो गये। इतने में दूसरा
१९ राजा उठा जो यूसफ को नहीं जानता था। उस ने हमारे लोगों से चतुराई करके हमारे पितरों के साथ ऐसी बुराई किई कि उन के बालकों को बाहर फिंकवाया कि वे जीते
२० न रहें। उस समय में मूसा उत्पन्न हुआ जो परमसुन्दर था और वह अपने पिता के घर में तीन मास पाला गया।
२१ जब वह बाहर फेंका गया तब फिरऊन की बेटी ने उसे
२२ उठा लिया और अपना पुत्र करके उसे पाला। और मूसा को मिसरियों की सारी विद्या सिखाई गई और वह
२३ बातों और कामों में सामर्थी था। जब वह चालीस बरस का हुआ तब उस के मन में आया कि अपने भाइयों को
२४ अर्थात इस्रायेल के सन्तानों को देख लेवे। और उस ने एक पर अन्याय होते देखके रक्षा किई और मिसरी को मारके
२५ सताये हुए का पलटा लिया। वह बिचार करता था कि मेरे भाई समझेंगे कि ईश्वर मेरे हाथ से उन्हों का निस्तार
२६ करता है परन्तु उन्हों ने नहीं समझा। अगले दिन वह उन्हें जब वे आपस में लड़ते थे दिखाई दिया और यह कहके उन्हें मिलाप करने को मनाया कि हे मनुष्यो तुम

तो भाई हो एक दूसरे से क्यों अन्याय करते हो। परन्तु २७ जो अपने पड़ोसी से अन्याय करता था उस ने उस को हटाके कहा किस ने तुझे हमों पर अध्यक्ष और न्यायी ठहराया। क्या जिस रीति से तू ने कल मिसरी को मार २८ डाला तू मुझे मार डालने चाहता है। इस बात पर मूसा २९ भागा और मिदियान देश में परदेशी हुआ और वहां दो पुत्र उस को उत्पन्न हुए। जब चालीस बरस बीत गये ३० तब परमेश्वर के दूत ने सीनई पर्व्वत के जंगल में उस को एक झाड़ी की आग की ज्वाला में दर्शन दिया। मूसा ने देखके ३१ उस दर्शन से अचंभा किया और जब वह दृष्टि करने को निकट आता था तब परमेश्वर का शब्द उस पास पहुंचा. कि मैं तेरे पितरों का ईश्वर अर्थात इब्राहीम का ईश्वर ३२ और इसहाक का ईश्वर और याकूब का ईश्वर हूं. तब मूसा कांपने लगा और दृष्टि करने का उसे साहस न रहा। तब परमेश्वर ने उस से कहा अपने पांवों की जूतियां खोल ३३ क्योंकि वह स्थान जिस पर तू खड़ा है पवित्र भूमि है। मैं ने दृष्टि करके अपने लोगों की जो मिसर में हैं दुर्दशा ३४ देखी है और उन का कहरना सुना है और उन्हें छुड़ाने को उतर आया हूं और अब आ मैं तुझे मिसर को भेजूंगा। यही मूसा जिसे उन्हों ने नकारके कहा किस ने तुझे अध्यक्ष ३५ और न्यायी ठहराया उसी को ईश्वर ने उस दूत के हाथ से जिस ने उस को झाड़ी में दर्शन दिया अध्यक्ष और निस्तारक करके भेजा। यही मिसर देश में और लाल समुद्र में और ३६ जंगल में चालीस बरस अद्भुत काम और चिन्ह दिखाके उन्हें निकाल लाया। यही वह मूसा है जिस ने इस्रायेल के सन्तानों ३७ से कहा परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर तुम्हारे भाइयों में से मेरे समान एक भविष्यद्वक्ता को तुम्हारे लिये उठावेगा तुम

३८ उस की सुनो । यही है जो जंगल में मंडली के बीच में उस दूत के संग जो सीनई पर्व्वत पर उस से बोला और हमारे पितरों के संग था और उस ने हमें देने के लिये जीवती
३९ बाणियां पाईं । पर हमारे पितरों ने उस के आज्ञाकारी होने की इच्छा न किई परन्तु उसे हटाके अपने मन में
४० मिसर की ओर फिरे . और हारोन से बोले हमारे लिये देवों को बनाइये जो हमारे आगे जायें क्योंकि यह मूसा जो हमें मिसर देश में से निकाल लाया उसे हम नहीं जानते क्या हुआ है ।

४१ उन दिनों में उन्हों ने बछड़ू बनाके उस मूर्त्ति के आगे बलि चढ़ाया और अपने हाथों के कामों से मगन होते थे ।
४२ तब ईश्वर ने मुंह फेरके उन्हें आकाश की सेना पूजने को त्याग दिया जैसा भविष्यद्वक्ताओं के पुस्तक में लिखा है कि हे इस्रायेल के घराने क्या तुम ने चालीस बरस जंगल
४३ में मेरे आगे पशुमेध और बलि चढ़ाये । तौभी तुम ने मोलक का तंबू और अपनी देवता रिंफन का तारा उठा लिया अर्थात उन आकारों को जो तुम ने पूजने को बनाये . और मैं तुम्हें बाबुल से और उधर ले जाके बसाऊंगा ।

४४ साक्षी का तंबू जंगल में हमारे पितरों के बीच में था जैसा उसी ने ठहराया जिस ने मूसा से कहा कि जो आकार
४५ तू ने देखा है उस के अनुसार उस को बना । और उस को हमारे पितर लोग यिहोशुआ के संग अगलों से पाके तब यहां लाये जब उन्हों ने उन अन्यदेशियों का अधिकार पाया जिन्हें ईश्वर ने हमारे पितरों के साम्ने से निकाल
४६ दिया . सोई दाऊद के दिनों तक हुआ जिस पर ईश्वर का अनुग्रह था और जिस ने मांगा कि मैं याकूब के ईश्वर के
४७ लिये डेरा ठहराऊं । पर सुलेमान ने उस के लिये घर

बनाया। परन्तु सर्व्वप्रधान जो है सो हाथ के बनाये हुए ४८ मन्दिरों में वास नहीं करता है जैसा भविष्यद्वक्ता ने कहा है. कि परमेश्वर कहता है स्वर्ग मेरा सिंहासन और ४९ पृथिवी मेरे चरणों की पीढ़ी है तुम मेरे लिये कैसा घर बनाओगे अथवा मेरे विश्राम का कौन सा स्थान है। क्या ५० मेरे हाथ ने यह सब वस्तु नहीं बनाईं।

हे हठीले और मन और कानों के खतनाहीन लोगो ५१ तुम सदा पवित्र आत्मा का साम्हना करते हो. जैसा तुम्हारे पितरों ने तैसा तुम भी। भविष्यद्वक्ताओं में से तुम्हारे ५२ पितरों ने किस को नहीं सताया. और उन्हों ने उन्हें मार डाला जिन्हों ने इस धर्म्मी जन के आने का आगे से सन्देश दिया जिस के तुम अब पकड़वानेहारे और हत्यारे हुए हो. जिन्हों ने स्वर्गदूतों के द्वारा ठहराई हुई व्यवस्था ५३ पाई है तौभी पालन न किई।

यह बातें सुनने से उन के मन को तीर सा लग गया और ५४ वे स्तिफान पर दांत पीसने लगे। परन्तु उस ने पवित्र ५५ आत्मा से परिपूर्ण हो स्वर्ग की ओर ताकके ईश्वर की महिमा को और यीशु को ईश्वर की दहिनी ओर खड़े देखा. और कहा देखो मैं स्वर्ग को खुले और मनुष्य के पुत्र को ५६ ईश्वर की दहिनी ओर खड़े देखता हूं। तब उन्हों ने बड़े ५७ शब्द से चिल्लाके अपने कान बन्द किये और एक चित्त होके उस पर लपके. और उसे नगर के बाहर निकालके ५८ पत्थरवाह करने लगे और साक्षियों ने अपने कपड़े शावल नाम एक जवान के पांवों पास उतार रखे। और उन्हों ५९ ने स्तिफान को पत्थरवाह किया जो यह कहके प्रार्थना करता था कि हे प्रभु यीशु मेरे आत्मा को ग्रहण कर। और घुटने टेकके उस ने बड़े शब्द से पुकारा हे ६०

प्रभु यह पाप उन पर मत लगा और यह कहके सो गया ।

८ आठवां पर्ब्ब ।

१ उपद्रव के कारण मंडली के लोगों का तितर बितर होना । ४ फिलिप का शोमिरोनियों को सुसमाचार सुनाना । ९ शिमोन टोन्हा का वृत्तान्त । २५ फिलिप और नपुंसक का बर्णन ।

१ शावल स्तिफान के मारे जाने में सम्मति देता था . उस समय यिरूशलीम में की मंडली पर बड़ा उपद्रव हुआ और प्रेरितों को छोड़ वे सब यिहूदिया और शोमिरोन देशों २ में तितर बितर हुए। भक्त लोगों ने स्तिफान को कबर में रखा ३ और उस के लिये बड़ा बिलाप किया। शावल मंडली को नाश करता रहा कि घर घर घुसके पुरुषों और स्त्रियों को पकड़के बन्दीगृह में डालता था ।

४ जो तितर बितर हुए सो सुसमाचार प्रचार करते हुए ५ फिरा किये । और फिलिप ने शोमिरोन के एक नगर में ६ जाके ख्रीष्ट की कथा लोगों को सुनाई । और जो बातें फिलिप ने कहीं उन्हों पर लोगों ने उन आश्चर्य्य कर्म्मों को जो वह करता था सुनने और देखने से एक चित्त होके ७ मन लगाया । क्योंकि बहुतों में से जिन्हें अशुद्ध भूत लगे थे वे भूत बड़े शब्द से पुकारते हुए निकले और बहुत ८ अर्द्धांगी और लंगड़े लोग चंगे किये गये । और उस नगर में बड़ा आनन्द हुआ ।

९ परन्तु उस नगर में आगे से शिमोन नाम एक मनुष्य था जो टोना करके शोमिरोन के लोगों को बिस्मित करता १० था और अपने को कोई बड़ा पुरुष कहता था । और छोटे से बड़े तक सब उस को मानके कहते थे कि यह ११ मनुष्य ईश्वर की महा शक्ति ही है। उस ने बहुत दिनों

से उन्हें टोनों से विस्मित किया था इस लिये वे उस को मानते थे। परन्तु जब उन्हों ने फिलिप का जो ईश्वर के १२ राज्य के और यीशु ख्रीष्ट के नाम के विषय में का सुसमाचार सुनाता था विश्वास किया तब पुरुष और स्त्रियां भी बपतिसमा लेने लगे। तब शिमोन ने आप भी बिश्वास १३ किया और बपतिसमा लेके फिलिप के संग लगा रहा और आश्चर्य्य कर्म्म और बड़े चिन्ह जो होते थे देखके बिस्मित होता था।

जो प्रेरित यिरूशलीम में थे उन्हों ने जब सुना कि शोमि- १४ रोनियों ने ईश्वर का वचन ग्रहण किया है तब पितर और योहन को उन के पास भेजा। और उन्हों ने जाके उन के लिये १५ प्रार्थना किई कि वे पवित्र आत्मा पावें। क्योंकि वह अब १६ लों उन में से किसी पर नहीं पड़ा था केवल उन्हों ने प्रभु यीशु के नाम से बपतिसमा लिया था। तब उन्हों ने उन १७ पर हाथ रखे और उन्हों ने पवित्र आत्मा पाया।

शिमोन यह देखके कि प्रेरितों के हाथों के रखने से १८ पवित्र आत्मा दिया जाता है उन के पास रुपैये लाया. और कहा मुझ को भी यह अधिकार दीजिये कि जिस १९ किसी पर मैं हाथ रखूं वह पवित्र आत्मा पावे। परन्तु २० पितर ने उस से कहा तेरे रुपैये तेरे संग नष्ट होवें क्योंकि तू ने ईश्वर का दान रुपैयों से मोल लेने का बिचार किया है। तुझे इस बात में न भाग न अधिकार है क्योंकि तेरा २१ मन ईश्वर के आगे सीधा नहीं है। इस लिये अपनी इस २२ बुराई से पश्चात्ताप करके ईश्वर से प्रार्थना कर क्या जाने तेरे मन का विचार क्षमा किया जाय। क्योंकि मैं देखता २३ हूं कि तू अति कड़वे पित्त में और अधर्म्म के बंधन में पड़ा है। शिमोन ने उत्तर दिया कि आप लोग मेरे लिये प्रभु २४

से प्रार्थना कीजिये कि जो बातें आप लोगों ने कही हैं
उन में से कोई बात मुझ पर न पड़े ।
२५　सो वे साक्षी देके और प्रभु का बचन सुनाके यिरू-
शलीम को लौटे और उन्हों ने शोमिरोनियों के बहुत गांवों
२६ में सुसमाचार प्रचार किया । परन्तु परमेश्वर के एक दूत
ने फिलिप से कहा उठके दक्षिण को उस मार्ग पर जा जो
यिरूशलीम से अज्जा नगर को जाता है वह जंगल है ।
२७ वह उठके गया और देखो कूश देश का एक मनुष्य था
जो नपुंसक और कूशियों की राणी कन्दाकी का एक प्रधान
और उस के सारे धन पर अध्यक्ष था और यिरूशलीम को
२८ भजन करने को आया था । और वह लौटता था और अपने
रथ पर बैठा हुआ यिशैयाह भविष्यद्वक्ता का पुस्तक पढ़ता
२९ था । तब आत्मा ने फिलिप से कहा निकट जाके इस रथ
३० से मिल जा । फिलिप ने उस ओर दौड़के उस मनुष्य को
यिशैयाह भविष्यद्वक्ता का पुस्तक पढ़ते हुए सुना और
३१ कहा क्या आप जो पढ़ते हैं उसे बूझते हैं । उस ने कहा
यदि कोई मुझे न बतावे तो मैं क्योंकर बूझ सकूं . और
उस ने फिलिप से बिन्ती किई कि चढ़के मेरे संग बैठिये ।
३२ धर्म्मपुस्तक का अध्याय जो वह पढ़ता था यही था कि
वह भेड़ की नाईं बध होने को पहुंचाया गया और जैसा
मेम्ना अपने रोम कतरनेहारे के साम्ने अबोल है तैसा उस
३३ ने अपना मुंह न खोला । उस की दीनताई में उस का न्याय
नहीं होने पाया और उस के समय के लोगों का बर्णन कौन
३४ करेगा क्योंकि उस का प्राण पृथिवी से उठाया गया । इस
पर नपुंसक ने फिलिप से कहा मैं आप से बिन्ती करता हूं
भविष्यद्वक्ता यह बात किस के विषय में कहता है अपने
३५ विषय में अथवा किसी दूसरे के विषय में । तब फिलिप ने

अपना मुंह खोलके और धर्म्मपुस्तक के इस बचन से आरंभ करके यीशु का सुसमाचार उस को सुनाया। मार्ग में जाते ३६ जाते वे किसी पानी के पास पहुंचे और नपुंसक ने कहा देखिये जल है बपतिसमा लेने में मुझे क्या रोक है। [फिलिप ने कहा जो आप सारे मन से विश्वास करते हैं ३७ तो हो सकता है. उस ने उत्तर दिया मैं विश्वास करता हूं कि यीशु ख्रीष्ट ईश्वर का पुत्र है।] तब उस ने रथ खड़ा ३८ करने की आज्ञा दिई और वे दोनों फिलिप और नपुंसक भी जल में उतरे और फिलिप ने उस को बपतिसमा दिया। जब वे जल में से ऊपर आये तब परमेश्वर का आत्मा ३९ फिलिप को ले गया और नपुंसक ने उसे फिर नहीं देखा क्योंकि वह अपने मार्ग पर आनन्द करता हुआ चला गया। परन्तु फिलिप असदोद नगर में पाया गया और ४० आगे बढ़के जब लों कैसरिया नगर में न पहुंचा सब नगरों में सुसमाचार सुनाता गया।

९ नवां पर्ब्ब।

१ दमेसक को जाते हुए शावल का यीशु का दर्शन पाना और मन फिराना। १० अननियाह पर पावल (अर्थात शावल) की बात का प्रगट होना। १७ अननियाह के हाथ से पावल का दृष्टि पाना और बपतिसमा लेना। १९ पावल का सभा के घरों में यीशु का सुसमाचार प्रचार करना और यिहूदियों का उस से वैर करना। २६ उस का यिरूशलीम के भाइयों से मिलना। ३१ पितर का ऐनिय को चंगा करना। ३६ दर्का को जिलाना।

शावल जिस की अब लों प्रभु के शिष्यों को धमकाने और १ घात करने की सांस फूल रही थी महायाजक के पास गया. और उस से दमेसक नगर की सभाओं के नाम पर चिट्ठियां २ मांगीं इस लिये कि यदि कोई मिलें क्या पुरुष क्या स्त्रियां जो उस पन्थ के हों तो उन्हें बांधे हुए यिरूशलीम को ले आवे। परन्तु जाते हुए जब वह दमेसक के निकट पहुंचा ३

तब अचांचक स्वर्ग से एक ज्योति उस की चारों ओर
४ चमकी। और वह भूमि पर गिरा और एक शब्द सुना
जो उस से बोला हे शावल हे शावल तू मुझे क्यों सताता
५ है। उस ने कहा हे प्रभु तू कौन है . प्रभु ने कहा मैं यीशु
हूं जिसे तू सताता है पैनों पर लात मारना तेरे लिये
६ कठिन है। उस ने कंपित और अचंभित हो कहा हे प्रभु
तू क्या चाहता है कि मैं करूं . प्रभु ने उस से कहा उठके
नगर में जा और तुझ से कहा जायगा तुझे क्या करना
७ उचित है। और जो मनुष्य उस के संग जाते थे सो चुप
खड़े थे कि वे शब्द तो सुनते थे पर किसी को नहीं देखते
८ थे। तब शावल भूमि से उठा परन्तु जब अपनी आंखें
खोलीं तब किसी को न देख सका पर वे उस का हाथ
९ पकड़के उसे दमेसक में लाये। और वह तीन दिन लों
नहीं देख सकता था और न खाता न पीता था।

१० दमेसक में अननियाह नाम एक शिष्य था और प्रभु ने
दर्शन में उस से कहा हे अननियाह . उस ने कहा हे प्रभु
११ देखिये मैं हूं। तब प्रभु ने उस से कहा उठके उस गली में
जो सीधी कहावती है जा और यिहूदा के घर में शावल
नाम तारस नगर के एक मनुष्य को ढूंढ़ क्योंकि देख वह
१२ प्रार्थना करता है . और उस ने दर्शन में यह देखा है कि
अननियाह नाम एक मनुष्य ने भीतर आके उस पर हाथ
१३ रखा कि वह दृष्टि पावे। अननियाह ने उत्तर दिया कि
हे प्रभु मैं ने बहुतों से इस मनुष्य के विषय में सुना है कि
उस ने यिरूशलीम में तेरे पवित्र लोगों से कितनी बुराई
१४ किई है। और यहां उस को तेरे नाम की सब प्रार्थना
करनेहारों को बांधने का प्रधान याजकों की ओर से अधिकार
१५ है। प्रभु ने उस से कहा चला जा क्योंकि वह अन्यदेशियों

और राजाओं और इस्रायेल के सन्तानों के आगे मेरा नाम पहुंचाने को मेरा एक चुना हुआ पात्र है। क्योंकि मैं १६ उसे वताऊंगा कि मेरे नाम के लिये उस को कैसा वड़ा दुःख उठाना होगा।

तव अननियाह ने जाके उस घर में प्रवेश किया और १७ उस पर हाथ रखके कहा हे भाई शावल प्रभु ने अर्थात यीशु ने जिस ने उस मार्ग में जिस से तू आता था तुझ को दर्शन दिया मुझे भेजा है इस लिये कि तू दृष्टि पावे और पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होवे। और तुरन्त उस की आंखों १८ से छिलके से गिर पड़े और वह तुरन्त देखने लगा और उठके वपतिसमा लिया और भोजन करके वल पाया।

तव शावल कितने दिन दमेसक में के शिष्यों के संग था। १९ और वह तुरन्त सभाओं में यीशु की कथा सुनाने लगा कि २० वह ईश्वर का पुत्र है। और सब सुननेहारे विस्मित हो २१ कहने लगे क्या यह वह नहीं है जिस ने यिरूशलीम में इस नाम की प्रार्थना करनेहारों को नाश किया और यहां इसी लिये आया था कि उन्हें बांधे हुए प्रधान याजकों के आगे पहुंचावे। परन्तु शावल और भी दृढ़ होता गया २२ और यही खीष्ट है इस वात का प्रमाण देके दमेसक में रहनेहारे यिहूदियों को व्याकुल किया। जब वहुत दिन वीत २३ गये तव यिहूदियों ने उसे मार डालने का आपस में विचार किया। परन्तु उन की कुमंत्रणा शावल को जान पड़ी. वे २४ उसे मार डालने को रात और दिन फाटकों पर पहरा भी देते थे। परन्तु शिष्यों ने रात को उसे लेके टोकरे में २५ लटकाके भीत पर से उतार दिया।

जब शावल यिरूशलीम में पहुंचा तव वह शिष्यों से २६ मिल जाने चाहता था और वे सब उस से डरते थे क्योंकि

२७ वे उस के शिष्य होने को प्रतीति नहीं करते थे। परन्तु बर्णबा उसे ले करके प्रेरितों के पास लाया और उन से कह दिया कि उस ने क्योंकर मार्ग में प्रभु को देखा था और प्रभु उस से बोला था और क्योंकर उस ने दमेसक में यीशु के नाम से
२८ खोलके बात किई थी । तब वह यिरूशलीम में उन के संग आया जाया करने लगा और प्रभु यीशु के नाम से
२९ खोलके बात करने लगा । उस ने यूनानीय भाषा बोलने-हारों से भी कथा और बिबाद किया पर वे उसे मार
३० डालने का यत्न करने लगे । यह जानके भाई लोग उसे कैसरिया में लाये और तारस की ओर भेजा ।

३१ सो सारे यिहूदिया और गालील और शोमिरोन में मंडली को चैन होता था और वे सुधर जाती थीं और प्रभु के भय में और पवित्र आत्मा की शांति में चलती थीं
३२ और बढ़ जाती थीं । तब पितर सब पवित्र लोगों में फिरते हुए उन्हों के पास भी आया जो लुद्दा नगर में बास
३३ करते थे । वहां उस ने ऐनिय नाम एक मनुष्य को पाया जो अर्द्धांगी था और आठ बरस से खाट पर पड़ा हुआ
३४ था। पितर ने उस से कहा हे ऐनिय यीशु ख्रीष्ट तुझे चंगा करता है उठ और अपना बिछौना सुधार . तब वह
३५ तुरन्त उठा। और लुद्दा और शारोन के सब निवासियों ने उसे देखा और वे प्रभु की ओर फिरे ।

३६ याफो नगर में तबीथा अर्थात दर्का नाम एक शिष्या थी . वह सुकर्म्मों और दानों से जो वह करती थी पूर्ण
३७ थी । उन दिनों में वह रोगी हुई और मर गई और
३८ उन्हों ने उसे नहलाके उपरौठी कोठरी में रखा । और इस लिये कि लुद्दा याफो के निकट था शिष्यों ने यह सुनके कि पितर वहां है दो मनुष्यों को उस पास भेजके बिन्ती

किई कि हमारे पास आने में विलंब न कीजिये। तब ३९ पितर उठके उन के संग गया और जब वह पहुंचा तब वे उसे उस उपरौठी कोठरी में ले गये और सब बिधवाएं रोती हुईं और जो कुरते और वस्त्र दर्का उन के संग होते हुए बनाती थी उन्हें दिखाती हुईं उस पास खड़ी हुईं। परन्तु पितर ने सभों को बाहर निकाला और घुटने ४० टेकके प्रार्थना किई और लोथ की ओर फिरके कहा हे तबीथा उठ. तब उस ने अपनी आंखें खोलीं और पितर को देखके उठ बैठी। उस ने हाथ देके उस को उठाया ४१ और पवित्र लोगों और बिधवाओं को बुलाके उसे जीवती दिखाई। यह बात सारे याफो में जान पड़ी और बहुत ४२ लोगों ने प्रभु पर विश्वास किया। और पितर याफो में ४३ शिमोन नाम किसी चमार के यहां बहुत दिन रहा।

१० दसवां पर्ब्ब।

१ स्वर्गदूत की आज्ञा से कर्णीलिय का पितर को बुलवा भेजना। ९ पितर का एक दर्शन पाना। १७ कर्णीलिय के दूतों के संग पितर की बातचीत और पितर का उन के साथ जाना। २४ कर्णीलिय से पितर की बातचीत। ३४ पितर का सुसमाचार प्रचार करना। ४४ कर्णीलिय और उस के मित्रों पर पवित्र आत्मा का उतरना और उन का बपतिसमा लेना।

कैसरिया में कर्णीलिय नाम एक मनुष्य था जो इत- १ लीय नाम पलटन का एक शतपति था। वह भक्त जन २ था और अपने सारे घराने समेत ईश्वर से डरता था और लोगों को बहुत दान देता था और नित्य ईश्वर से प्रार्थना करता था। उस ने दिन को तीसरे पहर के निकट दर्शन ३ में प्रत्यक्ष देखा कि ईश्वर का एक दूत उस पास भीतर आया और उस से बोला हे कर्णीलिय। उस ने उस की ओर ४ ताकके और भयमान होके कहा हे प्रभु क्या है. उस ने

उस से कहा तेरी प्रार्थनाएं और तेरे दान स्मरण के लिये
५ ईश्वर के आगे पहुंचे हैं। और अब मनुष्यों को याफो नगर
६ भेजके शिमोन को जो पितर कहावता है बुला। वह
शिमोन नाम किसी चमार के यहां जिस का घर समुद्र के
तीर पर है पाहुन है. जो कुछ तुझे करना उचित है सो
७ वही तुझ से कहेगा। जब वह दूत जो कर्णीलिय से बात
करता था चला गया तब उस ने अपने सेवकों में से दो को
और जो उस के यहां लगे रहते थे. उन में से एक भक्त
८ योद्धा को बुलाया. और उन्हों को सब बातें सुनाके उन्हें
याफो को भेजा।

९ दूसरे दिन ज्यों ही वे मार्ग में चलते थे और नगर के
निकट पहुंचे त्यों ही पितर दो पहर के निकट प्रार्थना
१० करने को कोठे पर चढ़ा। तब वह बहुत भूखा हुआ और
कुछ खाने चाहता था पर जिस समय वे तैयार करते थे
११ वह बेसुध हो गया। और उस ने स्वर्ग को खुले और बड़ी
चद्दर की नाईं किसी पात्र को चार कोनों से बांधे हुए और
पृथिवी की ओर लटकाये हुए अपनी ओर उतरते देखा।
१२ उस में पृथिवी के सब चौपाये और बन पशु और रेंगनेहारे
१३ जन्तु और आकाश के पंछी थे। और एक शब्द उस पास
१४ पहुंचा कि हे पितर उठ मार और खा। पितर ने कहा
हे प्रभु ऐसा न होवे क्योंकि मैं ने कभी कोई अपवित्र
१५ अथवा अशुद्ध बस्तु नहीं खाई। और शब्द फिर दूसरी
बेर उस पास पहुंचा कि जो कुछ ईश्वर ने शुद्ध किया है
१६ उस को तू अशुद्ध मत कह। यह तीन बार हुआ तब
वह पात्र फिर स्वर्ग पर उठा लिया गया।

१७ जिस समय पितर अपने मन में दुबधा करता था कि
यह दर्शन जो मैं ने देखा है क्या है देखो वे मनुष्य जो

कर्णीलिय की ओर से भेजे गये थे शिमोन के घर का ठिकाना पा करके डेवढ़ी पर खड़े हुए. और पुकारके पूछते थे क्या १८ शिमोन जो पितर कहावता है यहां पाहुन है। पितर १९ उस दर्शन के विषय में सोचता ही था कि आत्मा ने उस से कहा देख तीन मनुष्य तुझे ढूंढ़ते हैं। पर तू उठके उतर २० जा और उन के संग बेखटके चला जा क्योंकि मैं ने उन्हें भेजा है। तब पितर ने उन मनुष्यों के पास जो कर्णीलिय २१ की ओर से उस पास भेजे गये थे उतरके कहा देखो जिसे तुम ढूंढ़ते हो सो मैं हूं तुम किस कारण से आये हो। वे २२ बोले कर्णीलिय शतपति जो धर्म्मी मनुष्य और ईश्वर से डरनेहारा और सारे यिहूदी लोगों में सुख्यात है उस को एक पवित्र दूत से आज्ञा दिई गई कि आप को अपने घर में बुलाके आप से बातें सुने। तब पितर ने उन्हें भीतर २३ बुलाके उन की पहुनई किई और दूसरे दिन वह उन के संग गया और याफो के भाइयों में से कितने उस के साथ हो लिये।

दूसरे दिन उन्हों ने कैसरिया में प्रवेश किया और २४ कर्णीलिय अपने कुटुंबों और प्रिय मित्रों को एकट्ठे बुलाके उन की बाट जोहता था। जब पितर भीतर आता था २५ तब कर्णीलिय उस से आ मिला और पांवों पड़के प्रणाम किया। परन्तु पितर ने उस को उठाके कहा खड़ा हो मैं २६ आप भी मनुष्य हूं। और वह उस के संग बातचीत करता २७ हुआ भीतर गया और बहुत लोगों को एकट्ठे पाया. और उन से कहा तुम जानते हो कि अन्यदेशी की संगति २८ करना अथवा उस के यहां जाना यिहूदी मनुष्य को बर्ज्जित है परन्तु ईश्वर ने मुझे बताया है कि तू किसी मनुष्य को अपवित्र अथवा अशुद्ध मत कह। इस लिये मैं जो बुलाया २९

गया तो इस के बिरुद्ध कुछ न कहके चला आया सो मैं पूछता हूं कि तुम्हों ने किस बात के लिये मुझे बुलाया है।
३० कर्णीलिय ने कहा चार दिन हुए कि मैं इस घड़ी लों उपवास करता था और तीसरे पहर अपने घर में प्रार्थना करता था कि देखो एक पुरुष चमकता बस्त्र पहिने हुए
३१ मेरे आगे खड़ा हुआ . और बोला हे कर्णीलिय तेरी प्रार्थना सुनी गई है और तेरे दान ईश्वर के आगे स्मरण
३२ किये गये हैं। इस लिये याफो नगर भेजके शिमोन को जो पितर कहावता है बुला . वह समुद्र के तीर पर शिमोन चमार के घर में पाहुन है . वह आके तुझ से बात करेगा।
३३ तब मैं ने तुरन्त आप के पास भेजा और आप ने अच्छा किया जो आये हैं सो अब ईश्वर ने जो कुछ आप को आज्ञा दिई है सोई सुनने को हम सब यहां ईश्वर के साम्हने हैं।
३४ तब पितर ने मुंह खोलके कहा मुझे सचमुच बूझ पड़ता है कि ईश्वर मुंह देखा बिचार करनेहारा नहीं है।
३५ परन्तु हर एक देश के लोगों में जो उस से डरता है और धर्म्म के कार्य्य करता है सो उस से ग्रहण किया जाता है।
३६ उस ने वह बचन तुम्हों के पास भेजा है जो उस ने इस्रायेल के सन्तानों के पास भेजा अर्थात यीशु ख्रीष्ट के द्वारा से
३७ जो सभों का प्रभु है शांति का सुसमाचार सुनाया। तुम वह बात जानते हो जो उस बपतिसमा के पीछे जिस का योहन ने उपदेश किया गालील से आरंभ कर सारे यिहू-
३८ दिया में फैल गई . अर्थात नासरत नगर के यीशु के विषय में क्योंकर ईश्वर ने उस को पवित्र आत्मा और सामर्थ्य से अभिषेक किया और वह भलाई करता और सभों को जो शैतान से पेरे जाते थे चंगा करता फिरा क्योंकि ईश्वर
३९ उस के संग था। और हम उन सब कामों के साक्षी हैं जो

उस ने यिहूदियों के देश में और यिरूशलीम में भी किये जिसे लोगों ने काठ पर लटकाके मार डाला। उस को ४० ईश्वर ने तीसरे दिन जिला उठाया और उस को प्रगट होने दिया. सब लोगों के आगे नहीं परन्तु साक्षियों के ४१ आगे जिन्हें ईश्वर ने पहिले से ठहराया था अर्थात हमों के आगे जिन्हों ने उस के मृतकों में से जी उठने के पीछे उस के संग खाया और पीया। और उस ने हमों को आज्ञा दिई ४२ कि लोगों को उपदेश और साक्षी देओ कि वही है जिस को ईश्वर ने जीवतों और मृतकों का न्यायी ठहराया है। उस पर सारे भविष्यद्वक्ता साक्षी देते हैं कि जो कोई उस पर ४३ विश्वास करे सो उस के नाम के द्वारा पापमोचन पावेगा।

पितर यह बातें कहता ही था कि पवित्र आत्मा बचन ४४ के सब सुननेहारों पर पड़ा। और खतना किये हुए ४५ विश्वासी जितने पितर के संग आये थे बिस्मित हुए कि अन्यदेशियों पर भी पवित्र आत्मा का दान उंडेला गया है। क्योंकि उन्हों ने उन्हें अनेक बोलियां बोलते और ईश्वर ४६ की महिमा करते सुना। इस पर पितर ने कहा क्या कोई ४७ जल को रोक सकता है कि इन लोगों को जिन्हों ने हमारी नाईं पवित्र आत्मा पाया है बपतिसमा न दिया जावे। और उस ने आज्ञा दिई कि उन्हें प्रभु के नाम से बपतिसमा ४८ दिया जाय. तब उन्हों ने उस से कई एक दिन ठहर जाने की बिन्ती किई।

११ एग्यारहवां पर्व्व।

१ अन्यदेशियों को सुसमाचार सुनाने के विषय में पितर का उत्तर। १९ अन्तैखिया में सुसमाचार के प्रचार किये जाने का वर्णन। २७ क्लौदिय कैसर के समय के अकाल की कथा।

जो प्रेरित और भाई लोग यिहूदिया में थे उन्हों ने १

सुना कि अन्यदेशियों ने भी ईश्वर का बचन ग्रहण किया
२ है । और जब पितर यिरूशलीम को गया तब खतना
३ किये हुए लोग उस से बिबाद करने लगे . और बोले तू ने
४ खतनाहीन लोगों के यहां जाके उन के संग खाया । तब
५ पितर ने आरंभ कर एक ओर से उन्हें कह सुनाया . कि
मैं याफो नगर में प्रार्थना करता था और बेसुध होके एक
दर्शन अर्थात स्वर्ग पर से चार कोनों से लटकाई हुई बड़ी
चद्दर की नाईं किसी पात्र को उतरते देखा और वह मेरे
६ पास लों आया । मैं ने उस की ओर ताकके देख लिया और
पृथिवी के चौपायों और बन पशुओं और रेंगनेहारे जन्तुओं
७ को और आकाश के पंछियों को देखा . और एक शब्द
८ सुना जो मुझ से बोला हे पितर उठ मार और खा । मैं
ने कहा हे प्रभु ऐसा न होवे क्योंकि कोई अपवित्र अथवा
९ अशुद्ध वस्तु मेरे मुंह में कभी नहीं गई । परन्तु शब्द ने
दूसरी बेर स्वर्ग से मुझे उत्तर दिया कि जो कुछ ईश्वर ने
१० शुद्ध किया है उस को तू अशुद्ध मत कह । यह तीन बार
११ हुआ तब सब कुछ फिर स्वर्ग पर खींचा गया । और देखो
तुरन्त तीन मनुष्य जो कैसरिया से मेरे पास भेजे गये थे
१२ जिस घर में मैं था उस घर पर आ पहुंचे । तब आत्मा ने
मुझ से उन के संग बेखटके चले जाने को कहा और ये छः
भाई भी मेरे संग गये और हम ने उस मनुष्य के घर में
१३ प्रवेश किया । और उस ने हमें बताया कि उस ने क्योंकर
अपने घर में एक दूत को खड़े हुए देखा था जो उस से
बोला कि मनुष्यों को याफो नगर भेजके शिमोन को जो
१४ पितर कहावता है बुला । वह तुझ से बातें कहेगा जिन
१५ के द्वारा तू और तेरा सारा घराना त्राण पावे । जब मैं
बात करने लगा तब पवित्र आत्मा जिस रीति से आरंभ में

हमों पर पड़ा उसी रीति से उन्हों पर भी पड़ा। तब मैं ने १६
प्रभु का वचन स्मरण किया कि उस ने कहा योहन ने जल
से बपतिसमा दिया परन्तु तुम्हें पवित्र आत्मा से बप-
तिसमा दिया जायगा। सो जब कि ईश्वर ने प्रभु यीशु १७
ख्रीष्ट पर बिश्वास कारनेहारों को जैसे हमों को तैसे उन्हों
को भी एकसां दान दिया तो मैं कौन था कि मैं ईश्वर
को रोक सकता। वे यह सुनके चुप हुए और यह कहके १८
ईश्वर की स्तुति करने लगे कि तब तो ईश्वर ने अन्य-
देशियों को भी पश्चात्ताप दान किया है कि वे जीवें।

स्तिफान के कारण जो क्लेश हुआ तिस के हेतु से जो १९
लोग तितर बितर हुए थे उन्हों ने फैनीकिया देश और
कुप्रस टापू और अन्तैखिया नगर लों फिरते हुए किसी
और को नहीं केवल यिहूदियों को बचन सुनाया। परन्तु २०
उन में से कितने कुप्री और कुरीनीय मनुष्य थे जो अन्तै-
खिया में आके यूनानियों से बात करने और प्रभु यीशु का
सुसमाचार सुनाने लगे। और प्रभु का हाथ उन के संग २१
था और बहुत लोग बिश्वास करके प्रभु की ओर फिरे।
तब उन के विषय में वह बात यिरूशलीम में की मंडली के २२
कानों में पहुंची और उन्हों ने बर्णबा को भेजा कि वह अन्तै-
खिया लों जाय। वह जब पहुंचा और ईश्वर के अनुग्रह को २३
देखा तब आनन्दित हुआ और सभों को उपदेश दिया कि
मन की अभिलाषा सहित प्रभु से मिले रहो। क्योंकि वह २४
भला मनुष्य और पवित्र आत्मा और बिश्वास से परिपूर्ण
था. और बहुत लोग प्रभु से मिल गये। तब बर्णबा २५
शावल को ढूंढ़ने के लिये तारस को गया। और वह उस को २६
पाके अन्तैखिया में लाया और वे दोनों जन बरस भर
मंडली में एकट्ठे होते थे और बहुत लोगों को उपदेश

देते थे और शिष्य लोग पहिले अन्तैखिया में ख्रीष्टियान कहलाये ।

२७ उन दिनों में कई एक भविष्यद्वक्ता यिरूशलीम से अन्तै-
२८ खिया में आये। उन में से आगाब नाम एक जन ने उठके आत्मा की शिक्षा से बताया कि सारे संसार में बड़ा अकाल पड़ेगा और वह अकाल क्लौदिय कैसर के समय में पड़ा।
२९ तब शिष्यों ने हर एक अपनी अपनी सम्पत्ति के अनुसार यिहूदिया में रहनेहारे भाइयों की सेवकाई के लिये कुछ
३० भेजने को ठहराया । और उन्हों ने यही किया अर्थात बर्णबा और शावल के हाथ प्राचीनों के पास कुछ भेजा।

१२ बारहवां पर्ब्ब ।

१ हेरोद का याकूब को बध करना और पितर को बन्दीगृह में डालना । ५ दूत का पितर को छुड़ाना। १२ पितर का मरियम के घर में जाना । १८ हेरोद का पहरुओं को बध करवाना । २० हेरोद का मरण ।

१ उस समय हेरोद राजा ने मंडली के कई एक जनों को
२ दुःख देने को उन पर हाथ बढ़ाये । उस ने योहन के भाई
३ याकूब को खड्ग से मार डाला। और जब उस ने देखा कि यिहूदी लोग इस से प्रसन्न होते हैं तब उस ने पितर को
४ भी पकड़ा और अखमीरी रोटी के पर्ब्ब के दिन थे। और उस ने उसे पकड़के बन्दीगृह में डाला और चार चार योद्धाओं के चार पहरों में सौंप दिया कि वे उस को रखें और उस को निस्तार पर्ब्ब के पीछे लोगों के आगे निकाल लाने की इच्छा करता था ।

५ सो पितर बन्दीगृह में पहरे में रहता था परन्तु मंडली लौ लगाके उस के लिये ईश्वर से प्रार्थना करती थी ।
६ और जब हेरोद उसे निकाल लाने पर था उसी रात पितर दो योद्धाओं के बीच में दो जंजीरों से बंधा हुआ

सोता था और पहरूए द्वार के आगे बन्दीगृह की रक्षा करते थे। और देखो परमेश्वर का एक दूत आ खड़ा ७ हुआ और कोठरी में ज्योति चमकी और उस ने पितर के पंजर पर हाथ मारके उसे जगाके कहा शीघ्र उठ . तब उस की जंजीरें उस के हाथों से गिर पड़ीं। दूत ने उस से ८ कहा कमर बांध और अपने जूते पहिन ले और उस ने वैसा किया . तब उस से कहा अपना वस्त्र ओढ़के मेरे पीछे हो ले। और वह निकलके उस के पीछे चलने लगा ९ और नहीं जानता था कि जो दूत से किया जाता है सो सत्य है परन्तु समझता था कि मैं दर्शन देखता हूं। परन्तु वे पहिले और दूसरे पहरे में से निकले और नगर में १० जाने के लोहे के फाटक पर पहुंचे जो आप से आप उन के लिये खुल गया और वे निकलके एक गली के अन्त लों बढ़े और तुरन्त दूत पितर के पास से चला गया। तब ११ पितर को चेत हुआ और उस ने कहा अब मैं निश्चय जानता हूं कि प्रभु ने अपना दूत भेजा है और मुझे हेरोद के हाथ से और सब बातों से जिन की आस यिहूदी लोग देखते थे छुड़ाया है।

और यह जानके वह योहन जो मार्क कहावता है १२ तिस की माता मरियम के घर पर आया जहां बहुत लोग एकट्ठे हुए प्रार्थना करते थे। जब पितर डेवढ़ी के द्वार १३ पर खटखटाया तब रोदा नाम एक दासी चुपचाप सुनने को आई। और पितर का शब्द पहचानके उस ने आनन्द १४ के मारे द्वार न खोला परन्तु भीतर दौड़के बताया कि पितर द्वार पर खड़ा है। उन्हों ने उस से कहा तू बौराही १५ है परन्तु वह दृढ़ता से बोली कि ऐसा ही है . तब उन्हों ने कहा उस का दूत है। परन्तु पितर खटखटाता रहा १६

१७ और वे द्वार खोलके उसे देखके बिस्मित हुए । तब उस ने हाथ से उन्हें चुप रहने का सैन किया और उन से कहा कि प्रभु क्योंकर उस को बन्दीगृह में से बाहर लाया था और बोला यह बातें याकूब से और भाइयों से कह दीजियो तब निकलके दूसरे स्थान को गया ।

१८ बिहान हुए योद्धाओं में बड़ी घबराहट होने लगी कि
१९ पितर क्या हुआ । जब हेरोद ने उसे ढूंढ़ा और नहीं पाया तब पहरुओं को जांचके आज्ञा किई कि वे बध किये जायें । तब यिहूदिया से कैसरिया को गया और वहां रहा ।

२० हेरोद को सोर औ सिदोन के लोगों से लड़ने का मन था परन्तु वे एक चित्त होके उस पास आये और बलास्त को जो राजा के शयनस्थान का अध्यक्ष था मनाके मिलाप चाहा क्योंकि राजा के देश से उन के देश का पालन होता
२१ था । और ठहराये हुए दिन में हेरोद ने राजबस्त्र पहिनके
२२ सिंहासन पर बैठके उन्हों को कथा सुनाई । और लोग
२३ पुकार उठे कि ईश्वर का शब्द है मनुष्य का नहीं । तब परमेश्वर के एक दूत ने तुरन्त उस को मारा क्योंकि उस ने ईश्वर की स्तुति न किई और कीड़े उस को खा गये और
२४ उस ने प्राण छोड़ दिया । परन्तु ईश्वर का बचन अधिक अधिक फैलता गया ।

२५ जब बर्णबा और शावल ने वह सेवकाई पूरी किई थी तब वे योहन को भी जो मार्क कहावता था संग लेके यिरूशलीम से लौटे ।

१३ तेरहवां पर्व्व ।

१ बर्णबा और पावल का आन आन देशों में भेजा जाना । ४ उन का सुसमाचार प्रचार करना और इलुमा टोन्हे का साम्ना करना । १३ उन का पिसिदिया देश के अन्तैखिया नगर में पहुंचना और पावल का उपदेश । ४२ बहुत लोगों का इस उपदेश को ग्रहण करना । ४४ यिहूदियों का बिरोध करना ।

अन्तैखिया में की मंडली में कितने भविष्यद्वक्ता और १ उपदेशक थे अर्थात बर्णबा और शिमियोन जो निगर कहावता है और कुरीनीय लूकिय और चौथाई के राजा हेरोद का दूधभाई मनहेम और शावल। जिस समय वे २ उपवास सहित प्रभु की सेवा करते थे पवित्र आत्मा ने कहा मैं ने बर्णबा और शावल को जिस काम के लिये बुलाया है उस काम के निमित्त उन्हें मेरे लिये अलग करो। तब ३ उन्हों ने उपवास औ प्रार्थना करके और उन पर हाथ रखके उन्हें विदा किया।

सो वे पवित्र आत्मा के भेजे हुए सिलूकिया नगर को ४ गये और वहां से जहाज पर कुप्रस टापू को चले। और ५ सालामी नगर में पहुंचके उन्हों ने ईश्वर का बचन यिहूदियों की सभाओं में प्रचार किया और योहन भी सेवक होके उन के संग था। और उन्हों ने उस टापू के बीच से ६ पाफो नगर लों पहुंचके एक टोन्हे को पाया जो झूठा भविष्यद्वक्ता और यिहूदी था जिस का नाम बर्यीशु था। वह सर्ज्जिय पावल प्रधान के संग था जो बुद्धिमान पुरुष ७ था. उस ने बर्णबा और शावल को अपने पास बुलाके ईश्वर का बचन सुनने चाहा। परन्तु इलुमा टोन्हा कि ८ उस के नाम का यही अर्थ है उन का साम्हा करके प्रधान को विश्वास की ओर से बहकाने चाहता था। तब शावल ९ अर्थात पावल ने पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होके और उस की ओर ताकके कहा. हे सारे कपट और सब कुचाल से भरे १० हुए शैतान के पुत्र सकल धर्म्म के बैरी क्या तू प्रभु के सीधे मार्गों को टेढ़ा करना न छोड़ेगा। अब देख प्रभु का हाथ ११ तुझ पर है और तू कितने समय लों अंधा होगा और सूर्य्य को न देखेगा. तुरन्त धुंधलाई और अंधकार उस पर पड़ा

और वह इधर उधर टटोलने लगा कि लोग उस का हाथ
१२ पकड़ें । तब प्रधान ने जो हुआ था सो देखके प्रभु के
उपदेश से अचंभित हो बिश्वास किया ।
१३　पावल और उस के संगी पाफो से जहाज खोलके पंफु-
लिया देश के पर्गा नगर में आये परन्तु योहन उन्हें छोड़के
१४ यिरूशलीम को लौट गया । और पर्गा से आगे बढ़के वे
पिसिदिया देश के अन्तैखिया नगर में पहुंचे और बिस्राम
१५ के दिन सभा के घर में प्रवेश करके बैठ गये । और व्यवस्था
और भविष्यद्वक्ताओं के पुस्तक के पढ़े जाने के पीछे सभा के
अध्यक्षों ने उन के पास कहला भेजा कि हे भाइयो यदि
लोगों के लिये उपदेश की कोई बात आप लोगों के पास
१६ होय तो कहिये । तब पावल ने खड़ा होके और हाथ से
सैन करके कहा हे इस्रायेली लोगो और ईश्वर से डरने-
१७ हारो सुनो । इन इस्रायेली लोगों के ईश्वर ने हमारे
पितरों को चुन लिया और इन लोगों के मिसर देश में पर-
देशी होते हुए उन्हें ऊंच पद दिया और बलवन्त भुजा
१८ से उस देश में से निकाल लिया । और उस ने चालीस एक
१९ बरस जंगल में उन का निर्ब्बाह किया . और कनान देश में
सात राज्य के लोगों को नाश करके उन का देश चिट्ठियां
२० डलवाके उन को बांट दिया । इस के पीछे उस ने साढ़े
चार सौ बरस के अटकल शमुएल भविष्यद्वक्ता लों उन्हें
२१ न्याय करनेहारे दिये । उस समय से उन्हों ने राजा चाहा
और ईश्वर ने चालीस बरस लों बिन्यामीन के कुल के एक
२२ मनुष्य अर्थात कीश के पुत्र शावल को उन्हें दिया । और
उस को अलग करके उस ने उन्हों के लिये दाऊद को राजा
होने को उठाया जिस के विषय में उस ने साक्षी देके कहा
मैं ने यिशी का पुत्र दाऊद अपने मन के अनुसार एक मनुष्य

पाया है जो मेरी सारी इच्छा को पूरी करेगा। इसी के २३ वंश में से ईश्वर ने प्रतिज्ञा के अनुसार इस्रायेल के लिये एक त्राणकर्त्ता अर्थात यीशु को उठाया। पर उस के आने के २४ आगे योहन ने सब इस्रायेली लोगों को पश्चात्ताप के बप-तिसमा का उपदेश दिया। और योहन जब अपनी दौड़ २५ पूरी करता था तब बोला तुम क्या समझते हो मैं कौन हूं. मैं वह नहीं हूं परन्तु देखो मेरे पीछे एक आता है जिस के पांवों की जूती मैं खोलने के योग्य नहीं हूं।

हे भाइयो तुम जो इब्राहीम के वंश के सन्तान हो और २६ तुम्हों में जो ईश्वर से डरनेहारे हो तुम्हारे पास इस त्राण की कथा भेजी गई है। क्योंकि यिरूशलीम के निवासियों २७ ने और उन के प्रधानों ने यीशु को न पहचानके उस का विचार करने में भविष्यद्वक्ताओं की बातें भी जो हर एक विश्रामवार पढ़ी जाती हैं पूरी किईं। और उन्हों ने बध २८ के योग्य कोई दोष उस में न पाया तौभी पिलात से बिन्ती किई कि वह घात किया जाय। और जब उन्हों ने उस के २९ विषय में लिखी हुई सब बातें पूरी किईं थीं तब उसे काठ पर से उतारके कबर में रखा। परन्तु ईश्वर ने उसे ३० मृतकों में से उठाया। और उस ने बहुत दिन उन्हों को जो ३१ उस के संग गालील से यिरूशलीम में आये थे दर्शन दिया और वे लोगों के पास उस के साक्षी हैं। हम उस प्रतिज्ञा ३२ का जो पितरों से किई गई तुम्हें सुसमाचार सुनाते हैं. कि ईश्वर ने यीशु को उठाने में यह प्रतिज्ञा उन के सन्तानों ३३ के अर्थात हमों के लिये पूरी किई है जैसा दूसरे गीत में भी लिखा है कि तू मेरा पुत्र है मैं ने आज ही तुझे जन्म दिया है। और उस ने जो उस को मृतकों में से उठाया ३४ और वह कभी सड़ न जायगा इस लिये यूं कहा है कि

मैं ने दाऊद पर जो अचल कृपा किई सो तुम पर करूंगा।
३५ इस लिये उस ने दूसरे एक गीत में भी कहा है कि तू अपने
३६ पवित्र जन को सड़ने न देगा। दाऊद तो ईश्वर की इच्छा
से अपने समय के लोगों की सेवा करके सो गया और अपने
३७ पितरों में मिला और सड़ गया। परन्तु जिस को ईश्वर ने
३८ जिला उठाया वह नहीं सड़ गया। इस लिये हे भाइयो
जानो कि इसी के द्वारा पापमोचन की कथा तुम को सुनाई
३९ जाती है। और इसी के हेतु से हर एक बिश्वासी जन
सब बातों से निर्दोष ठहराया जाता है जिन से तुम मूसा
४० की व्यवस्था के हेतु से निर्दोष नहीं ठहर सकते थे। इस
लिये चौकस रहो कि जो भविष्यद्वक्ताओं के पुस्तक में कहा
४१ गया है सो तुम पर न पड़े . कि हे निन्दको देखो और
अचंभित हो और लोप हो जाओ क्योंकि मैं तुम्हारे दिनों
में एक काम करता हूं ऐसा काम कि यदि कोई तुम से
उस का बर्णन करे तो तुम कभी प्रतीति न करोगे।

४२ जब यिहूदी लोग सभा के घर में से निकलते थे तब
अन्यदेशियों ने बिन्ती किई कि यह बातें अगले बिस्राम-
४३ वार हम से कही जायें। और जब सभा उठ गई तब
यिहूदियों में से और भक्तिमान यिहूदीय मतावलंबियों में से
बहुत लोग पावल और बर्णबा के पीछे हो लिये और
उन्हों ने उन से बातें करके उन्हें समझाया कि ईश्वर के
अनुग्रह में बने रहो।

४४ अगले बिस्रामवार नगर के प्राय सब लोग ईश्वर का
४५ बचन सुनने को एकट्ठे आये . परन्तु यिहूदी लोग भीड़ को
देखके डाह से भर गये और बिवाद औ निन्दा करते हुए
४६ पावल की बातों के बिरुद्ध बोलने लगे। तब पावल और
बर्णबा ने साहस करके कहा अवश्य था कि ईश्वर का बचन

पहिले तुम्हों से कहा जाय परन्तु जब कि तुम उसे दूर करते हो और अपने तईं अनन्त जीवन के अयोग्य ठहराते हो देखो हम अन्यदेशियों की ओर फिरते हैं। क्योंकि ४७ परमेश्वर ने हमें यूं हीं आज्ञा दिई है कि मैं ने तुझे अन्यदेशियों की ज्योति ठहराई है कि तू पृथिवी के अन्त लों त्राणकर्त्ता होवे। तब अन्यदेशी लोग जो सुनते थे आनन्दित ४८ हुए और प्रभु के वचन की बड़ाई करने लगे और जितने लोग अनन्त जीवन के लिये ठहराये गये थे उन्हों ने बिश्वास किया। तब प्रभु का वचन उस सारे देश में फैलने लगा। ४९ परन्तु यिहूदियों ने भक्तिमती और कुलवन्ती स्त्रियों को ५० और नगर के बड़े लोगों को उसकाया और पावल और बर्णवा पर उपद्रव करवाके उन्हें अपने सिवानों में से निकाल दिया। तब वे उन के बिरुद्ध अपने पांवों की धूल झाड़के ५१ इकोनिया नगर में आये। और शिष्य लोग आनन्द से और ५२ पवित्र आत्मा से पूर्ण हुए।

१४ चौदहवां पर्ब्ब।

१ इकोनिया नगर में बर्णबा और पावल का सताया जाना। ८ पावल का लुस्त्रा नगर में एक लंगड़े को चंगा करना। ११ नगर के लोगों का उन्हें पूजने की इच्छा करना। १९ उन्हों का पावल को पत्थरवाह करना। २१ प्रेरितों का अनेक नगरों में उपदेश करना और अन्ते खया को लौट जाना।

इकोनिया में उन्हों ने यिहूदियों के सभा के घर में एक १ संग प्रवेश किया और ऐसी बातें किईं कि यिहूदियों और यूनानियों में से भी बहुत लोगों ने विश्वास किया। परन्तु २ न माननेहारे यिहूदियों ने अन्यदेशियों के मन भाइयों के विरुद्ध उसकाये और बुरे कर दिये। सो उन्हों ने प्रभु के ३ भरोसे जो अपने अनुग्रह के वचन पर साक्षी देता था और उन के हाथों से चिन्ह और अद्भुत काम करवाता था साहस

४ से बात करते हुए बहुत दिन बिताये। और नगर के लोग बिभिन्न हुए और कितने तो यिहूदियों के साथ और कितने
५ प्रेरितों के साथ थे । परन्तु जब अन्यदेशियों और यिहू-दियों ने भी अपने प्रधानों के संग उन की दुर्द्दशा करने और
६ उन्हें पत्थरवाह करने को हल्ला किया . तब वे जान गये और लुकाओनिया देश के लुस्त्रा और दर्बी नगरों में और
७ आसपास के देश में भाग गये . और वहां सुसमाचार प्रचार करने लगे ।.

८ लुस्त्रा में एक मनुष्य पांवों का निर्बल बैठा था जो अपनी माता के गर्भ ही से लंगड़ा था और कभी नहीं चला
९ था । वह पावल को बात करते सुनता था और उस ने उस की ओर ताकके देखा कि इस को चंगा किये जाने का
१० बिश्वास है . और बड़े शब्द से कहा अपने पांवों पर सीधा खड़ा हो . तब वह कूदने और फिरने लगा ।

११ पावल ने जो किया था उसे देखके लोगों ने लुकाओनीय भाषा में ऊंचे शब्द से कहा देवगण मनुष्यों के समान होके
१२ हमारे पास उतर आये हैं । और उन्हों ने बर्णबा को जूपितर और पावल को हर्मि कहा क्योंकि वह बात करने
१३ में मुख्य था । और जूपितर जो उन के नगर के साम्हने था उस का याजक बैलों को और फूलों के हारों को फाटकों
१४ पर लाके लोगों के संग बलिदान किया चाहता था। परन्तु प्रेरितों ने अर्थात बर्णबा और पावल ने यह सुनके अपने कपड़े फाड़े और लोगों की ओर लपक गये और पुकारके
१५ बोले . हे मनुष्यो यह क्यों करते हो . हम भी तुम्हारे समान दुःख सुख भोगी मनुष्य हैं और तुम्हें सुसमाचार सुनाते हैं कि तुम इन ब्यर्थ बिषयों से जीवते ईश्वर की ओर फिरो जिस ने स्वर्ग औ पृथिवी औ समुद्र और सब

कुछ जो उन में है बनाया। उस ने बीती हुई पीढ़ियों में १६ सब देशों के लोगों को अपने अपने मार्गों में चलने दिया। तौभी उस ने अपने को बिना साक्षी नहीं रख छोड़ा है १७ कि वह भलाई किया करता और आकाश से वर्षा और फलवन्त ऋतु देके हमों के मन को भोजन और आनन्द से तृप्त किया करता है। यह कहने से उन्हों ने लोगों को १८ कठिनता से रोका कि वे उन के आगे बलिदान न करें।

परन्तु कितने यिहूदियों ने अन्तैखिया और इकोनिया १९ से आके लोगों को मनाया और पावल को पत्थरवाह किया और यह समझके कि वह मर गया है उसे नगर के बाहर घसीट ले गये। परन्तु जब शिष्य लोग उस पास घिर २० आये तब उस ने उठके नगर में प्रवेश किया और दूसरे दिन बर्णवा के संग दर्बी को गया।

जब उन्हों ने उस नगर के लोगों को सुसमाचार सुनाया २१ और बहुतों को शिष्य किया था तब वे लुस्त्रा और इको- निया और अन्तैखिया को लौटे. और यह उपदेश करते २२ हुए कि विश्वास में बने रहो और कि हमें बड़े क्लेश से ईश्वर के राज्य में प्रवेश करना होगा शिष्यों के मन को स्थिर करते गये। और हर एक मंडली में प्राचीनों को उन पर २३ ठहराके उन्हों ने उपवास सहित प्रार्थना करके उन्हें प्रभु के हाथ सोंपा जिस पर उन्हों ने विश्वास किया था। और २४ पिसिदिया से होके वे पंफुलिया में आये. और पर्गा में वचन २५ सुनाके आतालिया नगर को गये। और वहां से वे जहाज २६ पर अन्तैखिया को चले जहां से वे उस काम के लिये जो उन्हों ने पूरा किया था ईश्वर के अनुग्रह पर सोंपे गये थे। वहां पहुंचके और मंडली को एकट्ठी करके उन्हों ने बताया २७ कि ईश्वर ने उन्हों के साथ कैसे बड़े काम किये थे और

कि उस ने अन्यदेशियों के लिये बिश्वास का द्वार खोला
२८ था । और उन्हों ने वहां शिष्यों के संग बहुत दिन बिताये ।

१५ पन्द्रहवां पर्ब्ब ।

१ खतने के विषय में बिबाद होना और उस के निर्णय के लिये कितने भाइयों का यिरूशलीम को जाना । ६ प्रेरितों का इस बात का बिचार करना । २२ इस बात का निर्णय पत्र में लिखना । ३० इस पत्र का अन्तैखिया में पहुंचाया जाना । ३६ पावल और बर्णबा का अलग अलग यात्रा करना ।

१ कितने लोग यिहूदिया से आके भाइयों को उपदेश देने लगे कि जो मूसा की रीति के अनुसार तुम्हारा खतना न किया
२ जाय तो तुम त्राण नहीं पा सकते हो । जब पावल और बर्णबा से और उन्हों से बहुत बिबाद और बिचार हुआ था तब भाइयों ने यह ठहराया कि पावल और बर्णबा और हम में से कितने और जन इस प्रश्न के विषय में यिरू-
३ शलीम को प्रेरितों और प्राचीनों के पास जायेंगे । सो मंडली से कुछ दूर पहुंचाये जाके वे फैनीकिया और शोमिरोन से होते हुए अन्यदेशियों के मन फेरने का समाचार कहते गये
४ और सब भाइयों को बहुत आनन्दित किया । जब वे यिरूशलीम में पहुंचे तब मंडली ने और प्रेरितों और प्राचीनों ने उन्हें ग्रहण किया और उन्हों ने बताया कि
५ ईश्वर ने उन्हों के साथ कैसे बड़े काम किये थे । परन्तु फरीशियों के पंथ के लोगों में से कितने जिन्हों ने बिश्वास किया था उठके बोले उन्हें खतना करना और मूसा की व्यवस्था को पालन करने की आज्ञा देना उचित है ।

६ तब प्रेरित और प्राचीन लोग इस बात का बिचार
७ करने को एकट्ठे हुए । जब बहुत बिबाद हुआ तब पितर ने उठके उन से कहा हे भाइयो तुम जानते हो कि बहुत दिन हुए ईश्वर ने हम में से चुन लिया कि मेरे मुंह से

अन्यदेशी लाेग सुसमाचार का वचन सुनके विश्वास करें। और अन्तर्यामी ईश्वर ने जैसा हम को तैसा उन को भी ८ पवित्र आत्मा देके उन के लिये साक्षी दिई . और विश्वास ९ से उन्हों के मन को शुद्ध करके हमों के और उन्हों के बीच में कुछ भेद न रखा। सो अब तुम क्यों ईश्वर की परीक्षा १० करते हो कि शिष्यों के गले पर जूआ रखो जिसे न हमारे पितर लाेग न हम लाेग उठा सके। परन्तु जिस रीति से ११ वे उसी रीति से हम भी प्रभु यीशु ख्रीष्ट के अनुग्रह से त्राण पाने को विश्वास करते हैं।

तब सारी सभा चुप हुई और बर्णबा और पावल की १२ जो यह बताते थे कि ईश्वर ने उन के द्वारा कैसे बड़े चिन्ह और अद्भुत काम अन्यदेशियों के बीच में किये थे सुनती रही। जब वे चुप हुए तब याकूब ने उत्तर दिया कि हे १३ भाइयो मेरी सुन लीजिये। शिमोन ने बताया है कि १४ ईश्वर ने क्योंकर अन्यदेशियों पर पहिले दृष्टि किई कि उन में से अपने नाम के लिये एक लाेग को ले लेवे। और १५ इस से भविष्यद्वक्ताओं की बातें मिलती हैं जैसा लिखा है . कि परमेश्वर जो यह सब करता है सो कहता है इस के १६ पीछे मैं फिरके दाऊद का गिरा हुआ डेरा उठाऊंगा और उस के खंड़हर बनाऊंगा और उसे खड़ा करूंगा . इस लिये १७ कि वे मनुष्य जो रह गये हैं और सब अन्यदेशी लाेग जो मेरे नाम से पुकारे जाते हैं परमेश्वर को ढूंढ़ें। ईश्वर १८ अपने सब कामों को आदि से जानता है। इस लिये मेरा १९ विचार यह है कि अन्यदेशियों में से जो लाेग ईश्वर की ओर फिरते हैं हम उन को दुःख न देवें . परन्तु उन २० के पास लिखें कि वे मूरतों की अशुद्ध वस्तुओं से और व्यभिचार से और गला घोंटे हुओं के मांस से और लोहू से

२१ परे रहें। क्योंकि पूर्व्वों के समय से मूसा के पुस्तक के नगर नगर में प्रचार करनेहारे हैं और हर एक बिस्रामवार वह सभा के घरों में पढ़ा जाता है।

२२ तब सारी मंडली सहित प्रेरितों और प्राचीनों को अच्छा लगा कि अपने में से मनुष्यों को चुनें अर्थात यिहूदा को जो बर्शबा कहावता है और सीला को जो भाइयों में बड़े मनुष्य थे और उन्हें पावल और बर्णबा के संग अन्ते-
२३ खिया को भेजें. और उन के हाथ यही लिख भेजें कि प्रेरित औ प्राचीन औ भाई लोग अन्तैखिया और सुरिया और किलिकिया में के उन भाइयों को जो अन्यदेशियों में से
२४ हैं नमस्कार। हम ने सुना है कि कितने लोगों ने हम में से निकलके तुम्हें बातों से व्याकुल किया है कि वे खतना करवाने को और व्यवस्था को पालन करने को कहते हुए तुम्हारे मन को चंचल करते हैं पर हम ने उन को आज्ञा
२५ न दिई। इस लिये हम ने एक चित्त होके अच्छा जाना
२६ है. कि मनुष्यों को चुनके अपने प्यारे बर्णबा और पावल के संग जो ऐसे मनुष्य हैं कि अपने प्राणों को हमारे प्रभु यीशु खीष्ट के नाम के लिये सौंप दिया है तुम्हारे पास
२७ भेजें। सो हम ने यिहूदा और सीला को भेजा है जो आप
२८ भी यही बातें मुखवचन से कह देवें। पवित्र आत्मा को और हम को अच्छा लगा है कि तुम्हों पर इन आवश्यक
२९ बातों से अधिक कोई भार न रखें. अर्थात कि मूरतों के आगे बलि किये हुओं से और लोहू से और गला घोंटे हुओं के मांस से और व्यभिचार से परे रहो. इन्हों से अपने को बचा रखने से तुम भला करोगे. आगे शुभ।

३० सो वे बिदा होके अन्तैखिया में पहुंचे और लोगों को
३१ एकट्ठे करके वह पत्र दिया। वे पढ़के उस शांति की बात

से आनन्दित हुए। और यिहूदा और सीला ने जो आप ३२
भी भविष्यद्वक्ता थे बहुत बातों से भाइयों को समझाके
स्थिर किया। और कुछ दिन रहके वे प्रेरितों के पास ३३
जाने को कुशल से भाइयों से विदा हुए। परन्तु सीला ने ३४
वहां रहना अच्छा जाना। और पावल और बर्णबा बहुत ३५
औरों के संग प्रभु के वचन का उपदेश करते और सुसमाचार
सुनाते हुए अन्तैखिया में रहे।

कितने दिनों के पीछे पावल ने बर्णबा से कहा जिन ३६
नगरों में हम ने प्रभु का वचन प्रचार किया आओ हम हर
एक नगर में फिरके अपने भाइयों को देख लेवें कि वे कैसे
हैं। तब बर्णबा ने योहन को जो मार्क कहावता है संग ३७
लेने का विचार किया। परन्तु पावल ने उस को जो पंफु- ३८
लिया से उन के पास से चला गया और काम पर उन के साथ
न गया संग ले जाना अच्छा नहीं समझा। सो ऐसा टंटा ३९
हुआ कि वे एक दूसरे को छोड़ गये और बर्णबा मार्क को
लेके जहाज पर कुप्रस को गया। परन्तु पावल ने सीला को ४०
चुन लिया और भाइयों से ईश्वर के अनुग्रह पर सोंपा जाके
निकला. और मंडलियों को स्थिर करता हुआ सारे सुरिया ४१
और किलिकिया में फिरा।

१६ सोलहवां पर्व्व।

१ पावल का तिमोथिय को खतना करना और अनेक ठौर फिरना। ९ उस का एक दर्शन पाना और उन्हों का फिलिपी नगर को जाना। १३ लुदिया का वृत्तान्त। १६ एक भूतग्रस्त कन्या से भूत का निकाला जाना। १९ पावल और सीला का बन्दीगृह में डाला जाना। २५ बन्दीगृह के रक्षक का प्रभु की ओर फिरना। ३५ पावल और सीला का बन्दीगृह से छुड़ाया जाना।

तब पावल दर्बी और लुस्त्रा में पहुंचा और देखो वहां १
तिमोथिय नाम एक शिष्य था जो किसी विश्वासी यिहू-

२ दिनी का पुत्र था परन्तु उस का पिता यूनानी था। और लुस्त्रा और इकोनिया में के भाई लोग उस की सुख्याति
३ करते थे। पावल ने चाहा कि यह मेरे संग जाय और जो यिहूदी लोग उन स्थानों में थे उन के कारण उसे लेके उस का खतना किया क्योंकि वे सब उस के पिता को जानते
४ थे कि वह यूनानी था। परन्तु नगर नगर जाते हुए उन्हों ने उन बिधियों को जो यिरूशलीम में के प्रेरितों और प्राचीनों से ठहराई गई थीं भाइयों को सौंप दिया कि
५ उन को पालन करें। सो मंडलियां बिश्वास में स्थिर होती
६ थीं और प्रतिदिन गिन्ती में बढ़ती थीं। और जब वे फ्रूगिया और गलातिया देशों में फिर चुके और पवित्र
७ आत्मा ने उन्हें आशिया देश में बात सुनाने को बर्जा . तब उन्हों ने मुसिया देश पर आके बिथुनिया देश को जाने की
८ चेष्टा किई परन्तु आत्मा ने उन्हें जाने न दिया। और मुसिया से होके वे त्रोआ नगर में आये।

९ रात को एक दर्शन पावल को दिखाई दिया कि कोई माकिदोनी पुरुष खड़ा हुआ उस से बिन्ती करके कहता था कि उस पार माकिदोनिया देश जाके हमारा उपकार
१० कीजिये। जब उस ने यह दर्शन देखा तब हम ने निश्चय जाना कि प्रभु ने हमें उन लोगों के तईं सुसमाचार सुनाने को बुलाया है इस लिये हम ने तुरन्त माकिदोनिया को
११ जाने चाहा। सो त्रोआ से खोलके हम सामोत्राकी टापू को सीधे आये और दूसरे दिन नियापलि नगर में पहुंचे।
१२ वहां से हम फिलिपी नगर में आये जो माकिदोनिया के उस अंश का पहिला नगर है और रोमियों की बस्ती है और हम उस नगर में कुछ दिन रहे।

१३ बिस्राम के दिन हम नगर के बाहर नदी के तीर पर गये

जहां प्रार्थना किई जाती थी और बैठके स्त्रियों से जो एकट्ठी हुई थीं बात करने लगे। और लुदिया नाम १४ थुआतीरा नगर की एक स्त्री बैजनी बस्त्र बेचनेहारी जो ईश्वर की उपासना किया करती थी सुनती थी और प्रभु ने उस का मन खोला कि वह पावल की बातों पर चित्त लगावे। और जब उस ने और उस के घराने ने बपतिसमा १५ लिया था तब उस ने बिन्ती किई कि यदि आप लोगों ने मुझे प्रभु की विश्वासिनी जान लिई है तो मेरे घर में आके रहिये और वह हमें मनाके ले गई।

जब हम प्रार्थना को जाते थे तब एक दासी जिसे १६ आगमवक्ता भूत लगा था हम को मिली जो आगम के कहने से अपने स्वामियों के लिये बहुत कमा लाती थी। वह पावल के और हमारे पीछे आके पुकारने लगी कि १७ ये मनुष्य सर्व्वप्रधान ईश्वर के दास हैं जो हमें त्राण के मार्ग की कथा सुनाते हैं। उस ने बहुत दिन यह किया १८ परन्तु पावल अप्रसन्न हुआ और मुंह फेरके उस भूत से कहा मैं तुझे यीशु ख्रीष्ट के नाम से आज्ञा देता हूं कि उस में से निकल आ और वह उसी घड़ी निकल आया।

जब उस के स्वामियों ने देखा कि हमारी कमाई की १९ आशा गई है तब उन्हों ने पावल और सीला को पकड़के चौक में प्रधानों के पास खींच लिया. और उन्हें अध्यक्षों २० के पास लाके कहा ये मनुष्य जो यिहूदी हैं हमारे नगर के लोगों को व्याकुल करते हैं. और व्यवहारों का प्रचार २१ करते हैं जिन्हें ग्रहण करना अथवा मानना हमों को जो रोमी हैं उचित नहीं है। तब लोग उन के विरुद्ध एकट्ठे २२ चढ़ आये और अध्यक्षों ने उन के कपड़े फाड़ डाले और उन्हें बेत मारने की आज्ञा दिई. और उन्हें बहुत घायल २३

करके बन्दीगृह में डाला और बन्दीगृह के रक्षक को उन्हें
२४ यत्न से रखने की आज्ञा दिई । उस ने ऐसी आज्ञा पाके
उन्हें भीतर की कोठरी में डाला और उन के पांव काठ में
ठोंके ।

२५ आधी रात को पावल और सीला प्रार्थना करते हुए
ईश्वर का भजन गाते थे और बंधुए उन की सुनते थे ।
२६ तब अचांचक ऐसा बड़ा भुईंडोल हुआ कि बन्दीगृह की
नेवें हिलीं और तुरन्त सब द्वार खुल गये और सभों के
२७ बंधन खुल पड़े । तब बन्दीगृह का रक्षक जागा और
बन्दीगृह के द्वार खुले देखके खड्ग खींचा और अपने तईं
मार डालने पर था कि वह समझता था कि बंधुए लाग
२८ भाग गये हैं । परन्तु पावल ने बड़े शब्द से पुकारके कहा
अपने को कुछ दुःख न देना क्योंकि हम सब यहां हैं ।
२९ तब वह दीपक मंगाके भीतर लपक गया और कंपित
३० होके पावल और सीला को दंडवत किई । और उन को
बाहर लाके कहा हे प्रभुओ त्राण पाने को मुझे क्या करना
३१ होगा । उन्हों ने कहा प्रभु यीशु ख्रीष्ट पर बिश्वास कर
३२ तो तू और तेरा घराना त्राण पावेगा । और उन्हों ने
उस को और सभों को जो उस के घर में थे प्रभु का बचन
३३ सुनाया । और रात को उसी घड़ी उस ने उन को लेके उन
के घावों को धोया और उस ने और उस के सब लोगों ने
३४ तुरन्त बपतिसमा लिया । तब उस ने उन्हें अपने घर में
लाके उन के आगे भोजन रखा और सारे घराने समेत
ईश्वर पर बिश्वास किये से आनन्दित हुआ ।

३५ बिहान हुए अध्यक्षों ने प्यादों के हाथ कहला भेजा कि
३६ उन मनुष्यों को छोड़ देओ । तब बन्दीगृह के रक्षक ने यह
बातें पावल से कह सुनाईं कि अध्यक्षों ने कहला भेजा

है कि आप लोग छोड़ दिये जायें सो अब निकलके कुशल से जाइये। परन्तु पावल ने उन से कहा उन्हों ने हमें ३७ जो रोमी मनुष्य हैं दंड के योग्य ठहराये बिना लोगों के आगे मारा और बन्दीगृह में डाला और अब क्या चुपके से हमें निकाल देते हैं. सो नहीं परन्तु आप ही आके हमें बाहर ले जावें। प्यादों ने यह बातें अध्यक्षों से कह दिईं और वे ३८ यह सुनके कि रोमी हैं डर गये. और आके उन्हें मनाया ३९ और बाहर लाके बिन्ती किई कि नगर से निकल जाइये। वे बन्दीगृह में से निकलके लुदिया के यहां गये और भाइयों ४० को देखके उन्हें उपदेश देके चले गये।

१७ सत्तरहवां पर्व्व।

१ थिसलोनिका नगर में लोगों का भिन्न भिन्न विचार और प्रेरितों का निकाला जाना। १० बिरेया नगर के लोगों का पहिले सुविचार पीछे विरोध करना। १६ आथीनी नगर के लोगों से पावल का विवाद करना। २२ अरेयोपाग स्थान में पावल का उपदेश। ३२ उस उपदेश का फल।

अंफिपलि और अपल्लोनिया नगरों से होके वे थिसलो- १ निका नगर में आये जहां यिहूदियों की सभा का घर था। और पावल अपनी रीति पर उन के यहां गया और तीन २ विश्रामवार उन से धर्म्मपुस्तक में से बातें किईं. और यही ३ खोल देता और समझाता रहा कि ख्रीष्ट को दुःख भोगना और मृतकों में से जी उठना आवश्यक था और कि यह यीशु जिस की कथा मैं तुम्हें सुनाता हूं वही ख्रीष्ट है। तब उन में से कितने जनों ने और भक्त यूनानियों में से बहुत ४ लोगों ने और बहुत सी बड़ी बड़ी स्त्रियों ने मान लिया और पावल और सीला से मिल गये। परन्तु न माननेहारे ५ यिहूदियों ने डाह करके बाजारू लोगों में से कितने दुष्ट मनुष्यों को लिया और भीड़ लगाके नगर में धूम मचाई

और यासोन के घर पर चढ़ाई करके पावल और सीला को
६ लोगों के पास लाने चाहा । और उन्हें न पाके वे यह
पुकारते हुए यासोन को और कितने भाइयों को नगर के
प्रधानों के आगे खींच लाये कि ये लोग जिन्हों ने जगत को
७ उलटा पुलटा किया है यहां भी आये हैं । और यासोन
ने उन की पहुनई किई है और ये सब यह कहते हुए
कि यीशु नाम दूसरा राजा है कैसर की आज्ञाओं के बिरुद्ध
८ करते हैं । सो उन्हों ने लोगों को और नगर के प्रधानों को
९ जो यह बातें सुनते थे व्याकुल किया । और उन्हों ने
यासोन से और दूसरों से मुचलका लेके उन्हें छोड़ दिया ।
१० तब भाइयों ने तुरन्त रात को पावल और सीला को
बिरेया नगर को भेजा और वे पहुंचके यिहूदियों की सभा
११ के घर में गये। ये तो थिसलोनिका में के यिहूदियों से सुशील
थे और उन्हों ने सब भांति से तत्पर होके बचन को ग्रहण
किया और प्रतिदिन धर्म्मपुस्तक में ढूंढ़ते रहे कि यह बातें
१२ यूं हीं हैं कि नहीं । सो उन में से बहुतों ने और यूनानीय
कुलवन्ती स्त्रियों में से और पुरुषों में से बहुतेरों ने बिश्वास
१३ किया । परन्तु जब थिसलोनिका के यिहूदियों ने जाना कि
पावल बिरेया में भी ईश्वर का बचन प्रचार करता है तब
१४ वे वहां भी आके लोगों को उसकाने लगे । तब भाइयों ने
तुरन्त पावल को बिदा किया कि वह समुद्र की ओर जावे
१५ परन्तु सीला और तिमोथिय वहां रह गये । पावल के
पहुंचानेहारे उसे आथीनी नगर तक लाये और सीला
और तिमोथिय के लिये उस पास बहुत शीघ्र जाने की
आज्ञा लेके बिदा हुए ।

१६ जब पावल आथीनी में उन की बाट जोहता था तब
नगर को मूरतों से भरे हुए देखने से उस का मन भीतर से

उभड़ आया। सो वह सभा के घर में यिहूदियों और भक्त १७ लोगों से और प्रतिदिन चौक में जो लोग मिलते थे उन्हों से बातें करने लगा। तब इपिकूरीय और स्तोइकीय १८ ज्ञानियों में से कितने उस से बिबाद करने लगे और कितने बोले यह बकवादी क्या कहने चाहता है पर औरों ने कहा वह ऊपरी देवताओं का प्रचारक देख पड़ता है. क्योंकि वह उन्हें यीशु का और जी उठने का सुसमाचार सुनाता था। तब उन्हों ने उसे लेके अरेयोपाग नाम स्थान १९ पर लाके कहा क्या हम जान सकते कि यह नया उप-देश जो तुझ से सुनाया जाता है क्या है। क्योंकि तू २० अनूठी बातें हमें सुनाता है सो हम जानने चाहते हैं कि इन का अर्थ क्या है। सब आथीनीय लोग और पर- २१ देशी जो वहां रहते थे किसी और काम में नहीं केवल नई नई बात के कहने अथवा सुनने में समय काटते थे।

तब पावल ने अरेयोपाग के बीच में खड़ा होके कहा २२ हे आथीनीय लोगो मैं आप लोगों को सर्व्वथा बड़े देव-पूजक देखता हूं। क्योंकि जब मैं फिरते हुए आप लोगों २३ की पूज्य वस्तुओं को देखता था तब एक ऐसी बेदी भी पाई जिस पर लिखा हुआ था कि अनजाने ईश्वर की. सो जिसे आप लोग बिन जाने पूजते हैं उसी की कथा मैं आप लोगों को सुनाता हूं। ईश्वर जिस ने जगत और २४ सब कुछ जो उस में है बनाया सो स्वर्ग और पृथिवी का प्रभु होके हाथ के बनाये हुए मन्दिरों में बास नहीं करता है. और न किसी वस्तु का प्रयोजन रखने से मनुष्यों के २५ हाथों की सेवा लेता है क्योंकि वह आप ही सभों को जीवन और श्वास और सब कुछ देता है। उस ने एक ही लोहू से २६ मनुष्यों के सब जातिगण सारी पृथिवी पर बसने को बनाये

हैं और ठहराये हुए समयों को और उन के निवास के
२७ सिवानों को इस लिये बांधा है . कि वे परमेश्वर को ढूंढ़ें क्या
जानें उसे टटोलके पावें और तौभी वह हम में से किसी
२८ से दूर नहीं है . क्योंकि हम उसी से जीते और फिरते
और होते हैं जैसे आप लोगों के यहां के कितने कवियों ने
२९ भी कहा है कि हम तो उस के बंश हैं । सो जो हम
ईश्वर के बंश हैं तो यह समझना कि ईश्वरत्व सोने
अथवा रूपे अथवा पत्थर के अर्थात मनुष्य की कारीगरी
और कल्पना की गढ़ी हुई बस्तु के समान है हमें उचित
३० नहीं है । इस लिये ईश्वर अज्ञानता के समयों से आना-
कानी करके अभी सर्ब्बत्र सब मनुष्यों को पश्चात्ताप करने
३१ की आज्ञा देता है । क्योंकि उस ने एक दिन ठहराया है
जिस में वह उस मनुष्य के द्वारा जिसे उस ने नियुक्त किया
है धर्म्म से जगत का न्याय करेगा और उस ने उस मनुष्य
को मृतकों में से उठाके सभों को निश्चय कराया है ।
३२ मृतकों के जी उठने की बात सुनके कितने ठट्ठा करने
लगे और कितने बोले हम इस के बिषय में तुझ से फिर
३३ सुनेंगे । इस पर पावल उन के बीच में से चला गया ।
३४ परन्तु कई एक मनुष्य उस से मिल गये और बिश्वास
किया जिन में दियोनुसिय अरेयोपागी था और दामरी
नाम एक स्त्री और उन के संग कितने और लोग ।

१८ अठारहवां पर्ब्ब ।

१ पावल का करिन्थ नगर में सुसमाचार प्रचार करना । १२ यिहूदियों का गालियो के पास पावल पर नालिश करना । १८ पावल का अनेक नगरों और देशों में फिरना । २४ अपल्लो का बखान ।

१ इस के पीछे पावल आथीनी से निकलके करिन्थ नगर
२ में आया । और आकूला नाम पन्त देश का एक यिहूदी

था जो उन दिनों में इतलिया देश से आया था इस लिये कि क्लौदिय ने सब यिहूदियों को रोम नगर से निकल जाने की आज्ञा दिई थी . पावल उस को और उस की स्त्री प्रिस्कीला को पाके उन के यहां गया। ३ और उस का और उन का एक ही उद्यम था इस लिये वह उन के यहां रहके कमाता था क्योंकि तम्बू बनाना उन का उद्यम था। ४ परन्तु हर एक विश्रामवार वह सभा के घर में बातें करके यिहूदियों और यूनानियों को भी समझाता था। ५ जब सीला और तिमोथिय माकिदोनिया से आये तब पावल आत्मा के वश में होके यिहूदियों को साक्षी देता था कि यीशु तो ख्रीष्ट है। ६ परन्तु जब वे विरोध और निन्दा करने लगे तब उस ने कपड़े झाड़के उन से कहा तुम्हारा लोहू तुम्हारे ही सिर पर होय . मैं निर्दोष हूं . अब से मैं अन्यदेशियों के पास जाऊंगा। ७ और वहां से जाके वह युस्त नाम ईश्वर के एक उपासक के घर में आया जिस का घर सभा के घर से लगा हुआ था। ८ तब सभा के अध्यक्ष क्रीस्प ने अपने सारे घराने समेत प्रभु पर विश्वास किया और करिन्थियों में से बहुत लोग सुनके विश्वास करते और बप-तिसमा लेते थे। ९ और प्रभु ने रात को दर्शन के द्वारा पावल से कहा मत डर परन्तु बात कर और चुप मत रह। १० क्योंकि मैं तेरे संग हूं और कोई तुझ पर चढ़ाई न करेगा कि तुझे दुःख देवे क्योंकि इस नगर में मेरे बहुत लोग हैं। ११ सो वह उन्हों में ईश्वर का वचन सिखाते हुए डेढ़ बरस रहा।

१२ जब गालियो आखाया देश का प्रधान था तब यिहूदी लोग एक चित्त होकर पावल पर चढ़ाई करके उसे विचार आसन के आगे लाये . १३ और बोले यह तो मनुष्यों को

व्यवस्था के बिपरीत रीति से ईश्वर की उपासना करने को
१४ समझाता है । ज्यों ही पावल मुंह खोलने पर था त्यों ही
गालियो ने यिहूदियों से कहा हे यिहूदियो जो यह कोई
कुकर्म्म अथवा बुरी कुचाल होती तो उचित जानके मैं
१५ तुम्हारी सहता । परन्तु जो यह बिबाद उपदेश के और
नामों के और तुम्हारे यहां की व्यवस्था के विषय में है तो
तुम ही जानो क्योंकि मैं इन बातों का न्यायी होने नहीं
१६ चाहता हूं । और उस ने उन्हें बिचार आसन के आगे से
१७ खदेड़ दिया । तब सारे यूनानियों ने सभा के अध्यक्ष
सोस्थिनी को पकड़के बिचार आसन के साम्ने मारा और
गालियों ने इन बातों की कुछ चिन्ता न किई ।

१८ पावल और भी बहुत दिन रहा तब भाइयों से बिदा
होके जहाज पर सुरिया देश को गया और उस के संग
प्रिस्कीला और अक्लूा . उस ने किंक्रिया नगर में अपना
१९ सिर मुंड़वाया क्योंकि उस ने मन्नत मानी थी । और उस
ने इफिस नगर में पहुंचके उन को वहां छोड़ा और आप ही
२० सभा के घर में प्रवेश करके यिहूदियों से बातें किईं । जब
उन्हों ने उस से बिन्ती किई कि हमारे संग कुछ दिन और
२१ रहिये तब उस ने न माना . परन्तु यह कहके उन से बिदा
हुआ कि आनेवाला पर्ब्ब यिरूशलीम में करना मुझे बहुत
अवश्य है परन्तु ईश्वर चाहे तो मैं तुम्हारे पास फिर
२२ लौट आऊंगा । तब उस ने इफिस से खोल दिया और
कैसरिया में आया तब (यिरूशलीम को) जाके मंडली को
२३ नमस्कार किया और अन्तैखिया को गया । फिर कुछ दिन
रहके वह निकला और एक ओर से गलातिया और
फ्रूगिया देशों में सब शिष्यों को स्थिर करता हुआ फिरा ।

२४ अपल्लो नाम सिकन्दरिया नगर का एक यिहूदी जो

सुवक्ता पुरुष और धर्म्मपुस्तक में सामर्थी था इफिस में आया। उस ने प्रभु के मार्ग की शिक्षा पाई थी और आत्मा २५ में अनुरागी होके प्रभु के विषय में की बातें बड़े यत्न से सुनाता और सिखाता था परन्तु केवल योहन के बपतिसमा की बात जानता था। वह सभा के घर में साहस २६ से बात करने लगा पर अकूला और प्रिस्कीला ने उस की सुनके उसे लिया और ईश्वर का मार्ग उस को और ठीक करके बताया। और वह आखाया को जाने चाहता था २७ सो भाइयों ने उसे ढाढ़स देके शिष्यों के पास लिखा कि वे उसे ग्रहण करें और उस ने पहुंचके अनुग्रह से जिन्हों ने विश्वास किया था उन्हों की बड़ी सहायता किई। क्योंकि यीशु जो खीष्ट है यह बात धर्म्मपुस्तक के प्रमाणों २८ से बतलाके उस ने बड़े यत्न से लोगों के आगे यिहूदियों को निरुत्तर किया।

१९ उनीसवां पर्व्व ।

१ इफिस नगर में बारह शिष्यों को पवित्र आत्मा का दिया जाना। ८ पावल का उपदेश और विवाद करना और अनेक आश्चर्य्य कर्म्मों का उस से प्रगट होना। १३ स्कवा के पुत्रों का वर्णन और टोने के पुस्तकों का जलाया जाना। २१ दीमीत्रिय सुनार का पावल पर उपद्रव मचाना।

अपल्लो के करिन्थ में होते हुए पावल ऊपर के सारे देश १ में फिरके इफिस में आया. और कितने शिष्यों को पाके २ उन से कहा क्या तुम ने विश्वास करके पवित्र आत्मा पाया. उन्हों ने उस से कहा हम ने तो सुना भी नहीं कि पवित्र आत्मा दिया जाता है। तब उस ने उन से कहा ३ तो तुम ने किस बात पर बपतिसमा लिया. उन्हों ने कहा योहन के बपतिसमा पर। पावल ने कहा योहन ने पश्चा- ४ त्ताप का बपतिसमा देके अपने पीछे आनेवाले ही पर

विश्वास करने को लोगों से कहा अर्थात ख्रीष्ट यीशु पर ।
५ यह सुनके उन्हों ने प्रभु यीशु के नाम से बपतिसमा लिया ।
६ और जब पावल ने उन पर हाथ रखे तब पवित्र आत्मा उन
पर आया और वे अनेक बोलियां बोलने और भविष्यद्वाक्य
७ कहने लगे । ये सब मनुष्य बारह एक थे ।

८ तब पावल सभा के घर में प्रवेश करके साहस से बात
करने लगा और तीन मास ईश्वर के राज्य के विषय में की
९ बातें सुनाता और समझाता रहा । परन्तु जब कितने
लोग कठोर हो गये और नहीं मानते थे और लोगों के
आगे इस मार्ग की निन्दा करने लगे तब वह उन के पास
से चला गया और शिष्यों को अलग करके तुरान नाम
१० किसी मनुष्य के विद्यालय में प्रतिदिन बातें किईं । यह दो
बरस होता रहा यहां लों कि आशिया के निवासी यिहूदी
११ और यूनानी भी सभों ने प्रभु यीशु का बचन सुना । और
ईश्वर ने पावल के हाथों से अनोखे आश्चर्य्य कर्म्म किये .
१२ यहां लों कि उस के देह पर से अंगोछे और रूमाल रोगियों
के पास पहुंचाये जाते थे और रोग उन से जाते रहते थे
और दुष्ट भूत उन में से निकल जाते थे ।

१३ तब यिहूदी लोगों में से जो इधर उधर फिरा करते
और भूत निकालने को किरिया देते थे कितने जन उन्हों
पर जिन को दुष्ट भूत लगे थे प्रभु यीशु का नाम यह कहके
लेने लगे कि यीशु जिसे पावल प्रचार करता है हम उसी
१४ की तुम्हें किरिया देते हैं । स्केवा नाम एक यिहूदीय
१५ प्रधान याजक के सात पुत्र थे जो यह करते थे । परन्तु
दुष्ट भूत ने उत्तर दिया कि यीशु को मैं जानता हूं और
१६ पावल को पहचानता हूं पर तुम कौन हो । और वह
मनुष्य जिसे दुष्ट भूत लगा था उन पर लपकके और उन्हें

वश में लाके उन पर ऐसा प्रबल हुआ कि वे नंगे और घायल उस घर में से भागे। और यह बात इफिस के निवासी १७ यिहूदी और यूनानी भी सब जान गये और उन सभों को डर लगा और प्रभु यीशु के नाम की महिमा किई जाती थी। और जिन्हों ने बिश्वास किया था उन्हों में से बहुतों ने १८ आके अपने काम मान लिये और बतलाये। टोना करने- १९ हारों में से भी अनेकों ने अपनी पोथियां एकट्ठी करके सभों के साम्ने जला दिईं और उन्हों का दाम जोड़ा गया तो पचास सहस्र रुपैये ठहरा। यूं पराक्रम से प्रभु का बचन फैला २० और प्रबल हुआ।

जब यह बातें हो चुकीं तब पावल ने आत्मा में मा- २१ किदोनिया और आखाया के बीच से यिरूशलीम जाने को ठहराया और कहा कि वहां जाने के पीछे मुझे रोम को भी देखना होगा। सो जो उस की सेवा करते थे उन में २२ से दो को अर्थात तिमोथिय और इरास्त को माकिदोनिया में भेजके वह आप ही आशिया में कुछ दिन रह गया। उस समय इस मार्ग के बिषय में बड़ा हुल्लड़ हुआ। क्यों- २३-२४ कि दीमीत्रिय नाम एक सुनार अर्त्तिमी के मन्दिर की चांदी की मूरतें बनाने से कारीगरों को बहुत काम दिलाता था। उस ने उन्हों को और ऐसी ऐसी वस्तुओं के कारीगरों २५ को एकट्ठे करके कहा हे मनुष्यो तुम जानते हो कि इस काम से हमों को सम्पत्ति प्राप्त होती है। और तुम देखते २६ और सुनते हो कि इस पावल ने यह कहके कि जो हाथों से बनाये जाते सो ईश्वर नहीं हैं केवल इफिस के नहीं परन्तु प्राय समस्त आशिया के बहुत लोगों को समझाके भरमाया है। और हमों को केवल यह डर नहीं है कि २७ यह उद्यम निन्दित हो जाय परन्तु यह भी कि बड़ी

देवी अर्त्तिमी का मन्दिर तुच्छ समझा जाय और उस की महिमा जिसे समस्त आशिया और जगत पूजता है नष्ट
२८ हो जाय। वे यह सुनके और क्रोध से पूर्ण होके पुकारने
२९ लगे इफिसियों की अर्त्तिमी की जय। और सारे नगर में बड़ी गड़बड़ाहट हुई और लोग गायस और अरिस्तार्ख दो माकिदोनियों को जो पावल के संगी पथिक थे पकड़के
३० एक चित्त होके रंगशाला में दौड़ गये। जब पावल ने लोगों के पास भीतर जाने चाहा तब शिष्यों ने उस को
३१ जाने न दिया। आशिया के प्रधानों में से भी कितनों ने जो उस के मित्र थे उस पास भेजके उस से बिन्ती किई कि
३२ रंगशाला में जाने की जोखिम मत अपने पर उठाइये। सो कोई कुछ और कोई कुछ पुकारते थे क्योंकि सभा घबराई हुई थी और अधिक लोग नहीं जानते थे हम किस
३३ कारण एकट्ठे हुए हैं। तब भीड़ में से कितनों ने सिकन्दर को जिसे यिहूदियों ने खड़ा किया था आगे बढ़ाया और सिकन्दर हाथ से सैन करके लोगों के आगे उत्तर दिया
३४ चाहता था। परन्तु जब उन्हों ने जाना कि वह यिहूदी है सब के सब एक शब्द से दो घड़ी के अटकल इफिसियों
३५ की अर्त्तिमी की जय पुकारते रहे। तब नगर के लेखक ने लोगों को शांत करके कहा हे इफिसी लोगो कौन मनुष्य है जो नहीं जानता कि इफिसियों का नगर बड़ी देवी अर्त्तिमी का और जूपितर की ओर से गिरी हुई मूर्त्ति का
३६ टहलुआ है। सो जब कि इन बातों का खंडन नहीं हो सकता है उचित है कि तुम शांत होओ और कोई काम
३७ उतावली से न करो। क्योंकि तुम इन मनुष्यों को लाये हो जो न पवित्र वस्तुओं के चोर न तुम्हारी देवी के निन्दक
३८ हैं। सो जो दीमीत्रिय को और उस के संग के कारीगरों को

किसी से विवाद है तो विचार के दिन होते हैं और प्रधान लोग हैं वे एक दूसरे पर नालिश करें। ३९ परन्तु जो तुम दूसरी बातों के विषय में कुछ पूछते हो तो व्यवहारिक सभा में निर्णय किया जायगा। ४० क्योंकि जो आज हुई है उस के हेतु से हम पर बलवे का दोष लगाये जाने का डर है इस लिये कि कोई कारण नहीं है जिस करके हम इस भीड़ का उत्तर दे सकेंगे। ४१ और यह कहके उस ने सभा को विदा किया।

२० बीसवां पर्व्व।

१ पावल का कई एक देशों से होके त्रोआ नगर को जाना। ७ उतुख का मरना और फिरके जिलाया जाना। १३ पावल का मिलीत नगर में पहुंचना। १७ इफिस की मंडली के प्राचीनों को उपदेश देना। ३६ वहां से विदा होना।

१ जब हुल्लड़ थम गया तब पावल शिष्यों को अपने पास बुलाके और गले लगाके माकिदोनिया जाने को चल निकला। २ उस सारे देश में फिरके और बहुत बातों से उन्हें उपदेश देके वह यूनान देश में आया। ३ और तीन मास रहके जब वह जहाज पर सुरिया को जाने पर था यिहूदी लोग उस की घात में लगे इस लिये उस ने माकिदोनिया होके लौट जाने को ठहराया। ४ बिरेया नगर का सोपातर और थिसलोनियों में से अरिस्तार्ख और सिकुन्द और दर्बी नगर का गायस और तिमोथिय और आशिया देश के तुखिक और त्रोफिम आशिया लों उस के संग हो लिये। ५ इन्हों ने आगे जाके त्रोआ में हमों की बाट देखी। ६ और हम लोग अखमीरी रोटी के पर्व्व के दिनों के पीछे जहाज पर फिलिपी से चले और पांच दिन में त्रोआ में उन के पास पहुंचे जहां हम सात दिन रहे।

७ अठवारे के पहिले दिन जब शिष्य लोग रोटी तोड़ने

को एकट्ठे हुए तब पावल ने जो अगले दिन चले जाने पर था उन से बातें किईं और आधी रात लों बात करता
८ रहा । जिस उपरौठी कोठरी में वे एकट्ठे हुए थे उस में
९ बहुत दीपक बरते थे । और उतुख नाम एक जवान खिड़की पर बैठा हुआ भारी नींद से झुक रहा था और पावल के बड़ी बेर लों बातें करते करते वह नींद से झुकके तीसरी अटारी पर से नीचे गिर पड़ा और मूआ उठाया
१० गया । परन्तु पावल उतरके उस पर औंधे पड़ गया और उसे गोदी में लेके बोला मत धूम मचाओ क्योंकि उस का
११ प्राण उस में है । तब ऊपर जाके और रोटी तोड़के और खाके और बड़ी बेर लों भोर तक बातचीत करके वह चला
१२ गया । और वे उस जवान को जीते ले आये और बहुत शांति पाई ।

१३ तब हम लोग आगे से जहाज पर चढ़के आसस नगर को गये जहां से हमें पावल को चढ़ा लेना था क्योंकि उस ने यूं ठहराया था इस लिये कि आप ही पैदल जानेवाला
१४ था । जब वह आसस में हम से आ मिला तब हम उसे
१५ चढ़ाके मितुलीनी नगर में आये । और वहां से खोलके हम दूसरे दिन खीयो टापू के साम्हने पहुंचे और अगले दिन सामो टापू में लगान किया फिर त्रोगुलिया नगर में रहके
१६ दूसरे दिन मिलीत नगर में आये । क्योंकि पावल ने इफिस को एक ओर छोड़के जाना ठहराया इस लिये कि उस को आशिया में अबेर न लगे क्योंकि वह शीघ्र जाता था कि जो उस से बन पड़े तो पेंतिकोष्ट पर्ब्ब के दिन लों यिरू-शलीम में पहुंचे ।

१७ मिलीत से उस ने लोगों को इफिस नगर भेजके मंडली
१८ के प्राचीनों को बुलाया । जब वे उस पास आये तब उस

ने उन से कहा तुम जानते हो कि पहिले दिन से जो मैं आशिया में पहुंचा मैं हर समय क्योंकर तुम्हारे बीच में रहा . कि बड़ी दीनताई से और बहुत रो रोके और उन १९ परीक्षाओं में जो मुझ पर यिहूदियों की कुमंत्रणा से पड़ीं मैं प्रभु की सेवा करता रहा . और क्योंकर मैं ने लाभ की २० बातों में से कोई बात न रख छोड़ी जो तुम्हें न बताई और लोगों के आगे और घर घर तुम्हें न सिखाई . कि यिहू- २१ दियों और यूनानियों को भी मैं साक्षी देके ईश्वर के आगे पश्चात्ताप करने की और हमारे प्रभु यीशु स्त्रीष्ट पर बिश्वास करने की बात कहता रहा। और अब देखो मैं आत्मा से २२ बंधा हुआ यिरूशलीम को जाता हूं और नहीं जानता हूं कि वहां मुझ पर क्या पड़ेगा . केवल यही जानता हूं कि २३ पवित्र आत्मा नगर नगर साक्षी देता है कि बंधन और क्लेश मेरे लिये धरे हैं। परन्तु मैं किसी बात की चिन्ता २४ नहीं करता हूं और न अपना प्राण इतना बहुमूल्य जानता हूं जितना आनन्द से अपनी दौड़ को और ईश्वर के अनुग्रह के सुसमाचार पर साक्षी देने की सेवकाई को जो मैं ने प्रभु यीशु से पाई है पूरी करना बहुमूल्य है। और २५ अब देखो मैं जानता हूं कि तुम सब जिन्हों में मैं ईश्वर के राज्य की कथा सुनाता फिरा हूं मेरा मुंह फिर नहीं देखोगे। इस लिये मैं आज के दिन ईश्वर को साक्षी रखके २६ तुम से कहता हूं कि मैं सभों के लोहू से निर्दोष हूं। क्यों- २७ कि मैं ने ईश्वर के सारे मत में से कोई बात न रख छोड़ी जो तुम्हें न बताई। सो अपने विषय में और सारे झुंड २८ के विषय में जिस के बीच में पवित्र आत्मा ने तुम्हें रखवाले ठहराये हैं सचेत रहो कि तुम ईश्वर की मंडली की चर- वाही करो जिसे उस ने अपने लोहू से मोल लिया है।

२९ क्योंकि मैं यह जानता हूं कि मेरे जाने के पीछे क्रूर हुंड़ार
३० तुम्हों में प्रवेश करेंगे जो झुंड को न छोड़ेंगे। तुम्हारे ही
बीच में से भी मनुष्य उठेंगे जो शिष्यों को अपने पीछे खींच
३१ लेने को टेढ़ी बातें कहेंगे। इस लिये मैं ने जो तीन बरस
रात और दिन रो रोके हर एक को चिताना न छोड़ा
३२ यह स्मरण करते हुए जागते रहो। और अब हे भाइयो
मैं तुम्हें ईश्वर को और उस के अनुग्रह के बचन को सोंप
देता हूं जो तुम्हें सुधारने और सब पवित्र किये हुए
३३ लोगों के बीच में अधिकार देने सकता है। मैं ने किसी के
रूपे अथवा सोने अथवा वस्त्र का लालच नहीं किया।
३४ तुम आप ही जानते हो कि इन हाथों ने मेरे प्रयोजन की
३५ और मेरे संगियों की टहल किई। मैं ने सब बातें तुम्हें
बताईं कि इस रीति से परिश्रम करते हुए दुर्बलों का
उपकार करना और प्रभु यीशु की बातें स्मरण करना
चाहिये कि उस ने कहा लेने से देना अधिक धन्य है।
३६ यह बातें कहके उस ने अपने घुटने टेकके उन सभों के
३७ संग प्रार्थना किई। तब वे सब बहुत रोये और पावल
३८ के गले में लिपटके उसे चूमने लगे। वे सब से अधिक उस
बात से शोक करते थे जो उस ने कही थी कि तुम मेरा
मुंह फिर नहीं देखोगे. तब उन्हों ने उसे जहाज लों
पहुंचाया।

२१ इकईसवां पर्ब्ब ।

१ पावल का सोर नगर में भाइयों से भेंट करना। ७ कैसरिया नगर में फिलिप से भेंट करना। १० आगाव का भविष्यद्वाक्य और पावल की दृढ़ताई। १५ पावल और उस के संगियों का यिरूशलीम में पहुंचना। १८ भाइयों का पावल को परामर्श देना। २७ यिहूदियों का उस को पकड़ना। ३१ रोमी सहस्रपति का उसे यिहूदियों के हाथ से छीन लेना। ३७ सहस्रपति से पावल की बातचीत।

१ जब हम ने उन से अलग होके जहाज खोला तब सीधे

सीधे कोस टापू को चले और दूसरे दिन रोद टापू को
और वहां से पातारा नगर पर पहुंचे। और एक जहाज २
को जो फैनीकिया को जाता था पाके हम ने उस पर चढ़के
खोल दिया। जब कुप्रस टापू देखने में आया तब हम ने ३
उसे बायें हाथ छोड़ा और सुरिया को जाके सोर नगर में
लगान किया क्योंकि जहाज की बोझाई वहां उतरने पर
थी। और वहां के शिष्यों को पाके हम वहां सात दिन ४
रहे. उन्हों ने आत्मा की शिक्षा से पावल से कहा यिरू-
शलीम को न जाइये। जब हम उन दिनों को पूरे कर चुके ५
तब निकलके चलने लगे और सभों ने स्त्रियों और बालकों
समेत हमें नगर के बाहर लों पहुंचाया और हमों ने तीर पर
घुटने टेकके प्रार्थना किई। तब एक दूसरे को गले लगाके ६
हम तो जहाज पर चढ़े और वे अपने अपने घर लौटे।

तब हम सोर से जलयात्रा पूरी करके तलिमाई नगर ७
में पहुंचे और भाइयों को नमस्कार करके उन के संग एक
दिन रहे। दूसरे दिन हम जो पावल के संग के थे वहां से ८
चलके कैसरिया में आये और फिलिप सुसमाचार प्रचारक
के घर में जो सातों में से एक था प्रवेश करके उस के यहां
रहे। इस मनुष्य को चार कुंवारी पुत्रियां थीं जो भविष्य- ९
द्वाणी कहा करती थीं।

जब हम बहुत दिन रह चुके तब आगाब नाम एक १०
भविष्यद्वक्ता यिहूदिया से आया। वह हमारे पास आके ११
और पावल का पटुका लेके और अपने हाथ और पांव
बांधके बोला पवित्र आत्मा यह कहता है कि जिस मनुष्य
का यह पटुका है उस को यिरूशलीम में यिहूदी लोग यूं हीं
बांधेंगे और अन्यदेशियों के हाथ सोंपेंगे। जब हम ने यह १२
बातें सुनीं तब हम लोग और उस स्थान के रहनेहारे भी

पावल से बिन्ती करने लगे कि यिरूशलीम को न जाइये।
१३ परन्तु उस ने उत्तर दिया कि तुम क्या करते हो कि रोते और मेरा मन चूर करते हो . मैं तो प्रभु यीशु के नाम के लिये यिरूशलीम में केवल बांधे जाने को नहीं परन्तु मरने
१४ को भी तैयार हूं। जब वह नहीं मानता था तब हम यह कहके चुप हुए कि प्रभु की इच्छा पूरी होवे।
१५ इन दिनों के पीछे हम लोग बांध छांदके यिरूशलीम
१६ को जाने लगे। कैसरिया के शिष्यों में से भी कितने हमारे संग हो लिये और मनासोन नाम कुप्रस के एक प्राचीन शिष्य के पास जिस के यहां हम पाहुन होवें हमें पहुंचाया।
१७ जब हम यिरूशलीम में पहुंचे तब भाइयों ने हमें आनन्द से ग्रहण किया।
१८ दूसरे दिन पावल हमारे संग याकूब के यहां गया
१९ और सब प्राचीन लोग आये। तब उस ने उन को नमस्कार कर जो जो कर्म्म ईश्वर ने उस की सेवकाई के द्वारा से अन्यदेशियों में किये थे उन्हें एक एक करके बर्णन किया।
२० उन्हों ने सुनके प्रभु की स्तुति किई और उस से कहा हे भाई आप देखते हैं कितने सहस्रों यिहूदियों ने बिश्वास
२१ किया है और सब व्यवस्था के लिये धुन लगाये हैं। और उन्हों ने आप के विषय में सुना है कि आप अन्यदेशियों के बीच में के सब यिहूदियों के तईं मूसा को त्याग करने को सिखाते हैं और कहते हैं कि अपने बालकों का खतना
२२ मत करो और न व्यवहारों पर चलो। सो क्या है कि बहुत लोग निश्चय एकट्ठे होंगे क्योंकि वे सुनेंगे कि आप
२३ आये हैं। इस लिये यह जो हम आप से कहते हैं कीजिये . हमारे यहां चार मनुष्य हैं जिन्हों ने मन्नत मानी है।
२४ उन्हें लेके उन के संग अपने को शुद्ध कीजिये और उन के लिये

खर्चा दीजिये कि वे सिर मुंड़ावें तब सब लोग जानेंगे कि जो बातें हम ने इस के विषय में सुनी थीं सो कुछ नहीं है परन्तु वह आप भी व्यवस्था को पालन करते हुए उस के अनुसार चलता है। परन्तु जिन अन्यदेशियों ने बिश्वास २५ किया है हम ने उन के विषय में यही ठहराके लिख भेजा कि वे ऐसी कोई बात न मानें केवल मूरतों के आगे बलि किये हुए से और लोहू से और गला घोंटे हुओं के मांस से और व्यभिचार से बचे रहें। तब पावल ने उन मनुष्यों को २६ लेके दूसरे दिन उन के संग शुद्ध होके मन्दिर में प्रवेश किया और सन्देश दिया कि शुद्ध होने के दिन अर्थात उन में से हर एक के लिये चढ़ावा चढ़ाये जाने तक के दिन कब पूरे होंगे।

जब वे सात दिन पूरे होने पर थे तब आशिया के यिहू- २७ दियों ने पावल को मन्दिर में देखके सब लोगों को उस्काया और उस पर हाथ डालके पुकारा . हे इस्रायेली लोगो २८ सहायता करो यही वह मनुष्य है जो इन लोगों के और व्यवस्था के और इस स्थान के विरुद्ध सर्व्वत्र सब लोगों को उपदेश देता है . हां और उस ने यूनानियों को मन्दिर में लाके इस पवित्र स्थान को अपवित्र भी किया है। उन्हों ने २९ तो इस के पहिले त्रोफिम इफिसी को पावल के संग नगर में देखा था और समझते थे कि वह उस को मन्दिर में लाया था। तब सारे नगर में घबराहट हुई और लोग एकट्ठे ३० दौड़े और पावल को पकड़के उसे मन्दिर के बाहर खींच लाये और तुरन्त द्वार मूंदे गये।

जब वे उसे मार डालने चाहते थे तब पलटन के सहस्र- ३१ पति को सन्देश पहुंचा कि सारे यिरूशलीम में घबराहट हुई है। तब वह तुरन्त योद्धाओं और शतपतियों को ३२

लेके उन पास दौड़ा और उन्हों ने सहस्रपति को और
३३ योद्धाओं को देखके पावल को मारना छोड़ दिया। तब
सहस्रपति ने निकट आके उसे लेके आज्ञा किई कि दो
ज़ंजीरों से बांधा जाय और पूछने लगा यह कौन है और
३४ क्या किया है। परन्तु भीड़ में कोई कुछ और कोई कुछ
पुकारते थे और जब सहस्रपति हुल्लड़ के मारे निश्चय
नहीं जान सकता था तब पावल को गढ़ में ले जाने की आज्ञा
३५ किई। जब वह सीढ़ी पर पहुंचा ऐसा हुआ कि भीड़ की
३६ बरियाई के कारण योद्धाओं ने उसे उठा लिया। क्योंकि
लोगों की भीड़ उसे दूर कर पुकारती हुई पीछे आती थी।
३७ जब पावल गढ़ के भीतर पहुंचाये जाने पर था तब
उस ने सहस्रपति से कहा जो आप से कुछ कहने की मुझे
आज्ञा होय तो कहूं. उस ने कहा क्या तू यूनानीय भाषा
३८ जानता है। तो क्या तू वह मिसरी नहीं है जो इन
दिनों के आगे बलवा करके कटारबन्ध लोगों में से चार
३९ सहस्र मनुष्यों को जंगल में ले गया। पावल ने कहा मैं तो
तारस का एक यिहूदी मनुष्य हूं. किलिकिया के एक प्रसिद्ध
नगर का निवासी हूं. और मैं आप से बिन्ती करता हूं
४० कि मुझे लोगों से बात करने दीजिये। जब उस ने आज्ञा
दिई तब पावल ने सीढ़ी पर खड़ा होके लोगों को हाथ से
सैन किया. जब वे बहुत चुप हुए तब उस ने इब्रीय
भाषा में उन से बात किई।

२२ बाईसवां पर्ब्ब।

१ यिहूदी लोगों से पावल की कथा। २२ सहस्रपति का उसे कोड़े मारने की आज्ञा देना और फिर छोड़ देना। ३० उस का यिहूदियों की न्यायसभा के आगे खड़ा किया जाना।

१ उस ने कहा हे भाइयो और पितरो मेरा उत्तर जो मैं

आप लोगों के आगे अब देता हूं सुनिये। वे यह सुनके २
कि वह हम से इब्रीय भाषा में बात करता है और भी
चुप हुए। तब उस ने कहा मैं तो यिहूदी मनुष्य हूं जो ३
किलिकिया के तारस नगर में जन्मा पर इस नगर में पाला
गया और गमलियेल के चरणों के पास पितरों की व्यवस्था
को ठीक रीति पर सिखाया गया और जैसे आज तुम सब
हो ऐसा ही ईश्वर के लिये धुन लगाये था। और मैं ने इस ४
पन्थ के लोगों को मृत्यु लों सताया कि पुरुषों और स्त्रियों को
भी बांध बांधके बन्दीगृहों में डालता था। इस में महायाजक ५
और सब प्राचीन लोग मेरे साक्षी हैं जिन से मैं भाइयों
के नाम पर चिट्ठियां पाके दमेसक को जाता था कि जो
वहां थे उन्हें भी ताड़ना पाने को बांधे हुए यिरूशलीम
में लाऊं। परन्तु जब मैं जाता था और दमेसक के समीप ६
पहुंचा तब दो पहर के निकट अचांचक बड़ी ज्योति
स्वर्ग से मेरी चारों ओर चमकी। और मैं भूमि पर गिरा ७
और एक शब्द सुना जो मुझ से बोला हे शावल हे शावल
तू मुझे क्यों सताता है। मैं ने उत्तर दिया कि हे प्रभु तू ८
कौन है. उस ने मुझ से कहा मैं यीशु नासरी हूं जिसे तू
सताता है। जो लोग मेरे संग थे उन्हों ने वह ज्योति ९
देखी और डर गये परन्तु जो मुझ से बोलता था उस की
बात न सुनी। तब मैं ने कहा हे प्रभु मैं क्या करूं. प्रभु ने १०
मुझ से कहा उठके दमेसक को जा और जो जो काम करने
को तुझे ठहराया गया है सब के विषय में वहां तुझ से कहा
जायगा। जब उस ज्योति के तेज के मारे मुझे नहीं सूझता ११
था तब मैं अपने संगियों के हाथ पकड़े हुए दमेसक में
आया। और अननियाह नाम व्यवस्था के अनुसार एक १२
भक्त मनुष्य जो वहां के रहनेहारे सब यिहूदियों के यहां

१३ सुख्यात था मेरे पास आया . और निकट खड़ा होके मुझ से कहा हे भाई शावल अपनी दृष्टि पा और उसी
१४ घड़ी मैं ने उस पर दृष्टि किई । तब उस ने कहा हमारे पितरों के ईश्वर ने तुझे ठहराया है कि तू उस की इच्छा को जाने और उस धर्म्मी को देखे और उस के मुंह से बात सुने ।
१५ क्योंकि जो बातें तू ने देखी और सुनी हैं उन के विषय में
१६ तू सब मनुष्यों के आगे उस का साक्षी होगा । और अब तू क्यों बिलंब करता है . उठके बपतिसमा ले और प्रभु के
१७ नाम की प्रार्थना करके अपने पापों को धो डाल । जब मैं यिरूशलीम को फिर आया ज्यों ही मन्दिर में प्रार्थना करता
१८ था त्यों ही बेसुध हुआ . और उस को देखा कि मुझ से बोलता था शीघ्रता करके यिरूशलीम से झट निकल जा
१९ क्योंकि वे मेरे विषय में तेरी साक्षी ग्रहण न करेंगे । मैं ने कहा हे प्रभु वे जानते हैं कि तुझ पर बिश्वास करने-हारों को मैं बन्दीगृह में डालता और हर एक सभा में
२० मारता था । और जब तेरे साक्षी स्तिफान का लोहू बहाया जाता था तब मैं भी आप निकट खड़ा था और उस के मारे जाने में सम्मति देता था और उस के घातकों
२१ के कपड़ों की रखवाली करता था । तब उस ने मुझ से कहा चला जा क्योंकि मैं तुझे अन्यदेशियों के पास दूर भेजूंगा ।
२२ 　लोगों ने इस बात लों उस की सुनी तब ऊंचे शब्द से पुकारा कि ऐसे मनुष्य को पृथिवी पर से दूर कर कि उस
२३ का जीता रहना उचित न था । जब वे चिल्लाते और
२४ कपड़े फेंकते और आकाश में धूल उड़ाते थे . तब सहस्र-पति ने उस को गढ़ में ले जाने की आज्ञा किई और कहा उसे कोड़े मारके जांचो कि मैं जानूं लोग किस कारण से
२५ उस के बिरुद्ध ऐसा पुकारते हैं । जब वे पावल को चमड़े के

बंधों से बांधते थे तब उस ने शतपति से जो खड़ा था कहा क्या मनुष्य को जो रोमी है और दंड के योग्य नहीं ठहराया गया है कोड़े मारना तुम्हें उचित है। २६ शतपति ने यह सुनके सहस्रपति के पास जाके कह दिया कि देखिये आप क्या किया चाहते हैं यह मनुष्य तो रोमी है। २७ तब सहस्रपति ने उस पास आके उस से कहा मुझ से कह क्या तू रोमी है. उस ने कहा हां। २८ सहस्रपति ने उत्तर दिया कि मैं ने यह रोमनिवासी की पदवी बहुत रुपैयों पर मोल लिई. पावल ने कहा परन्तु मैं ऐसा ही जन्मा। २९ तब जो लोग उसे जांचने पर थे सो तुरन्त उस के पास से हट गये और सहस्रपति भी यह जानके कि रोमी है और मैं ने उसे बांधा है डर गया।

३० और दूसरे दिन वह निश्चय जानने चाहता था कि उस पर यिहूदियों से क्यों दोष लगाया जाता है इस लिये उस को बंधनों से खोल दिया और प्रधान याजकों को और न्याइयों की सारी सभा को आने की आज्ञा दिई और पावल को लाके उन के आगे खड़ा किया।

२३ तेईसवां पर्ब्ब।

१ पावल की कथा और सभा का विभिन्न होना। १२ चालीस जनों का उसे मार डालने का नियम बांधना। १६ पावल के भांजे का सहस्रपति को उस बात का संदेश देना। २२ पावल का फीलिक्स अध्यक्ष के पास भेजा जाना। २५ सहस्रपति का पत्र। ३१ पावल का फीलिक्स के पास पहुंचना।

१ पावल ने न्याइयों की सभा की ओर ताकके कहा हे भाइयो मैं इस दिन लों सर्व्वथा ईश्वर के आगे शुद्ध मन से चला हूं। २ परन्तु अननियाह महायाजक ने उन लोगों को जो उस के निकट खड़े थे उस के मुंह में मारने की आज्ञा दिई। ३ तब पावल ने उस से कहा हे चूना फेरी हुई भीत्ति

ईश्वर तुझे मारेगा . क्या तू मुझे व्यवस्था के अनुसार बिचार करने को बैठा है और व्यवस्था को लंघन करता
४ हुआ मुझे मारने की आज्ञा देता। जो लोग निकट खड़े थे सो बोले क्या तू ईश्वर के महायाजक की निन्दा करता
५ है। पावल ने कहा हे भाइयो मैं नहीं जानता था कि यह महायाजक है . क्योंकि लिखा है अपने लोगों के
६ प्रधान को बुरा मत कह। तब पावल ने यह जानके कि एक भाग सदूकी और एक भाग फरीशी हैं सभा में पुकारा हे भाइयो मैं फरीशी और फरीशी का पुत्र हूं मृतकों की आशा और जी उठने के विषय में मेरा बिचार किया
७ जाता है। जब उस ने यह बात कही तब फरीशियों और सदूकियों में बिबाद हुआ और सभा बिभिन्न हुई।
८ क्योंकि सदूकी कहते हैं कि न मृतकों का जी उठना न दूत न आत्मा है परन्तु फरीशी दोनों को मानते हैं।
९ तब बड़ी धूम मची और जो अध्यापक फरीशियों के भाग के थे सो उठके लड़ते हुए कहने लगे कि हम लोग इस मनुष्य में कुछ बुराई नहीं पाते हैं परन्तु यदि कोई आत्मा
१० अथवा दूत उस से बोला है तो हम ईश्वर से न लड़ें। जब बहुत बिबाद हुआ तब सहस्रपति को शंका हुई कि पावल उन से फाड़ न डाला जाय इस लिये पलटन को आज्ञा दिई कि जाके उस को उन के बीच में से छीनके गढ़ में लाओ।

११ उस रात प्रभु ने उस के निकट खड़े हो कहा हे पावल ढाढ़स कर क्योंकि जैसा तू ने यिरूशलीम में मेरे विषय में की साक्षी दिई है तैसा ही तुझे रोम में भी साक्षी देना होगा।

१२ बिहान हुए कितने यिहूदियों ने एका करके प्रण बांधा कि जब लों हम पावल को मार न डालें तब लों जो खायें
१३ अथवा पीयें तो हमें धिक्कार है। जिन्हों ने आपस में यह

किरिया खाई थी सो चालीस जनों से अधिक थे। वे प्रधान १४ याजकों और प्राचीनों के पास आके बोले हम ने यह प्रण बांधा है कि जब लों हम पावल को मार न डालें तब लों यदि कुछ चीखें भी तो हमें धिक्कार है। इस लिये अब आप लोग १५ न्याइयों की सभा समेत सहस्रपति को समझाइये कि हम पावल के विषय में की बातें और ठीक करके निर्णय करेंगे सो आप उसे कल हमारे पास लाइये . परन्तु उस के पहुंचने के पहिले ही हम लोग उसे मार डालने को तैयार हैं।

परन्तु पावल के भांजे ने उन का घात में लगना सुना १६ और आके गढ़ में प्रवेश कर पावल को सन्देश दिया। पावल ने शतपतियों में से एक को अपने पास बुलाके कहा १७ इस जवान को सहस्रपति के पास ले जाइये क्योंकि उस को उस से कुछ कहना है। सो उस ने उसे ले सहस्रपति के १८ पास लाके कहा पावल बन्धुवे ने मुझे अपने पास बुलाके बिन्ती किई कि इस जवान को सहस्रपति से कुछ कहना है उसे उस पास ले जाइये। सहस्रपति ने उस का हाथ १९ पकड़के और एकांत में जाके पूछा तुझ को जो मुझ से कहना है सो क्या है। उस ने कहा यिहूदियों ने आप से २० यही बिन्ती करने को आपस में ठहराया है कि हम पावल के विषय में कुछ बात और ठीक करके पूछेंगे सो आप उसे कल न्याइयों की सभा में लाइये। परन्तु आप उन की २१ न मानिये क्योंकि उन में से चालीस से अधिक मनुष्य उस की घात में लगे हैं जिन्हों ने यह प्रण बांधा है कि जब लों हम पावल को मार न डालें तब लों जो खायें अथवा पीयें तो हमें धिक्कार है और अब वे तैयार हैं और आप की प्रतिज्ञा की आस देख रहे हैं।

सो सहस्रपति ने यह आज्ञा देके कि किसी से मत कह २२

कि मैं ने यह बातें सहस्रपति को बताई हैं जवान को बिदा
२३ किया। और शतपतियों में से दो को अपने पास बुलाके
उस ने कहा दो सौ योद्धाओं और सत्तर घुड़चढ़ों और
दो सौ भालैतों को पहर रात बीते कैसरिया को जाने के
२४ लिये तैयार करो। और बाहन तैयार करो कि वे पावल
को बैठाके फीलिक्स अध्यक्ष के पास बचाके ले जावें।
२५ २६ उस ने इस प्रकार की चिट्ठी भी लिखी। क्लौदिय लुसिय
२७ महामहिमन अध्यक्ष फीलिक्स को नमस्कार। इस मनुष्य
को जो यिहूदियों से पकड़ा गया था और उन से मार डाले
जाने पर था मैं ने यह सुनके कि वह रोमी है पलटन के संग
२८ जा पहुंचके छुड़ाया। और मैं जानने चाहता था कि वे
उस पर किस कारण से दोष लगाते हैं इस लिये उसे उन की
२९ न्याइयों की सभा में लाया। तब मैं ने यह पाया कि उन की
व्यवस्था के बिबादों के विषय में उस पर दोष लगाया जाता
है परन्तु बध किये जाने अथवा बांधे जाने के योग्य कोई
३० दोष उस में नहीं है। जब मुझे बताया गया कि यिहूदी
लोग इस मनुष्य की घात में लगेंगे तब मैं ने तुरन्त उस को
आप के पास भेजा और दोषदायकों को भी आज्ञा दिई कि उस
के बिरुद्ध जो बात होय उसे आप के आगे कहें. आगे शुभ।
३१ योद्धा लोग जैसे उन्हें आज्ञा दिई गई थी तैसे पावल
३२ को लेके रात ही को अन्तिपात्री नगर में लाये। दूसरे दिन वे
३३ गढ़ को लौटे और घुड़चढ़ों को उस के संग जाने दिया। उन्हों
ने कैसरिया में पहुंचके और अध्यक्ष को चिट्ठी देके पावल को
३४ भी उस के आगे खड़ा किया। अध्यक्ष ने पढ़के पूछा यह कौन
३५ प्रदेश का है और जब जाना कि किलिकिया का है. तब कहा
जब तेरे दोषदायक भी आवें तब मैं तेरी सुनूंगा. और उस
ने उसे हेरोद के राजभवन में पहरे में रखने की आज्ञा किई।

२४ चौवीसवां पर्ब्ब।

१ फीलिक्स के आगे यिहूदियों का पावल पर नालिश करना। १० पावल का उत्तर। २२ उस के विषय में फीलिक्स की आज्ञा। २४ उस का फीलिक्स और उस की पत्नी से धर्म्म की बात कहना।

पांच दिन के पीछे अननियाह महायाजक प्राचीनों के 1 और तर्त्तूल नाम किसी सुवक्ता के संग आया और उन्हों ने अध्यक्ष के आगे पावल पर नालिश किई। जब पावल 2 बुलाया गया तब तर्त्तूल यह कहके उस पर दोष लगाने लगा कि हे महामहिमन फीलिक्स आप के द्वारा हमारा बहुत कल्याण जो होता है और आप की प्रवीणता से इस देश के लोगों के लिये कितने काम जो सुफल होते हैं. इस को हम लोग सर्व्वथा और सर्व्वत्र बहुत धन्य मानके 3 ग्रहण करते हैं। परन्तु जिस्तें मेरी ओर से आप को 4 अधिक विलंब न होय मैं बिन्ती करता हूं कि आप अपनी सुशीलता से हमारी संक्षेप कथा सुन लीजिये। क्योंकि हम ने यही पाया है कि यह मनुष्य एक मरी के 5 ऐसा है और जगत के सारे यिहूदियों में बलवा करानेहारा और नासरियों के कुपन्थ का प्रधान। उस ने मन्दिर को भी 6 अपवित्र करने की चेष्टा किई और हम ने उसे पकड़के अपनी व्यवस्था के अनुसार विचार करने चाहा। परन्तु लुसिय 7 सहस्रपति ने आके बड़ी बरियाई से उस को हमारे हाथों से छीन लिया और उस के दोषदायकों को आप के पास आने की आज्ञा दिई। उसी से आप पूछके इन सब बातों के विषय में 8 जिन से हम उस पर दोष लगाते हैं आप ही जान सकेंगे। यिहूदियों ने भी उस के संग लगके कहा यह बातें यूं ही हैं। 9

तब पावल ने जब अध्यक्ष ने बोलने का सैन उस से किया 10 तब उत्तर दिया कि मैं यह जानके कि आप बहुत बरसों

से इस देश के लोगों के न्यायी हैं और ही साहस से अपने
११ विषय में की बातों का उत्तर देता हूं। क्योंकि आप जान
सकते हैं कि जब से मैं यिरूशलीम में भजन करने को आया
१२ मुझे बारह दिन से अधिक नहीं हुए। और उन्हों ने मुझे
न मन्दिर में न सभा के घरों में न नगर में किसी से बिबाद
१३ करते हुए अथवा लोगों की भीड़ लगाते हुए पाया। और
न वे उन बातों को जिन के बिषय में वे अब मुझ पर दोष
१४ लगाते हैं ठहरा सकते हैं। परन्तु यह मैं आप के आगे
मान लेता हूं कि जिस मार्ग को वे कुपन्थ कहते हैं उसी
की रीति पर मैं अपने पितरों के ईश्वर की सेवा करता हूं
और जो बातें व्यवस्था में औ भविष्यद्वक्ताओं के पुस्तक में
१५ लिखी हैं उन सभों का बिश्वास करता हूं. और ईश्वर
से आशा रखता हूं जिसे ये भी आप रखते हैं कि धर्म्मी
१६ और अधर्म्मी भी सब मृतकों का जी उठना होगा। इस
से मैं आप भी साधना करता हूं कि ईश्वर की और मनुष्यों
१७ की ओर मेरा मन सदा निर्दोष रहे। बहुत बरसों के पीछे
मैं अपने लोगों को दान देने को और चढ़ावा चढ़ाने को
१८ आया। इस में इन्हों ने नहीं पर आशिया के कितने यिहू-
दियों ने मुझे मन्दिर में शुद्ध किये हुए न भीड़ के संग और
१९ न धूमधाम के संग पाया। उन को उचित था कि जो मेरे
बिरुद्ध उन की कोई बात होय तो यहां आप के आगे होते
२० और मुझ पर दोष लगाते। अथवा ये ही लोग आप ही
कहें कि जब मैं न्याइयों की सभा के आगे खड़ा था तब
२१ उन्हों ने मुझ में कौन सा कुकर्म्म पाया. केवल इसी एक
बात के विषय में जो मैं ने उन के बीच में खड़ा होके पुकारा
कि मृतकों के जी उठने के विषय में मेरा बिचार आज तुम
से किया जाता है।

यह बातें सुनके फीलिक्स ने जो इस मार्ग की बातें २२ बहुत ठीक करके बूझता था उन्हें यह कहके टाल दिया कि जब लुसिय सहस्रपति आवे तब मैं तुम्हारे विषय में की बातें निर्णय करूंगा। और उस ने शतपति को आज्ञा २३ दिई कि पावल की रक्षा कर पर उस को अवकाश दे और उस के मित्रों में से किसी को उस की सेवा करने में अथवा उस पास आने में मत रोक।

कितने दिनों के पीछे फीलिक्स अपनी स्त्री द्रुसिल्ला के २४ संग जो यिहूदिनी थी आया और पावल को बुलवाके ख्रीष्ट पर विश्वास करने के विषय में उस की सुनी। और २५ जब वह धर्म्म और संयम के और आनेवाले विचार के विषय में बातें करता था तब फीलिक्स ने भयमान होके उत्तर दिया कि अब तो जा और अवसर पाके मैं तुझे बुलाऊंगा। वह यह आशा भी रखता था कि पावल २६ मुझे रुपैये देगा कि मैं उसे छोड़ देऊं इस लिये और भी बहुत बार उस को बुलवाके उस से बातचीत करता था। परन्तु जब दो बरस पूरे हुए तब पर्किय फीष्ट ने फीलिक्स २७ का काम पाया और फीलिक्स यिहूदियों का मन रखने की इच्छा कर पावल को बंधा हुआ छोड़ गया।

२५ पचीसवां पर्व्व।

१ फीष्ट का पावल के दोषदायकों को कैसरिया में बुलाना। ६ पावल का फीष्ट के आगे विचार होना और कैसर की दोहाई देना। १३ फीष्ट का पावल की बात अग्रिपा से कहना। २३ विचार स्थान में फीष्ट की कथा।

फीष्ट उस प्रदेश में पहुंचके तीन दिन के पीछे कैसरिया १ से यिरूशलीम को गया। तब महायाजक ने और यिहूदियों २ के बड़े लोगों ने उस के आगे पावल पर नालिश किई. और उस से बिन्ती कर उस के विरुद्ध यह अनुग्रह चाहा ३

कि वह उसे यिरूशलीम में मंगवाय क्योंकि वे उसे मार्ग में मार
४ डालने को घात लगाये हुए थे। फीष्ट ने उत्तर दिया कि पावल
कैसरिया में पहरे में रहता है और मैं आप वहां शीघ्र जाऊंगा।
५ फिर बोला तुम में से जो सामर्थी लोग हैं सो मेरे संग चलें और
जो इस मनुष्य में कुछ दोष होय तो उस पर दोष लगावें।
६ और उन के बीच में दस एक दिन रहके वह कैसरिया
को गया और दूसरे दिन बिचार आसन पर बैठके पावल
७ को लाने की आज्ञा किई। जब पावल आया तब जो यिहूदी
लोग यिरूशलीम से आये थे उन्हों ने आसपास खड़े होके
उस पर बहुत बहुत और भारी भारी दोष लगाये जिन का
८ प्रमाण वे नहीं दे सकते थे। परन्तु उस ने उत्तर दिया कि
मैं ने न यिहूदियों की व्यवस्था के न मन्दिर के न कैसर के बिरुद्ध
९ कुछ अपराध किया है। तब फीष्ट ने यिहूदियों का मन
रखने की इच्छा कर पावल को उत्तर दिया क्या तू यिरू-
शलीम को जाके वहां मेरे आगे इन बातों के विषय में बिचार
१० किया जायगा। पावल ने कहा मैं कैसर के बिचार आसन के
आगे खड़ा हूं जहां उचित है कि मेरा बिचार किया जाय.
यिहूदियों का जैसा आप भी अच्छी रीति से जानते हैं मैं ने
११ कुछ अपराध नहीं किया है। क्योंकि जो मैं अपराधी हूं और
बध के योग्य कुछ किया है तो मैं मृत्यु से छुड़ाया जाना नहीं
मांगता हूं परन्तु जिन बातों से ये मुझ पर दोष लगाते हैं यदि
उन में से कोई बात नहीं ठहरती है तो कोई मुझे उन्हों के
१२ हाथ नहीं सोंप सकता है. मैं कैसर की दोहाई देता हूं। तब
फीष्ट ने मंत्रियों की सभा के संग बात करके उत्तर दिया क्या
तू ने कैसर की दोहाई दिई है. तू कैसर के पास जायगा।
१३ जब कितने दिन बीत गये तब अग्रिपा राजा और
१४ बर्णीकी फीष्ट को नमस्कार करने को कैसरिया में आये। और

उन के बहुत दिन वहां रहते रहते फीष्ट ने पावल की कथा राजा को सुनाई कि एक मनुष्य है जिसे फीलिक्स बंध में छोड़ गया है। उस पर जब मैं यिरूशलीम में था तब प्रधान १५ याजकों ने और यिहूदियों के प्राचीनों ने नालिश किई और चाहा कि दंड की आज्ञा उस पर दिई जाय। परन्तु मैं ने १६ उन को उत्तर दिया रोमियों की यह रीति नहीं है कि जब लों वह जिस पर दोष लगाया जाता है अपने दोषदायकों के आम्ने साम्ने न हो और दोष के विषय में उत्तर देने का अवकाश न पाय तब लों किसी मनुष्य को नाश किये जाने के लिये सोंप देवें। सो जब वे यहां एकट्ठे हुए तब मैं ने कुछ १७ विलंब न करके अगले दिन बिचार आसन पर बैठके उस मनुष्य को लाने की आज्ञा किई। दोषदायकों ने उस के आस- १८ पास खड़े होके जैसे दोष मैं समझता था वैसा कोई दोष नहीं लगाया। परन्तु अपनी पूजा के विषय में और किसी १९ मरे हुए यीशु के विषय में जिसे पावल कहता था कि जीता है वे उस से कितने विवाद करते थे। मुझे इस विषय के २० विवाद में सन्देह था इस लिये मैं ने कहा क्या तू यिरूशलीम को जाके वहां इन बातों के विषय में विचार किया जायगा। परन्तु जब पावल ने दोहाई दे कहा मुझे अगस्त महाराजा २१ से विचार किये जाने को रखिये तब मैं ने आज्ञा दिई कि जब लों मैं उसे कैसर के पास न भेजूं तब लों उस की रक्षा किई जाय। तब अग्रिपा ने फीष्ट से कहा मैं आप भी उस मनुष्य की २२ सुनने से प्रसन्न होता. उस ने कहा आप कल उस की सुनेंगे।

सो दूसरे दिन जब अग्रिपा और बर्णीकी ने बड़ी धूम- २३ धाम से आके सहस्रपतियों और नगर के श्रेष्ठ मनुष्यों के संग समाज स्थान में प्रवेश किया और फीष्ट ने आज्ञा किई तब वे पावल को ले आये। और फीष्ट ने कहा हे राजा अग्रिपा और २४

हे सब मनुष्यो जो यहां हमारे संग हो आप लोग इस को देखते हैं जिस के विषय में सारे यिहूदियों ने यिरूशलीम में और यहां भी मुझ से बिन्ती करके पुकारा है कि इस का
२५ और जीता रहना उचित नहीं है। परन्तु यह जानके कि उस ने बध के योग्य कुछ नहीं किया है जब कि उस ने आप अगस्त महाराजा की दोहाई दिई मैं ने उसे भेजने को ठह-
२६ राया। परन्तु मैं ने उस के विषय में कोई निश्चय की बात नहीं पाई है जो मैं महाराजा के पास लिखूं इस लिये मैं उसे आप लोगों के साम्ने और निज करके हे राजा अग्रिपा आप के साम्ने लाया हूं कि बिचार किये जाने के पीछे मुझे कुछ लिखने को
२७ मिले। क्योंकि बन्धुवे को भेजने में दोष जो उस पर लगाये गये हैं नहीं बताना मुझे असंगत देख पड़ता है।

२६ छब्बीसवां पर्व्व ।

१ अग्रिपा के आगे पावल का उत्तर देना। २४ फीष्टु और अग्रिपा से पावल की बातचीत। ३० उस का निर्दोष ठहराया जाना।

१ अग्रिपा ने पावल से कहा तुझे अपने विषय में बोलने की आज्ञा दिई जाती है. तब पावल हाथ बढ़ाके उत्तर देने
२ लगा. कि हे राजा अग्रिपा जिन बातों से यिहूदी लोग मुझ पर दोष लगाते हैं उन सब बातों के बिषय में मैं अपने को
३ धन्य समझता हूं कि आज आप के आगे उत्तर देऊंगा. निज करके इसी लिये कि आप यिहूदियों के बीच के सब व्यवहारों और बिबादों को बूझते हैं. सो मैं आप से बिन्ती करता हूं
४ धीरज करके मेरी सुन लीजिये। लड़कपन से मेरी जैसी चाल चलन आरंभ से यिरूशलीम में मेरे लोगों के बीच में थी सो
५ सब यिहूदी लोग जानते हैं। वे जो साक्षी देने चाहते तो आदि से मुझे पहचानते हैं कि हमारे धर्म्म के सब से खरे
६ पन्थ के अनुसार मैं फरीशी की चाल चला। और अब जो

प्रतिज्ञा ईश्वर ने पितरों से किई मैं उसी की आशा के विषय में विचार किये जाने को खड़ा हूं . जिसे हमारे बारहों कुल ७ रात दिन यत्न से सेवा करते हुए पाने की आशा रखते हैं . इसी आशा के विषय में हे राजा अग्रिपा यिहूदी लोग मुझ पर दोष लगाते हैं।

आप लोगों के यहां यह क्यों विश्वास के अयोग्य जाना ८ जाता है कि ईश्वर मृतकों को जिलाता। मैं ने तो अपने में ९ समझा कि यीशु नासरी के नाम के विरुद्ध बहुत कुछ करना उचित है। और मैं ने यिरूशलीम में वही किया भी और १० प्रधान याजकों से अधिकार पाके पवित्र लोगों में से बहुतों को बन्दीगृहों में मूंद रखा और जब वे घात किये जाते थे तब मैं ने अपनी सम्मति दिई। और समस्त सभा के घरों में मैं बार बार ११ उन्हें ताड़ना देके यीशु की निन्दा करवाता था और उन पर अत्यन्त क्रोध से उन्मत्त होके बाहर के नगरों तक भी सताता था। इस बीच में जब मैं प्रधान याजकों से अधिकार और आज्ञा १२ लेके दमेसक को जाता था . तब हे राजा मार्ग में दो पहर १३ दिन को मैं ने स्वर्ग से सूर्य्य के तेज से अधिक एक ज्योति अपनी और अपने संग जानेहारों की चारों ओर चमकती हुई देखी। और जब हम सब भूमि पर गिर पड़े तब मैं ने एक शब्द सुना १४ जो मुझ से बोला और इब्रीय भाषा में कहा हे शावल हे शावल तू मुझे क्यों सताता है . पैनों पर लात मारना तेरे लिये कठिन है। तब मैं ने कहा हे प्रभु तू कौन है . उस ने १५ कहा मैं यीशु हूं जिसे तू सताता है। परन्तु उठके अपने १६ पांवों पर खड़ा हो क्योंकि मैं ने तुझे इसी लिये दर्शन दिया है कि उन बातों का जो तू ने देखी हैं और जिन में मैं तुझे दर्शन देऊंगा तुझे सेवक और साक्षी ठहराऊं। और मैं तुझे १७ तेरे लोगों से और अन्यदेशियों से बचाऊंगा जिन के पास मैं अब

१८ तुझे भेजता हूं . कि तू उन की आंखें खोले इस लिये कि वे अंधियारे से उजियाले की ओर और शैतान के अधिकार से ईश्वर की ओर फिरें जिस्तें पापमोचन और उन लोगों में जो मुझ पर बिश्वास करने से पवित्र किये गये हैं अधिकार पावें।

१९ सो हे राजा अग्रिपा मैं ने उस स्वर्गीय दर्शन की बात न २० टाली . परन्तु पहिले दमेसक और यिरूशलीम के निवासियों को तब यिहूदिया के सारे देश में और अन्यदेशियों को पश्चात्ताप करने का और ईश्वर की ओर फिरने का और पश्चात्ताप के योग्य काम करने का उपदेश दिया। २१ इन बातों के कारण यिहूदी लोग मुझे मन्दिर में पकड़के मार डालने की २२ चेष्टा करते थे। सो ईश्वर से सहायता पाके मैं छोटे और बड़े को साक्षी देता हुआ आज लों ठहरा हूं और उन बातों को छोड़ कुछ नहीं कहता हूं जो भविष्यद्वक्ताओं ने और मूसा ने भी २३ कहा कि होनेवाली हैं . अर्थात ख्रीष्ट को दुःख भोगना होगा और वही मृतकों में से पहिले उठके हमारे लोगों को और अन्यदेशियों को ज्योति की कथा सुनावेगा।

२४ जब वह यह उत्तर देता था तब फीष्ट ने बड़े शब्द से कहा हे पावल तू बौड़हा है बहुत बिद्या तुझे बौड़हा करती है। २५ पर उस ने कहा हे महामहिमन फीष्ट मैं बौड़हा नहीं हूं परन्तु २६ सच्चाई और बुद्धि की बातें कहता हूं। इन बातों को राजा बूझता है जिस के आगे मैं खोलके बोलता हूं क्योंकि मैं निश्चय जानता हूं कि इन बातों में से कोई बात उस से छिपी नहीं २७ है कि यह तो कोने में नहीं किया गया है। हे राजा अग्रिपा क्या आप भविष्यद्वक्ताओं का बिश्वास करते हैं . मैं जानता २८ हूं कि आप बिश्वास करते हैं। तब अग्रिपा ने पावल से कहा २९ तू थोड़े में मुझे ख्रीष्टियान होने को मनाता है। पावल ने कहा ईश्वर से मेरी प्रार्थना यह है कि क्या थोड़े में क्या बहुत में

केवल आप नहीं परन्तु सब लोग भी जो आज मेरी सुनते हैं इन बन्धनों को छोड़के ऐसे हो जायें जैसा मैं हूं।

जब उस ने यह कहा तब राजा और अध्यक्ष और ३० बर्णीकी और उन के संग बैठनेहारे उठे. और अलग ३१ जाके आपस में बोले यह मनुष्य बध किये जाने अथवा बांधे जाने के योग्य कुछ नहीं करता है। तब अग्रिपा ने ३२ फीष्ट से कहा जो यह मनुष्य कैसर की दोहाई न दिये होता तो छोड़ा जा सकता।

२७ सताईसवां पर्ब्ब।

१ पावल का जहाज पर चढ़ाया जाना और रोम नगर की ओर जाना। ९ पावल का परामर्श और लोगों का उसे न मानना। १३ बड़ी आंधी का उठना। २१ पावल का लोगों को समझाना और मल्लाहों का समाचार। ३९ जहाज का टूटना और लोगों का बच निकलना।

जब यह ठहराया गया कि हम जहाज पर इतलिया को १ जायें तब उन्हों ने पावल को और कितने और बन्धुवों को भी यूलिय नाम अगस्त की पलटन के एक शतपति के हाथ सौंप दिया। और आद्रामुतिया नगर के एक जहाज पर जो आशि- २ या के तीर पर के स्थानों को जाता था चढ़के हम ने खोल दिया और अरिस्तार्ख नाम थिसलोनिका का एक माकिदोनी हमारे संग था। दूसरे दिन हम ने सीदोन में लगान किया ३ और यूलिय ने पावल के साथ प्रेम से व्यवहार करके उसे मित्रों के पास जाने और पाहुन होने दिया। वहां से खोलके ४ बयार के सन्मुख होने के कारण हम कुप्रस के नीचे से होके चले. और किलिकिया और पंफुलिया के निकट के समुद्र में होके ५ लुकिया देश के मुरा नगर पहुंचे। वहां शतपति ने सिकन्द- ६ रिया के एक जहाज को जो इतलिया को जाता था पाके हमें उस पर चढ़ाया। बहुत दिनों में हम धीरे धीरे चलके और ७

बयार जो हमें चलने न देती थी इस लिये कठिनता से कनीद के साम्ने पहुंचके सलमोनी के आम्ने साम्ने क्रीती के नीचे चले.
८ और कठिनता से उस के पास से होते हुए शुभलंगरबारी नाम एक स्थान में पहुंचे जहां से लासेया नगर निकट था।
९ जब बहुत दिन बीत गये थे और जलयात्रा में जोखिम होती थी क्योंकि उपवास पर्व्व भी अब बीत चुका था तब
१० पावल ने उन्हें समझाके कहा . हे मनुष्यो मुझे सूझ पड़ता है कि इस जलयात्रा में हानि और बहुत टूटी केवल बोझाई और जहाज की नहीं परन्तु हमारे प्राणों की भी हुआ चाहती
११ है। परन्तु शतपति ने पावल की बातों से अधिक मांझी की
१२ और जहाज के स्वामी की मान लिई। और वह लंगरबारी जाड़े का समय काटने को अच्छी न थी इसलिये बहुतेरों ने परामर्श दिया कि वहां से भी खोलके जो किसी रीति से हो सके तो फैनीकी नाम क्रीती की एक लंगरबारी में जो दक्षिण पश्चिम और उत्तर पश्चिम की ओर खुलती है जा रहें और वहां जाड़े का समय काटें।
१३ जब दक्षिण की बयार मन्द मन्द बहने लगी तब उन्हों ने यह समझके कि हमारा अभिप्राय सुफल हुआ है लंगर
१४ उठाया और तीर धरे धरे क्रीती के पास से जाने लगे। परन्तु थोड़ी बेर में क्रीती पर से अति प्रचण्ड एक बयार उठी जो
१५ उरकलूदन कहावती है। यह जब जहाज पर लगी और वह बयार के साम्ने ठहर न सका तब हम ने उसे जाने दिया
१६ और उड़ाये हुए चले गये। तब क्लौदा नाम एक छोटे टापू
१७ के नीचे से जाके हम कठिनता से डिंगी को धर सके। उसे उठाके उन्हों ने अनेक उपाय करके जहाज को नीचे से बांधा और सुर्त्ती नाम चड़ पर टिक जाने के भय से मस्तूल गिराके
१८ यूं हीं उड़ाये जाते थे। तब निपट बड़ी आंधी हम पर चलती

थी इस लिये उन्हों ने दूसरे दिन कुछ बोझाई फेंक दिई। और तीसरे दिन हम ने अपने हाथों से जहाज की सामग्री १९ फेंक दिई। और जब बहुत दिनों तक न सूर्य्य न तारे दिखाई २० दिये और बड़ी आंधी चलती रही अन्त में हमारे बचने की सारी आशा जाती रही।

जब वे बहुत उपवास कर चुके तब पावल ने उन के बीच २१ में खड़ा होके कहा हे मनुष्यो उचित था कि तुम मेरी बात मानते और क्रीती से न खोलते न यह हानि और टूटी उठाते। पर अब मैं तुम से बिन्ती करता हूं कि ढाढ़स बांधो २२ क्योंकि तुम्हों में से किसी के प्राण का नाश न होगा केवल जहाज का। क्योंकि ईश्वर जिस का मैं हूं और जिस की सेवा २३ करता हूं उस का एक दूत इसी रात मेरे निकट खड़ा हुआ. और कहा हे पावल मत डर तुझे कैसर के आगे खड़ा होना २४ अवश्य है और देख ईश्वर ने सभों को जो तेरे संग जलयात्रा करते हैं तुझे दिया है। इस लिये हे मनुष्यो ढाढ़स बांधो २५ क्योंकि मैं ईश्वर का विश्वास करता हूं कि जिस रीति से मुझे कहा गया है उसी रीति से होगा। परन्तु हमें किसी २६ टापू पर पड़ना होगा।

जब चौदहवीं रात पहुंची ज्यों ही हम आद्रिया समुद्र २७ में इधर उधर उड़ाये जाते थे त्यों ही आधी रात के निकट मल्लाहों ने जाना कि हम किसी देश के समीप पहुंचते हैं। और थाह लेके उन्हों ने बीस पुरसे पाये और थोड़ा आगे २८ बढ़के फिर थाह लेके पन्द्रह पुरसे पाये। तब पत्थरैले स्था- २९ नों पर टिक जाने के डर से उन्हों ने जहाज की पिछाड़ी से चार लंगर डाले और भोर का होना मनाते रहे। परन्तु जब मल्लाह ३० लोग जहाज पर से भागने चाहते थे और गलही से लंगर डालने के बहाना से डिंगी समुद्र में उतार दिई. तब पावल ने शत- ३१

पति से श्रीर योद्धाओं से कहा जो ये लोग जहाज पर न रहें
३२ तो तुम नहीं बच सकते हो । तब योद्धाओं ने डिंगी के
रस्से काटके उसे गिरा दिया ।

३३ जब भोर होने पर थी तब पावल ने यह कहके सभों से
भोजन करने की बिन्ती किई कि आज चौदह दिन हुए कि
तुम लोग आस देखते हुए उपवासी रहते हो श्रीर कुछ
३४ भोजन न किया है। इस लिये मैं तुम से बिन्ती करता हूं कि
भोजन करो जिस से तुम्हारा बचाव होगा क्योंकि तुम में से
३५ किसी के सिर से एक बाल न गिरेगा। श्रीर यह बातें कहके
श्री रोटी लेके उस ने सभों के साम्ने ईश्वर का धन्य माना
३६ श्रीर तोड़के खाने लगा। तब उन सभों ने भी ढाढ़स बांधके
३७ भोजन किया। हम सब जो जहाज पर थे दो सौ छिहत्तर
३८ जन थे। भोजन से तृप्त होके उन्हों ने गेहूं को समुद्र में फेंकके
जहाज को हलका किया ।

३९ जब बिहान हुआ तब वे उस देश को नहीं चीन्हते थे
परन्तु किसी खाल को देखा जिस का चौरस तीर था श्रीर
बिचार किया कि जो हो सके तो इसी पर जहाज को टिकावें।
४० तब उन्हों ने लंगरों को काटके समुद्र में छोड़ दिया श्रीर उसी
समय पतवारों के बंधन खोल दिये श्रीर बयार के सन्मुख पाल
४१ चढ़ाके तीर की श्रीर चले। परन्तु दो समुद्रों के संगम के स्थान
में पड़के उन्हों ने जहाज को टिकाया श्रीर गलही तो गड़ गई
श्रीर हिल न सकी परन्तु पिछाड़ी लहरों की बरियाई से टूट
४२ गई। तब योद्धाओं का यह परामर्श था कि बन्धुओं को मार
४३ डालें ऐसा न हो कि कोई पैरके निकल भागे। परन्तु शत-
पति ने पावल को बचाने की इच्छा से उन्हें उस मत से रोका
श्रीर जो पैर सकते थे उन्हें आज्ञा दिई कि पहिले कूदके
४४ तीर पर निकल चलें. श्रीर दूसरों को कि कोई पटरों पर

और कोई जहाज में की वस्तुओं पर निकल जायें. इस रीति से सब कोई तीर पर बच निकले।

२८ अठाईसवां पर्ब्ब।

१ मलिता टापू के लोगों का शिष्टाचार। ३ पावल का सांप के काटने से कुछ दुःख न पाना। ७ पवलिय के पिता को और दूसरों को चंगा करना। ११ रोम नगर की ओर जाना और मार्ग में भाइयों से भेंट करना। १६ रोम में यिहूदियों से बात करना और सुसमाचार सुनाना।

जब वे बच गये तब जाना कि यह टापू मलिता कहा- १
वता है। और उन जंगली लोगों ने हमों से अनोखा प्रेम २
किया क्योंकि मेंह के कारण जो पड़ता था और जाड़े के
कारण उन्हों ने आग सुलगाके हम सभों को ग्रहण किया।

जब पावल ने बहुत सी लकड़ी बटोरके आग पर रखी तब ३
एक सांप ने आंच से निकलके उस का हाथ धर लिया। और ४
जब उन जंगलियों ने सांप को उस के हाथ में लटकते हुए देखा
तब आपस में कहा निश्चय यह मनुष्य हत्यारा है जिसे
यद्यपि समुद्र से बच गया तौभी दंडदायक ने जीते रहने नहीं
दिया है। तब उस ने सांप को आग में झटक दिया और कुछ ५
दुःख न पाया। पर वे बाट देखते थे कि वह सूज जायगा ६
अथवा अचांचक मरके गिर पड़ेगा परन्तु जब वे बड़ी बेर लों
बाट देखते रहे और देखा कि उस का कुछ नहीं बिगड़ता
है तब और ही विचार कर कहा यह तो देवता है।

उस स्थान के आसपास पवलिय नाम उस टापू के प्रधान ७
की भूमि थी. उस ने हमें ग्रहण करके तीन दिन प्रीतिभाव
से पहुनई किई। पवलिय का पिता ज्वर से और आंवलोहू ८
से रोगी पड़ा था सो पावल ने उस पास घर में प्रवेश करके
प्रार्थना किई और उस पर हाथ रखके उसे चंगा किया।
जब यह हुआ था तब दूसरे लोग भी जो उस टापू में रोगी ९
थे आके चंगे किये गये। और उन्हों ने हम लोगों का बहुत १०

आदर किया और जब हम खोलने पर थे तब जो कुछ आवश्यक था सो दे दिया ।

११ तीन मास के पीछे हम लोग सिकन्दरिया के एक जहाज पर जिस ने उस टापू में जाड़े का समय काटा था जिस का चिन्ह
१२ दियस्कूरे था चल निकले । सुराकूस नगर में लगान करके हम
१३ तीन दिन रहे । वहां से हम घूमके रीगिया नगर पहुंचे और एक दिन के पीछे दक्षिण की बयार जो उठी तो दूसरे दिन
१४ पुतियली नगर में आये । वहां भाइयों को पाके हम उन के यहां सात दिन रहने को बुलाये गये और इसी रीति से रोम को
१५ चले । वहां से भाई लोग हमारा समाचार सुनके अप्पिय-चौक और तीन सराय लों हम से मिलने को निकल आये जिन्हें देखके पावल ने ईश्वर का धन्य मानके ढाढ़स बांधा ।

१६ जब हम रोम में पहुंचे तब शतपति ने बन्धुवों को सेना-पति के हाथ सौंप दिया परन्तु पावल को एक योद्धा के संग जो उस की रक्षा करता था अकेला रहने की आज्ञा हुई ।
१७ तीन दिन के पीछे पावल ने यिहूदियों के बड़े बड़े लोगों को एकट्ठे बुलाया और जब वे एकट्ठे हुए तब उन से कहा हे भाइयो मैं ने हमारे लोगों के अथवा पितरों के व्यवहारों के बिरुद्ध कुछ नहीं किया था तौभी बन्धुआ होके यिरूशलीम से
१८ रोमियों के हाथ में सौंपा गया । उन्हों ने मुझे जांचके छोड़ देने चाहा क्योंकि मुझ में बध के योग्य कोई दोष न था ।
१९ परन्तु जब यिहूदी लोग इस के बिरुद्ध बोलने लगे तब मुझे कैसर की दोहाई देना अवश्य हुआ पर यह नहीं कि मुझे
२० अपने लोगों पर कोई दोष लगाना है । इस कारण से मैं ने आप लोगों को बुलाया कि आप लोगों को देखके बात करूं क्यों-कि इस्रायेल की आशा के लिये मैं इस जंजीर से बन्धा हुआ
२१ हूं । तब वे उस से बोले न हमों ने आप के विषय में यिहूदिया

से चिट्ठियां पाईं न भाइयों में से किसी ने आके आप के विषय में बुरा कुछ बताया अथवा कहा। परन्तु आप का मत क्या २२ है सो हम आप से सुना चाहते हैं क्योंकि इस पन्थ के विषय में हम जानते हैं कि सर्व्वच उस के बिरुद्ध में बातें किई जाती हैं। सो उन्हों ने उस को एक दिन ठहराया और बहुत लोग २३ बासे पर उस पास आये जिन से वह ईश्वर के राज्य की साक्षी देता हुआ और यीशु के विषय में की बातें उन्हें मूसा की व्यवस्था से और भविष्यद्वक्ताओं के पुस्तक से भी समझाता हुआ भोर से सांझ लों चर्चा करता रहा। तब कितनों ने उन बातों २४ को मान लिया और कितनों ने प्रतीति न किई। सो वे २५ आपस में एक मत न होके जब पावल ने उन से एक बात कही थी तब बिदा हुए कि पवित्र आत्मा ने हमारे पितरों से यिशैयाह भविष्यद्वक्ता के द्वारा से अच्छा कहा. कि इन २६ लोगों के पास जाके कह तुम सुनते हुए सुनोगे परन्तु नहीं बूझोगे और देखते हुए देखोगे पर तुम्हें न सूझेगा। क्योंकि २७ इन लोगों का मन मोटा हो गया है और वे कानों से ऊंचा सुनते हैं और अपने नेच मून्द लिये हैं ऐसा न हो कि वे कभी नेचों से देखें और कानों से सुनें और मन से समझें और फिर जावें और मैं उन्हें चंगा करूं। सो तुम जानो कि २८ ईश्वर के चाण की कथा अन्यदेशियों के पास भेजी गई है और वे सुनेंगे। जब वह यह बातें कह चुका तब यिहूदी २९ लोग आपस में बहुत बिबाद करते हुए चले गये।

और पावल ने दो बरस भर अपने भाड़े के घर में रहके ३० सभों को जो उस पास आते थे ग्रहण किया. और बिना ३१ रोक टोक बड़े साहस से ईश्वर के राज्य की कथा सुनाता और प्रभु यीशु खीष्ट के विषय में की बातें सिखाता रहा॥

रोमियों को पावल प्रेरित की पत्री।

१ पहिला पर्ब्ब।

१ पत्री का आभाष। ८ पावल की रोमियों को सुसमाचार सुनाने की इच्छा। १४ सुसमाचार के गुण। १८ मूर्त्ति पूजने में मनुष्यों के दोषी होने का प्रमाण। २४ मूर्त्तिपूजकों के बड़े बड़े पापों का बर्णन।

१ पावल जो यीशु ख्रीष्ट का दास और बुलाया हुआ प्रेरित और ईश्वर के सुसमाचार के लिये अलग किया गया
२ है. वह सुसमाचार जिस की प्रतिज्ञा उस ने अपने भविष्य-
३ द्वक्ताओं के द्वारा धर्म्मपुस्तक में आगे से किई थी. अर्थात उस के पुत्र हमारे प्रभु यीशु ख्रीष्ट के विषय में का सुसमाचार
४ जो शरीर के भाव से दाऊद के बंश में से उत्पन्न हुआ. और पवित्रता के आत्मा के भाव से मृतकों के जी उठने से पराक्रम
५ सहित ईश्वर का पुत्र ठहराया गया. जिस से हम ने अनु-ग्रह औ प्रेरिताई पाई है कि उस के नाम के कारण सब
६ देशों के लोग बिश्वास से आज्ञाकारी हो जायें. जिन्हों में
७ तुम भी यीशु ख्रीष्ट के बुलाये हुए हो. रोम के उन सब निवासियों को जो ईश्वर के प्यारे और बुलाये हुए पवित्र लोग हैं. तुम्हें हमारे पिता ईश्वर और प्रभु यीशु ख्रीष्ट से अनुग्रह और शांति मिले।

८ पहिले मैं यीशु ख्रीष्ट के द्वारा से तुम सभों के लिये अपने ईश्वर का धन्य मानता हूं कि तुम्हारे बिश्वास का चर्चा
९ सारे जगत में किया जाता है। क्योंकि ईश्वर जिस की सेवा मैं अपने मन से उस के पुत्र के सुसमाचार में करता हूं मेरा साक्षी है कि मैं तुम्हें कैसे निरन्तर स्मरण करता हूं.
१० और नित्य अपनी प्रार्थनाओं में बिन्ती करता हूं कि किसी

रीति से अब भी तुम्हारे पास जाने को मेरी यात्रा ईश्वर की इच्छा से सुफल होय। क्योंकि मैं तुम्हें देखने की लालसा ११ करता हूं कि मैं कोई आत्मिक वरदान तुम्हारे संग बांट लेऊं जिस्तें तुम स्थिर किये जावो. अर्थात कि मैं तुम्हों १२ में अपने अपने परस्पर विश्वास के द्वारा से तुम्हारे संग शांति पाऊं। परन्तु हे भाइयो मैं नहीं चाहता हूं कि तुम १३ इस से अनजान रहो कि मैं ने बहुत बार तुम्हारे पास जाने का विचार किया जिस्तें जैसा दूसरे अन्यदेशियों में तैसा तुम्हों में भी मेरा कुछ फल होवे परन्तु अब लों मैं रोका रहा।

मैं यूनानियों औ अन्यभाषियों का और बुद्धिमानों औ १४ निर्बुद्धियों का ऋणी हूं। यूं मैं तुम्हें भी जो रोम में रहते १५ हो सुसमाचार सुनाने को तैयार हूं। क्योंकि मैं खीष्ट के १६ सुसमाचार से नहीं लजाता हूं इस लिये कि हर एक विश्वास करनेहारे के लिये पहिले यिहूदी फिर यूनानी के लिये वह त्राण के निमित्त ईश्वर का सामर्थ्य है। क्योंकि उस में ईश्वर १७ का धर्म्म विश्वास से विश्वास के लिये प्रगट किया जाता है जैसा लिखा है कि विश्वास से धर्म्मी जन जीयेगा।

जो मनुष्य सच्चाई को अधर्म्म से रोकते हैं उन की सारी १८ अभक्ति और अधर्म्म पर ईश्वर का क्रोध स्वर्ग से प्रगट किया जाता है। इस कारण कि ईश्वर के विषय का ज्ञान उन में १९ प्रगट है क्योंकि ईश्वर ने उन पर प्रगट किया। क्योंकि २० जगत की सृष्टि से उस के अदृश्य गुण अर्थात उस के सनातन सामर्थ्य और ईश्वरत्व देखे जाते हैं क्योंकि वे उस के कार्य्यों से पहचाने जाते हैं यहां लों कि वे मनुष्य निरुत्तर हैं। इस कारण कि उन्हों ने ईश्वर को जानके न ईश्वर के २१ योग्य गुणानुवाद किया न धन्य माना परन्तु अनर्थक वाद विचार करने लगे और उन का निर्बुद्धि मन अंधियारा

२२ २३ हो गया । वे अपने को ज्ञानी कहके मूर्ख बन गये . और अविनाशी ईश्वर की महिमा को नाशमान मनुष्य और पंछियों और चौपायों और रेंगनेहारे जन्तुओं की मूर्त्ति की समानता से बदल डाला ।

२४ इस कारण ईश्वर ने उन्हें उन के मन के अभिलाषों के अनुसार अशुद्धता के लिये त्याग दिया कि वे आपस में २५ अपने शरीरों का अनादर करें . जिन्हों ने ईश्वर की सच्चाई को झूठ से बदल डाला और सृष्टि की पूजा और सेवा सृजनहार की पूजा और सेवा से अधिक किई जो सर्ब्बदा २६ धन्य है . आमीन । इस हेतु से ईश्वर ने उन्हें नीच कामनाओं के बश में त्याग दिया कि उन की स्त्रियों ने भी स्वाभाविक व्यवहार को उस से जो स्वभाव के बिरुद्ध है बदल २७ डाला । वैसे ही पुरुष भी स्त्री के संग स्वाभाविक व्यवहार छोड़के अपनी कामुकता से एक दूसरे की ओर जलने लगे और पुरुषों के साथ पुरुष निर्लज्ज कर्म्म करते थे और अपने भ्रम का फल जो उचित था अपने में भोगते थे । २८ और ईश्वर को चित्त में रखना जब कि उन्हें अच्छा न लगा इस लिये ईश्वर ने उन्हें निकृष्ट मन के बश में त्याग २९ दिया कि वे अनुचित कर्म्म करें . और सारे अधर्म्म औ व्यभिचार औ दुष्टता औ लोभ औ बुराई से भरे हुए और डाह औ नरहिंसा औ बैर औ छल औ दुर्भाव से भरपूर हों . ३० और फुसफुसिये अपबादी ईश्वरद्रोही निन्दक अभिमानी दंभी बुरी बातों के बनानेहारे माता पिता की आज्ञा लंघन ३१ करनेहारे . निर्बुद्धि झूठे मयारहित क्षमारहित औ निर्द्दय ३२ होवें . जो ईश्वर की बिधि जानते हैं कि ऐसे ऐसे काम करनेहारे मृत्यु के योग्य हैं तौभी न केवल उन कामों को करते हैं परन्तु करनेहारों से प्रसन्न भी होते हैं ।

२ दूसरा पर्व्व।

१ जो औरों को दोषी ठहरावें उन्हें समझाने के लिये उपदेश। १२ अन्यदेशियों के विषय में ईश्वर का यथार्थ विचार। १७ यिहूदियों के दोष का प्रमाण। २५ खतने से उन का बचाव न होना।

सो हे मनुष्य तू कोई हो जो दूसरों का विचार करता हो तू निरुत्तर है. जिस बात में तू दूसरे का विचार करता है उसी बात में अपने को दोषी ठहराता है क्योंकि तू जो विचार करता है आप ही वे ही काम करता है। १ पर हम जानते हैं कि ऐसे ऐसे काम करनेहारों पर ईश्वर की दंड की आज्ञा यथार्थ है। २ और हे मनुष्य जो ऐसे ऐसे काम करनेहारों का विचार करता और आप ही वे ही काम करता है क्या तू यही समझता कि मैं तो ईश्वर की दंड की आज्ञा से बचूंगा। ३ अथवा क्या तू उस की कृपा औ सहनशीलता औ धीरज के धन को तुच्छ जानता है और यह नहीं बूझता है कि ईश्वर की कृपा तुझे पश्चात्ताप करने को सिखाती है. ४ परन्तु अपनी कठोरता और निःपश्चात्तापी मन के हेतु से अपने लिये क्रोध के दिन लों हां ईश्वर के यथार्थ विचार के प्रगट होने के दिन लों क्रोध का संचय करता है। ५ वह हर एक मनुष्य को उस के कर्म्मों के अनुसार फल देगा। ६ जो सुकर्म्म में स्थिर रहने से महिमा और आदर और अमरता ढूंढ़ते हैं उन्हें वह अनन्त जीवन देगा। ७ परन्तु जो विवादी हैं और सत्य को नहीं मानते पर अधर्म्म को मानते हैं उन पर कोप औ क्रोध पड़ेगा। ८ हर एक मनुष्य के प्राण पर जो बुरा करता है क्लेश और संकट पड़ेगा पहिले यिहूदी फिर यूनानी के। ९ पर हर एक को जो भला करता है महिमा और आदर और कल्याण होगा पहिले यिहूदी फिर यूनानी को। १० क्योंकि ईश्वर के यहां पक्षपात नहीं है। ११

१२ क्योंकि जितने लोगों ने बिना व्यवस्था पाप किया है सो बिना व्यवस्था नाश भी होंगे और जितने लोगों ने व्यवस्था पाके पाप किया है सो व्यवस्था के द्वारा से दंड के
१३ योग्य ठहराये जायेंगे। क्योंकि व्यवस्था के सुननेहारे ईश्वर के यहां धर्म्मी नहीं हैं परन्तु व्यवस्था पर चलनेहारे धर्म्मी
१४ ठहराये जायेंगे। फिर जब अन्यदेशी लोग जिन के पास व्यवस्था नहीं है स्वभाव से व्यवस्था की बातों पर चलते हैं तब यद्यपि व्यवस्था उन के पास नहीं है तौभी वे अपने
१५ लिये आप ही व्यवस्था हैं। वे व्यवस्था का कार्य्य अपने अपने हृदय में लिखा हुआ दिखाते हैं और उन का मन भी साक्षी देता है और उन की चिन्ताएं परस्पर दोष लगातीं
१६ अथवा दोष का उत्तर देती हैं। यह उस दिन होगा जिस दिन ईश्वर मेरे सुसमाचार के अनुसार यीशु ख्रीष्ट के द्वारा से मनुष्यों की गुप्त बातों का बिचार करेगा।

१७ देख तू यिहूदी कहावता है और व्यवस्था पर भरोसा
१८ रखता है और ईश्वर के विषय में घमंड करता है . और उस की इच्छा को जानता है और व्यवस्था की शिक्षा पाके
१९ विशेष्य बातों को परखता है . और अपने पर भरोसा रखता है कि मैं अन्धों का अगुवा और अन्धकार में रहनेहारों का
२० प्रकाश . और निर्बुद्धियों का शिक्षक और बालकों का उपदेशक हूं और ज्ञान औ सच्चाई का रूप मुझे व्यवस्था में
२१ मिला है। सो क्या तू जो दूसरे को सिखाता है अपने को नहीं सिखाता है . क्या तू जो चोरी न करने का उपदेश
२२ देता है आप ही चोरी करता है। क्या तू जो परस्त्रीगमन न करने को कहता है आप ही परस्त्रीगमन करता है . क्या तू जो मूरतों से घिन करता है पवित्र बस्तु
२३ चुराता है। क्या तू जो व्यवस्था के विषय में घमंड करता

है व्यवस्था को लंघन करने से ईश्वर का अनादर करता है। क्योंकि जैसा लिखा है तैसा ईश्वर का नाम तुम्हारे २४ कारण अन्यदेशियों में निन्दित होता है।

जो तू व्यवस्था पर चले तो खतने से लाभ है परन्तु २५ जो तू व्यवस्था को लंघन किया करे तो तेरा खतना अखतना हो गया है। सो यदि खतनाहीन मनुष्य व्यवस्था २६ की विधियों का पालन करे तो क्या उस का अखतना खतना न गिना जायगा। और जो मनुष्य प्रकृति से खतनाहीन २७ होके व्यवस्था को पूरी करे सो क्या तुझे जो लेख और खतना पाके व्यवस्था को लंघन किया करता है दोषी न ठहरावेगा। क्योंकि जो प्रगट में यिहूदी है सो यिहूदी २८ नहीं और खतना जो प्रगट में अर्थात देह में है सो खतना नहीं। परन्तु यिहूदी वह है जो गुप्त में यिहूदी है और २९ मन का खतना जो लेख से नहीं पर आत्मा में है सोई खतना है. ऐसे यिहूदी की प्रशंसा मनुष्यों की नहीं पर ईश्वर की ओर से है।

३ तीसरा पर्ब्ब।

१ यिहूदी होने का फल। ५ ईश्वर का विचार यथार्थ होने का प्रमाण। ९ सारे मनुष्यों के पापों का वर्णन। १९ व्यवस्था के अनुसार सभों का दोषी होना। २१ यीशु के द्वारा से विश्वासियों के धर्म्मी ठहराये जाने का उपाय। २७ इस मत से अभिमान का नाश और यिहूदी औ अन्यदेशी का मेल और व्यवस्था का स्थापन।

तो यिहूदी की क्या श्रेष्ठता हुई अथवा खतने का क्या १ लाभ हुआ। सब प्रकार से बहुत कुछ. पहिले यह कि २ ईश्वर की वाणियां उन के हाथ सौंपी गईं। जो कितनों ने ३ विश्वास न किया तो क्या हुआ. क्या उन का अविश्वास ईश्वर के विश्वास को व्यर्थ ठहरावेगा। ऐसा न हो. ईश्वर ४ सच्चा पर हर एक मनुष्य झूठा होय जैसा लिखा है कि

जिस्तें तू अपनी बातों में निर्दोष ठहराया जाय और तेरा बिचार किये जाने में तू जय पावे ।

५ परन्तु यदि हमारा अधर्म्म ईश्वर के धर्म्म पर प्रमाण देता है तो हम क्या कहें . क्या ईश्वर जो क्रोध करता है अन्यायी है . इस को मैं मनुष्य की रीति पर कहता हूं ।
६ ऐसा न हो . नहीं तो ईश्वर क्योंकर जगत का बिचार
७ करेगा । परन्तु यदि ईश्वर की सच्चाई उस की महिमा के लिये मेरी झुठाई के हेतु से अधिक करके प्रगट हुई तो मैं क्यों अब भी पापी की नाईं दंड के योग्य ठहराया जाता
८ हूं । तो क्या यह भी न कहा जाय जैसा हमारी निन्दा किई जाती है और जैसा कितने लोग बोलते कि हम कहते हैं कि आओ हम बुराई करें जिस्तें भलाई निकले . ऐसों पर दंड की आज्ञा यथार्थ है ।

९ तो क्या . क्या हम उन से अच्छे हैं . कभी नहीं क्योंकि हम प्रमाण दे चुके हैं कि यिहूदी और यूनानी भी
१० सब पाप के बश में हैं . जैसा लिखा है कि कोई धर्म्मी
११ जन नहीं है एक भी नहीं . कोई बूझनेहारा नहीं कोई
१२ ईश्वर का ढूंढ़नेहारा नहीं । सब लोग भटक गये हैं वे सब एक संग निकम्मे हुए हैं कोई भलाई करनेहारा नहीं
१३ एक भी नहीं है । उन का गला खुली हुई कबर है उन्हों ने अपनी जीभों से छल किया है सांपों का बिष उन के
१४ होंठों के नीचे है . और उन का मुंह स्राप औ कड़वाहट
१५ से भरा है । उन के पांव लोहू बहाने को फुर्त्तीले हैं ।
१६ १७ उन के मार्गों में नाश और क्लेश है . और उन्हों ने कुशल
१८ का मार्ग नहीं जाना है । उन के नेत्रों के आगे ईश्वर का कुछ भय नहीं है ।

१९ हम जानते हैं कि व्यवस्था जो कुछ कहती है सो

उन के लिये कहती है जो व्यवस्था के अधीन हैं इस लिये कि हर एक मुंह बन्द किया जाय और सारा संसार ईश्वर के आगे दंड के योग्य ठहरे। इस कारण कि २० व्यवस्था के कर्म्मों से कोई प्राणी उस के आगे धर्म्मी नहीं ठहराया जायगा क्योंकि व्यवस्था के द्वारा पाप की पहचान होती है।

पर अब व्यवस्था से न्यारे ईश्वर का धर्म्म प्रगट हुआ २१ है जिस पर व्यवस्था और भविष्यद्वक्ता लोग साक्षी देते हैं। और यह ईश्वर का धर्म्म यीशु ख्रीष्ट पर बिश्वास २२ करने से सभों के लिये और सभों पर है जो बिश्वास करते हैं क्योंकि कुछ भेद नहीं है। क्योंकि सभों ने पाप किया २३ है और ईश्वर की प्रशंसा योग्य नहीं होते हैं. पर उस के २४ अनुग्रह से उस उद्धार के द्वारा जो ख्रीष्ट यीशु से है संतमेंत धर्म्मी ठहराये जाते हैं। उस को ईश्वर ने प्रायश्चित्त २५ स्थापन किया कि बिश्वास के द्वारा उस के लोहू से प्रायश्चित्त होवे जिस्तें आगे किये हुए पापों से ईश्वर की सहनशीलता से आनाकानी जो किई गई तिस के कारण वह अपना धर्म्म प्रगट करे. हां इस वर्त्तमान समय में २६ अपना धर्म्म प्रगट करे यहां लों कि यीशु के बिश्वास के अवलंबी को धर्म्मी ठहराने में भी धर्म्मी ठहरे।

तो वह घमंड करना कहां रहा. वह वर्ज्जित हुआ. २७ कौन व्यवस्था के द्वारा से. क्या कर्म्मों की. नहीं परन्तु विश्वास की व्यवस्था के द्वारा से। इस लिये हम यह सिद्धान्त २८ करते हैं कि विना व्यवस्था के कर्म्मों से मनुष्य विश्वास से धर्म्मी ठहराया जाता है। क्या ईश्वर केवल यिहूदियों २९ का ईश्वर है. क्या अन्यदेशियों का नहीं. हां अन्यदेशियों का भी है। क्योंकि एक ही ईश्वर है जो खतना ३०

किये हुओं को बिश्वास से और खतनाहीनों को बिश्वास के
३१ द्वारा से धर्म्मी ठहरावेगा । तो क्या हम बिश्वास के द्वारा
व्यवस्था को व्यर्थ ठहराते हैं . ऐसा न हो परन्तु व्यवस्था
को स्थापन करते हैं ।

४ चौथा पर्ब्ब ।

१ इब्राहीम के धर्म्मी ठहराये जाने की कथा से पूर्वोक्त बातों के प्रमाण । ९ खतना किये हुए और खतनाहीन सभों का इस अनुग्रह के सम्भागी होना । १३ उस का व्यवस्था के कर्म्मों के द्वारा नहीं पर बिश्वास के द्वारा मिलना । १८ इब्राहीम के बिश्वास की दृढ़ताई का बखान । २३ सब बिश्वासियों का उस के संग भागी होना ।

१ तो हम क्या कहें कि हमारे पिता इब्राहीम ने शरीर
२ के अनुसार पाया है । यदि इब्राहीम कर्म्मों के हेतु से धर्म्मी
३ ठहराया गया तो उसे बड़ाई करने की जगह है । परन्तु
ईश्वर के आगे नहीं है क्योंकि धर्म्मपुस्तक क्या कहता
है . इब्राहीम ने ईश्वर का बिश्वास किया और यह उस
४ के लिये धर्म्म गिना गया । अब कार्य्य करनेहारे को मजूरी
देना अनुग्रह की बात नहीं परन्तु ऋण की बात गिना
५ जाता है । परन्तु जो कार्य्य नहीं करता पर भक्तिहीन के
धर्म्मी ठहरानेहारे पर बिश्वास करता है उस के लिये उस
६ का बिश्वास धर्म्म गिना जाता है । जैसा दाऊद भी उस
मनुष्य की धन्यता जिस को ईश्वर बिना कर्म्मों से धर्म्मी
७ ठहरावे बताता है . कि धन्य वे जिन के कुकर्म्म क्षमा
८ किये गये और जिन के पाप ढांपे गये . धन्य वह मनुष्य
जिसे परमेश्वर पापी न गिने ।

९ तो यह धन्यता क्या खतना किये हुए लोगों ही के
लिये है अथवा खतनाहीन लोगों के लिये भी है . क्योंकि
हम कहते हैं कि इब्राहीम के लिये बिश्वास धर्म्म गिना
१० गया । तो वह क्योंकर उस के लिये गिना गया . जब वह

खतना किया हुआ था अथवा जब खतनाहीन था . जब खतना किया हुआ था से नहीं परन्तु जब खतनाहीन था। और उस ने खतने का चिन्ह पाया कि जो बिश्वास उस ने ११ खतनाहीन दशा में किया था उस बिश्वास के धर्म्म की छाप होवे जिस्तें जो लोग खतनाहीन दशा में बिश्वास करते हैं वह उन सभों का पिता होय कि वे भी धर्म्मी ठहराये जायें . और जो लोग न केवल खतना किये हुए १२ हैं परन्तु हमारे पिता इब्राहीम के उस बिश्वास की लीक पर चलनेहारे भी हैं जो उस ने खतनाहीन दशा में किया था उन लोगों के लिये खतना किये हुओं का पिता ठहरे।

क्योंकि यह प्रतिज्ञा कि इब्राहीम जगत का अधिकारी १३ होगा न उस को न उस के वंश को व्यवस्था के द्वारा से मिली परन्तु बिश्वास के धर्म्म के द्वारा से। क्योंकि यदि व्यवस्था १४ के अवलंबी अधिकारी हैं तो बिश्वास व्यर्थ और प्रतिज्ञा निष्फल ठहराई गई है। व्यवस्था तो क्रोध जन्माती है १५ क्योंकि जहां व्यवस्था नहीं है तहां उल्लंघन भी नहीं। इस कारण प्रतिज्ञा बिश्वास से हुई कि अनुग्रह की रीति १६ पर होय इस लिये कि सारे वंश के लिये दृढ़ होय केवल उन के लिये नहीं जो व्यवस्था के अवलंबी हैं परन्तु उन के लिये भी जो इब्राहीम के से बिश्वास के अवलंबी हैं। वह १७ तो उस के आगे जिस का उस ने बिश्वास किया अर्थात ईश्वर के आगे जो मृतकों को जिलाता है और जो बातें नहीं हैं उन का नाम ऐसा लेता कि जैसा वे हैं हम सभों का पिता है जैसा लिखा है कि मैं ने तुझे बहुत देशों के लोगों का पिता ठहराया है।

उस ने जहां आशा न देख पड़ती थी तहां आशा रखके १८ बिश्वास किया इस लिये कि जो कहा गया था कि तेरा

वंश इस रीति से होगा उस के अनुसार वह बहुत देशों के
१९ लोगों का पिता होय । और बिश्वास में दुर्ब्बल न होके
उस ने यद्यपि सौ एक बरस का था तौभी न अपने शरीर
को जो अब मृतक सा हुआ था और न सारः के गर्भ की
२० मृतक की सी दशा को सोचा । उस ने ईश्वर की प्रतिज्ञा पर
अबिश्वास से सन्देह किया सो नहीं परन्तु बिश्वास में दृढ़
२१ होके ईश्वर की महिमा प्रगट किई . और निश्चय जाना
कि जिस बात की उस ने प्रतिज्ञा किई है उसे करने को भी
२२ सामर्थी है । इस हेतु से यह उस के लिये धर्म्म गिना गया ।
२३ पर न केवल उस के कारण लिखा गया कि उस के लिये
२४ गिना गया . परन्तु हमारे कारण भी जिन के लिये गिना
जायगा अर्थात हमारे कारण जो उस पर बिश्वास करते
२५ हैं जिस ने हमारे प्रभु यीशु को मृतकों में से उठाया . जो
हमारे अपराधों के लिये पकड़वाया गया और हमारे धर्म्मी
ठहराये जाने के लिये उठाया गया ।

५ पांचवां पर्व्व ।

१ बिश्वास के अनेक फलों का वर्णन और यीशु के बड़े प्रेम का बखान । १२ आदम के पाप के द्वारा से मृत्यु और ईश्वर के अनुग्रह से यीशु खीष्ट के द्वारा क्षमा औ धर्म्म औ अनन्त जीवन का प्राप्त होना ।

१ सो जब कि हम बिश्वास से धर्म्मी ठहराये गये हैं तो
हमारे प्रभु यीशु खीष्ट के द्वारा हमें ईश्वर से मिलाप है ।
२ और भी उस के द्वारा हम ने इस अनुग्रह में जिस में स्थिर
हैं बिश्वास से पहुंचने का अधिकार पाया है और ईश्वर
३ की महिमा की आशा के विषय में बड़ाई करते हैं । और
केवल यह नहीं परन्तु हम क्लेशों के विषय में भी बड़ाई
४ करते हैं क्योंकि जानते हैं कि क्लेश से धीरज . और
धीरज से खरा निकलना और खरे निकलने से आशा उत्पन्न

होती है। और आशा लज्जित नहीं करती है क्योंकि ५ पवित्र आत्मा के द्वारा से जो हमें दिया गया ईश्वर का प्रेम हमारे मन में उंडेला गया है। क्योंकि जब हम निर्ब्बल ६ हो रहे थे तब ही खीष्ट समय पर भक्तिहीनों के लिये मरा। धर्म्मी जन के लिये कोई मरे यह दुर्लभ है पर हां भले ७ मनुष्य के लिये क्या जाने किसी को मरने का भी साहस होय। परन्तु ईश्वर हमारी ओर अपने प्रेम का माहात्म्य ८ यूं दिखाता है कि जब हम पापी हो रहे थे तब ही खीष्ट हमारे लिये मरा। सो जब कि हम अब उस के लोहू के ९ गुण से धर्म्मी ठहराये गये हैं तो बहुत अधिक करके हम उस के द्वारा क्रोध से बचेंगे। क्योंकि यदि हम जब शत्रु थे १० तब ईश्वर से उस के पुत्र की मृत्यु के द्वारा से मिलाये गये हैं तो बहुत अधिक करके हम मिलाये जाके उस के जीवन के द्वारा त्राण पावेंगे। और केवल यह नहीं परन्तु हम ११ अपने प्रभु यीशु खीष्ट के द्वारा से जिस के द्वारा हम ने अब मिलाप पाया है ईश्वर के विषय में भी बड़ाई करते हैं।

इस लिये यह ऐसा है जैसा एक मनुष्य के द्वारा से १२ पाप जगत में आया और पाप के द्वारा मृत्यु आई और इस रीति से मृत्यु सब मनुष्यों पर बीती क्योंकि सभों ने पाप किया। क्योंकि व्यवस्था लों पाप जगत में था पर जहां १३ व्यवस्था नहीं है तहां पाप नहीं गिना जाता। तौभी १४ आदम से मूसा लों मृत्यु ने उन लोगों पर भी राज्य किया जिन्हों ने आदम के अपराध के समान पाप नहीं किया था. यह आदम उस आनेवाले का चिन्ह है। परन्तु जैसा यह १५ अपराध है तैसा वह बरदान भी है सो नहीं क्योंकि यदि एक मनुष्य के अपराध से बहुत लोग मूए तो बहुत अधिक करके ईश्वर का अनुग्रह और वह दान एक मनुष्य के अर्थात

यीशु ख्रीष्ट के अनुग्रह से बहुत लोगों पर अधिकाई से हुआ।
१६ और जैसा वह दंड जो एक के द्वारा से हुआ जिस ने पाप किया तैसा यह दान नहीं है क्योंकि निर्णय से एक अपराध के कारण दंड की आज्ञा हुई परन्तु बरदान से बहुत
१७ अपराधों से निर्दोष ठहराये जाने का फल हुआ। क्योंकि यदि एक मनुष्य के अपराध से मृत्यु ने उस एक के द्वारा से राज्य किया तो बहुत अधिक करके जो लोग अनुग्रह की और धर्म्म के दान की अधिकाई पाते हैं सो एक मनुष्य के
१८ अर्थात यीशु ख्रीष्ट के द्वारा से जीवन में राज्य करेंगे। इस लिये जैसा एक अपराध सब मनुष्यों के लिये दंड की आज्ञा का कारण हुआ तैसा एक धर्म्म भी सब मनुष्यों के लिये धर्म्मी ठहराये जाने का कारण हुआ जिस से जीवन होय।
१९ क्योंकि जैसा एक मनुष्य के आज्ञा लंघन करने से बहुत लोग पापी बनाये गये तैसा एक मनुष्य के आज्ञा मानने
२० से बहुत लोग धर्म्मी बनाये जायेंगे। पर व्यवस्था का भी प्रवेश हुआ कि अपराध बहुत होय परन्तु जहां पाप बहुत
२१ हुआ तहां अनुग्रह बहुत अधिक हुआ . कि जैसा पाप ने मृत्यु में राज्य किया तैसा हमारे प्रभु यीशु ख्रीष्ट के द्वारा अनुग्रह भी अनन्त जीवन के लिये धर्म्म के द्वारा से राज्य करे।

६ छठवां पर्ब्ब ।

१ बिश्वासियों को पाप से अलग रहना अवश्य है। ३ उन का बपतिसमा लेना जो मृतकों में से उठाये जाने का दृष्टान्त है इस से इस का प्रमाण। १२ पाप के बश में रहना उन को उचित नहीं। १५ वे जो पाप के बंधन से छूटके ईश्वर के दास बने हैं इस से इस का प्रमाण।

१ तो हम क्या कहें . क्या हम पाप में रहें जित्तें अनुग्रह
२ बहुत होय। ऐसा न हो . हम जो पाप के लिये मूए हैं क्योंकर अब उस में जीयेंगे।

क्या तुम नहीं जानते हो कि हम में से जितनों ने ख्रीष्ट ३ यीशु का बपतिसमा लिया उस की मृत्यु का बपतिसमा लिया। सो उस की मृत्यु का बपतिसमा लेने से हम उस ४ के संग गाड़े गये कि जैसे ख्रीष्ट पिता के ऐश्वर्य्य से मृतकों में से उठाया गया तैसे हम भी जीवन की सी नई चाल चलें। क्योंकि यदि हम उस की मृत्यु की समानता में उस के ५ संयुक्त हुए हैं तो निश्चय उस के जी उठने की समानता में भी संयुक्त होंगे। क्योंकि यही जानते हैं कि हमारा ६ पुराना मनुष्यत्व उस के संग क्रूश पर चढ़ाया गया इस लिये कि पाप का शरीर क्षय किया जाय जिस्तें हम फिर पाप के दास न होवें। क्योंकि जो मूआ है सो पाप से छुड़ाया ७ गया है। और यदि हम ख्रीष्ट के संग मूए हैं तो विश्वास ८ करते हैं कि उस के संग जीयेंगे भी। क्योंकि जानते हैं ९ कि ख्रीष्ट मृतकों में से उठके फिर नहीं मरता है . उस पर फिर मृत्यु की प्रभुता नहीं है। क्योंकि वह जो मरा तो १० पाप के लिये एक ही बेर मरा पर वह जीता है तो ईश्वर के लिये जीता है। इस रीति से तुम भी अपने को समझो ११ कि हम पाप के लिये तो मृतक हैं परन्तु हमारे प्रभु ख्रीष्ट यीशु में ईश्वर के लिये जीवते हैं।

सो पाप तुम्हारे मरनहार शरीर में राज्य न करे कि १२ तुम उस के अभिलाषों से पाप के आज्ञाकारी होओ। और १३ न अपने अंगों को अधर्म्म के हथियार करके पाप को सोंप देओ परन्तु जैसे मृतकों में से जी गये हो तैसे अपने को ईश्वर को सोंप देओ और अपने अंगों को ईश्वर के तईं धर्म्म के हथियार करके सोंपो। क्योंकि तुम पर पाप की १४ प्रभुता न होगी इस लिये कि तुम व्यवस्था के अधीन नहीं परन्तु अनुग्रह के अधीन हो।

१५ तो क्या . क्या हम पाप किया करें इस लिये कि हम व्यवस्था के अधीन नहीं परन्तु अनुग्रह के अधीन हैं . ऐसा १६ न हो । क्या तुम नहीं जानते हो कि तुम आज्ञा मानने के लिये जिस के यहां अपने को दास करके सोंप देते हो उसी के दास हो जिस की आज्ञा मानते हो चाहे मृत्यु के लिये पाप के दास चाहे धर्म्म के लिये आज्ञापालन के दास। १७ पर ईश्वर का धन्यबाद होय कि तुम पाप के दास तो थे परन्तु तुम जिस उपदेश के सांचे में ढाले गये मन से उस के १८ आज्ञाकारी हुए। और मैं तुम्हारे शरीर की दुर्ब्बलता के कारण मनुष्य की रीति पर कहता हूं कि तुम पाप से उद्धार १९ पाके धर्म्म के दास बने हो। जैसे तुम ने अपने अंगों को अधर्म्म के लिये अशुद्धता और अधर्म्म के दास करके अर्पण किया तैसे अब अपने अंगों को पवित्रता के लिये धर्म्म के २० दास करके अर्पण करो। जब तुम पाप के दास थे तब २१ धर्म्म से निर्बन्ध थे। सो उस समय में तुम क्या फल फलते थे . वे कर्म्म जिन से तुम अब लजाते हो क्योंकि उन का २२ अन्त मृत्यु है। पर अब पाप से उद्धार पाके और ईश्वर के दास बनके तुम पवित्रता के लिये फल फलते हो और २३ उस का अन्त अनन्त जीवन है। क्योंकि पाप की मजूरी मृत्यु है परन्तु ईश्वर का बरदान हमारे प्रभु ख्रीष्ट यीशु में अनन्त जीवन है ।

७ सातवां पर्ब्ब ।

१ बिश्वासी लोग व्यवस्था के अधीन नहीं हैं इस लिये ईश्वर की सेवा करना उन्हें अवश्य है इस का प्रमाण । ७ व्यवस्था उत्तम है तौभी पाप उस के हेतु से प्रबल होता है इस का बर्णन । १३ व्यवस्था नहीं परन्तु पाप का स्वभाव मृत्यु का कारण है इस का ब्योरा ।

१ हे भाइयो क्या तुम नहीं जानते हो क्योंकि मैं व्यवस्था

के जाननेहारों से बोलता हूं कि जब लों मनुष्य जीता रहे
तब लों व्यवस्था की उस पर प्रभुता है। क्योंकि बिवाहिता २
स्त्री अपने जीवते स्वामी के संग व्यवस्था से बन्धी है परन्तु
यदि स्वामी मर जाय तो वह स्वामी की व्यवस्था से छूट
गई। इस लिये यदि स्वामी के जीते जी वह दूसरे स्वामी ३
की हो जाय तो व्यभिचारिणी कहावेगी परन्तु यदि
स्वामी मर जाय तो वह उस व्यवस्था से निर्बन्ध हुई यहां
लों कि दूसरे स्वामी की हो जाने से भी वह व्यभिचारिणी
नहीं। इस लिये हे मेरे भाइयो तुम भी ख्रीष्ट के देह के द्वारा ४
से व्यवस्था के लिये मर गये कि तुम दूसरे के हो जावो
अर्थात उसी के जो मृतकों में से जी उठा इस लिये कि हम
ईश्वर के लिये फल फलें। क्योंकि जब हम शारीरिक ५
दशा में थे तब पापों के अभिलाष जो व्यवस्था के द्वारा से थे
हमारे अंगों में कार्य्य करवाते थे जिस्तें मृत्यु के लिये फल
फलें। परन्तु अभी हम जिस में बन्धे थे उस के लिये मृतक ६
होके व्यवस्था से छूट गये हैं यहां लों कि लेख की पुरानी
रीति पर नहीं परन्तु आत्मा की नई रीति पर सेवा करते हैं।

तो हम क्या कहें . क्या व्यवस्था पाप है . ऐसा न ७
हो परन्तु बिना व्यवस्था के द्वारा से मैं पाप को न पहचानता
हों व्यवस्था जो न कहती कि लालच मत कर तो मैं
लालच को न जानता। परन्तु पाप ने अवसर पाके आज्ञा के ८
द्वारा सब प्रकार का लालच मुझ में जन्माया क्योंकि बिना
व्यवस्था पाप मृतक है। मैं तो व्यवस्था बिना आगे जीवता ९
था परन्तु जब आज्ञा आई तब पाप जी गया और मैं
मूआ। और वही आज्ञा जो जीवन के लिये थी मेरे लिये १०
मृत्यु का कारण ठहरी। क्योंकि पाप ने अवसर पाके आज्ञा ११
के द्वारा मुझे ठगा और उस के द्वारा मुझे मार डाला।

१२ सो व्यवस्था पवित्र है और आज्ञा पवित्र और यथार्थ और उत्तम है ।

१३ तो क्या वह उत्तम बस्तु मेरे लिये मृत्यु हुई . ऐसा न हो परन्तु पाप जिस्तें वह पाप सा दिखाई देवे उस उत्तम बस्तु के द्वारा से मेरे लिये मृत्यु का जन्मानेहारा हुआ इस लिये कि पाप आज्ञा के द्वारा से अत्यन्त पापमय
१४ हो जाय । क्योंकि हम जानते हैं कि व्यवस्था आत्मिक
१५ है परन्तु मैं शारीरिक और पाप के हाथ बिका हूं । क्यों-कि जो मैं करता हूं उस को नहीं समझता हूं क्योंकि जो मैं चाहता हूं सोई नहीं करता हूं परन्तु जिस से घिनाता
१६ हूं सोई करता हूं । पर यदि मैं जो नहीं चाहता हूं सोई करता हूं तो मैं व्यवस्था को मान लेता हूं कि अच्छी
१७ है । सो अब तो मैं नहीं उसे करता हूं परन्तु पाप जो
१८ मुझ में बसता है । क्योंकि मैं जानता हूं कि कोई उत्तम बस्तु मुझ में अर्थात मेरे शरीर में नहीं बसती है क्योंकि चाहना तो मेरे संग है परन्तु अच्छी करनी मुझे नहीं
१९ मिलती है । क्योंकि वह अच्छा काम जो मैं चाहता हूं मैं नहीं करता हूं परन्तु जो बुरा काम नहीं चाहता हूं सोई
२० करता हूं । पर यदि मैं जो नहीं चाहता हूं सोई करता हूं तो अब मैं नहीं उसे करता हूं परन्तु पाप जो मुझ में
२१ बसता है । सो मैं यह व्यवस्था पाता हूं कि जब मैं अच्छा
२२ काम किया चाहता हूं तब बुरा काम मेरे संग है । क्यों-कि मैं भीतरी मनुष्यत्व के भाव से ईश्वर की व्यवस्था से
२३ प्रसन्न हूं । परन्तु मैं अपने अंगों में दूसरी व्यवस्था देखता हूं जो मेरी बुद्धि की व्यवस्था से लड़ती है और मुझे पाप की
२४ व्यवस्था के जो मेरे अंगों में है बन्धन में डालती है । अभागा मनुष्य जो मैं हूं मुझे इस मृत्यु के देह से कौन बचावेगा ।

मैं ईश्वर का धन्य मानता हूं कि हमारे प्रभु यीशु ख्रीष्ट के २५ द्वारा से वही बचानेहारा है. सो मैं आप बुद्धि से तो ईश्वर की व्यवस्था की सेवा परन्तु शरीर से पाप की व्यवस्था की सेवा करता हूं।

८ आठवां पर्ब्ब।

१ पाप की व्यवस्था से छूट जाने का उपाय। ५ शारीरिक दशा और आत्मिक दशा का ब्योरा। १२ आत्मिक दशा में जीवन और लेपालक पद का प्राप्त होना। १८ होनहार महिमा की आशा जो सारी सृष्टि और निज करके विश्वासी लोग रखते हैं उस का बर्णन। २६ पवित्र आत्मा का प्रार्थना में सहायता करना। २८ ईश्वर का अपने प्रिय लोगों को सब प्रकार की आशीष देना। ३१ उन का उस से कभी किसी रीति से अलग न होना।

सो अब जो लोग ख्रीष्ट यीशु में हैं अर्थात शरीर के १ अनुसार नहीं परन्तु आत्मा के अनुसार चलते हैं उन पर कोई दंड की आज्ञा नहीं है। क्योंकि जीवन के आत्मा की २ व्यवस्था ने ख्रीष्ट यीशु में मुझे पाप की औ मृत्यु की व्यवस्था से निर्बन्ध किया है। क्योंकि जो व्यवस्था से अन्होना था ३ इस लिये कि शरीर के द्वारा से वह दुर्ब्बल थी उस को ईश्वर ने किया अर्थात अपने ही पुत्र को पाप के शरीर की समानता में और पाप के कारण भेजके शरीर में पाप पर दंड की आज्ञा दिई. इस लिये कि व्यवस्था की विधि हमों में जो शरीर के अनुसार ४ नहीं परन्तु आत्मा के अनुसार चलते हैं पूरी किई जाय।

जो शरीर के अनुसारी हैं सो शरीर की बातों पर मन ५ लगाते हैं पर जो आत्मा के अनुसारी हैं सो आत्मा की बातों पर मन लगाते हैं। शरीर पर मन लगाना तो मृत्यु ६ है परन्तु आत्मा पर मन लगाना जीवन और कल्याण है। इस कारण कि शरीर पर मन लगाना ईश्वर से शत्रुता ७ करना है क्योंकि वह मन ईश्वर की व्यवस्था के बश में नहीं होता है क्योंकि हो नहीं सकता है। और जो शारीरिक ८

९ दशा में हैं सो ईश्वर को प्रसन्न नहीं कर सकते हैं । पर जब कि ईश्वर का आत्मा तुम में बसता है तो तुम शारीरिक दशा में नहीं परन्तु आत्मिक दशा में हो . यदि किसी में ख्रीष्ट का आत्मा नहीं है तो वह उस का जन नहीं है।
१० परन्तु यदि ख्रीष्ट तुम में है तो देह पाप के कारण मृतक
११ है पर आत्मा धर्म्म के कारण जीवन है । और जिस ने यीशु को मृतकों में से उठाया उस का आत्मा यदि तुम में बसता है तो जिस ने ख्रीष्ट को मृतकों में से उठाया सो तुम्हारे मरनहार देहों को भी अपने आत्मा के कारण जो तुम में बसता है जिलावेगा ।

१२ इस लिये हे भाइयो हम शरीर के ऋणी नहीं हैं कि
१३ शरीर के अनुसार दिन काटें । क्योंकि यदि तुम शरीर के अनुसार दिन काटो तो मरोगे परन्तु यदि आत्मा से
१४ देह की क्रियाओं को मारो तो जीओगे। क्योंकि जितने लोग ईश्वर के आत्मा के चलाये चलते हैं वे ही ईश्वर के
१५ पुत्र हैं । क्योंकि तुम ने दासत्व का आत्मा नहीं पाया है कि फिर भयमान होओ परन्तु लेपालकपन का आत्मा पाया है जिस से हम हे अब्बा अर्थात हे पिता पुकारते
१६ हैं। आत्मा आप ही हमारे आत्मा के संग साक्षी देता है
१७ कि हम ईश्वर के सन्तान हैं । और यदि सन्तान हैं तो अधिकारी भी हैं हां ईश्वर के अधिकारी और ख्रीष्ट के संगी अधिकारी हैं कि हम तो उस के संग दुःख उठाते हैं जिस्तें उस के संग महिमा भी पावें ।

१८ क्योंकि मैं समझता हूं कि इस बर्त्तमान समय के दुःख उस महिमा के आगे जो हमों में प्रगट किई जायगी कुछ
१९ गिनने के योग्य नहीं हैं। क्योंकि सृष्टि की प्रत्याशा ईश्वर
२० के सन्तानों के प्रगट होने की बाट जोहती है । क्योंकि

सृष्टि अपनी इच्छा से नहीं परन्तु अधीन करनेहारे की
ओर से व्यर्थता के अधीन इस आशा से किई गई . कि सृष्टि २१
भी आप ही विनाश के दासत्व से उद्धार पाके ईश्वर के
सन्तानों की महिमा की निर्बन्धता प्राप्त करेगी। क्योंकि २२
हम जानते हैं कि सारी सृष्टि अब लों एक संग कहरती
और पीड़ा पाती है। और केवल वह नहीं पर हम २३
लोग भी इस लिये कि हमारे पास आत्मा का पहिला फल
है आप ही अपने में कहरते हैं और लेपालकपन की अर्थात
अपने देह के उद्धार की बाट जोहते हैं। क्योंकि आशा से २४
हमारा त्राण हुआ परन्तु जो आशा देखने में आती है सो
आशा नहीं है क्योंकि जो कुछ कोई देखता है वह उस की
आशा भी क्यों रखता है। परन्तु यदि हम जो नहीं देखते हैं २५
उस की आशा रखते हैं तो धीरज से उस की बाट जोहते हैं।

इस रीति से पवित्र आत्मा भी हमारी दुर्ब्बलताओं में २६
सहायता करता है क्योंकि हम नहीं जानते हैं कौन सी
प्रार्थना किस रीति से किया चाहिये परन्तु आत्मा आप
ही अकथ्य हाय मार मारके हमारे लिये बिन्ती करता
है। और हृदयों का जांचनेहारा जानता है कि आत्मा २७
की मनसा क्या है कि वह पवित्र लोगों के लिये ईश्वर
की इच्छा के समान विन्ती करता है।

और हम जानते हैं कि जो लोग ईश्वर को प्यार २८
करते हैं उन के लिये सब बातें मिलके भलाई ही का कार्य्य
करती हैं अर्थात उन के लिये जो उस की इच्छा के समान
बुलाये हुए हैं। क्योंकि जिन्हें उस ने आगे से जाना उन्हें २९
उस ने अपने पुत्र के रूप के सदृश होने को आगे से ठहराया
जिस्तें वह बहुत भाइयों में पहिलौठा होवे। फिर जिन्हें ३०
उस ने आगे से ठहराया उन्हें बुलाया भी और जिन्हें

बुलाया उन्हें धर्म्मी ठहराया भी और जिन्हें धर्म्मी ठह-
राया उन्हें महिमा भी दिई।

३१ तो हम इन बातों पर क्या कहें . यदि ईश्वर हमारी
३२ ओर है तो हमारे बिरुद्ध कौन होगा। जिस ने अपने
निज पुत्र को न रख छोड़ा परन्तु उसे हम सभों के लिये
सोंप दिया सो उस के संग हमें और सब कुछ क्योंकर न
३३ देगा। ईश्वर के चुने हुए लोगों पर दोष कौन लगावेगा .
३४ क्या ईश्वर जो धर्म्मी ठहरानेहारा है। दंड की आज्ञा
देनेहारा कौन होगा . क्या ख्रीष्ट जो मरा हां जो जी भी
उठा जो ईश्वर की दहिनी ओर भी है जो हमारे लिये
३५ बिन्ती भी करता है। कौन हमें ख्रीष्ट के प्रेम से अलग
करेगा . क्या क्लेश वा संकट वा उपद्रव वा अकाल वा
३६ नंगाई वा जोखिम वा खड्ग। जैसा लिखा है कि तेरे
लिये हम दिन भर घात किये जाते हैं हम बध होने-
३७ वाली भेड़ों की नाईं गिने गये हैं। नहीं पर इन सब
बातों में हम उस के द्वारा से जिस ने हमें प्यार किया है
३८ जयवन्त से भी अधिक हैं। क्योंकि मैं निश्चय जानता हूं
कि न मृत्यु न जीवन न दूतगण न प्रधानता न पराक्रम
३९ न बर्त्तमान न भविष्य . न ऊंचाई न गहिराई न और
कोई सृष्टि हमें ईश्वर के प्रेम से जो हमारे प्रभु ख्रीष्ट यीशु
में है अलग कर सकेगी।

९ नवां पर्ब्ब।

१ यिहूदियों के विषय में पावल का बहुत चिन्ता करना। ६ उन्हों में से वे ही जिन्हें ईश्वर ने चुन लिया प्रतिज्ञा के अधिकारी हुए इस का वर्णन। १४ जो नष्ट होते हैं उन में ईश्वर का न्याय और जो त्राण पाते हैं उन पर उस की बड़ी दया प्रगट होती है इस के कई एक प्रमाण। ३० यिहूदी लोग धर्म्म से हीन हुए परन्तु अन्यदेशियों ने बिश्वास से धर्म्म को प्राप्त किया इस का हेतु।

१ मैं ख्रीष्ट में सत्य कहता हूं मैं झूठ नहीं बोलता हूं

और मेरा मन भी पवित्र आत्मा में मेरा साक्षी है . कि २
मुझे बड़ा शोक और मेरे मन को निरन्तर खेद रहता है।
क्योंकि मैं आप प्रार्थना कर सकता कि अपने भाइयों के ३
लिये जो शरीर के भाव से मेरे कुटुंब हैं मैं ख्रीष्ट से स्रापित
होता। वे इस्रायेली लोग हैं और लेपालकपन औ तेज ४
औ नियम औ व्यवस्था का निरूपण औ सेवकाई औ
प्रतिज्ञाएं उन की हैं। पितर लोग भी उन्हीं के हैं और ५
उन में से शरीर के भाव से ख्रीष्ट हुआ जो सर्व्वप्रधान ईश्वर
सर्व्वदा धन्य है . आमीन।

पर ऐसा नहीं है कि ईश्वर का वचन टल गया है ६
क्योंकि सब लोग इस्रायेली नहीं जो इस्रायेल से जन्मे हैं .
और न इस लिये कि इब्राहीम के वंश हैं वे सब उस के ७
सन्तान हैं परन्तु (लिखा है) इसहाक से जो हो सो तेरा
वंश कहावेगा। अर्थात शरीर के जो सन्तान सो ईश्वर ८
के सन्तान नहीं हैं परन्तु प्रतिज्ञा के सन्तान वंश गिने
जाते हैं। क्योंकि यह वचन प्रतिज्ञा का था कि इस समय ९
के अनुसार मैं आऊंगा और सारः को पुत्र होगा। और १०
केवल यह नहीं परन्तु जब रिबका भी एक से अर्थात
हमारे पिता इसहाक से गर्भवती हुई . और बालक नहीं ११
जन्मे थे और न कुछ भला अथवा बुरा किया था तब ही
उस से कहा गया कि बड़का छुटके का दास होगा . इस १२
लिये कि ईश्वर की मनसा जो उस के चुन लेने के अनुसार
है कर्म्मों के हेतु से नहीं परन्तु बुलानेहारे की ओर से बनी
रहे। जैसा लिखा है कि मैं ने याकूब को प्यार किया परन्तु १३
एसौ को अप्रिय जाना।

तो हम क्या कहें . क्या ईश्वर के यहां अन्याय है . १४
ऐसा न हो। क्योंकि वह मूसा से कहता है मैं जिस किसी १५

पर दया करूं उस पर दया करूंगा और जिस किसी पर
१६ कृपा करूं उस पर कृपा करूंगा । सो यह न तो चाहने-
हारे का न तो दौड़नेहारे का परन्तु दया करनेहारे ईश्वर
१७ का काम है । क्योंकि धर्म्मपुस्तक फिरऊन से कहता है
कि मैं ने तुझे इसी बात के लिये बढ़ाया कि तुझ में अपना
पराक्रम दिखाऊं और कि मेरा नाम सारी पृथिवी में
१८ प्रचार किया जाय । सो वह जिस पर दया किया चाहता
है उस पर दया करता है परन्तु जिसे कठोर किया चाहता
१९ है उसे कठोर करता है । तो तू मुझ से कहेगा वह फिर
दोष क्यों देता है क्योंकि कौन उस की इच्छा का साम्ना
२० करता है । हां पर हे मनुष्य तू कौन है जो ईश्वर से
बिबाद करता है . क्या गढ़ी हुई बस्तु गढ़नेहारे से कहेगी
२१ तू ने मुझे इस रीति से क्यों बनाया । अथवा क्या कुम्हार
को मिट्टी पर अधिकार नहीं है कि एक ही पिंड में से एक
पात्र को आदर के लिये और दूसरे को अनादर के लिये
२२ बनावे । और यदि ईश्वर ने अपना क्रोध दिखाने की और
अपना सामर्थ्य प्रगट करने की इच्छा से क्रोध के पात्रों की
जो बिनाश के योग्य किये गये थे बड़े धीरज से सही .
२३ और दया के पात्रों पर जिन्हें उस ने महिमा के लिये आगे
से तैयार किया अपनी महिमा के धन को प्रगट करने की
२४ इच्छा किई तो तू कौन है जो बिबाद करे । इन्हों को
उस ने बुलाया भी अर्थात हमों को जो केवल यिहूदियों में
२५ से नहीं परन्तु अन्यदेशियों में से भी हैं । जैसा वह होशेया
के पुस्तक में भी कहता है कि जो मेरे लोग न थे उन्हें मैं
अपने लोग कहूंगा और जो प्यारी न थी उसे प्यारी
२६ कहूंगा । और जिस स्थान में लोगों से कहा गया कि तुम
मेरे लोग नहीं हो वहां वे जीवते ईश्वर के सन्तान

कहावेंगे। परन्तु यिशैयाह इस्रायेल के विषय में पुकारता है २७
यद्यपि इस्रायेल के सन्तानों की गिन्ती समुद्र के बालू की नाईं
हो तौभी जो बच रहेंगे उन्हीं की रक्षा होगी। क्योंकि २८
परमेश्वर बात को पूरी करनेवाला और धर्म्म से शीघ्र
निवाहनेवाला है कि वह देश में बात को शीघ्र समाप्त
करेगा। जैसा यिशैयाह ने आगे भी कहा था कि यदि २९
सेनाओं का प्रभु हमारे लिये वंश न छोड़ देता तो हम
सदोम की नाईं हो जाते और अमोरा के समान किये जाते।

तो हम क्या कहें. यह कि अन्यदेशियों ने जो धर्म्म का ३०
पीछा नहीं करते थे धर्म्म को अर्थात उस धर्म्म को जो
विश्वास से है प्राप्त किया. परन्तु इस्रायेली लोग धर्म्म ३१
की व्यवस्था का पीछा करते हुए धर्म्म की व्यवस्था को नहीं
पहुंचे। किस लिये. इस लिये कि वे बिश्वास से नहीं परन्तु ३२
जैसे व्यवस्था के कर्म्मों से उस का पीछा करते थे कि उन्हों ने
उस ठेस के पत्थर पर ठोकर खाई. जैसा लिखा है देखो मैं ३३
सियोन में एक ठेस का पत्थर और ठोकर की चटान रखता हूं
और जो कोई उस पर विश्वास करे सो लज्जित न होगा।

१० दसवां पर्ब्ब।

१ यिहूदियों का यत्न करना परन्तु सच्चे धर्म्म से अज्ञान रहना। ४ व्यवस्था का धर्म्म और वह धर्म्म जो विश्वास के द्वारा से है इन दोनों का ब्योरा। १४ सुसमाचार का प्रचार किया जाना और यिहूदियों का उसे न मानना।

हे भाइयो इस्रायेल के लिये मेरे मन की इच्छा और १
मेरी प्रार्थना जो मैं ईश्वर से करता हूं उन के त्राण के लिये
है। क्योंकि मैं उन पर साक्षी देता हूं कि उन को ईश्वर २
के लिये धुन रहती है परन्तु ज्ञान की रीति से नहीं। क्योंकि ३
वे ईश्वर के धर्म्म को न चीन्हके पर अपना ही धर्म्म स्थापन
करने का यत्न करके ईश्वर के धर्म्म के अधीन नहीं हुए।

४ क्योंकि धर्म्म के निमित्त हर एक बिश्वास करनेहारे के
५ लिये ख्रीष्ट व्यवस्था का अन्त है। क्योंकि मूसा उस धर्म्म
के विषय में जो व्यवस्था से है लिखता है कि जो मनुष्य
६ यह बातें पालन करे सो उन से जीयेगा। परन्तु जो धर्म्म
बिश्वास से है सो यूं कहता है कि अपने मन में मत कह
कौन स्वर्ग पर चढ़ेगा . यह तो ख्रीष्ट को उतार लाने के
७ लिये होता . अथवा कौन पाताल में उतरेगा . यह तो
८ ख्रीष्ट को मृतकों में से ऊपर लाने के लिये होता। फिर क्या
कहता है . परन्तु बचन तेरे निकट तेरे मुंह में और तेरे
मन में है . यह तो बिश्वास का बचन है जो हम प्रचार करते
९ हैं . कि यदि तू अपने मुंह से प्रभु यीशु को मान लेवे और
अपने मन से बिश्वास करे कि ईश्वर ने उस को मृतकों में से
१० उठाया तो तू त्राण पावेगा। क्योंकि मन से धर्म्म के लिये
बिश्वास किया जाता है और मुंह से त्राण के लिये मान
११ लिया जाता है। क्योंकि धर्म्मपुस्तक कहता है कि
जो कोई उस पर बिश्वास करे सो लज्जित न होगा।
१२ यिहूदी और यूनानी में कुछ भेद भी नहीं है क्योंकि सभों
का एक ही प्रभु है जो सभों के लिये जो उस से प्रार्थना
१३ करते हैं धनी है। क्योंकि जो कोई परमेश्वर के नाम की
प्रार्थना करेगा सो त्राण पावेगा।

१४ फिर जिस पर लोगों ने बिश्वास नहीं किया उस से वे
क्योंकर प्रार्थना करें और जिस की उन्हों ने सुनी नहीं उस
पर वे क्योंकर बिश्वास करें और उपदेशक बिना वे क्योंकर
१५ सुनें। और वे जो भेजे न जायें तो क्योंकर उपदेश करें
जैसा लिखा है कि जो कुशल का सुसमाचार सुनाते हैं
अर्थात भली बातों का सुसमाचार प्रचार करते हैं उन के
१६ पांव कैसे सुन्दर हैं। परन्तु सब लोगों ने उस सुसमाचार

को नहीं माना क्योंकि यिशैयाह कहता है हे परमेश्वर किस ने हमारे समाचार का बिश्वास किया है। सो बिश्वास १७ समाचार से और समाचार ईश्वर के बचन के द्वारा से आता है। पर मैं कहता हूं क्या उन्हों ने नहीं सुना . १८ हां वरन (लिखा है) उन का शब्द सारी पृथिवी पर और उन की बातें जगत के सिवानों तक निकल गईं। पर मैं १९ कहता हूं क्या इस्रायेली लोग नहीं जानते थे . पहिले मूसा कहता है मैं उन्हों पर जो एक लोग नहीं हैं तुम से डाह करवाऊंगा मैं एक निर्बुद्धि लोग पर तुम से क्रोध करवाऊंगा। परन्तु यिशैयाह साहस करके कहता है कि २० जो मुझे नहीं ढूंढ़ते थे उन से मैं पाया गया जो मुझे नहीं पूछते थे उन पर मैं प्रगट हुआ। परन्तु इस्रायेली लोगों २१ को वह कहता है मैं ने सारे दिन अपने हाथ एक आज्ञा-लंघन औ बिवाद करनेहारे लोग की ओर पसारे।

११ एग्यारहवां पर्ब्ब।

१ ईश्वर ने जो इस्रायेली लोगों में से कितनों को अपने अनुग्रह से चुना है और दूसरे इस्रायेली लोग पतित हुए इन बातों के प्रमाण। ११ इस्रायेलियों के पतन के द्वारा से अन्यदेशियों पर कृपा हुई और तौभी इस्रायेल का मूल अधिकार बना रहा इस को अन्यदेशियों पर प्रगट करना। २५ इस्रायेल पर पीछे फिर कृपा होगी इस का भविष्यद्वाक्य और विवरण। ३३ ईश्वर के ज्ञान और न्याय का बखान।

तो मैं कहता हूं क्या ईश्वर ने अपने लोगों को त्याग १ दिया है . ऐसा न हो क्योंकि मैं भी इस्रायेली जन इब्राहीम के वंश से और बिन्यामीन के कुल का हूं। ईश्वर ने २ अपने लोगों को जिन्हें उस ने आगे से जाना त्याग नहीं दिया है . क्या तुम नहीं जानते हो कि धर्म्मपुस्तक एलियाह की कथा में क्या कहता है कि वह इस्रायेल के बिरुद्ध ईश्वर से बिन्ती करता है . कि हे परमेश्वर उन्हों ३ ने तेरे भविष्यद्वक्ताओं को घात किया है और तेरी वेदियों

को खोद डाला है और मैं ही अकेला छूट गया हूं और
४ वे मेरा प्राण लेने चाहते हैं। परन्तु ईश्वर की बाणी उस
से क्या कहती है. मैं ने अपने लिये सात सहस्र मनुष्यों
को रख छोड़ा है जिन्हों ने बाअल के आगे घुटना नहीं
५ टेका है। सो इस रीति से इस बर्त्तमान समय में भी
६ अनुग्रह से चुने हुए कितने लोग बच रहे हैं। जो यह
अनुग्रह से हुआ है तो फिर कर्म्मों से नहीं है नहीं तो
अनुग्रह अब अनुग्रह नहीं है. पर यदि कर्म्मों से हुआ
है तो फिर अनुग्रह नहीं है नहीं तो कर्म्म अब कर्म्म नहीं
७ है। तो क्या है. इस्रायेली लोग जिस को ढूंढ़ते हैं उस
को उन्हों ने प्राप्त नहीं किया है परन्तु चुने हुओं ने प्राप्त
८ किया है और दूसरे लोग कठोर किये गये हैं। जैसा
लिखा है कि ईश्वर ने उन्हें आज के दिन लों जड़ता का
आत्मा हां आंखें जो न देखें और कान जो न सुनें दिये
९ हैं। और दाऊद कहता है उन की मेज उन के लिये फ़ंदा
और जाल और ठोकर का कारण और प्रतिफल हो जाय।
१० उन की आंखों पर अन्धेरा छा जाय कि वे न देखें और
तू उन की पीठ को नित्य झुका दे।

११ तो मैं कहता हूं क्या उन्हों ने इस लिये ठोकर खाई
कि गिर पड़ें. ऐसा न हो परन्तु उन के गिरने के हेतु से
अन्यदेशियों को त्राण हुआ है कि उन से डाह करवावे।
१२ परन्तु यदि उन के गिरने से जगत का धन और उन की
हानि से अन्यदेशियों का धन हुआ तो उन की भरपूरी से
१३ वह धन कितना अधिक करके होगा। मैं तुम अन्य-
देशियों से कहता हूं. जब कि मैं अन्यदेशियों के लिये
१४ प्रेरित हूं मैं अपनी सेवकाई की बड़ाई करता हूं. कि
किसी रीति से मैं उन से जो मेरे शरीर के ऐसे हैं डाह

करवाके उन में से कई एक को भी बचाऊं। क्योंकि यदि १५ उन के त्याग दिये जाने से जगत का मिलाप हुआ तो उन के ग्रहण किये जाने से क्या होगा . क्या मृतकों में से जीवन नहीं। यदि पहिला फल पवित्र है तो पिंड भी पवित्र है १६ और यदि जड़ पवित्र है तो डालियां भी पवित्र हैं। परन्तु १७ यदि डालियों में से कितनी तोड़ डाली गईं और तू जंगली जलपाई होके उन्हों में साटा गया है और जलपाई के वृक्ष की जड़ और तेल का भागी हुआ है तो डालियों के बिरुद्ध घमंड मत कर। परन्तु जो तू घमंड करे तौभी तू जड़ १८ का आधार नहीं परन्तु जड़ तेरा आधार है। फिर तू १९ कहेगा डालियां तोड़ डाली गईं कि मैं साटा जाऊं। अच्छा वे अविश्वास के हेतु से तोड़ डाली गईं पर तू बिश्वास २० से खड़ा है . अभिमानी मत हो परन्तु भय कर। क्योंकि २१ यदि ईश्वर ने स्वाभाविक डालियां न छोड़ीं तो ऐसा न हो कि तुझे भी न छोड़े। सो ईश्वर की कृपा और कड़ाई २२ को देख . जो गिर पड़े उन पर कड़ाई परन्तु तुझ पर जो तू उस की कृपा में बना रहे तो कृपा . नहीं तो तू भी काट डाला जायगा। और वे भी जो अबिश्वास में न रहें २३ तो साटे जायेंगे क्योंकि ईश्वर उन्हें फिर साट सकता है। क्योंकि यदि तू उस जलपाई के वृक्ष से जो स्वभाव से जंगली २४ है काटा गया और स्वभाव के बिरुद्ध अच्छी जलपाई के वृक्ष में साटा गया तो कितना अधिक करके ये जो स्वाभाविक डालियां हैं अपने ही जलपाई के वृक्ष में साटे जायेंगे। और हे भाइयो मैं नहीं चाहता हूं कि तुम इस भेद २५ से अनजान रहो ऐसा न हो कि अपने लेखे बुद्धिमान होओ अर्थात कि जब लों अन्यदेशियों की सम्पूर्ण संख्या प्रवेश न करे तब लों कुछ कुछ इस्रायेलियों को कठोरता रहेगी।

२६ और तब सारा इस्रायेल त्राण पावेगा जैसा लिखा है कि बचानेहारा सियोन से आवेगा और अधर्म्मीपन को याकूब
२७ से अलग करेगा । जब मैं उन के पापों को दूर करूंगा तब
२८ उन से यही मेरी ओर से नियम होगा । वे सुसमाचार के भाव से तुम्हारे कारण बैरी हैं परन्तु चुन लिये जाने के
२९ भाव से पितरों के कारण प्यारे हैं । क्योंकि ईश्वर अपने
३० बरदानों से और बुलाहट से कभी पछतानेवाला नहीं । क्योंकि जैसे तुम ने आगे ईश्वर की आज्ञा लंघन किई परन्तु अभी उन के आज्ञा उल्लंघन के हेतु से तुम पर दया किई गई
३१ है . तैसे इन्हों ने भी अब आज्ञा लंघन किई है कि तुम पर जो दया किई जाती है उस के हेतु से उन पर भी दया
३२ किई जाय । क्योंकि ईश्वर ने सभों को आज्ञा उल्लंघन में बन्द कर रखा इस लिये कि सभों पर दया करे ।

३३ आहा ईश्वर के धन और बुद्धि और ज्ञान की गंभीरता . उस के विचार कैसे अथाह और उस के मार्ग कैसे अगम्य
३४ हैं । क्योंकि परमेश्वर का मन किस ने जाना अथवा उस
३५ का मंत्री कौन हुआ । अथवा किस ने उस को पहिले दिया
३६ और उस का प्रतिफल उस को दिया जायगा । क्योंकि उस से और उस के द्वारा और उस के लिये सब कुछ है . उस का गुणानुबाद सर्ब्बदा होय . आमीन ।

१२ बारहवां पर्ब्ब ।

१ अपने अपने पद और सामर्थ्य के अनुसार प्रभु की सेवा करना बिश्वासियों को आवश्यक है इस का बर्णन । ९ प्रेम और नम्रता और क्षमा इत्यादि करने का उपदेश ।

१ सो हे भाइयो मैं तुम से ईश्वर की दया के कारण बिन्ती करता हूं कि अपने शरीरों को जीवता और पवित्र और ईश्वर की प्रसन्नता योग्य बलिदान करके चढ़ाओ कि यह
२ तुम्हारी मानसिक सेवा है । और इस संसार की रीति पर

मत चला करो परन्तु तुम्हारे मन के नये होने से तुम्हारी चाल चलन बदली जाय जिस्तें तुम परखो कि ईश्वर की इच्छा अर्थात उत्तम और प्रसन्नता योग्य और पूरा कार्य्य क्या है। क्योंकि जो अनुग्रह मुझे दिया गया है उस से ३ मैं तुम में के हर एक जन से कहता हूं कि जो मन रखना उचित है उस से ऊंचा मन न रखे परन्तु ऐसा मन रखे कि ईश्वर ने हर एक को विश्वास का जो परिमाण बांट दिया है उस के अनुसार उस को सुबुद्धि मन होय। क्यों- ४ कि जैसा हमें एक देह में बहुत अंग हैं परन्तु सब अंगों को एक ही काम नहीं है. तैसा हम जो बहुत हैं खीष्ट ५ में एक देह हैं और पृथक करके एक दूसरे के अंग हैं। और जो अनुग्रह हमें दिया गया है जब कि उस के अनु- ६ सार भिन्न भिन्न बरदान हमें मिले हैं तो यदि भविष्य-द्वाणी का दान हो तो हम विश्वास के परिमाण के अनुसार बोलें. अथवा सेवकाई का दान हो तो सेवकाई में लगे ७ रहें. अथवा जो सिखानेहारा हो सो शिक्षा में लगा रहे. अथवा जो उपदेशक हो सो उपदेश में लगा रहे. जो बांट ८ देवे सो सीधाई से बांटे. जो अध्यक्षता करे सो यत्न से करे. जो दया करे सो हर्ष से करे।

प्रेम निष्कपट होय. बुराई से घिन्न करो भलाई में लगे ९ रहो। भ्रातीय प्रेम से एक दूसरे पर मया रखो. परस्पर १० आदर करने में एक दूसरे से बढ़ चलो। यत्न करने में आलसी ११ मत हो. आत्मा में अनुरागी हो. प्रभु की सेवा किया करो। आशा से आनन्दित हो. क्लेश में स्थिर हो. प्रार्थना में १२ लगे रहो। पवित्र लोगों को जो आवश्यक हो उस में उन १३ की सहायता करो. अतिथिसेवा की चेष्टा करो। अपने १४ सतानेहारों को आशीस देओ. आशीस देओ. स्राप मत

१५ देओ । आनन्द करनेहारों के संग आनन्द करो और
१६ रोनेहारों के संग रोओ। एक दूसरे की ओर एकसां मन
रखो . ऊंचा मन मत रखो परन्तु दीनों से संगति रखो .
१७ अपने लेखे बुद्धिमान मत होओ। किसी से बुराई के बदले
बुराई मत करो . जो बातें सब मनुष्यों के आगे भली हैं
१८ उन की चिन्ता किया करो। यदि हो सके तुम तो अपनी
१९ ओर से सब मनुष्यों के संग मिले रहो। हे प्यारो अपना
पलटा मत लेओ परन्तु क्रोध को ठांव देओ क्योंकि लिखा
है पलटा लेना मेरा काम है . परमेश्वर कहता है मैं
२० प्रतिफल देऊंगा। इस लिये यदि तेरा शत्रु भूखा हो तो
उसे खिला यदि प्यासा हो तो उसे पिला क्योंकि यह
करने से तू उस के सिर पर आग के अंगारों की ढेरी लगावेगा।
२१ बुराई से मत हार जा परन्तु भलाई से बुराई को जीत ले।

१३ तेरहवां पर्ब्ब ।

१ देशाधिकारियों के वश में रहने की आवश्यकता । ८ प्रेम जो व्यवस्था का सार है इस का बर्णन । ११ समय देखके अंधकार के कार्य्यों के त्यागने का उपदेश ।

१ हर एक मनुष्य प्रधान अधिकारियों के अधीन होवे
क्योंकि कोई अधिकार नहीं है जो ईश्वर की ओर से न
हो पर जो अधिकार हैं सो ईश्वर से ठहराये हुए हैं।
२ इस से जो अधिकार का बिरोध करता है सो ईश्वर की
विधि का साम्ना करता है और साम्ना करनेहारे अपने
३ लिये दंड पावेंगे। क्योंकि अध्यक्ष लोग भले कामों से नहीं
परन्तु बुरे कामों से डरानेहारे हैं . क्या तू अधिकारी से
निडर रहा चाहता है . भला काम कर तो उस से तेरी
सराहना होगी क्योंकि वह तेरी भलाई के लिये ईश्वर का
४ सेवक है। परन्तु जो तू बुरा काम करे तो भय कर क्यों-
कि वह खड्ग को वृथा नहीं बांधता है इस लिये कि वह

ईश्वर का सेवक अर्थात कुकर्म्मी पर क्रोध पहुंचाने को दंड-कारक है। इस लिये अधीन होना केवल उस क्रोध के ५ कारण नहीं परन्तु विवेक के कारण भी अवश्य है। इस हेतु ६ से कर भी देओ क्योंकि वे ईश्वर के सेवक हैं जो इसी बात में लगे रहते हैं। सो सभों को जो जो कुछ देना उचित है ७ सो सो देओ जिसे कर देना हो उसे कर देओ जिसे महसूल देना हो उसे महसूल देओ जिस से भय करना हो उस से भय करो जिस का आदर करना हो उस का आदर करो।

किसी का कुछ ऋण मत धारो केवल एक दूसरे को ८ प्यार करने का ऋण क्योंकि जो दूसरे को प्यार करता है उस ने व्यवस्था पूरी किई है। क्योंकि यह कि परस्त्रीगमन ९ मत कर नरहिंसा मत कर चोरी मत कर झूठी साक्षी मत दे लालच मत कर और कोई दूसरी आज्ञा यदि होय तो इस बात में अर्थात तू अपने पड़ोसी को अपने समान प्रेम कर सब का संग्रह है। प्रेम पड़ोसी की कुछ बुराई नहीं करता १० है इस लिये प्रेम करना व्यवस्था को पूरा करना है।

यह इस लिये भी किया चाहिये कि तुम समय को ११ जानते हो कि नींद से हमारे जागने का समय अब हुआ है क्योंकि जिस समय में हम ने विश्वास किया उस समय से अब हमारा त्राण अधिक निकट है। रात बढ़ गई है और १२ दिन निकट आया है इस लिये हम अन्धकार के कामों को उतारके ज्योति की झिलम पहिन लें। जैसा दिन को १३ चाहिये तैसा हम शुभ रीति से चलें . लीला क्रीड़ा औ मतवालपन में अथवा व्यभिचार औ लुचपन में अथवा वैर औ डाह में न चलें। परन्तु प्रभु यीशु ख्रीष्ट को पहिन लो १४ और शरीर के लिये उस के अभिलाषों को पूरा करने को चिन्ता मत करो।

१४ चौदहवां पर्ब्ब ।

१ दुर्ब्बल भाई से सूक्ष्म बातों का बिबाद करने का निषेध । ६ इस का पहिला प्रमाण अर्थात सब बिश्वासी लोग प्रभु ही के अधीन हैं । १३ दूसरा प्रमाण अर्थात भाई को ठोकर खिलाना उचित नहीं है । १६ तीसरा प्रमाण अर्थात ईश्वर का राज्य आत्मिक राज्य है जिस में भोजन का ब्योरा नहीं परन्तु प्रेम की चाल अति आवश्यक है । २२ दृढ़ बिश्वास से चलने का उपदेश ।

१ जो बिश्वास में दुर्ब्बल है उसे अपनी संगति में ले लेओ २ पर उस के मत का बिचार करने को नहीं । एक जन बिश्वास करता है कि सब कुछ खाना उचित है परन्तु जो दुर्ब्बल ३ है सो सागपात खाता है । जो खाता है सो न खानेहारे को तुच्छ न जाने और जो नहीं खाता है सो खानेहारे को दोषी न ठहरावे क्योंकि ईश्वर ने उस को ग्रहण किया ४ है । तू कौन है जो पराये सेवक को दोषी ठहराता है . वह अपने ही स्वामी के आगे खड़ा होता है अथवा गिरता है . परन्तु वह खड़ा रहेगा क्योंकि ईश्वर उसे खड़ा रख ५ सकता है । एक जन एक दिन को दूसरे दिन से बड़ा जानता है दूसरा जन हर एक दिन को एकसां जानता है . हर एक जन अपने ही मन में निश्चय कर लेवे ।

६ जो दिन को मानता है सो प्रभु के लिये मानता है और जो दिन को नहीं मानता है सो प्रभु के लिये नहीं मानता है . जो खाता है सो प्रभु के लिये खाता है क्योंकि वह ईश्वर का धन्य मानता है और जो नहीं खाता है सो प्रभु के लिये नहीं खाता है और ईश्वर का धन्य ७ मानता है । क्योंकि हम में से कोई अपने लिये नहीं जीता ८ है और कोई अपने लिये नहीं मरता है । क्योंकि यदि हम जीवें तो प्रभु के लिये जीते हैं और यदि मरें तो प्रभु के लिये मरते हैं सो यदि हम जीवें अथवा यदि मरें तो

प्रभु के हैं। क्योंकि इसी बात के लिये ख्रीष्ट मरा और ९
उठा और फिरके जीआ भी कि वह मृतकों औ जीवतों
का भी प्रभु होवे। तू अपने भाई को क्यों दोषी ठहराता १०
है अथवा तू भी अपने भाई को क्यों तुच्छ जानता है क्यों-
कि हम सब ख्रीष्ट के विचार आसन के आगे खड़े होंगे।
क्योंकि लिखा है कि परमेश्वर कहता है जो मैं जीता ११
हूं तो मेरे आगे हर एक घुटना झुकेगा और हर एक
जीभ ईश्वर के आगे मान लेगी। सो हम में से हर एक १२
ईश्वर को अपना अपना लेखा देगा।

सो हम अब फिर एक दूसरे को दोषी न ठहरावें १३
परन्तु तुम यही ठहराओ कि भाई के आगे हम ठेस अथवा
ठोकर का कारण न रखेंगे। मैं जानता हूं और प्रभु यीशु से १४
मुझे निश्चय हुआ है कि कोई वस्तु आप से अशुद्ध नहीं
है केवल जो जिस वस्तु को अशुद्ध जानता है उस के लिये
वह अशुद्ध है। यदि तेरे भोजन के कारण तेरा भाई १५
उदास होता है तो तू अब प्रेम की रीति से नहीं चलता
है. जिस के लिये ख्रीष्ट मूआ उस को तू अपने भोजन के
द्वारा से नाश मत कर।

सो तुम्हारी भलाई की निन्दा न किई जाय। क्योंकि १६ १७
ईश्वर का राज्य खाना पीना नहीं है परन्तु धर्म्म और
मिलाप और आनन्द जो पवित्र आत्मा से है। क्योंकि १८
जो इन बातों में ख्रीष्ट की सेवा करता है सो ईश्वर को
भावता और मनुष्यों के यहां भला ठहराया जाता है। इस १९
लिये हम मिलाप की बातों और एक दूसरे के सुधारने की
बातों की चेष्टा करें। भोजन के हेतु ईश्वर का काम नाश २०
मत कर. सब कुछ शुद्ध तो है परन्तु जो मनुष्य खाने से
ठोकर खिलाता है उस के लिये बुरा है। अच्छा यह है २१

कि तू न मांस खाय न दाख रस पीय न कोई काम करे जिस से तेरा भाई ठेस अथवा ठोकर खाता है अथवा दुर्ब्बल होता है ।

२२ क्या तुझे बिश्वास है . उसे ईश्वर के आगे अपने मन में रख . धन्य वह है कि जो बात उसे अच्छी देख पड़ती
२३ है उस में अपने को दोषी नहीं ठहराता है । परन्तु जो सन्देह करता है सो यदि खाय तो दंड के योग्य ठहरा है क्योंकि वह बिश्वास का काम नहीं करता है . परन्तु जो जो काम बिश्वास का नहीं है सो पाप है ।

१५ पन्द्रहवां पर्ब्ब ।

१ दुर्ब्बल भाई के बिषय के उपदेश का चौथा प्रमाण अर्थात ख्रीष्ट ने ऐसा ही नमूना दिखाया । ८ ख्रीष्ट का यिहूदी और अन्यदेशी दोनों का त्राणकर्त्ता होना । १४ रोमीय मंडली के पास लिखने में पावल का अभिप्राय । १७ उस की सेवकाई का वर्णन । २२ रोम नगर जाने की इच्छा । ३० मंडली से यह बिन्ती करना कि वे उस के लिये प्रार्थना करें ।

१ हमें जो बलवन्त हैं उचित है कि निर्ब्बलों की दुर्ब्बल-
२ ताओं को सहें और अपने ही को प्रसन्न न करें । हम में से हर एक जन पड़ोसी की भलाई के लिये उसे सुधारने के
३ निमित्त प्रसन्न करे । क्योंकि ख्रीष्ट ने भी अपने ही को प्रसन्न न किया परन्तु जैसा लिखा है तेरे निन्दकों की निन्दा की
४ बातें मुझ पर आ पड़ीं । क्योंकि जो कुछ आगे लिखा गया सो हमारी शिक्षा के लिये लिखा गया कि धीरता के और शांति के द्वारा जो धर्म्मपुस्तक से होती है हमें आशा
५ होय । और धीरता और शांति का ईश्वर तुम्हें ख्रीष्ट यीशु के अनुसार आपस में एकसां मन रखने का दान देवे .
६ जिस्तें तुम एक चित्त होके एक मुंह से हमारे प्रभु यीशु
७ ख्रीष्ट के पिता ईश्वर का गुणानुवाद करो । इस कारण

ईश्वर की महिमा के लिये जैसा खीष्ट ने तुम्हें ग्रहण किया तैसे तुम भी एक दूसरे को ग्रहण करो ।

मैं कहता हूं कि जो प्रतिज्ञाएं पितरों से किई गईं उन्हें ८ दृढ़ करने को यीशु खीष्ट ईश्वर की सच्चाई के लिये खतना किये हुए लोगों का सेवक हुआ । पर अन्यदेशी लोग भी ९ दया के कारण ईश्वर का गुणानुबाद करें जैसा लिखा है इस कारण मैं अन्यदेशियों में तेरा धन्य मानूंगा और तेरे नाम की गीतें गाऊंगा । और फिर कहा है हे अन्यदेशियो १० उस के लोगों के संग आनन्द करो । और फिर हे सब ११ अन्यदेशियो परमेश्वर की स्तुति करो और हे सब लोगो उसे सराहो । और फिर यिशैयाह कहता है यिशी का १२ एक मूल होगा और अन्यदेशियों का प्रधान होने को एक उठेगा उस पर अन्यदेशी लोग आशा रखेंगे । आशा का १३ ईश्वर तुम्हें विश्वास करने में सर्ब्ब आनन्द और शांति से परिपूर्ण करे कि पवित्र आत्मा के सामर्थ्य से तुम्हें अधिक करके आशा होय ।

हे मेरे भाइयो मैं आप भी तुम्हारे विषय में निश्चय १४ जानता हूं कि तुम भी आप ही भलाई से भरपूर औ सारे ज्ञान से परिपूर्ण हो और एक दूसरे को चिता सकते हो । परन्तु हे भाइयो मैं ने तुम्हें चेत दिलाते हुए तुम्हारे पास १५ कहीं कहीं बहुत साहस से जो लिखा है यह उस अनुग्रह के कारण हुआ जो ईश्वर ने मुझे दिया है . इस लिये कि १६ मैं अन्यदेशियों के लिये यीशु खीष्ट का सेवक होऊं और ईश्वर के सुसमाचार का याजकीय कर्म्म करूं जिस्तें अन्य-देशियों का चढ़ाया जाना पवित्र आत्मा से पवित्र किया जाके ग्राह्य होय ।

सो उन बातों में जो ईश्वर से संबन्ध रखती हैं मुझे १७

१८ ख्रीष्ट योशु में बड़ाई करने का हेतु मिलता है। क्योंकि जो काम ख्रीष्ट ने मेरे द्वारा से नहीं किये उन में से मैं किसी काम के विषय में बात करने का साहस न करूंगा परन्तु उन कामों के विषय में कहूंगा जो उस ने मेरे द्वारा से अन्यदेशियों की अधीनता के लिये बचन औ कर्म्म से और चिन्हों औ अद्भुत कामों के सामर्थ्य से और ईश्वर के आत्मा की
१९ शक्ति से किये हैं. यहां लों कि यिरूशलीम और चारों ओर के देश से लेके इल्लुरिया देश लों मैं ने ख्रीष्ट के सुसमा-
२० चार को सम्पूर्ण प्रचार किया है। परन्तु मैं सुसमाचार को इस रीति से सुनाने की चेष्टा करता था अर्थात कि जहां ख्रीष्ट का नाम लिया गया तहां न सुनाऊं ऐसा न हो कि
२१ पराई नेव पर घर बनाऊं. परन्तु ऐसा सुनाऊं जैसा लिखा है कि जिन्हें उस का समाचार नहीं कहा गया वे देखेंगे और जिन्हों ने नहीं सुना है वे समझेंगे।

२२ इसी हेतु से मैं तुम्हारे पास जाने में बहुत बार रुक
२३ गया। परन्तु अब मुझे इस ओर के देशों में और स्थान नहीं रहा है और बहुत बरसों से मुझे तुम्हारे पास आने
२४ की लालसा है. इस लिये मैं जब कभी इस्पानिया देश को जाऊं तब तुम्हारे पास आऊंगा क्योंकि मैं आशा रखता हूं कि तुम्हारे पास से जाते हुए तुम्हें देखूं और जब मैं पहिले तुम से कुछ कुछ तृप्त हुआ हूं तब तुम से कुछ
२५ दूर उधर पहुंचाया जाऊं। परन्तु अभी मैं पवित्र लोगों
२६ की सेवा करने के लिये यिरूशलीम को जाता हूं। क्योंकि माकिदोनिया और आखाया के लोगों की इच्छा हुई कि यिरूशलीम के पवित्र लोगों में जो कंगाल हैं उन की कुछ
२७ सहायता करें। उन की इच्छा हुई और वे उन के ऋणी भी हैं क्योंकि यदि अन्यदेशी लोग उन की आत्मिक

वस्तुओं में भागी हुए तो उन्हें उचित है कि शारीरिक वस्तुओं में उन की भी सेवा करें। सो जब मैं यह कार्य्य २८ पूरा कर चुकूं और उन के लिये इस फल पर छाप दे चुकूं तब तुम्हारे पास से होके इस्पानिया को जाऊंगा। और मैं २९ जानता हूं कि तुम्हारे पास जब मैं आऊं तब ख्रीष्ट के सुसमाचार की आशीस की भरपूरी से आऊंगा।

और हे भाइयो हमारे प्रभु यीशु ख्रीष्ट के कारण और ३० पवित्र आत्मा के प्रेम के कारण मैं तुम से बिन्ती करता हूं कि ईश्वर से मेरे लिये प्रार्थना करने में मेरे संग परिश्रम करो . कि मैं यिहूदिया में के अविश्वासियों से बचूं और ३१ कि यिरूशलीम के लिये जो मेरी सेवकाई है सो पवित्र लोगों को भावे . जिस्तें मैं ईश्वर की इच्छा से तुम्हारे पास ३२ आनन्द से आऊं और तुम्हारे संग विश्राम करूं। शांति ३३ का ईश्वर तुम सभों के संग होवे . आमीन।

१६ सोलहवां पर्ब्ब।

१ पावल का रोमियों से बिन्ती करना कि फैबी बहिन को ग्रहण करें। ३ अनेक विश्वासियों और विश्वासिनियों के पास नमस्कार लिखना। १७ ठोकर खिलानेहारों के विषय में उन्हें चिताना। २१ अपनी और कितने भाइयों की ओर से नमस्कार लिखना। २५ ईश्वर का धन्यवाद करके पत्री को समाप्त करना।

मैं तुम्हारे पास हम लोगों की बहिन फैबी को जो १ किंक्रिया में की मंडली की सेवकी है सराहता हूं . जिस्तें २ तुम उसे प्रभु में जैसा पवित्र लोगों के योग्य है वैसा ग्रहण करो और जिस किसी बात में उस को तुम से प्रयोजन होय उस के सहायक होओ क्योंकि वह भी बहुत लोगों की और मेरी भी उपकारिणी हुई है।

प्रिस्कीला और अकूला को जो ख्रीष्ट यीशु में मेरे सह- ३ कर्म्मी हैं नमस्कार। उन्हों ने मेरे प्राण के लिये अपना ही ४

गला धर दिया जिन का केवल मैं नहीं परन्तु अन्यदेशियों
५ की सारी मंडलियां भी धन्य मानती हैं । उन के घर में की
मंडली को भी नमस्कार . इपेनित मेरे प्यारे को जो ख्रीष्ट के
६ लिये आशिया का पहिला फल है नमस्कार । मरियम को
जिस ने हमारे लिये बहुत परिश्रम किया नमस्कार ।
७ अन्द्रोनिक और यूनिय मेरे कुटुंबों और मेरे संगी बन्धुओं
को जो प्रेरितों में प्रसिद्ध हैं और मुझ से पहिले ख्रीष्ट में
८ हुए थे नमस्कार । अम्पलिय प्रभु में मेरे प्यारे को नमस्कार ।
९ उर्ब्बान ख्रीष्ट में हमारे सहकर्म्मी को और स्ताखु मेरे
१० प्यारे को नमस्कार । अपिल्लि को जो ख्रीष्ट में जांचा हुआ है
नमस्कार . अरिस्तबूल के घराने के लोगों को नमस्कार ।
११ हेरोदियोन मेरे कुटुंब को नमस्कार . नर्किस के घराने के
१२ जो लोग प्रभु में हैं उन्हों को नमस्कार । त्रुफेना और
त्रुफोसा को जिन्हों ने प्रभु में परिश्रम किया नमस्कार .
प्यारी परसी को जिस ने प्रभु में बहुत परिश्रम किया
१३ नमस्कार । रूफ को जो प्रभु में चुना हुआ है और उस की
१४ औ मेरी माता को नमस्कार । असुंक्रित औ फिलेगोन औ
हर्मा औ पात्रोबा औ हर्मी को और उन के संग के भाइयों
१५ को नमस्कार । फिललोग औ यूलिया को और नीरिय
और उस की बहिन को और उलुम्पा को और उन के संग के
१६ सब पवित्र लोगों को नमस्कार । एक दूसरे को पवित्र
चूमा लेके नमस्कार करो . तुम को ख्रीष्ट की मंडलियों की
ओर से नमस्कार ।

१७ हे भाइयो मैं तुम से बिन्ती करता हूं कि जो लोग उस
शिक्षा के बिपरीत जो तुम ने पाई है नाना भांति के बिरोध
और ठोकर डालते हैं उन्हें देख रखो और उन से फिर
१८ जाओ । क्योंकि ऐसे लोग हमारे प्रभु यीशु ख्रीष्ट की नहीं

परन्तु अपने पेट की सेवा करते हैं और चिकनी और मीठी बातों से सूधे लोगों के मन को धोखा देते हैं। तुम्हारे १९ आज्ञा पालन का चर्चा सब लोगों में फैल गया है इस से मैं तुम्हारे विषय में आनन्द करता हूं परन्तु मैं चाहता हूं कि तुम भलाई के लिये बुद्धिमान पर बुराई के लिये सूधे होओ। शांति का ईश्वर शैतान को शीघ्र तुम्हारे पाओं तले कुचलेगा. २० हमारे प्रभु यीशु ख्रीष्ट का अनुग्रह तुम्हारे संग होय।

तिमोथिय मेरे सहकर्म्मी का और लूकिय औ यासोन २१ औ सोसिपातर मेरे कुटुंबों का तुम से नमस्कार। मुझ २२ तर्त्तिय पत्री के लिखनेहारे का प्रभु में तुम से नमस्कार। गायस मेरे और सारी मंडली के आतिथ्यकारी का तुम से २३ नमस्कार. इरास्त का जो नगर का भंडारी है और भाई क्वार्त का तुम से नमस्कार। हमारे प्रभु यीशु ख्रीष्ट का अनु- २४ ग्रह तुम सभों के संग होय. आमीन।

जो मेरे सुसमाचार के अनुसार और यीशु ख्रीष्ट के २५ विषय के उपदेश के अनुसार अर्थात उस भेद के प्रकाश के अनुसार तुम्हें स्थिर कर सकता है. जो भेद सनातन से २६ गुप्त रखा गया था परन्तु अब प्रगट किया गया है और सनातन ईश्वर की आज्ञा से भविष्यद्वाणी के पुस्तक के द्वारा सब देशों के लोगों को बताया गया है कि वे विश्वास से आज्ञाकारी हो जायें. उस को अर्थात अद्वैत बुद्धिमान २७ ईश्वर को यीशु ख्रीष्ट के द्वारा से धन्य हो जिस का गुणानुवाद सर्व्वदा होवे। आमीन॥

करिन्थियों को पावल प्रेरित की पहिली पत्री।

१ पहिला पर्ब्ब।

१ पत्री का आभाष। ४ करिन्थियों के विषय में पावल का धन्यबाद। १० उन्हों में के विभेदों का बर्णन और उन के विषय में उन्हें समझाना। १८ यीशु की मृत्यु का सुसमाचार प्रचार करने के गुण। २६ ईश्वर का अधम लोगों को अपनी मंडली में बुलाना।

१ पावल जो ईश्वर की इच्छा से यीशु ख्रीष्ट का बुलाया २ हुआ प्रेरित है और भाई सोस्थिनी. ईश्वर की मंडली को जो करिन्थ में है जो ख्रीष्ट यीशु में पवित्र किये हुए और बुलाये हुए पवित्र लोग हैं उन सभों के संग जो हर स्थान में हमारे हां उन के और हमारे भी प्रभु यीशु ख्रीष्ट के नाम की ३ प्रार्थना करते हैं. तुम्हें हमारे पिता ईश्वर और प्रभु यीशु ख्रीष्ट से अनुग्रह और शांति मिले।

४ मैं सदा तुम्हारे विषय में अपने ईश्वर का धन्य मानता हूं इस लिये कि ईश्वर का यह अनुग्रह तुम्हें ख्रीष्ट यीशु में ५ दिया गया. कि उस में तुम हर बात में अर्थात सारे बचन ६ और सारे ज्ञान में धनवान किये गये. जैसा ख्रीष्ट के ७ विषय की साक्षी तुम्हों में दृढ़ हुई. यहां लों कि किसी बरदान में तुम्हें घटी नहीं है और तुम हमारे प्रभु यीशु ८ ख्रीष्ट के प्रकाश की बाट जोहते हो। वह तुम्हें अन्त लों भी दृढ़ करेगा ऐसा कि तुम हमारे प्रभु यीशु ख्रीष्ट के दिन में ९ निर्दोष होगे। ईश्वर बिश्वासयोग्य है जिस से तुम उस के पुत्र हमारे प्रभु यीशु ख्रीष्ट की संगति में बुलाये गये।

१० हे भाइयो मैं तुम से हमारे प्रभु यीशु ख्रीष्ट के नाम के कारण बिन्ती करता हूं कि तुम सब एक ही प्रकार की बात बोलो और तुम्हों में बिभेद न होवें परन्तु एक ही मन और

एक ही विचार में सिद्ध होओ । क्योंकि हे मेरे भाइयो ११ क्लोई के घराने के लोगों से मुझ पर तुम्हारे विषय में प्रगट किया गया है कि तुम्हों में वैर विरोध हैं . और मैं यह १२ कहता हूं कि तुम सब यूं बोलते हो कोई कि मैं पावल का हूं कोई कि मैं अपल्लो का कोई कि मैं कैफा का कोई कि मैं ख्रीष्ट का हूं । क्या ख्रीष्ट बिभाग किया गया है . क्या १३ पावल तुम्हारे लिये क्रूश पर घात किया गया अथवा क्या तुम्हें पावल के नाम से बपतिसमा दिया गया । मैं ईश्वर का १४ धन्य मानता हूं कि क्रीस्प और गायस को छोड़के मैं ने तुम में से किसी को बपतिसमा नहीं दिया . ऐसा न हो १५ कि कोई कहे कि मैं ने अपने नाम से बपतिसमा दिया । और मैं ने स्तिफान के घराने को भी बपतिसमा दिया . १६ आगे मैं नहीं जानता हूं कि मैं ने और किसी को बपतिसमा दिया । क्योंकि ख्रीष्ट ने मुझे बपतिसमा देने को नहीं परन्तु १७ सुसमाचार सुनाने को भेजा पर कथा के ज्ञान के अनुसार नहीं जिस्तें ऐसा न हो कि ख्रीष्ट का क्रूश व्यर्थ ठहरे ।

क्योंकि क्रूश की कथा उन्हें जो नाश होते हैं मूर्खता १८ है परन्तु हमें जो चाण पाते हैं ईश्वर का सामर्थ्य है । क्योंकि लिखा है कि मैं ज्ञानवानों के ज्ञान को नाश करूंगा १९ और बुद्धिमानों की बुद्धि को तुच्छ कर देऊंगा । ज्ञानवान २० कहां है . अध्यापक कहां . इस संसार का विवादी कहां . क्या ईश्वर ने इस जगत के ज्ञान को मूर्खता न बनाई है । क्योंकि जब कि ईश्वर के ज्ञान से यूं हुआ कि जगत ने २१ ज्ञान के द्वारा से ईश्वर को न जाना तो ईश्वर की इच्छा हुई कि उपदेश की मूर्खता के द्वारा से विश्वास करनेहारों को बचावे । यिहूदी लोग तो चिन्ह मांगते हैं और यूनानी २२ लोग भी ज्ञान ढूंढ़ते हैं . परन्तु हम लोग क्रूश पर मारे २३

गये ख्रीष्ट का उपदेश करते हैं जो यिहूदियों को ठोकर का
२४ कारण और यूनानियों को मूर्खता है . परन्तु उन्हों को हां
यिहूदियों को और यूनानियों को भी जो बुलाये हुए हैं
ईश्वर का सामर्थ्य और ईश्वर का ज्ञान रूपी ख्रीष्ट है ।
२५ क्योंकि ईश्वर की मूर्खता मनुष्यों से अधिक ज्ञानवान है
और ईश्वर की दुर्ब्बलता मनुष्यों से अधिक शक्तिमान है ।
२६ क्योंकि हे भाइयो तुम अपनी बुलाहट को देखते हो
कि न तुम में शरीर के अनुसार बहुत ज्ञानवान न बहुत
२७ सामर्थी न बहुत कुलीन हैं । परन्तु ईश्वर ने जगत के
मूर्खों को चुना है कि ज्ञानवानों को लज्जित करे और
जगत के दुर्ब्बलों को ईश्वर ने चुना है कि शक्तिमानों को
२८ लज्जित करे । और जगत के अधमों और तुच्छों को हां
उन्हें जो नहीं हैं ईश्वर ने चुना है कि उन्हें जो हैं लोप
२९ करे . जिस्तें कोई प्राणी ईश्वर के आगे घमंड न करे ।
३० उसी से तुम ख्रीष्ट यीशु में हुए हो जो ईश्वर की ओर से
हमों को ज्ञान औ धर्म्म औ पवित्रता औ उद्धार हुआ
३१ है . जिस्तें जैसा लिखा है जो बड़ाई करे सो परमेश्वर के
विषय में बड़ाई करे ।

२ दूसरा पर्ब्ब ।

१ पावल का अपने उपदेश का बर्णन करना कि सांसारिक ज्ञान से रहित परन्तु ईश्वर के सामर्थ्य के साथ था । ६ और उस में दैव्य ज्ञान का प्रकाश था जो केवल पवित्र आत्मा की सहायता से समझा जाता है ।

१ हे भाइयो मैं जब तुम्हारे पास आया तब बचन अथवा
ज्ञान की उत्तमता से तुम्हें ईश्वर की साक्षी सुनाता हुआ
२ नहीं आया । क्योंकि मैं ने यही ठहराया कि तुम्हों में
और किसी बात को न जानूं केवल यीशु ख्रीष्ट को हां
३ क्रूश पर मारे गये ख्रीष्ट को । और मैं दुर्ब्बलता और भय के

साथ और बहुत कांपता हुआ तुम्हारे यहां रहा। और ४ मेरा वचन और मेरा उपदेश मनुष्यों के ज्ञान की मनाने-वाली बातों से नहीं परन्तु आत्मा और सामर्थ्य के प्रमाण से था. जिस्तें तुम्हारा विश्वास मनुष्यों के ज्ञान पर ५ नहीं परन्तु ईश्वर के सामर्थ्य पर होवे।

तौभी हम सिद्ध लोगों में ज्ञान सुनाते हैं पर इस ६ संसार का अथवा इस संसार के लोप होनेहारे प्रधानों का ज्ञान नहीं। परन्तु हम एक भेद में ईश्वर का गुप्त ज्ञान ७ जिसे ईश्वर ने सनातन से हमारी महिमा के लिये ठहराया सुनाते हैं. जिसे इस संसार के प्रधानों में से किसी ने न जाना ८ क्योंकि जो वे उसे जानते तो तेजोमय प्रभु को क्रूश पर घात न करते। परन्तु जैसा लिखा है जो आंख ने नहीं ९ देखा और कान ने नहीं सुना है और जो मनुष्य के हृदय में नहीं समाया है वही है जो ईश्वर ने उन के लिये जो उसे प्यार करते हैं तैयार किया है। परन्तु ईश्वर ने उसे १० अपने आत्मा से हमों पर प्रगट किया है क्योंकि आत्मा सब बातें हां ईश्वर की गंभीर बातें भी जांचता है। क्योंकि ११ मनुष्यों में से कौन है जो मनुष्य की बातें जानता है केवल मनुष्य का आत्मा जो उस में है. वैसे ही ईश्वर की बातें भी कोई नहीं जानता है केवल ईश्वर का आत्मा। परन्तु १२ हम ने संसार का आत्मा नहीं पाया है परन्तु वह आत्मा जो ईश्वर की ओर से है इस लिये कि हम वह बातें जानें जो ईश्वर ने हमें दिई हैं. जो हम मनुष्यों के ज्ञान की १३ सिखाई हुई बातों में नहीं परन्तु पवित्र आत्मा की सिखाई हुई बातों में आत्मिक बातें आत्मिक बातों से मिला मिलाके सुनाते हैं। परन्तु प्राणिक मनुष्य ईश्वर के आत्मा की बातें १४ ग्रहण नहीं करता है क्योंकि वे उस के लेखे मूर्खता हैं

और वह उन्हें नहीं जान सकता है क्योंकि उन का बिचार
१५ आत्मिक रीति से किया जाता है। आत्मिक जन सब कुछ
बिचार करता है परन्तु वह आप किसी से बिचार नहीं
१६ किया जाता है। क्योंकि परमेश्वर का मन किस ने जाना
है जो उसे सिखावे . परन्तु हम को ख्रीष्ट का मन है।

३ तीसरा पर्ब्ब ।

१ करिन्थियों की शारीरिक चाल का उलहना। ५ प्रेरितों के यथार्थ पद का निर्णय। १० ख्रीष्ट जो मंडली की नेव है उस पर बनाने की विधि। १६ ईश्वर के मन्दिर की पवित्रता। १८ सांसारिक ज्ञान की निष्फलता।

१ हे भाइयो मैं तुम से जैसा आत्मिक लोगों से तैसा नहीं
बात कर सका परन्तु जैसा शारीरिक लोगों से हां जैसा
२ उन्हों से जो ख्रीष्ट में बालक हैं। मैं ने तुम्हें दूध पिलाया अन्न
न खिलाया क्योंकि तुम तब लों नहीं खा सकते थे बरन
अब लों भी नहीं खा सकते हो क्योंकि अब लों शारीरिक
३ हो। क्योंकि जब कि तुम्हों में डाह और बैर और बिरोध
हैं तो क्या तुम शारीरिक नहीं हो और मनुष्य की रीति पर
४ नहीं चलते हो। क्योंकि जब एक कहता है मैं पावल का हूं
और दूसरा मैं अपल्लो का हूं तो क्या तुम शारीरिक नहीं हो।
५ तो पावल कौन है और अपल्लो कौन है . केवल सेवक
लोग जिन के द्वारा जैसा प्रभु ने हर एक को दिया तैसा तुम
६ ने बिश्वास किया। मैं ने लगाया अपल्लो ने सींचा परन्तु
७ ईश्वर ने बढ़ाया। सो न तो लगानेहारा कुछ है और न
८ सींचनेहारा परन्तु ईश्वर जो बढ़ानेहारा है। लगानेहारा
और सींचनेहारा दोनों एक हैं परन्तु हर एक जन
अपने ही परिश्रम के अनुसार अपनी ही बनि पावेगा।
९ क्योंकि हम ईश्वर के सहकर्म्मी हैं . तुम ईश्वर की खेती
ईश्वर की रचना हो।

ईश्वर के अनुग्रह के अनुसार जो मुझे दिया गया मैं ने १० ज्ञानवान थवई की नाईं नेव डाली है और दूसरा मनुष्य उस पर घर बनाता है . परन्तु हर एक मनुष्य सचेत रहे कि वह किस रीति से उस पर बनाता है। क्योंकि जो नेव ११ पड़ी है अर्थात यीशु ख्रीष्ट उसे छोड़के दूसरी नेव कोई नहीं डाल सकता है। परन्तु यदि कोई इस नेव पर १२ सोना वा रूपा वा बहुमूल्य पत्थर वा काठ वा घास वा फूस बनावे . तो हर एक का काम प्रगट हो जायगा क्योंकि १३ वही दिन उसे प्रगट करेगा इस लिये कि आग सहित प्रकाश होता है और हर एक का काम कैसा है सो वह आग परखेगी। यदि किसी का काम जो उस ने बनाया है १४ ठहरे तो वह मजूरी पावेगा। यदि किसी का काम जल १५ जाय तो उसे टूटी लगेगी परन्तु वह आप बचेगा पर ऐसा जैसा आग के बीच से होके कोई बचे।

क्या तुम नहीं जानते हो कि तुम ईश्वर के मन्दिर हो १६ और ईश्वर का आत्मा तुम में बसता है। यदि कोई मनुष्य १७ ईश्वर के मन्दिर को नाश करे तो ईश्वर उस को नाश करेगा क्योंकि ईश्वर का मन्दिर पवित्र है और वह मन्दिर तुम हो।

कोई अपने को छल न देवे . यदि कोई इस संसार में १८ अपने को तुम्हों में ज्ञानी समझे तो मूर्ख बने जिस्तें ज्ञानी हो जाय। क्योंकि इस जगत का ज्ञान ईश्वर के यहां मूर्खता १९ है क्योंकि लिखा है वह ज्ञानियों को उन की चतुराई में पकड़नेहारा है। और फिर परमेश्वर ज्ञानियों की चिन्ताएं २० जानता है कि वे व्यर्थ हैं। सो मनुष्यों के विषय में कोई घमंड २१ न करे क्योंकि सब कुछ तुम्हारा है। क्या पावल क्या २२ अपल्लो क्या कैफा क्या जगत क्या जीवन क्या मरण क्या

२३ वर्त्तमान क्या भविष्य सब कुछ तुम्हारा है। और तुम ख्रीष्ट के हो और ख्रीष्ट ईश्वर का है।

४ चौथा पर्ब्ब ।

१ प्रेरित लोग ईश्वर के सेवक हैं और उन का बिचार ईश्वर ही करेगा इस का बर्णन । ६ अभिमान और बिभेद का उलहना और प्रेरितों के दुःख और दीनताई का बखान। १४ पावल का करिन्थियों को बालकों की नाईं उपदेश देना और अभिमानियों को चिताना ।

१ यूं ही मनुष्य हमें ख्रीष्ट के सेवक और ईश्वर के भेदों के २ भंडारी करके जाने। फिर भंडारियों में लोग यह चाहते हैं ३ कि मनुष्य बिश्वासयोग्य पाया जाय। परन्तु मेरे लेखे अति छोटी बात है कि मेरा बिचार तुम्हों से अथवा मनुष्य के न्याय से किया जाय हां मैं अपना बिचार भी नहीं करता ४ हूं। क्योंकि मेरे जानते में कुछ मुझ से नहीं हुआ परन्तु इस से मैं निर्दोष नहीं ठहरा हूं पर मेरा बिचार करनेहारा प्रभु ५ है। सो जब लों प्रभु न आवे समय के आगे किसी बात का बिचार मत करो. वही तो अन्धकार की गुप्त बातें ज्योति में दिखावेगा और हृदयों के परामर्शों को प्रगट करेगा और तब ईश्वर की ओर से हर एक की सराहना होगी।

६ इन बातों को हे भाइयो तुम्हारे कारण मैं ने अपने पर और अपल्लो पर दृष्टान्त सा लगाया है इस लिये कि हमों में तुम यह सीखो कि जो लिखा हुआ है उस से अधिक ऊंचा मन न रखो जिस्तें तुम एक दूसरे के पक्ष में और मनुष्य के ७ बिरुद्ध फूल न जावो। क्योंकि कौन तुझे भिन्न करता है. और तेरे पास क्या है जो तू ने दूसरे से नहीं पाया है. और यदि तू ने दूसरे से पाया है तो क्यों ऐसा घमंड करता ८ है कि मानो दूसरे से नहीं पाया। तुम तो तृप्त हो चुके तुम धनी हो चुके तुम ने हमारे बिना राज्य किया है हां

मैं चाहता हूं कि तुम राज्य करते जिस्तें हम भी तुम्हारे संग राज्य करें। क्योंकि मैं समझता हूं कि ईश्वर ने सब के ९ पीछे हम प्रेरितों को जैसे मृत्यु के लिये ठहराये हुओं को प्रत्यक्ष दिखाया है क्योंकि हम जगत के हां दूतों और मनुष्यों के आगे लीला के ऐसे बने हैं। हम ख्रीष्ट के कारण १० मूर्ख हैं पर तुम ख्रीष्ट में बुद्धिमान हो. हम दुर्ब्बल हैं पर तुम बलवन्त हो. तुम मर्य्यादिक हो पर हम निरादर हैं। इस घड़ी लों हम भूखे और प्यासे और नंगे भी ११ रहते हैं और घूसे मारे जाते और डांवाडोल रहते हैं और अपने ही हाथों से कमाने में परिश्रम करते हैं। हम १२ अपमान किये जाने पर आशीस देते हैं सताये जाने पर सह लेते हैं निन्दित होने पर बिन्ती करते हैं। हम अब लों १३ जगत का कूड़ा हां सब वस्तुओं की खुरचन के ऐसे बने हैं।

मैं यह बातें तुम्हें लज्जित करने को नहीं लिखता हूं १४ परन्तु अपने प्यारे बालकों की नाईं तुम्हें चिताता हूं। क्योंकि तुम्हें ख्रीष्ट में यदि दस सहस्र शिक्षक हों तौभी १५ बहुत पिता नहीं हैं क्योंकि ख्रीष्ट यीशु में सुसमाचार के द्वारा तुम मेरे ही पुत्र हो। सो मैं तुम से बिन्ती करता हूं १६ तुम मेरी सी चाल चलो। इस हेतु से मैं ने तिमोथिय को १७ जो प्रभु में मेरा प्यारा और विश्वासयोग्य पुत्र है तुम्हारे पास भेजा है और ख्रीष्ट में जो मेरे मार्ग हैं उन्हें वह जैसा मैं सर्व्वत्र हर एक मंडली में उपदेश करता हूं तैसा तुम्हें चेत दिलावेगा। कितने लोग फूल गये हैं मानो कि मैं १८ तुम्हारे पास नहीं आनेवाला हूं। परन्तु जो प्रभु की इच्छा १९ होय तो मैं शीघ्र तुम्हारे पास आऊंगा और उन फूले हुए लोगों का वचन नहीं परन्तु सामर्थ्य बूझ लेऊंगा। क्योंकि २० ईश्वर का राज्य वचन में नहीं परन्तु सामर्थ्य में है। तुम २१

क्या चाहते हो . मैं छड़ी लेके अथवा प्रेम से और नम्रता के आत्मा से तुम्हारे पास आऊं ।

५ पांचवां पर्व्व ।

१ एक व्यभिचारी को मंडली से निकालने का उपदेश । ६ मंडली के शुद्ध होने की आवश्यकता । ९ जो लोग विश्वासी कहावें परन्तु कुकर्म्म करें उन से अलग रहने की आज्ञा ।

१ यह सर्व्वत्र सुनने में आता है कि तुम्हों में व्यभिचार है और ऐसा व्यभिचार कि उस का चर्चा देवपूजकों में भी नहीं होता है कि कोई मनुष्य अपने पिता की स्त्री से २ विवाह करे । और तुम फूल गये हो यह नहीं कि शोक किया जिस्तें यह काम करनेहारा तुम्हारे बीच में से निकाला ३ जाता । मैं तो शरीर में दूर परन्तु आत्मा में साक्षात होके जिस ने यह काम इस रीति से किया है उस का बिचार ४ जैसा साक्षात में कर चुका हूं . कि हमारे प्रभु यीशु ख्रीष्ट के नाम से जब तुम और मेरा आत्मा हमारे प्रभु यीशु ख्रीष्ट के ५ सामर्थ्य सहित एकट्ठे हुए हैं . तब ऐसा जन शरीर के बिनाश के लिये शैतान को सौंपा जाय जिस्तें आत्मा प्रभु यीशु के दिन में त्राण पावे ।

६ तुम्हारा घमंड करना अच्छा नहीं है . क्या तुम नहीं जानते हो कि थोड़ा सा खमीर सारे पिंड को खमीर कर ७ डालता है । सो पुराना खमीर सब का सब निकालो कि जैसे तुम अखमीरी हो तैसे नया पिंड होओ क्योंकि हमारा निस्तार पर्व्व का मेम्ना अर्थात ख्रीष्ट हमारे लिये ८ बलि दिया गया है । सो हम पर्व्व को न तो पुराने खमीर से और न बुराई औ दुष्टता के खमीर से परन्तु सीधाई औ सच्चाई के अखमीरी भाव से रखें ।

९ मैं ने तुम्हारे पास पत्री में लिखा कि व्यभिचारियों की

संगति मत करो। यह नहीं कि तुम इस जगत के व्यभिचा- १०
रियों वा लोभियों वा उपद्रवियों वा मूर्त्तिपूजकों की सर्व्वथा
संगति न करो नहीं तो तुम्हें जगत में से निकल जाना अवश्य
होता। सो मैं ने तुम्हारे पास यही लिखा कि यदि कोई ११
जो भाई कहलाता है व्यभिचारी वा लोभी वा मूर्त्तिपूजक
वा निन्दक वा मद्यप वा उपद्रवी होय तो उस की संगति
मत करो वरन ऐसे मनुष्य के संग खाओ भी नहीं। क्यों- १२
कि मुझे बाहरवालों का विचार करने से क्या काम . क्या
तुम भीतरवालों का विचार नहीं करते हो। पर बाहर- १३
वालों का विचार ईश्वर करता है . फिर उस कुकर्म्मी
को अपने में से निकाल देओ।

६ छठवां पर्व्व ।

१ अविश्वासियों के आगे नालिश करने का निषेध । १० ईश्वर के राज्य की पवित्रता । १२ विश्वासियों के देह सो खीष्ट के अंग और पवित्र आत्मा के मन्दिर हैं इस कारण व्यभिचार का निषेध ।

तुम में से जो किसी जन को दूसरे से बिवाद होय तो १
क्या उसे अधर्म्मियों के आगे नालिश करने का साहस होता
है और पवित्र लोगों के आगे नहीं। क्या तुम नहीं जानते २
हो कि पवित्र लोग जगत का विचार करेंगे और यदि
जगत का विचार तुम से किया जाता है तो क्या तुम सब
से छोटी बातों का निर्णय करने के अयोग्य हो। क्या तुम ३
नहीं जानते हो कि सांसारिक बातें पीछे रहे हम तो
स्वर्ग दूतों ही का विचार करेंगे। सो यदि तुम्हें सांसारिक ४
बातों का निर्णय करना होय तो जो मंडली में कुछ नहीं
गिने जाते हैं उन्हीं को बैठाओ। मैं तुम्हारी लज्जा निमित्त ५
कहता हूं . क्या ऐसा है कि तुम्हों में एक भी ज्ञानी नहीं है
जो अपने भाइयों के बीच में विचार कर सकेगा। परन्तु भाई ६

भाई पर नालिश करता है और सोई अविश्वासियों के
७ आगे भी। सो तुम्हों में निश्चय दोष हुआ है कि तुम्हों
में आपस में बिवाद होते हैं. क्यों नहीं बरन अन्याय
८ सहते हो. क्यों नहीं बरन ठगाई सहते हो। परन्तु तुम
अन्याय करते और ठगते हो हां भाइयों से भी यह करते
९ हो। क्या तुम नहीं जानते हो कि अन्याई लोग ईश्वर
के राज्य के अधिकारी न होंगे।

१० धोखा मत खाओ. न ब्यभिचारी न मूर्त्तिपूजक न
परस्त्रीगामी न शुहदे न पुरुषगामी न चोर न लोभी न
मद्यप न निन्दक न उपद्रवी लोग ईश्वर के राज्य के अधि-
११ कारी होंगे। और तुम में से कितने लोग ऐसे थे परन्तु
तुम ने अपने को धोया परन्तु तुम पवित्र किये गये परन्तु
तुम प्रभु यीशु के नाम से और हमारे ईश्वर के आत्मा से
धर्म्मी ठहराये गये।

१२ सब कुछ मेरे लिये उचित है परन्तु सब कुछ लाभ का
नहीं है. सब कुछ मेरे लिये उचित है परन्तु मैं किसी
१३ बात के अधीन नहीं होंगा। भोजन पेट के लिये और पेट
भोजन के लिये है परन्तु ईश्वर इस का और उस का दोनों
का क्षय करेगा. पर देह ब्यभिचार के लिये नहीं है परन्तु
१४ प्रभु के लिये और प्रभु देह के लिये है। और ईश्वर ने अपने
सामर्थ्य से प्रभु को जिला उठाया और हमें भी जिला
१५ उठावेगा। क्या तुम नहीं जानते हो कि तुम्हारे देह
ख्रीष्ट के अंग हैं. सो क्या मैं ख्रीष्ट के अंग ले करके उन्हें
१६ बेश्या के अंग बनाऊं. ऐसा न हो। क्या तुम नहीं जानते
हो कि जो बेश्या से मिल जाता है सो एक देह होता है
१७ क्योंकि कहा है वे दोनों एक तन होंगे। परन्तु जो प्रभु
१८ से मिल जाता है सो एक आत्मा होता है। ब्यभिचार

से बचे रहो . हर एक पाप जो मनुष्य करता है देह के बाहर है परन्तु व्यभिचार करनेहारा अपने ही देह के विरुद्ध पाप करता है । क्या तुम नहीं जानते हो कि १९ पवित्र आत्मा जो तुम में है जो तुम्हें ईश्वर की ओर से मिला है तुम्हारा देह उसी पवित्र आत्मा का मन्दिर है ओर तुम अपने नहीं हो । क्योंकि तुम दाम देके मोल २० लिये गये हो सो अपने देह में और अपने आत्मा में जो ईश्वर के हैं ईश्वर की महिमा प्रगट करो ।

७ सातवां पर्ब्ब ।

१ स्त्री पुरुष के व्यवहार के विषय में पावल का करिन्थियों के प्रश्न का उत्तर देना । १२ विश्वासी और अविश्वासी स्त्री पुरुष के संबन्ध का ब्योरा । १७ जिस दशा में जो बुलाया जाय उस के उस दशा में रहने का उपदेश । २५ कुंवारियों के विषय में पावल का परामर्श । २९ जगत के अनित्य होने का चेत दिलाना । ३२ विवाह किया कि न किया चाहिये इस का निर्णय ।

जो बातें तुम ने मेरे पास लिखीं उन के विषय में मैं १ कहता हूं मनुष्य के लिये अच्छा है कि स्त्री को न छूवे । परन्तु व्यभिचार कर्म्मों के कारण हर एक मनुष्य की अपनी २ ही स्त्री होय और हर एक स्त्री का अपना ही स्वामी होय । पुरुष अपनी स्त्री से जो स्नेह उचित है सो किया करे ३ और वैसे ही स्त्री भी अपने स्वामी से । स्त्री को अपने देह ४ पर अधिकार नहीं पर उस के स्वामी को अधिकार है और वैसे ही पुरुष को भी अपने देह पर अधिकार नहीं पर उस की स्त्री को अधिकार है । तुम एक दूसरे से मत अलग ५ रहो केवल तुम्हें उपवास औ प्रार्थना के लिये अवकाश मिलने के कारण जो दोनों की सम्मति से तुम कुछ दिन अलग रहो तो रहो और फिर एकट्ठे हो जिस्तें शैतान तुम्हारे असंयम के कारण तुम्हारी परीक्षा न करे । परन्तु मैं जो ६ यह कहता हूं तो अनुमति देता हूं आज्ञा नहीं करता

७ हूं। मैं तो चाहता हूं कि सब मनुष्य ऐसे होवें जैसा मैं आप ही हूं परन्तु हर एक ने ईश्वर की ओर से अपना अपना बरदान पाया है किसी ने इस प्रकार का किसी ने उस प्रकार का।
८ पर मैं अबिवाहितों से और बिधवाओं से कहता हूं कि यदि
९ वे जैसा मैं हूं तैसे रहें तो उन के लिये अच्छा है। परन्तु जो वे असंयमी होवें तो बिवाह करें क्योंकि बिवाह करना
१० जलते रहने से अच्छा है। बिवाहितों को मैं नहीं परन्तु प्रभु
११ आज्ञा देता है कि स्त्री अपने स्वामी से अलग न होय। पर जो वह अलग भी होय तो अबिवाहिता रहे अथवा अपने स्वामी से मिल जाय . और पुरुष अपनी स्त्री को न त्यागे।
१२ दूसरों से प्रभु नहीं परन्तु मैं कहता हूं यदि किसी भाई को अबिश्वासिनी स्त्री होय और वह स्त्री उस के संग रहने
१३ को प्रसन्न होय तो वह उसे न त्यागे। और जिस स्त्री को अबिश्वासी स्वामी होय और वह स्वामी उस के संग रहने
१४ को प्रसन्न होय वह उसे न त्यागे। क्योंकि वह अबिश्वासी पुरुष अपनी स्त्री के कारण पवित्र किया गया है और वह अबिश्वासिनी स्त्री अपने स्वामी के कारण पवित्र किई गई है नहीं तो तुम्हारे लड़के अशुद्ध होते पर अब तो वे पवित्र
१५ हैं। परन्तु जो वह अबिश्वासी जन अलग होता है तो अलग होय . ऐसी दशा में भाई अथवा बहिन बंधा हुआ नहीं है . परन्तु ईश्वर ने हमें मिलाप के लिये बुलाया है।
१६ क्योंकि हे स्त्री तू क्या जानती है कि तू अपने स्वामी को बचावेगी कि नहीं अथवा हे पुरुष तू क्या जानता है कि तू अपनी स्त्री को बचावेगा कि नहीं।
१७ परन्तु जैसा ईश्वर ने हर एक को बांट दिया है जैसा प्रभु ने हर एक को बुलाया है तैसा ही वह चले . और मैं
१८ सब मंडलियों में यूं ही आज्ञा देता हूं। कोई खतना किया

हुआ बुलाया गया हो तो खतनाहीन सा न बने . कोई खतनाहीन बुलाया गया हो तो खतना न किया जाय । खतना कुछ नहीं है और खतनाहीन होना कुछ नहीं है १९ परन्तु ईश्वर की आज्ञाओं का पालन करना सार है। हर २० एक जन जिस दशा में बुलाया गया उसी में रहे । क्या तू २१ दास हो करके बुलाया गया . चिन्ता मत कर पर यदि तेरा उद्धार हो भी सकता है तो बरन उस को भोग कर । क्योंकि जो दास प्रभु में बुलाया गया है सो प्रभु का निर्बन्ध २२ किया हुआ है और वैसे ही निर्बन्ध जो बुलाया गया है सो खीष्ट का दास है । तुम दाम देके मोल लिये गये हो . २३ मनुष्यों के दास मत बनो । हे भाइयो हर एक जन जिस २४ दशा में बुलाया गया ईश्वर के आगे उसी में बना रहे ।

कुंवारियों के विषय में प्रभु की कोई आज्ञा मुझे नहीं २५ मिली है परन्तु जैसा प्रभु ने मुझ पर दया किई है कि मैं विश्वासयोग्य होऊं तैसा मैं परामर्श देता हूं । सो मैं २६ बिचार करता हूं कि वर्त्तमान क्लेश के कारण यही अच्छा है अर्थात मनुष्य को वैसे ही रहना अच्छा है। क्या तू स्त्री २७ के संग बंधा है . छूटने का यत्न मत कर . क्या तू स्त्री से छूटा है . स्त्री की इच्छा मत कर। तौभी जो तू विवाह २८ करे तो तुझे पाप नहीं हुआ और यदि कुंवारी विवाह करे तो उसे पाप नहीं हुआ पर ऐसों को शरीर में क्लेश होगा . परन्तु मैं तुम पर भार नहीं देता हूं ।

हे भाइयो मैं यह कहता हूं कि अब तो समय संक्षेप २९ किया गया है इस लिये कि जिन्हें स्त्रियां हैं सो ऐसे होवें जैसे उन्हें स्त्रियां नहीं . और रोनेहारे भी ऐसे हों जैसे ३० नहीं रोते और आनन्द करनेहारे ऐसे हों जैसे आनन्द नहीं करते और मोल लेनेहारे ऐसे हों जैसे नहीं रखते .

३१ और इस संसार के भोग करनेहारे ऐसे हों जैसे अति भोग नहीं करते क्योंकि इस संसार का रूप बीतता जाता है।

३२ मैं चाहता हूं कि तुम्हें चिन्ता न हो . अबिवाहित पुरुष प्रभु की बातों की चिन्ता करता है कि प्रभु को क्यों-
३३ कर प्रसन्न करे। परन्तु बिवाहित पुरुष संसार की बातों की चिन्ता करता है कि अपनी स्त्री को क्योंकर प्रसन्न
३४ करे। जोरू और कुंवारी में भी भेद है . अबिवाहिता नारी प्रभु की बातों की चिन्ता करती है कि वह देह और आत्मा में भी पवित्र होवे परन्तु बिवाहिता नारी संसार की बातों की चिन्ता करती है कि अपने स्वामी को क्योंकर
३५ प्रसन्न करे। पर मैं यह बात तुम्हारे ही लाभ के लिये कहता हूं अर्थात मैं जो तुम पर फंदा डालूं इस लिये नहीं परन्तु तुम्हारे शुभ चाल चलने और दुचित्त न होके प्रभु में
३६ लौलीन रहने के लिये कहता हूं। परन्तु यदि कोई समझे कि मैं अपनी कन्या से अशुभ काम करता हूं जो वह स्यानी हो और ऐसा होना अवश्य है तो वह जो चाहता
३७ है सो करे उसे पाप नहीं है . वे बिवाह करें। पर जो मन में दृढ़ रहता है और उस को आवश्यक नहीं पर अपनी इच्छा के विषय में अधिकार है और यह बात अपने मन में ठहराई है कि अपनी कन्या को रखे वह अच्छा
३८ करता है। इस लिये जो बिवाह देता है सो अच्छा करता है और जो बिवाह नहीं देता है सो भी और अच्छा करता है।

३९ स्त्री जब लों उस का स्वामी जीता रहे तब लों व्यवस्था से बंधी है परन्तु यदि उस का स्वामी मर जाय तो वह निर्बन्ध है कि जिस से चाहे उस से ब्याही जाय . पर केवल प्रभु में।
४० परन्तु जो वह वैसी ही रहे तो मेरे बिचार में और भी

धन्य है और मैं समझता हूं कि ईश्वर का आत्मा मुझ में भी है ।

८ आठवां पर्ब्ब ।

१ प्रेम का ज्ञान से उत्तम होना । ४ मूर्त्ति कुछ नहीं है परन्तु ईश्वर सब कुछ है इस का वर्णन । ७ मूर्त्ति के सन्मुख भोजन करने से निर्ब्बल भाई को ठोकर खिलाना उचित न होना ।

१ मूरतों के आगे बलि किई हुई वस्तुओं के विषय में मैं कहता हूं . हम जानते हैं कि हम सभों को ज्ञान है . ज्ञान २ फुलाता है परन्तु प्रेम सुधारता है । यदि कोई समझे कि मैं कुछ जानता हूं तो जैसा जानना उचित है तैसा अब लों ३ कुछ नहीं जानता है । परन्तु यदि कोई जन ईश्वर को प्यार करता है तो वही ईश्वर से जाना जाता है ।

४ सो मूरतों के आगे बलि किई हुई वस्तुओं के खाने के विषय में मैं कहता हूं . हम जानते हैं कि मूर्त्ति जगत में कुछ नहीं है और कि एक ईश्वर को छोड़के कोई दूसरा ५ ईश्वर नहीं है । क्योंकि यद्यपि क्या आकाश में क्या पृथिवी पर कितने हैं जो ईश्वर कहलाते हैं जैसा बहुत से ६ देव और बहुत से प्रभु हैं . तौभी हमारे लिये एक ईश्वर पिता है जिस से सब कुछ है और हम उस के लिये हैं और एक प्रभु यीशु खीष्ट है जिस के द्वारा से सब कुछ है और हम उस के द्वारा से हैं ।

७ परन्तु सभों में यह ज्ञान नहीं है पर कितने लोग अब लों मूर्त्ति जानके मूर्त्ति के आगे बलि किई हुई वस्तु मानके उस वस्तु को खाते हैं और उन का मन दुर्ब्बल होके अशुद्ध ८ किया जाता है । भोजन तो हमें ईश्वर के निकट नहीं पहुंचाता है क्योंकि यदि हम खावें तो हमें कुछ बढ़ती ९ नहीं और यदि नहीं खावें तो कुछ घटती भी नहीं । परन्तु

सचेत रहो ऐसा न हो कि तुम्हारा यह अधिकार कहीं
१० दुर्ब्बलों के लिये ठोकर का कारण हो जाय । क्योंकि यदि
कोई तुझे जिस को ज्ञान है मूर्त्ति के मन्दिर में भोजन पर
बैठे देखे तो क्या इस लिये कि वह दुर्ब्बल है उस का मन
मूर्त्ति के आगे बलि किई हुई बस्तु खाने को दृढ़ न किया
११ जायगा । और क्या वह दुर्ब्बल भाई जिस के लिये ख्रीष्ट
१२ मूआ तेरे ज्ञान के हेतु नाश न होगा । परन्तु इस रीति से
भाइयों का अपराध करने से और उन के दुर्ब्बल मन को चोट
१३ देने से तुम ख्रीष्ट का अपराध करते हो । इस कारण यदि
भोजन मेरे भाई को ठोकर खिलाता हो तो मैं कभी किसी
रीति से मांस न खाऊंगा न हो कि मैं अपने भाई को
ठोकर खिलाऊं ।

९ नवां पर्ब्ब ।

१ सुसमाचार के प्रचारकों का प्रतिपालन किस रीति से हुआ चाहिये इस का निर्णय । १५ पावल का इस बात के विषय में अपने चरित्र का वर्णन करना । २४ अखाड़े में दौड़ने का दृष्टान्त ।

१ क्या मैं प्रेरित नहीं हूं . क्या मैं निर्बन्ध नहीं हूं . क्या
मैं ने हमारे प्रभु यीशु ख्रीष्ट को नहीं देखा है . क्या तुम
२ प्रभु में मेरे कृत नहीं हो । जो मैं औरों के लिये प्रेरित नहीं
हूं तौभी तुम्हारे लिये तो हूं क्योंकि तुम प्रभु में मेरी
३ प्रेरिताई की छाप हो । जो मुझे जांचते हैं उन के लिये यही
४ मेरा उत्तर है । क्या हमें खाने और पीने का अधिकार
५ नहीं है । क्या जैसा दूसरे प्रेरितों और प्रभु के भाइयों को
और कैफा को तैसा हम को भी अधिकार नहीं है कि एक
६ धर्म्मबहिन से बिवाह करके उसे लिये फिरें । अथवा क्या
केवल मुझ को और बर्णबा को अधिकार नहीं है कि कमाई
७ करना छोड़ें । कौन कभी अपने ही खर्च से योद्धापन किया

करता है . कौन दाख की वारी लगाता है और उस का कुछ फल नहीं खाता है . अथवा कौन भेड़ों के झुंड की रखवाली करता है और झुंड का कुछ दूध नहीं खाता है। क्या मैं यह वातें मनुष्य की रीति पर बोलता हूं . क्या ८ व्यवस्था भी यह वातें नहीं कहती है। क्योंकि मूसा की ९ व्यवस्था में लिखा है कि दावनेहारे वैल का मुंह मत बांध . क्या ईश्वर वैलों की चिन्ता करता है। अथवा क्या वह १० निज करके हमारे कारण कहता है . हमारे ही कारण लिखा गया कि उचित है कि हल जोतनेहारा आशा से हल जोते और दावनेहारा भागी होने की आशा से दावनी करे। यदि हम ने तुम्हारे लिये आत्मिक वस्तु बोई हैं तो ११ हम जो तुम्हारी शारीरिक वस्तु लवें क्या यह बड़ी बात है। यदि दूसरे जन तुम पर इस अधिकार के भागी हैं तो १२ क्या हम अधिक करके नहीं हैं . परन्तु हम यह अधिकार काम में न लाये पर सव कुछ सहते हैं जिस्तें ख्रीष्ट के सुसमाचार की कुछ रोक न करें। क्या तुम नहीं जानते १३ हो कि जो लोग याजकीय कर्म्म करते हैं सो मन्दिर में से खाते हैं और जो लोग वेदी की सेवा करते हैं सो वेदी के अंशधारी होते हैं। यूं ही प्रभु ने भी जो लोग सुसमाचार १४ सुनाते हैं उन के लिये ठहराया है कि सुसमाचार से उन की जीविका होय।

परन्तु मैं इन वातों में से कोई वात काम में नहीं लाया १५ और मैं ने तो यह वातें इस लिये नहीं लिखीं कि मेरे विषय में यूं ही किया जाय क्योंकि मरना मेरे लिये इस से भला है कि कोई मेरा वड़ाई करना व्यर्थ ठहरावे। क्योंकि १६ जो मैं सुसमाचार प्रचार करूं तो इस से कुछ मेरी वड़ाई नहीं है क्योंकि मुझे अवश्य पड़ता है और जो मैं